



5906

# علم الا انسان

(خزائن العرفان)

روبينه نازلی

پورب اکادمی، اسلام آباد

جملہ حقوق بحق مصنف محفوظ

83734

2010ء پورب اکادمی

طبع اول: مارچ 2010ء

ناشر: پورب اکادمی، اسلام آباد

فون نمبر: 051 - 581 94 10, 0301 - 559 58 61

ای میل: poorab\_academy@yahoo.com

ویب سائٹ: www.poorab.com.pk

**Ilmul Insan**

by: Rubina Nazli

Published by: Poorab Academy, Islamabad, Pakistan

ISBN: 978-969-8917-86-9

۱۲۸،۳

روب نازلی، روینہ

علم الانسان / روینہ نازلی

اسلام آباد: پورب اکادمی، ۲۰۱۰ء

۳۰۰ ص

۱ انسانیات۔۔ فلسفہ

انتساب

اپنی والدہ سیدہ بلقیس بانو

کے نام



## فہرست

| صفحہ نمبر | مضامین                         | نمبر شمار  |
|-----------|--------------------------------|------------|
| 7         | پیش لفظ                        |            |
| 20        | متحدہ سائنس                    |            |
| 23        | حصہ اول                        |            |
| 23        | انسانی کام کی تاریخ            | باب نمبر 1 |
| 24        | انسان                          | 1          |
| 25        | انسان کیا ہے                   | 2          |
| 30        | ماورائی علوم                   | 3          |
| 34        | انسان پر جدید سائنسی تحقیقات   | 4          |
| 34        | انسان کی ابتدائی تعریف         | 5          |
| 50        | یونانی فلسفیوں کی انسان کی بحث | 6          |
| 56        | مسلمانوں کا کام                | 7          |
| 68        | انسان کی جدید تعریف            | 8          |
| 71        | قدیم انسان                     | 9          |
| 81        | مختلف اقوام کے عقیدے           | 10         |
| 91        | انسانی کام کی تاریخ کا جائزہ   | 11         |
| 97        | تاریخی سوال                    | 12         |
| 99        | حصہ دوئم                       |            |

## تاریخی جواب (نئے نظریات)

|     |                                 |    |
|-----|---------------------------------|----|
| 101 | انسان کی تعریف                  | 13 |
| 102 | انسان کیسا مجموعہ ہے            | 14 |
| 105 | انسان کی اصل تعریف              | 15 |
| 107 | باب نمبر 2 مادی جسم             |    |
| 107 | مادی جسم                        | 16 |
| 110 | باب نمبر 3 نفس                  |    |
| 111 | نفس                             | 17 |
| 111 | نفس کیا ہے                      | 18 |
| 112 | (۱)۔ نفس (۲)۔ اصل نفس           |    |
| 115 | نفس کی تعریف                    | 19 |
| 116 | نفس کے نام                      | 20 |
| 117 | بنیادی نفس کون سا ہے            | 21 |
| 119 | نفس (AURA) جسم ہے               | 22 |
| 119 | روشنی کا جسم                    | 23 |
| 120 | نفس (AURA) حرکی قوت ہے          | 24 |
| 121 | جسم کی زندگی                    | 25 |
| 121 | نفس (AURA) کے اجسام             | 26 |
| 123 | جسمانی اعمال کا سبب             | 27 |
| 123 | جسمانی اعمال کی اطلاعات         | 28 |
| 124 | نفس (AURA) زمان و مکان کا پابند | 29 |
| 125 | اعمال کے اثرات                  | 30 |
| 127 | AURA روح نہیں                   | 31 |
| 127 | نور کا جسم                      | 32 |

|     |  |     |
|-----|--|-----|
| 128 | مزید اجسام   | 33  |
| 129 | اجسام کی تعداد   | 34  |
| 130 | مادی دنیا میں اجسام کی تعداد                                 | 35  |
| 130 | انسان کائنات سے مربوط ہے                                     | 36  |
| 132 | مادی جسم (۲)۔ نفس (AURA) (۳)۔ نور کا جسم                     | (۱) |
| 132 | زندگی کی صورتیں  | 37  |
| 133 | اجسام کا تشخص  | 38  |
| 133 | مادی جسم (۲)۔ (AURA) (۳)۔ نور کا جسم                         | (۱) |
| 134 | اجسام کی اہمیت   | 39  |
| 136 | اجسام کی حقیقت   | 40  |
| 136 | تمام اجسام فانی ہیں  | 41  |
| 136 | اصل جسم  | 42  |
| 137 | انسان کی اصل   | 43  |
| 137 | لطیف اجسام   | 44  |
| 138 | انسانی باطن  | 45  |
| 139 | مجموعی انسان   | 46  |
| 140 | اجسام کا مسئلہ   | 47  |
| 142 | باب نمبر 4 روح   |     |
| 143 | مختلف ادوار میں روح کی علمی حیثیت                            | 48  |
| 143 | ۱۔ یونانی فلسفی ۲۔ سائنسدان ۳۔ مسلمان ۴۔ جدید سائنسی تحقیقات |     |
| 145 | روح کی تعریفیں   | 49  |
| 148 | اب آپ کی کیا رائے ہے   | 50  |
| 148 | تمام تعریفوں کا نتیجہ  | 51  |
| 149 | روح کی تعریف ممکن نہیں                                       | 52  |



|     |                                |    |
|-----|--------------------------------|----|
| 150 | روح کی تعریف کیوں ممکن نہیں    | 53 |
| 151 | روح کے نام                     | 54 |
| 152 | یہ سب نام کیا ہیں              | 55 |
| 153 | باطن سے لاعلمی                 | 56 |
| 155 | اجسام کا چکر                   | 57 |
| 156 | اجسام کا مسئلہ حل ہو چکا       | 58 |
| 156 | روح۔ نئے نظریات                |    |
| 157 | روح کی تعریف                   | 59 |
| 157 | روح کیا ہے                     | 60 |
| 158 | روح و اجسام                    | 61 |
| 159 | روح کا دس نکاتی فارمولہ        | 62 |
| 161 | ۱۔ روح نکتہ ہے                 |    |
| 162 | سب سے چھوٹا وجود               |    |
| 163 | ۲۔ یہ نکتہ انرجی ہے            |    |
| 163 | ۳۔ انرجی زندگی ہے              |    |
| 164 | ۴۔ زندگی مرتب پروگرام ہے       |    |
| 165 | ۵۔ پروگرام متحرک ہے            |    |
| 165 | ۶۔ حرکت کا سبب ارتعاش ہے       |    |
| 166 | ۷۔ ارتعاش آواز کا ہے           |    |
| 167 | ۸۔ یہ آواز ایک حکم ہے          |    |
| 168 | ۹۔ خالق کا حکم                 |    |
| 169 | ۱۰۔ یہ حکم مسلسل نشر ہو رہا ہے |    |
| 169 | حرکی قوت                       | 63 |
| 171 | روح کی قوت                     | 64 |

|     |  |            |
|-----|--|------------|
| 172 | برقی سسٹم                                  | 65         |
| 173 | پاور اسٹیشن                                | 66         |
| 173 | روح خالق کا حکم ہے                         | 67         |
| 174 | انسانوں میں حکم کی خصوصیات                 | 68         |
| 177 | تخلیق                                      | باب نمبر 5 |
| 178 | پہلا انسان                                 | 69         |
| 179 | انسان کی تخلیق                             | 70         |
| 180 | منفرد تخلیق                                | 71         |
| 181 | پیدائش اور تخلیق میں فرق                   | 72         |
| 181 | (۱) پیدائش (۲) تخلیق                       |            |
| 181 | تخلیقی مراحل                               | 73         |
| 182 | تخلیقی فارمولہ                             | 74         |
| 184 | 1۔ واحد انرجی سے تخلیق کا آغاز: پہلا مرحلہ |            |
| 185 | ۲۔ ارواح کی پیدائش: دوسرا مرحلہ            |            |
| 185 | ۳۔ نفوس کی تخلیق: تیسرا مرحلہ              |            |
| 186 | انسان پیدائش سے پہلے                       | 75         |
| 187 | ۴۔ پہلے مادی جسم کی تخلیق: چوتھا مرحلہ     |            |
| 189 | ۵۔ روح و جسم کا اجتماع: پانچواں مرحلہ      |            |
| 190 | پہلا جوڑا                                  | 76         |
| 191 | پیدائش کا آغاز                             | 77         |
| 191 | نفس واحدہ                                  | 78         |
| 192 | تخلیقی ترتیب                               | 79         |
| 194 | پیدائش                                     | باب نمبر 6 |
|     | مادی جسم کی پیدائش                         |            |

|     |                               |    |
|-----|-------------------------------|----|
| 195 | پیدائش کا عمل                 | 80 |
| 197 | مادی جسم کی پیدائش کا آغاز    | 81 |
| 199 | پیدائشی فارمولہ               | 82 |
| 199 | (۱) تخلیق (۲) تناسب (۳) تقدیر |    |
|     | (۴) ہدایات                    |    |
| 199 | ۱۔ تخلیق                      |    |
| 200 | ۲۔ جسم کی تیاری               |    |
| 202 | ۳۔ جسم کی ترتیب               |    |
| 202 | ۴۔ جسم کا نقشہ                |    |
| 203 | ۵۔ DNA کی معلومات             |    |
| 204 | ۶۔ نظام عصبی                  |    |
| 205 | ۷۔ خلیہ مادہ اور روح          |    |
| 205 | ۸۔ جسم میں روح                |    |
| 206 | ۹۔ انفرادی روح                |    |
| 206 | ۱۰۔ جسم کی روح                |    |
| 207 | ۱۱۔ روح کا مرکز               |    |
| 209 | ۱۲۔ جسم کی روح خود کہاں ہے    |    |
| 209 | ۱۳۔ انسان کی روح              |    |
| 210 | ۱۴۔ تمام انسانوں کی روح       |    |
| 211 | ۱۵۔ کائنات کی روح             |    |
| 212 | ۱۶۔ روح کا منبع               |    |
| 212 | ۱۷۔ واحد روح                  |    |
| 214 | ۱۸۔ روح کہاں ہے؟              |    |
| 216 | ۱۹۔ روح کائنات سے مربوط ہے    |    |

- 216 ۲۰۔ واحد حقیقت
- 217 ۲۱۔ جسمانی ساخت
- 218 ۱۔ موروثی پروگرام۔ وراثتی نوعی قانون
- 219 ۲۔ ذاتی پروگرام۔ جنس
- 220 تخلیقی خلاصہ
- 221 (2)۔ تناسب
- مادی جسم کی پیدائش کا دوسرا مرحلہ
- 221 ۱۔ خلیوں میں تناسب
- 222 ۲۔ اعضاء کا تناسب
- 222 ۳۔ جسمانی نظام میں تناسب
- 223 ۴۔ جسمانی ساخت میں تناسب
- 223 ۵۔ انواع میں تناسب
- 224 ۳۔ تقدیر
- مادی جسم کی پیدائش کا تیسرا مرحلہ
- 224 ۱۔ تقدیر کیا ہے
- 226 ۲۔ تقدیر میں کیا تحریر ہے۔
- ۱۔ عمل ۲۔ رزق ۳۔ عمر ۴۔ انجام
- ۳۔ تقدیر کے دو حصے
- (1) مرتب پروگرام (2) لازمی قوانین
- ۴۔ ہدایت
- مادی جسم کی پیدائش کا چوتھا مرحلہ
- 234 ۱۔ ہدایت کیا ہے
- 234 ۲۔ ہدایت کی دو صورتیں
- (1) باطنی ہدایات

|     |  |            |
|-----|--|------------|
|     | (2) ظاہری ہدایات                         |            |
| 236 | ۳۔ ہدایت اور تقدیر میں فرق               |            |
| 238 | حرکت                                     | باب نمبر 7 |
| 239 | حرکت                                     | 83         |
| 239 | غیر ارادی حرکات                          | 84         |
| 241 | ارادی حرکات                              | 85         |
| 243 | عمل                                      | باب نمبر 8 |
| 245 | عمل                                      | 86         |
| 246 | عمل کیا ہے                               | 87         |
| 246 | عمل کیسے ظہور میں آ رہا ہے               | 88         |
| 247 | عملی فارمولہ                             | 89         |
| 248 | ۱۔ روح کی مرتبہ پروگرام (تقدیر سے) اطلاع |            |
| 248 | ۲۔ ہدایت                                 |            |
| 249 | ۳۔ منفی اطلاعات                          |            |
| 250 | ۴۔ نفس (AURA) کا فیصلہ                   |            |
| 252 | ۵۔ دماغ کا کام                           |            |
| 253 | ۶۔ دماغی عمل                             |            |
| 254 | ۷۔ جسمانی عملدرآمد                       |            |
| 255 | ۸۔ عمل کے بعد                            |            |
| 256 | اعمال                                    | 90         |
| 257 | آزاد ارادہ                               | 91         |
| 258 | پابند مخلوقات و موجودات                  | 92         |
| 259 | اچھایا بر عمل                            | 93         |
| 259 | اچھا عمل                                 | 94         |

|     |                            |     |
|-----|----------------------------|-----|
| 260 | براعمل                     | 95  |
| 262 | عمل کا خلاصہ               | 96  |
| 263 | انسانی زندگی               | 97  |
| 263 | نفوس کی درجہ بندی          | 98  |
|     | ۱۔ نفس امارہ               |     |
|     | ۲۔ نفس لوامہ               |     |
|     | ۳۔ نفس مطمئنہ              |     |
| 266 | باب نمبر ۹ موت             |     |
| 268 | موت                        | 99  |
| 269 | زندگی                      | 100 |
| 269 | موت کی تعریف               | 101 |
| 270 | جسم میں روح کی عدم موجودگی | 102 |
|     | ۱۔ خلیاتی تخریب            |     |
|     | ۲۔ فالج                    |     |
|     | ۳۔ نیند، بے ہوشی           |     |
| 273 | موت کیا ہے                 | 103 |
| 273 | روح کا رابطہ               | 104 |
| 274 | موت کا وقت                 | 105 |
| 275 | ری وائینڈ                  | 106 |
| 275 | فیثہ کاٹ دیا گیا           | 107 |
| 276 | موت کا عمل                 | 108 |
| 277 | روح کی واپسی               | 109 |
| 279 | جسم سے روح نکل جانے کے بعد | 110 |
|     | ۱۔ بے حرکت                 |     |
|     | ۲۔ انتشار                  |     |
| 281 | موت کا خلاصہ               | 111 |
| 283 | جسم کی موت                 | 112 |

|     |  |             |
|-----|--|-------------|
| 284 | زندگی کے بعد زندگی                     | باب نمبر ۱۰ |
| 285 | کیا موت کی صورت انسان کا اختتام ہو گیا | 113         |
| 286 | زندگی کے بعد زندگی                     | 114         |
| 289 | زندگی اور موت کے تجربات                | 115         |
| 289 | موت کے بعد                             | 116         |
| 293 | انتقال                                 | باب نمبر ۱۱ |
| 296 | انتقال                                 | 117         |
| 297 | انتقالی فارمولہ                        | 118         |
| 297 | انسانی سفری روداد                      | 119         |
| 298 | انتقال کیا ہے                          | 120         |
| 300 | موت اور انتقال میں فرق                 | 121         |
| 301 | انسان جا کہاں رہا ہے                   | 122         |
| 305 | دوا حکامات                             | 123         |
| 306 | علیین                                  | 124         |
| 306 | جبین                                   | 125         |
| 306 | انسان کہاں منتقل ہو گیا۔               | 126         |
| 307 | عالم برزخ (نفس کی دنیا)                | 127         |
| 308 | عالم برزخ (نفس کی دنیا) کہاں ہے        | 128         |
| 308 | برزخ (نفس کی دنیا) میں انسانی صورت     | 129         |
| 309 | برزخی (نفس کی دنیا) رہائش گاہ          | 130         |
| 310 | برزخ (نفس کی دنیا) کیسی ہے             | 131         |
| 310 | نفسی زندگی                             | 132         |
| 310 | مقید نفس                               | 133         |
| 311 | آزاد نفس                               | 134         |

|            |   |                    |
|------------|---|--------------------|
| 311        | اجسام کی تعداد                            | 135                |
| 313        | روشنی کا جسم                              | 136                |
| 313        | نور کا جسم                                | 137                |
| 314        | تمام باطنی لطیف اجسام (نفس AURA) فانی ہیں | 138                |
| 316        | برزخ انتظار گاہ ہے                        | 139                |
| 316        | قیامت                                     | 140                |
| 316        | دوبارہ زندگی                              | 141                |
| 318        | انسان کا نئی مسافر ہے                     | 142                |
| 318        | انسانی کہانی۔                             | 143                |
| 319        | انسانی سفر کے پانچ ادوار                  | 144                |
| 320        | انسانی زندگی کا سفر آغاز تا اختتام        | 145                |
| <b>321</b> | <b>تاریخی جواب</b>                        | <b>باب نمبر 12</b> |
| 321        | انسانی تعریف میں ناکامی کے اسباب          | 146                |
| 324        | آواگون (REINCARNATION)                    | 147                |
| 333        | نظریہء ہبوط آدم۔                          | 148                |
| 336        | نظریہء جبر و قدر۔                         | 149                |
| 340        | AURA چکراز کیا ہیں؟                       | 150                |
| 344        | روح کے حصے                                | 151                |
| 349        | نظریہ ارتقاء (Theory of Evolution)        | 152                |
| 359        | روح اور رب                                | 153                |
| 361        | انسان کیسا مجموعہ ہے؟                     | 154                |
|            | کتابیات                                   | <b>155</b>         |





## پیش لفظ

اس کتاب کا موضوع ہے انسان۔ اس کتاب میں پہلی مرتبہ انسان کا تذکرہ اس کی روح کے حوالے سے سائنسی انداز میں کیا گیا ہے۔ سترہ (۱۷) سالہ تحقیق پر مبنی یہ کام سائنسی، فلسفیانہ، اور تحقیقی کام ہے۔ نئے نظریات پر مشتمل یہ کتاب موضوع انسان پر سائنسدانوں، فلسفیوں، اور صوفیوں کے لئے رہنما کتاب ہے۔ اس لیے کہ انسانی موضوع کے وہ تمام تر مسائل، الجھنیں، مشکلات، سوالات جن میں صدیوں سے سائنسدان، فلسفی، اور صوفیاء الجھتے رہے ان کا حل ڈھونڈتے رہے انہیں سلجھانہ سکے اس کتاب میں میں نے ان تمام الجھنوں کو سلجھا کر صدیوں کے حل طلب سوالات کے جوابات دیئے ہیں۔

یہ کتاب دو حصوں پر مشتمل ہے:

۱۔ پہلے حصے میں انسان پر ہوئے تمام تر ادوار کے کاموں کو اکٹھا کر کے ان کا سائنسی، تاریخی، مذہبی حوالوں سے تنقیدی جائزہ لیا گیا ہے، تجزیہ و موازنہ کیا ہے، غلطیوں کی نشاندہی کی ہے، نتائج قائم کیئے ہیں۔

۲۔ دوسرے حصے میں نئے نظریات پیش کرتے ہوئے انسان سے متعلق ماضی کی تمام الجھنوں کو سلجھا کر ماضی کے تمام ابہامات کو دور کرتے ہوئے انسان کے ہر انفرادی موضوع مثلاً روح، نفس، جسم، دماغ، شعور، لاشعور، تخلیق، ارتقاء، آواگون وغیرہ کی نئی تعریف پیش کی ہے۔ اور پہلی مرتبہ مجموعی انسان کی تعریف اور تعارف پیش کیا ہے۔

اس کتاب میں میں نے سترہ سالہ تحقیق کے دوران انسان کے تمام ادوار کے مختلف اور متضاد کاموں کا سائنسی، تاریخی، مذہبی حوالوں سے تنقیدی جائزہ، تجزیہ اور موازنہ کر کے درج ذیل نتائج اخذ کیئے ہیں

۱۔ انسان پر ہوئے تمام تر مختلف اور متضاد سائنسی و غیر سائنسی کاموں کا بنیادی فلسفہ مذاہب سے مستعار لیا گیا ہے

۲۔ یہ ثابت شدہ امر ہے کہ اکثر مذہبی کتابوں میں زمینی فلسفیانہ ترمیم و اضافے ہو چکے ہیں، لہذا

۱۔ اکثر مذہبی اطلاعات اپنی اصلی حالت میں موجود نہیں ہیں۔

۳۔ تیسرے انسانی کام میں صحیح مذہبی اطلاعات کو بھی سمجھنے میں غلطی کی گئی۔

۴۔ اور انسانی علوم میں انہیں غلطیوں سے غلط نتائج اخذ کیئے گئے۔

۵۔ اور یہی غلط نتائج آج انسان کے مختلف علوم یعنی جسم، نفس، روح، ارتقاء، آواگون، تخلیق وغیرہ کی صورت میں موجود ہیں۔

۶۔ انہی بنیادی غلطیوں کے سبب فی زمانہ موضوع انسان پر جتنے بھی

جسم، نفس، روح، ارتقاء، آواگون، تخلیق کے حوالے سے سائنسی وغیر سائنسی علمی کام ہو رہے

ہیں سب مفروضہ علوم ہیں اس لیے کہ اگرچہ ان تمام انسانی موضوعات پر ہزاروں برس سے

سائنسی وغیر سائنسی کام ہو رہا ہے اس کے باوجود آج تک کسی انسانی موضوع کی علمی تصدیق یا

تعریف اور شناخت تک نہیں ہو پائی اس کی وجہ یہ ہے کہ

۷۔ ہزاروں برس کے انسانی کام میں آج تک انسان کی تعریف ہی نہیں ہو پائی ہے۔ آج تک

انسان ہی معمہ اور مفروضہ ہے تو درحقیقت اس مفروضہ، معمہ انسان کے تمام علوم بھی مفروضہ علوم

ہیں۔

جبکہ اس کتاب میں پہلی مرتبہ انسان کی تعریف اور تفصیلی تعارف پیش کیا جا رہا ہے۔ درحقیقت

موضوع انسان پر یہ اپنی نوعیت کا واحد علمی کام ہے جس میں انسان سے متعلق

ارسطو، سقراط، بقراط، ڈارون، نیوٹن، آئن سٹائن، اسٹیفن ہاکنگ کے مد مقابل کئی سونے سائنسی

نظریات کے ذریعے پہلی مرتبہ انسان کی تعریف کی جا رہی ہے۔

یہ موضوع (انسان) روح کے علم کا ایک موضوع ہے۔ اور روح کو یہاں ہم نے متحدہ سائنس

(Unified Science) کہا ہے۔ یعنی یہ کتاب (علم الانسان) علم الروح (Unified

Science) کی ایک شاخ ہے۔

لہذا اس کتاب کا نام علم الانسان ہے اور یہ انسانی سائنس (human science)، متحدہ

سائنس (Unified Science) کی ایک شاخ ہے۔

جسم پر تو عرصہ دراز سے سائنسی کام ہو رہا ہے۔ جبکہ روح + نفس (انسانی باطن) کو

باقائدہ۔ یونیفائیڈ سائنس، کے طور پر پہلی مرتبہ یہاں ہم متعارف کروا رہے ہیں۔ ہماری پیش

کردہ، متحدہ سائنس (Unified Science)، روح کی سائنس ہے جس کی دو اہم شاخیں، انسان، اور، کائنات، ہیں۔ اس کتاب کا موضوع، انسان، ہے۔ جس میں، جسم، روح، نفس (نفسیات)، باطن، زہن، شعور، لاشعور، وغیرہ جیسے تمام تر موضوعات زیر بحث آئے ہیں۔

کتاب لکھنے کے دوران میرے بھائی، سید راشد علی رضوی، کا تعاون میرے شامل حال رہا جس کے لیے میں ان کی تہہ دل سے مشکور ہوں۔ انہوں نے کمپوزنگ کا کام بھی اپنے ذمے لے کر میرے کام کو مزید آسان کر دیا۔

روبینہ نازلی

E-Mail: nazlee@yahoo.com

Website: unifiedscience.info

882/31-B ,St-3

kianiroad mughalabad

rwalpindi

## متحدہ سائنس (Unified Science)

یہاں موضوع انسان کو میں نے متحدہ سائنس (Unified Science) کہا ہے۔ انسان متحدہ سائنس کی ایک اہم شاخ ہے۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ انسان بھی اسی واحد شے سے تخلیق ہوا ہے جس سے کہ کائنات اور اس کی تمام تر موجودات و مخلوقات تخلیق ہوئی ہیں لہذا انسان متحدہ سائنس کی سب سے اہم شاخ ہے۔ متحدہ سائنس (Unified Science) سے کیا مراد ہے۔ آئیے ذرا اس کا جائزہ لیتے ہیں۔

سائنسدانوں کی برسوں کی تحقیقات کا نچوڑ بالا آخر یہ نکلا ہے کہ کائنات کی کوئی ایک ہی حقیقت ایک ہی خالق ہے نہ تو دوا سے بنا سکتے ہیں نہ دوا سے چلا سکتے ہیں۔ کائنات اور اس کی وسعت اس کا نظم و تسلسل کسی ایک ہی حقیقت کا مظہر ہے۔ ہر نظریہ دوسرے نظریے سے مربوط ہے۔ ہر نظریہ دوسرے نظریے کا تسلسل ہے۔ ہر نظریہ کسی واحد حقیقت کی طرف اشارہ کر رہا ہے۔ لیکن وہ واحد حقیقت کیا ہے؟ یہ سوال سائنسدانوں کے لئے ایک بہت بڑا معمہ ہے۔

سائنسدان عرصے سے ایک ایسے وحدانی نظریے کی تلاش میں ہیں جو کائنات کے تمام رازوں سے ایک ہی ساتھ پردہ اٹھا دے لیکن تا حال وہ ایسی کسی کوشش میں کامیاب نہیں ہو سکے ہیں۔ تاہم وہ مختلف نظریات کو جمع کر کے ایک عظیم وحدانی نظریہ (Grand Unification Theory) بنانے کی جدوجہد میں مصروف ہیں۔ کائنات کو بنانے مسلسل پھیلانے اور چلانے والی قوت کوئی واحد قوت ہی ہو سکتی ہے یہ نچوڑ ہے سائنس کی صدیوں کی تحقیقات کا۔ لیکن یہ قوت واحد کیا ہے؟ سائنسدانوں کے لئے یہ معمہ ہے بلکہ سائنسی اصول و قواعد کے مطابق تو کائنات کی واحد حقیقت کا سراغ لگانا ناممکن ہی ہے۔ کیونکہ اصول غیر یقینیت (Uncertainty Principle) کے مطابق سائنسدان کسی بھی ذرے کی پوزیشن اور رفتار ایک ساتھ نہیں بتا سکتے۔ اگر وہ اس کی پوزیشن صحیح بتاتے ہیں تو اس کی صحیح رفتار نہیں بتا سکتے۔ صحیح رفتار بتاتے ہیں تو پوزیشن نہیں اور مستقبل میں

کون سا ذرہ کہاں ہوگا اس کا دار و مدار ان دونوں چیزوں پر ہے لہذا سائنسی اعتبار سے ہم کیسے ہی نظریات بنالیں ہم ایک ذرے تک کا مستقبل نہیں بتا سکتے چہ جائیکہ کائنات کے بارے میں کچھ وحدانی نظریہ (بے حاشہ نظریات کو یکجا کر کے) پیش کر سکیں۔ سائنسی نظریات کی روشنی میں ہم ایک ذرے تک کا مستقبل نہیں بتا سکتے یہ سائنسی مفروضہ ہے۔ اور اسی مفروضے کی روشنی میں یہ سوال اٹھ کھڑا ہوا ہے کہ وہ واحد حقیقت جو ہر سائنسی نظریے سے جھانک رہی ہے وہ واحد حقیقت جس کی طرف سائنسدانوں کی برسوں کی تحقیقات اشارہ کر رہی ہیں کیا کبھی وہ واحد حقیقت سامنے بھی آئے گی؟ کیا سائنس دان کبھی وحدانی نظریہ پیش کر سکیں گے؟ کیا کبھی کسی متحدہ سائنس کا وجود بھی ہوگا؟

سائنسی اصول و قواعد کی روشنی میں تو یہ ناممکن ہے یا پھر سائنس کو یہ معممہ حل کرنے کے لئے صدیاں درکار ہیں۔ جبکہ کائنات اپنے سفر کے اختتامی مراحل طے کر رہی ہے لہذا یہ انسان کی انتہائی نااہلی ہے کہ کائنات ابتداء کر کے اپنے اختتامی پوائنٹ پر پہنچ گئی ہے اور انسان اب بھی یہ کہہ رہا ہے کہ کائنات کو سمجھنا ناممکن ہے۔ یہ مجبوری محض سائنس کی ہے سائنس نے اپنے اوپر اتنی پابندیاں عائد کر لیں ہیں کہ وہ سامنے کی حقیقت کو بھی اپنے قائم کردہ فرسودہ اصولوں کی روشنی میں جھٹلانے پر مجبور ہے۔ لیکن فلسفہ ایسی کسی مجبوری کو قبول نہیں کرتا۔ حقیقت یہ ہے کہ سائنس بھی فلسفہ ہی کی پیداوار ہے کل بھی اور آج بھی فلسفیانہ نظریات ہی نے سائنس کو تجرباتی بنیادیں فراہم کی ہیں پہلے کوئی فلسفہ کوئی فکر جنم لیتی ہے پھر کوئی عملی تجرباتی صورت سامنے آتی ہے۔ فلسفے ہی کی عملی شکل کا نام ایجاد ہے۔ فلسفہ پوری کائنات کے اسرار کھوجتا ہے بغیر کسی مجبوری و معذوری کے حقیقت کو کھلی آنکھ سے دیکھتا اور قبول کرتا ہے۔ لہذا آج ہم بغیر کسی سائنسی بیساکھی کے اسی فلسفے کی رو سے انسان اور کائنات کو کھلی آنکھ سے دیکھیں گے اس پر غور و فکر کر کے حقیقت کا کھوج لگائیں گے۔ قوتِ واحدہ کی نشاندہی کریں گے۔ اور وحدانی نظریہ پیش کر کے یونیفائیڈ سائنس کی بنیاد رکھیں گے بلکہ میں یہاں یونیفائیڈ سائنس کی تین اہم شاخیں (کائنات، انسان، روح،) متعارف کروا رہی ہوں۔ (جب کہ یہ سب کچھ ابھی سائنس کے بس کا نہیں)۔ اب یہاں ہم انسان کو جاننے کی سعی میں راست قدم اٹھاتے ہیں۔ اور انسان کو جاننے کی اسی کوشش سے ہمیں کائنات کی واحد حقیقت (Grand Singularity) کا سراغ ملے گا اس لیے کہ کائنات اور اسکی تمام تر

موجودات (بشمول انسان) اسی قوت واحدہ کا مظہر ہیں۔ اور اگر ہم نے انسان کو جان لیا تو ہمیں کائنات کی واحد حقیقت (Grand Singularity) کا سراغ مل جائے گا۔ اور اگر ہمیں اس قوت واحدہ کا سراغ مل گیا تو ہمیں کائنات اور اس کے خالق کا سراغ مل جائے گا۔ اس لیے کہ خالق نے کائنات اور اس کی تمامتر موجودات انسان کے لیے بنائی ہیں۔ لہذا انسان کو جان کر ہم نہ صرف کائنات اور اس کی تمامتر موجودات بلکہ ان تمام کے خالق کو بھی جان جائیں گے۔ لہذا انسان "متحدہ سائنس کی سب سے اہم شاخ ہے۔ اور یہاں ہمارا موضوع یہی "انسان" ہے۔

83734

## حصہ اول

### باب نمبر ۱۔ انسانی کام کی تاریخ

حصہ اول میں انسان پر ہوئے تمام ادوار کے کاموں کا تنقیدی جائزہ، تجزیہ، موازنہ اور تبصروں کے بعد خوبیوں اور خامیوں کی نشاندہی کی گئی ہے اور نتائج اخذ کیے گئے ہیں

### باب نمبر ۱۔ انسانی کام کی تاریخ

- (1)۔ انسان
- (2)۔ انسان کیا ہے
- (3)۔ ماورائی علوم
- (4)۔ انسان پر جدید سائنسی تحقیقات
- (5)۔ انسان کی ابتدائی تعریف
- (6)۔ یونانی فلسفیوں کی انسان پر بحث
- (7)۔ مسلمانوں (صوفیوں و سائنسدانوں) کا کام
- (8)۔ انسان کی جدید تعریف
- (9)۔ قدیم انسان
- (10)۔ مختلف اقوام کے عقیدے



## 1- انسان

کائنات میں بے شمار انواع ہیں، بے شمار موجودات ہیں۔

انسان کائنات کی بے شمار انواع میں سے ایک نوع اور لا تعداد موجودات میں سے ایک وجود ہے۔ لیکن تمام موجودات میں انسان کی انفرادیت یہ ہے کہ کائنات اور کائنات کا ہر وجود براہ راست یا بالواسطہ انسان سے مربوط اور اسی انسان ہی کے لئے موجود ہے۔

لیکن تمام موجودات میں انفرادیت کے باوجود انسان بھی اسی 'واحدشے' سے بنا ہے جس سے کہ کائنات اور اس کی تمام موجودات بنی ہیں۔ لہذا ہم خود کو سمجھ گئے تو ہم کائنات اور اس کی موجودات کے بنیادی فارمولے کو سمجھ جائیں گے۔ لہذا ہم کائنات کی 'واحد حقیقت' (GRAND SINGULARITY) کا سراغ لگانے کے لئے بہت اوپر آسمان کی وسعتوں پر نظر دوڑانے سے پہلے ذرا سہل طریقہ اختیار کرتے ہوئے اپنے اندر جھانک کر دیکھتے ہیں کہ بقول اقبال:

تُو اگر میرا نہیں بنتا نہ بن اپنا تو بن

اپنے من میں ڈوب کر پا جا سراغِ زندگی

درحقیقت اپنے اندر جھانک کر اپنے من کی دنیا کو دریافت کر کے ہم نہ صرف اس عظیم تخلیق انسان کو جان لیں گے بلکہ خود کو جاننے کے عمل میں ہم انسان کے خالق یعنی آخری حقیقت (GRAND SINGULARITY) کو بھی پہچان لیں گے یعنی سراغِ زندگی پالیں گے۔

حضرت محمد ﷺ نے حدیث قدسی میں فرمایا:

”الانسان سری وانا سری“

ترجمہ:- انسان میرا راز ہے اور میں انسان کا راز

ایک اور حدیث میں یوں اس حقیقت کو بیان کیا گیا ہے ”من عرف نفس فقد عرف رب“

ترجمہ:- جس نے خود کو پہچانا اس نے اپنے رب کو پہچانا۔ کیونکہ کہ وہ ہمارے اندر ہی تو ہے۔

ترجمہ:- اور سب کا خدا اور باپ ایک ہی ہے جو سب کے اوپر اور سب کے درمیان اور سب کے

اندر ہے۔ افسیوں۔ باب ۴ (۶)

ترجمہ:- وہ تمہارے نفسوں کے اندر ہے تو تم کیوں نہیں دیکھتے (قرآن)

جب ہماری اور کائنات کی حقیقت خود ہمارے اندر ہے تو کیا وجہ ہے کہ ہم اپنے اندر جھانک کر نہیں دیکھتے۔ اگر ہم اپنے اندر جھانکیں تو کائنات ہمیں کھلی کتاب نظر آئے گی۔ یعنی انسان خود اپنے اندر کائنات سمیٹے بیٹھا ہے۔ لیکن اس حقیقت سے قطع نظر انسان نے ہمیشہ خود سے صرف نظر کیا ہے وگرنہ خالق کائنات نے انسان جیسا با اختیار اور طاقتور اپنے بعد کسی اور کو نہیں بنایا ایسا طاقتور کہ لامتناہی کائنات بنا کر اس کی بادشاہی انسان کے حوالے کر دی۔

حضرت مسیح نے کہا: ترجمہ:- کیا تمہیں علم نہیں کہ آسمان کی بادشاہت تمہارے اندر ہے۔

خالق کائنات نے تو کائنات تخلیق کر کے انسان کو سوئپ کر اسے با اختیار کیا تھا۔ کائنات اس کے لئے مسخر کی تھی۔ لیکن خالق کے بعد کائنات کی طاقتور ہستی انسان آج اپنی طاقت اپنے اختیار کو بالکل فراموش کر کے خود ساختہ مجبور یوں کا غلام بنا بیٹھا ہے۔ کائنات کا اشرف ترین انسان آج خود کو جانور ثابت کرنے پر تلا بیٹھا ہے۔ ہمیں اپنی حیثیت اپنے اختیار کو پہچاننا ہو گا تاکہ ہم اس عظیم الشان کائنات کی خلافت کے اہل قرار پائیں۔ ہمیں اپنے اندر جھانک کر اپنا کھوج لگانا ہی ہو گا۔

ترجمہ:- پس ہم انہیں دکھائیں گے اپنی نشانیاں کائنات میں اور خود ان کے نفسوں میں تاکہ ان پر ظاہر ہو جائے کہ یقیناً وہ حق ہے۔ (حم السجدہ ۵۳)

کائنات سے متعلق حیران کن سائنسی دریافتیں تو آج ہمارے سامنے ہیں اور مزید مہجور حیرت ہوں کہ دنیا کیا سے کیا ہو جائے گی، لیکن اب 'انفس' کے راز بھی کھلنے لگے۔ ایٹم کی طرح انسان کے اندر بھی ایک نیا جہان دریافت ہو رہا ہے۔ انسان اپنے اندر جھانک کر اس وسیع دنیا کو بھی حیرت سے دیکھ رہا ہے اور انجانی نگاہوں سے دیکھ تو رہا ہے لیکن اپنے اس باطنی رخ کو سمجھ نہیں پا رہا، الجھ رہا ہے اور آج اس سے یہ گتھی سلجھ نہیں رہی کہ آخر کیسا راز ہے یہ 'انسان'؟

## 2۔ انسان کیا ہے

انسان کیا ہے؟ یہ معمہ کبھی حل نہیں ہوا۔ اگرچہ انسان کو جاننے کی سعی ہر دور میں ہوئی۔ ہزاروں برس سے ہر دور کے لوگ مختلف ذالیوں سے انسان پر تحقیق کرتے رہے ہیں لیکن نتیجہ ندارد۔ ماضی

کا انسان عرصہ دراز تک خود کو بندر کی اولاد کہتا رہا اور اپنی ہر تحریر و تحقیق سے خود کو جانور ثابت کرنے کی سعی میں لگا رہا۔ ابھی یہ مسئلہ حل نہیں ہوا تھا کہ انسان بندر کی اولاد ہے یا نہیں کہ کچھ فلسفی ذہن، روح اور نفس کا تذکرہ کرنے لگے۔ ان کا خیال تھا کہ انسان ذہن و جسم یا روح و جسم کا مرکب ہے۔ پھر انہی فلسفیوں سے سائنسدان پھوٹے جن کی ضد تھی کہ انسان محض مادی جسم ہے اور آج بھی مادی جسم پہ کام کرنے والے کہتے ہیں کہ اس جسم میں روح کی گنجائش نہیں اور مادی جسم ہی آخری حقیقت ہے جبکہ روح تجربے کی زد میں نہیں لہذا ایسے غیر مرئی مفروضے علم کی حدود میں نہیں آسکتے اور پھر انہی صدی سائنسدانوں نے خود ہی انسان کا روحانی تشخص یا جسم لطیف (AURA) بھی دریافت کر لیا یوں انہیں اپنی وہ ضد کہ مادی جسم ہی آخری حقیقت ہے چھوڑنی پڑی۔ ہزاروں برس سے انسان پر ان تمام متفرق و متنوع موضوعات پہ کام ہو رہا ہے اور آج بھی جاری ہے۔ کوئی بھی کام درجہ بدرجہ ترقی کر کے آگے بڑھتا ہے جبکہ انسان پہ ہونے والے کام میں یہ خصوصیت ہے کہ انسان پہ کہیں تو اس کی تخلیق کے حوالے سے کام ہو رہا ہے۔ کوئی ارتقا کا حامی ہے۔ تو کہیں مادی جسم پہ کام ہو رہا ہے۔ کہیں روح پہ کام ہو رہا ہے۔ کہیں نفس پہ تحقیق ہو رہی ہے۔ لیکن انسان پہ ہو رہے یہ تمام کام انفرادی کام ہیں جن کا ایک دوسرے سے کوئی تعلق نہیں۔ آج انسان پر مندرجہ ذیل موضوعات پر تحقیق و تجربات جاری ہیں۔

۱۔ انسان کا ارتقاء

۲۔ انسان کی تخلیق

۳۔ مادی جسم

۴۔ روح

۵۔ نفس

۶۔ اورا (AURA)، چکراز

(۱)۔ انسان کا ارتقاء

مذہبی آسمانی کتابوں سے ملنے والے حقیقی علم کی بدولت انسان خود کو ہمیشہ سے باشعور، باعلم اور تہذیب یافتہ مکمل انسان تصور کرتا تھا۔ جبکہ بعض فلسفیوں کی بدولت علمی دنیا میں انسان نے خود کو پہلی دفعہ حیوان کے طور پر متعارف کروایا۔ اور اپنی ہر تحریر و تحقیق سے خود کو جانور ثابت کرنے کی سعی

میں لگا رہا۔ اسی کوشش میں بحث کے نئے باب کھلے مثلاً اگر انسان کے آباؤ اجداد حیوان تھے تو وہ موجودہ انسانی شکل تک کیسے پہنچا۔ اس کی تخلیق ہوئی یا ارتقاء، مسلسل ارتقاء ہوا یا منزل بہ منزل ہزاروں برس سے یہ بحث جوں کی توں جاری ہے اور آج بھی ماہرین جدید سائنسی ذریعوں سے اس بے کار کی جدوجہد میں مصروف انسان کو حیوان ثابت کرنے پر تلے ہوئے ہیں جب کہ اس کوشش میں وہ سو فیصد ناکام رہے ہیں۔ لیکن اس بیکار کی جدوجہد سے کارآمد ثبوت مل رہے ہیں اور ان جدید تحقیقات سے یہ ثابت ہو چکا ہے کہ ارتقاء کے نظریات غیر سائنسی مفروضوں پر مشتمل بودے، بے بنیاد فلسفے ہیں۔ ارتقاء کی کہانیاں جھوٹی، تصویریں جعلی اور ڈھانچے من گھڑت اور فریب پر مبنی جعل سازی کے شاہکار ہیں۔ لیکن ارتقاء کے حامی آج بھی اپنے قدیم نظریات پر اڑے ہوئے ہیں کیونکہ وہ اس غلط فہمی میں مبتلا ہیں کہ ارتقاء کا نظریہ درحقیقت مذہبی عقیدہ اور آفاقی نظریہ ہے۔ اور ان کی اس بڑی غلط فہمی نے نہ صرف بے بنیاد مفروضوں کو جنم دیا بلکہ قوموں کو گمراہ اور ذہنوں کو پراگندہ کیا ہے اور بے انتہا علمی نقصان کیا ہے۔

## (۲)۔ انسان کی تخلیق

آج جدید تحقیقات کے پیش نظر کچھ لوگوں نے روح کو تسلیم کر لیا ہے لہذا اب ان کا تبدیل شدہ موقف یہ ہے کہ انسان کا جسم تو طبعیاتی حقیقت یعنی کہیں نہ کہیں ارتقاء یافتہ ہی ہے ہاں لیکن اس کی انفرادیت دراصل اس کی روح ہے۔ یہ بھی محض غلطی ہے، انسان ہر لحاظ سے منفرد ہے۔ آج جدید سائنسی تحقیقات سے بہت سے سائنسدان نہ صرف ارتقائی مفروضے کی نفی کر رہے ہیں بلکہ ارتقاء کے خلاف اور تخلیق کے حق میں بہت سے سائنسی شواہد بھی اکٹھے ہو گئے ہیں۔

مثلاً DNA کی دریافت اور کوئٹم جمپ (Quantum Jump) یا کیمبری دھماکہ (Cambrian Explosion) جیسی تھیوریوں سے ثابت ہو گیا ہے کہ کوئی مخلوق ارتقاء یافتہ نہیں اور جدید تحقیقات سے یہ بھی ثابت ہوا ہے کہ تمام انسان ایک ہی ماں کی اولاد ہیں۔ اس دریافت سے بھی اس نظریے کی نفی ہوتی ہے کہ انسان کے آباؤ اجداد حیوان تھے۔ بحر حال تا حال انسان کے ارتقاء اور تخلیق کی متضاد بحث جوں کی توں جاری ہے۔

## (۳)۔ مادی جسم

برسوں مادہ پرست مادی جسم کو ہی آخری حقیقت قرار دیتے رہے۔ سائنسدان برسوں سے مادی جسم پہ کام کر رہے ہیں اور آج ہمارے پاس مادی جسم کا بہت سا علم ہے۔ اگرچہ AURA کی دریافت سے مادہ پرستوں کے اس خیال کی نفی ہو چکی ہے کہ مادی جسم ہی آخری حقیقت ہے لیکن پھر بھی حیرت انگیز طور پر مادی جسم پر کام کرنے والے آج بھی انسان کے روحانی تشخص کی نفی کرتے ہیں اور یہی کہتے نظر آتے ہیں کہ انسانی جسم میں کہیں روح کی گنجائش نہیں۔ آج اس قسم کی ہٹ دھرمی کو ہم صرف لاعلمی ہی کہہ سکتے ہیں۔ اگر جسم میں روح کی گنجائش نہیں تو پھر یہ نئی دریافت "AURA" کیا ہے۔؟ جس کی کہ کر لین فوٹو گرافی کے ذریعے تصویر کشی بھی کر لی گئی ہے۔

اگر جسم میں روح نہیں تو پھر ہم آج عمل خود کر کے الزم تقدیر کو کیوں دے رہے ہیں؟ آج سائنسدان کیوں نہیں جانتے کہ یہ انتہائی پیچیدہ مشینری (مادی جسم) خود بخود کیسے اتنے منظم طور پر متحرک ہے۔؟ سائنسدان نہیں جانتے کہ یہ منظم اور مسلسل حرکت اچانک موت کی صورت میں کیوں رک جاتی ہے؟ ایک نامور انسان کہاں چلا جاتا ہے کہ اس کا نشان بھی باقی نہیں بچتا؟ ہم کیسے کھاتے پیتے ہیں، سوتے جاگتے ہیں، کہاں سے آرہی ہیں یہ منظم اطلاعات آخر کون ہمیں کنٹرول کر رہا ہے، خواب، عقل، چھٹی حس، موت و حیات اور خود انسان کیا ہے؟ کہاں سے آیا ہے؟ کہاں جا رہا ہے؟ کہاں جانا ہے؟ ان تمام سوالوں کے کیا جوابات ہیں۔؟؟؟

حقیقت یہ ہے کہ مادی جسم سے متعلق تمام معلومات کے باوجود ہمارا مادی جسم کا علم اس وقت تک نامکمل ہے جب تک ہم روح کو نہیں جانتے کیونکہ مادی جسم کا تمام تر دار و مدار روح پہ ہی ہے لہذا اگر ہم مادی جسم کا حقیقی علم چاہتے ہیں تو ہمیں روح کو جاننا ہی ہوگا۔ ورنہ روح سے لاعلمی کے سبب ہمارا مادی جسم کا علم نامکمل اور ناقص ہے۔

## (۴)۔ روح

روح پر بھی ہزاروں برس سے کام ہو رہا ہے اور ہزاروں برس سے آج تک ہر مفکر اور ہر روح کا تجربہ و مشاہدہ کرنے والا روح کو ہدایت کا سرچشمہ کہہ رہا ہے۔ ابتداء سے آج تک روح کی بس

یہی تعریف کی گئی ہے۔ حالانکہ قصہ اتنا مختصر نہیں! آخر ہدایت کے سرچشمے سے کیا مراد ہے؟ روح کیا ہے اور روح کی شناخت کیا ہے؟

ہر دور میں روح کو جسم لطیف کے طور پر شناخت کیا جاتا ہے۔ ہزاروں برس کے ادوار میں اگر چند لوگوں نے روح کو شناخت کیا بھی ہے تو انہوں نے اس کی تعریف یا تعارف سے معذوری کا اظہار کیا ہے۔ ان کے خیال میں روح وہ معممہ ہے جو حل طلب نہیں جس کی تعریف ممکن نہیں۔ یعنی ہزاروں برس کے روح پر ہونے والے بے تحاشا تحقیقی کام میں نہ تو روح کی تعریف ہو سکی ہے نہ انفرادی شناخت قائم ہوئی ہے بلکہ یہ معاملہ سلجھنے کے بجائے مزید الجھ گیا ہے۔

## (۵)۔ نفس

شروع سے آج تک نفس کی تعریف خواہش یا نفسانی خواہش کی جاتی رہی ہے۔ یا انسان کی بعض پیچیدہ خصوصیات کو نفس سے منسوب کر دیا جاتا ہے۔ اور نفس کی اسی مفروضہ تعریف پر نفس، انفس، نفسیات یا سائیکالوجی، پیراسائیکالوجی وغیرہ وغیرہ کے موضوعات پر جانچ پڑتال کی جاتی ہے۔ بے تحاشا مواد اور کتابیں تحریر کی جاتی ہیں۔

جبکہ نفس کی یہ تعریف ہی درست نہیں۔ نفس کسی خواہش کا نام نہیں ہے۔ خواہش اور نفسانی خواہش تو نفس کی بے تحاشا خصوصیات میں سے دو خصوصیات ہیں۔ اور خود نفس کوئی مفروضہ نہیں حقیقت ہے اور اپنی انفرادی شناخت رکھتا ہے۔ درحقیقت نفس مادی جسم سے بھی بڑا تحقیقی موضوع ہے۔ نفس ہر دور میں موضوع بحث تو رہا ہے۔ لیکن ہزاروں برس کے کام میں نہ تو نفس کی انفرادی شناخت ہو سکی ہے اور نہ ہی اس کی صحیح تعریف اور اصل تعارف سامنے آ سکا ہے۔ لہذا نفس سے متعلق تمام مواد بھی مفروضوں پر مشتمل ہے کہیں اتفاقاً صحیح تو زیادہ غلط۔

## (۶)۔ اورا AURA، چکراز

انسان کے حوالے سے AURA کی دریافت نے تحقیق کے نئے در واکے ہیں۔ ایک دور میں انسان نے روح کو غیر مرئی (Invisible) کہہ کر علم کی حدود سے خارج کر دیا تھا اور فقط مادی جسم کو آخری حقیقت قرار دینے والے سائنسدانوں نے ہی بالا آخر اٹھارویں صدی کے آخر

میں تسلیم کیا کہ ایک لطیف قسم کی توانائی ہمارے جسم میں سرایت کئے ہوئے ہے۔ انسان کے روحانی باطنی تشخص کا انکار کرنے والے سائنسدانوں نے بالآخر 1930ء میں انسان سے جڑے اس کے لطیف وجود کی تصویر کشی بھی کر لی۔ اس لطیف وجود کا نام انہوں نے AURA رکھا۔ اسی میدان میں مزید تحقیقات جاری ہیں اور نئی Subtle Bodies اور چکر از کا مشاہدہ کیا جاتا ہے۔ آج سائنسدانوں نے ایٹم کی طرح انسان کے اندر بھی ایک جہان تلاش کر لیا ہے اور یہ دریافتیں ابھی جاری ہیں۔

مادے کو آخری حقیقت کہنے والے اب ہر شے کے پس منظر میں اس کا نورانی تشخص تلاش کر رہے ہیں جو مفروضوں کو خارج از علم قرار دے رہے تھے وہ کہہ رہے ہیں کہ کائنات ایسے اسرار سے بھری پڑی ہے جو تجربے کی زد میں نہیں لیکن آج ہم انہیں کھلی آنکھ سے دیکھ کر انکا انکار بھی نہیں کر سکتے۔ آج انسان پر ہر پہلو سے تحقیق و تجربات ہو رہے ہیں اور ساتھ ہی انسان کو حیوان ثابت کرنے کی جدوجہد بھی جاری ہے۔ اگرچہ نتائج سو فیصد خلاف ہی جا رہے ہیں اسی جدوجہد سے تخلیق کے شواہد مل رہے ہیں۔ روح، نفس اور مادی جسم پہ بھی تحقیقات جاری ہیں۔

ذہن، مادی جسم، روح، نفس یا AURA چکر از تمام کی الگ حیثیتوں اور خصوصیات کے علاوہ بحیثیت مجموعی انسان کی بے شمار خصوصیات بھی ہیں اور انہی خصوصیات کے بل پر ترقی کی اوج پر بیٹھا انسان آسمانوں تک جا پہنچا۔ اس ذہن ترین انسان کی یہ تمام صلاحیتیں اس کی کل صلاحیتوں کا محض پانچ سے دس فیصد ہیں۔ تو پھر اس حیرت انگیز انسان کی باقی پچانوے فیصد صلاحیتیں کہاں پوشیدہ ہیں اور آخر کیوں بے خبر ہے انسان اپنی ان بے پناہ صلاحیتوں سے؟ اور یہ روح، نفس اور جسم آخر کیا ہیں؟ کیا اور کیسا تعلق ہے ان کا انسان سے؟ اور بحیثیت مجموعی انسان کیا ہے؟ ہزاروں برس کی مسلسل تحقیق جستجو کے باوجود یہ تمام سوال تشنہ ہیں۔ آج انسان کی تعریف کرنا جوئے شیر لانے سے کہیں بڑھ کر ہے۔ علمیت کے دعوے کرنے والا انسان آج تک خود کو نہیں جان پایا! آج انسان اپنی تعریف کرنے سے قاصر ہے۔

افسوس! صدیوں کا انسان آج بھی ماورائی کی صف میں بے نشان کھڑا ہے!

3۔ ماورائی علوم

سوال یہ ہے کہ ماورائی علوم سے کیا مراد ہے؟

یہ لفظ ماورائی ماضی کی سنگین غلطیوں کا نتیجہ ہے لہذا اس کا جاننا ضروری اور اس کا ازالہ انتہائی ضروری ہے۔

کائنات آج ہمارے سامنے کھلی کتاب کی طرح ہے۔ ہم بڑی بڑی دور بینوں سے اس کی وسعت کے نظارے تو کر رہے ہیں لیکن یہ بے پناہ وسعت ہمارے تجربے اور ادراک کی زد میں نہیں۔ لہذا کائنات کی وہ بے تحاشا ظاہر اور پوشیدہ موجودات و مخلوقات جو ہمارے ادراک اور تجربات کی زد میں نہیں دیگر ذرائع سے ان کا کھوج لگانے اور ہر ممکن طریقے سے ان کا علم حاصل کرنے کے علوم کو ہم نے میٹافزکس، پیراسائیکالوجی، انفس وغیرہ وغیرہ کے نام دیئے ہیں۔ انہیں علوم اور دیگر تمام روحانی علوم کو ماورائی علوم کہا جاتا ہے۔

انہیں علوم کی مسلسل سائنسی وغیر سائنسی شہادتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ ہماری کائنات میں ہمارے علاوہ اور بھی مخلوقات و موجودات موجود ہیں۔ جن میں سے بعض مخلوقات مثلاً جن، فرشتے، روح اور شیطان وغیرہ کے بارے میں ہم کچھ معلومات رکھتے بھی ہیں لیکن یہ معلومات

۱۔ سرسری معلومات ہیں،

۲۔ دوسرے یہ معلومات مفروضہ معلومات ہیں۔ اس کہ وجہ یہ ہے کہ ہم

۳۔ ان مخلوقات میں کوئی امتیازی فرق نہیں رکھتے۔

۴۔ ہم ان مخلوقات کی انفرادی شناخت نہیں رکھتے۔

ہم یہ تمیز نہیں کر سکتے کہ ہمارے ساتھ جو خرق عادت واقعہ پیش آیا ہے وہ کسی جن کی کارستانی ہے یا کسی فرشتے کی یا خود ہماری روح ہی ہے۔ اس لاعلمی کے سبب ہم ہر مخلوق کو ماورائی مخلوق اور ہر واقعہ کو ماورائی واقعہ قرار دیتے ہیں۔ اور مختلف روحانی علوم میں جو مختلف واقعات پہ جانچ پڑتال کی جاتی ہے وہ بھی ایسی ہی ماورائی ہے یعنی ہوا میں تیر چلانے کے مترادف جن میں سے کوئی اتفاقاً صحیح ہے تو زیادہ غلط۔ روح، جن، فرشتے، شیطان اور یقیناً دیگر مخلوقات میں امتیاز رکھنا انتہائی ضروری ہے جیسا کہ ہم ایک دوسرے میں امتیاز رکھتے ہیں۔ یہ راشد ہے یہ آصف، یہ مرد ہے یہ عورت یہ جانور ہے یہ پرندہ ہم ان تمام میں امتیازی فرق رکھتے ہیں لہذا ہر وجود کی خصوصیات و اعمال کا علم رکھنے کی وجہ سے ہم غلطی نہیں کرتے اور صحیح نتیجہ نکالتے ہیں۔ مثلاً کہیں عمارت کی تعمیر ہوئی ہے تو ہم



یہ نہیں کہتے کہ یہ عمارت فلاں جانور نے تعمیر کی ہوگی۔ ہم اپنے علم سے انسانوں اور جانوروں اور ان کے کاموں کا فرق جانتے ہیں۔ لہذا ہم کہتے ہیں کہ یہ عمارت فلاں انسان نے تعمیر کی ہے۔ ہم اکثر مخلوقات یا انواع کی خصوصیات و افعال سے واقف ہیں لہذا غلطی نہیں کرتے جبکہ دیگر مخلوقات میں امتیاز رکھنا تو درکنار ہم (سرسری معلومات کے علاوہ) ان مخلوقات کا کوئی علم ہی نہیں رکھتے۔ ہمیں معلوم ہی نہیں کہ ہمارے ارد گرد کائنات میں کتنی، کون کون سی، کیسی کیسی اور کہاں کہاں مخلوقات آباد ہیں۔ لہذا جب حادثاتی طور پر ہم کسی انجانی مخلوق کا مشاہدہ کرتے ہیں یا لوگوں کے ساتھ کچھ خرق عادت واقعات پیش آتے ہیں تو وہ بغیر کسی امتیاز کے ہر مخلوق کو ماورائی مخلوق اور ہر واقعہ کو ماورائی واقعہ قرار دیتے ہیں۔

مثلاً امریکہ میں کئی گئے ایک سروے میں جب یہ سوال اٹھایا گیا کہ کیا کبھی کسی نے کسی فرشتے کا مشاہدہ کیا ہے؟

جواب میں تقریباً 81 ملین امریکیوں نے فرشتوں سے ملاقات کا دعویٰ کیا!

اب یقیناً ان لاکھوں لوگوں میں سے سب نے فرشتے کا مشاہدہ نہیں کیا کسی نے کسی روح سے ملاقات کی کسی نے جن کو دیکھا، کسی نے فرشتے اور کسی نے کسی اور مخلوق کو لیکن عام لوگ ان تمام مخلوقات میں امتیاز نہیں رکھتے لہذا جب کبھی کسی بھی مخلوق کا تذکرہ ہوگا ہر شخص اسی تذکرے میں اپنی ملاقات یا واقعہ کا ذکر ضرور کرے گا کہ ہاں میری بھی ملاقات ہو چکی ہے جیسا کہ فرشتے کا ذکر ہوا تو سب نے بلا امتیاز اپنی ملاقات کا تذکرہ کیا۔ جس طرح عام لوگ اپنے ماورائی واقعات کا تذکرہ بلا امتیاز کرتے ہیں اسی طرح ماہرین بھی بلا امتیاز جانچ پڑتال کرتے ہیں۔ جس سے روحانی علوم میں ایک بے تحاشہ بحرانی کیفیت پیدا ہو گئی ہے۔ لہذا اب ماورائی علوم کا حال یہ ہے کہ نام نہاد ماہرین یا ماہر روحانیت کچھ ماورائی واقعات اکٹھے کر کے ان کی وضاحت اپنے مذہبی معیار کے مطابق کرتے ہیں۔

۲۔ کچھ سائنسدان انہی ماورائی واقعات کی سائنسی جانچ پڑتال کرنے کی کوشش کرتے ہیں،

۳۔ اور کچھ نفسیات دان ماورائی مخلوق کو (نظر کا دھوکا) فریب نظر اور ماورائی واقعات کو توہمات یا نفسیاتی بیماری قرار دے کر لمبے چوڑے فلسفے بیان کرتے ہیں۔ یہ تمام طریقہ کار درست نہیں ہیں۔ ضرورت اس امر کی ہے کہ روحانی علوم کے ماہرین اپنے علم اپنے سبجیکٹ پہ مکمل عبور حاصل کریں

اس کا طریقہ یہ ہے کہ مخلوقات میں امتیازی فرق تلاش کریں۔ ان تمام کو انفرادی حیثیت میں شناخت کریں۔ ہر مخلوق کی تمام تر خصوصیات کو شناخت کریں۔ جب کوئی ماہر اپنے علم پہ عبور پالے گا تو وہ واقع سے شناخت کر لے گا کہ یہ تو فلاں مخلوق کی کارستانی ہے۔ جیسے ہم مکان بنا دیکھ کر یہ کہہ دیتے ہیں کہ یہ تو فلاں انسان نے بنایا ہے۔ (یوں نہیں کہتے کہ یہ فریب نظر ہے یا کسی جانور کی کارستانی ہے) لیکن جب تک ہم ان مخلوقات کا علم حاصل کر کے ان میں امتیاز نہیں برتیں گے تب تک تمام تر ماورائی مخلوقات پہ جانچ پڑتال بے سود ہے۔ بحر حال یہاں اس بحث کا حاصل یہ ہے کہ آج انسان بھی اپنے آپ اپنی روح اپنے نفس سے لاعلمی کے سبب آج اپنی روح و نفس کو ہی ماورائی مخلوق قرار دے کر اپنے آپ کو ہی ماورائی مخلوق سمجھ بیٹھا ہے۔ لہذا موضوع انسان پہ مختلف اور متفرق موضوعات روح، نفس، ارتقاء آواگون، زہن، لاشعور، شعور وغیرہ وغیرہ پہ صدیوں سے جو بے شمار سائنسدان، محققین، فلسفی صوفی کام کر رہے ہیں یہ تمام تر کام بے نتیجہ ہیں۔ اس لیے کہ آج تک نہ تو ان تمام موضوعات (روح، نفس، زہن، لاشعور، شعور) کی انفرادی شناخت ہو سکی ہے نہ ہی انسان کی مجموعی تعریف آج تک ممکن ہوئی ہے۔ جبکہ آج میں برسوں کی مسلسل تحقیق اور غور و فکر کے بعد اپنے سبکیٹ "انسان" پہ سیر حاصل ریسرچ کر کے اس قابل ہو چکی ہوں کہ اپنے نئے نظریات کے ذریعے انسان کے انفرادی اجزاء کی شناخت کے بعد مجموعی انسان (روح، نفس، جسم) کی تعریف اور انفرادی شناخت قائم کروں۔

۱۔ لہذا یہاں ہم انسان کو ماورائی کی صف سے نکال کر اس کی انفرادی شناخت قائم کریں گے، اس کی تعریف کریں گے۔

۲۔ انسان پہ ہوئے تمام ادوار کے کاموں کا بلا تعصب جائزہ لیں گے وگرنہ اس سے پہلے کہیں محض روح پہ کام ہو رہا ہے کوئی محض جسم کو آخری حقیقت کہہ رہا ہے کوئی فقط نفس کا راگ الاپ رہا ہے وہ بھی بے مقصد۔

۳۔ تمام ادوار کے انسانی کاموں کی خوبیوں خامیوں کی نشاندہی کر کے اصلاح کریں گے

۴۔ ہر روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کریں گے۔

۵۔ روح و نفس کا تفصیلی تعارف اور خصوصیات کا ذکر کریں گے۔

۶۔ اور مجموعی انسان کی تعریف کریں گے۔

۷۔ انسان کی تخلیق اور فنائی ترتیب کو درست کر کے ترتیب وار بیان کریں گے۔

۸۔ ارتقاء اور آواگون جیسے مسائل کا حل پیش کریں گے۔

۹۔ تقدیر، جبر و قدر، ہبوط آدم جیسے نظریات کی تصحیح کریں گے

ہر دور میں انسان کے ارتقاء، تخلیق یا روح، نفس یا مادی جسم پر انفرادی کام تو ہوئے ہیں۔ لیکن یہاں ان تمام روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کر کے اور ان تمام کو باہم مربوط کر کے مجموعی انسان کی تعریف کرنے کی سعی کی جا رہی ہے، یعنی یہ پہلا انسانی عملی کام ہے۔

#### 4۔ انسان پر جدید سائنسی تحقیقات

سائنسدان عرصہ دراز تک مادی جسم کو ہی "انسان" قرار دیتے رہے۔ وہ صدیوں سے یہی کہتے چلے آ رہے تھے کہ مادی جسم ہی آخری حقیقت ہے۔

لہذا برسوں جدید سائنسی تحقیقات کا مرکز مادی جسم ہی رہا اور سائنسدان برسوں مادی جسم پر تحقیق کر کے مادی جسم کے راز افشاں کرتے رہے جس کے نتیجے میں آج مادی جسم کا ہم کافی زیادہ سائنسی علم رکھتے ہیں۔ جبکہ انسان کے باطنی پہلو کو جانتے ہی نہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ سائنسدان برسوں مادی جسم کو آخری حقیقت قرار دے کر انسان کے باطنی پہلو کو جھٹلاتے رہے اور انسان کی روح کو غیر مرئی اور غیر تجرباتی کہہ کر رد کرتے رہے۔ اور برسوں بعد بالا آخر سائنسدانوں نے ہی انسان کے باطنی رُخ کا تجرباتی ثبوت فراہم کیا اور آج انسان پر سب سے زیادہ تحقیقی، سائنسی اور تجرباتی کام اسی باطنی رُخ پر ہو رہا ہے۔ اور یہ کام کر رہے ہیں ڈاکٹر اور سائنسدان (وہم پرست یا مذہبی روحانی شخصیات نہیں جیسا کہ تصور کیا جاتا ہے)

اگرچہ روحانی علوم یا ماورائی علوم مشرق سے منسوب ہیں اور انسان کے باطنی روحانی تشخص کی زیادہ تر معلومات بھی ہمیں یہیں سے میسر آتی ہیں لیکن جدید سائنسی تحقیقات کا مرکز مغرب ہی رہا ہے۔ لہذا اسی حوالے سے! یورپ میں کارپرنیکی (۱۵۴۳ء) وہ پہلا مفکر تھا جس نے انسان کو روحانی حقیقت ثابت کرنے کی کوشش کی۔

گلیلیو (۱۵۶۴-۱۶۴۲)، نیوٹن (۱۶۴۲-۱۷۲۷)، ڈارون (۱۸۸۲-۱۸۰۹) اور

کیپلر نے بھی اس موضوع پر بحث کی۔ سرولیم کزکس وہ پہلے سائنسدان تھے جنہوں نے مادی دنیا پر روحانی اثرات کا سائنسی مطالعہ و تجزیہ کیا۔ ان کی کتاب (Research in the Phenomena of Spiritualism - 1874) نے بڑی مقبولیت حاصل کی۔ سرالیور لاج کی کتاب (Raymond - 1861) بھی اسی سلسلے کی اہم کڑی ہے۔ ان دونوں سائنسدانوں کی تحقیق اور تجربات پر اس مسلک کی بنیاد پڑی جسے ماڈرن سپرینچولزم کے نام سے پکارا جاتا ہے اور جو آجکل مغرب کی دنیا میں بڑے وسیع پیمانے پر زیر مشق ہے۔

طبعیات کے معروف سائنسدان سرالیور لاج کا کہنا تھا کہ جس طرح سائنسی طور پر تسلیم شدہ قوتیں مثلاً مقناطیسی کشش یا الیکٹرک سٹی خفیہ انداز میں کام کرتی ہیں مگر سب انہیں تسلیم کرتے ہیں اور ان کے وجود پہ ایمان رکھتے ہیں اسی طرح اس کائنات میں بہت سی قوتیں ایسی بھی ہیں جو انتہائی پوشیدگی سے اپنا کام سرانجام دے رہی ہیں۔ مگر بظاہر ان کے وجود کا سراغ نہیں ملتا محض اسی وجہ سے ان کا انکار کرنا نادانی ہوگی۔ لاج کا خیال تھا کہ اس موضوع پر ٹھوس تحقیقات کا آغاز ہونا چاہئے۔ اسی نے کہا میں نہیں سمجھتا کہ سائنسیات اور روحانیات ابھی تک پوری طرح تعصب سے آزاد ہو سکی ہیں میرے خیال میں ان دونوں کے درمیان ایک خفیہ ربط موجود ہے۔ لاج نے یقین ظاہر کیا کہ ایسا وقت ضرور آئے گا جب خالص سائنسی انداز میں اس پہلو پر تحقیق کی جائے گی اور اس بارے میں سنجیدگی سے سوچا جائے گا۔

اور وہ وقت آ گیا درحقیقت انگلینڈ کے اعلیٰ ترین اعزاز نائٹ ہڈ (Knight Hood) سے نوازے گئے معروف طبعیات دان لاج نے خود خالص سائنسی انداز میں انسان کی روحانی خصوصیات پر تحقیق کا آغاز کر دیا تھا۔ اگرچہ ان کے ساتھی سائنسدان سائنس کی بجائے انہیں روحانی چکروں میں پڑا دیکھ کر خبطی سمجھنے لگے تھے۔ جبکہ ایک اہم سائنسدان کی روحیت کی طرف بھرپور پیش قدمی کے نتائج سامنے آنے لگے اور سائنسی انداز میں اس موضوع پر تحقیق اور تجربات کا آغاز ہوا۔ لہذا سرالیور لاج سوسائٹی فار سائیکلک ریسرچ ان انگلینڈ Society for Psychological Research in England کے بانی ممبران میں سے سرالیور لاج کے ہم خیال کئی اہم نام ابھرے مثلاً ڈبلیو ایچ مارٹز (Frederic W.H. Myers) نے اس کام کو مزید آگے بڑھایا۔ مارٹز نے اپنی کتاب (Human Personality and its Survival

(of Bodily Death) میں سینکڑوں واقعات کا سائنسی تجزیہ کرنے کے بعد یہ نتیجہ اخذ کیا کہ جسمانی موت کے بعد انسان کی شخصیت کا وہ حصہ باقی رہتا ہے جسے 'سپرٹ' (Spirit) کہتے ہیں۔ اور پھر یہ سلسلہ چل نکلا۔

دو عالمگیر جنگوں کے بعد روحانیت پر ہزاروں کتابیں منظر عام پر آئیں اور یہ کتابیں لکھنے والے مذہبی انتہا پسند یا وہم پرست عوام نہیں بلکہ یہ سائنسدان، ڈاکٹر، فلسفی اور پروفیسرز تھے۔ لہذا ان معتبر لوگوں کی مسلسل توجہ، سائنسی تحقیق اور تجربوں سے اس علم نے عملی تجرباتی دنیا میں قدم رکھ دیا اور باقاعدہ لیبارٹریوں میں سائنسی بنیادوں پر تجربات ہونے لگے۔

مادام بلاؤٹسکی اور ایڈگر کیسی (ورجینیا 18 مارچ 1877) نے بھی روحانی صلاحیتوں کے عملی تجرباتی مظاہروں سے اُس وقت کے ڈاکٹروں سائنسدانوں کی توجہ اپنی طرف مبذول کروائی۔ جس مرض کے علاج میں میڈیکل ڈاکٹر نا کام رہ جاتے یہ روحانی معالج نہ صرف یہ کہ مرض دریافت کرتے بلکہ اس لا علاج مریض کا علاج بھی کر ڈالتے۔ انہوں نے ماضی اور مستقبل کے واقعات کی نشاندہی بھی کی۔ خوابوں کے اثرات، رنگ و روشنی سے علاج اور مسمریزم کی بڑھتی ہوئی مقبولیت نے اٹھارویں صدی کے آخر میں سائنسدانوں کو انسان کے اندر موجود مقناطیسیت سے متعارف کروایا۔

لہذا سائنسدانوں نے انسان کے اندر موجود اس مقناطیسیت کو الیکٹرو میکینیک فیلڈ (E. M. F) اور بائیوانرجی کے نام دیئے اور جدید سائنسی تحقیقات کے بعد بالآخر سائنسدانوں نے اعلان کیا کہ ایک لطیف توانائی ہمارے جسم میں سرایت کئے ہوئے ہے۔ چونکہ یہ نظریہ اس دور کے ٹھوس مانع گیس کسی سے مناسبت نہیں رکھتا تھا لہذا ابتداء میں انسان کے اندر دریافت شدہ اس لطیف توانائی کا نام 'ایٹھر' (Ether) رکھا گیا اور اس لطیف باطنی وجود کو ایٹھرک باڈی (Ethereic Body) کہا جانے لگا اس دور کے روحانی علوم کے ماہرین (مادام بلاؤٹسکی اور ایڈگر کیسی وغیرہ) نے اس ایٹھری وجود پر مقالے بھی تحریر کئے۔ یعنی برسوں انسان کے مادی جسم کو آخری حقیقت قرار دینے والے سائنسدانوں نے خود انسان کے باطنی تشخص کا اقرار کیا اور وہ موضوع جسے کچھ عرصہ پہلے تو ہم پرستی قرار دیا جاتا تھا وہ موضوع انیسویں صدی میں بھرپور طریقے سے سائنسدانوں کی توجہ کا موضوع بنا۔ لہذا اس موضوع پر ہزاروں کتابیں منظر عام پر آئیں مقالے لکھے گئے

سائنسی طرز کی تحقیقات تجزئے اور تجربات باقاعدہ لیبارٹریوں میں کئے گئے اور یہ محض نقطہ آغاز تھا۔ لہذا ۱۹۳۰ء کی دہائی میں روس میں کیرلین نامی الیکٹریشن نے اتفاقی طور پر ایک ایسا کیمرہ ایجاد کیا جس نے انسان کے اس باطنی وجود کی تصویر کشی بھی کر لی جس کا تذکرہ ہزاروں برس سے ہو رہا تھا۔ کرلین فوٹوگرافی کے ذریعے انسان کے باطنی وجود کو واضح طور پر دیکھا گیا۔ یہ انسان کے جسم سے جڑا ہوا بالکل مادی جسم کے جیسا ہیولائٹ دوسرا انسان تھا ایک لطیف روحانی وجود جسے سائنسدانوں نے AURA کا نام دیا۔ فزکس کی شاخ میٹافزکس نے AURA کو بائیو پلازمہ کا نام دیا۔ ۱۹۰۰ء سے اب تک سائنسدان اسے مختلف ناموں سے پکار رہے ہیں مثلاً الیکٹرو میگنیٹک فیلڈ (E. M. F) یا (H. E. F) یا بائیو انرجی یا بائیو پلازمہ، واٹل فورس، اوڈک فورس، قونٹ ایسنس، ففٹھ ایلیمنٹ یا جسم اثیر (Ethereic Body) جبکہ بنیادی نام AURA ہے۔ اب اس AURA پر سائنسی بنیادوں پر تحقیقات جاری ہیں۔ اب اسی Aura میں مزید چکراز (Chakras) اور سبٹل باڈیز Subtle Bodies بھی دریافت کی گئی ہیں۔ جدید سائنسی طریقوں سے AURA کو اس کی خصوصیات اعمال و افعال کو اور مادی جسم کے ساتھ اس کے تعلق کو سمجھنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ اور اس سلسلے میں لیبارٹریوں میں سائنسی بنیادوں پر کام ہو رہا ہے۔

مثلاً اسپر پچول ایسوسی ایشن آف گریٹ برٹن کی وسیع عمارت میں کئی لیکچر ہال، بیس پچیس کیبن نما کمرے ہیں یہاں روحانی تجربات ہوتے ہیں۔ لندن میں سوسائٹی فار دی سائیکل ریسرچ نے روحانیت پر سائنسی تجربات کا آغاز 1882 میں کیا۔ ہالینڈ میں مکالمہ ارواح کافن سائنس کی شکل اختیار کر گیا لہذا حیرت انگیز سائنسی تجربات کئے گئے۔

امریکہ کی دو خواتین ٹروڈی گرس ورلڈ اور باربر مارک نورانی مخلوقات سے رابطہ کروانے کی ماہر ہیں یہ اپنی پرائیویٹ پریکٹس سان ڈیاگو کیلی فورنیا اور ویسٹ پورٹ میں کرتی ہیں۔ امریکہ، لندن، انگلستان، ہالینڈ اور روس کے علاوہ یورپ کے کئی دوسرے ملکوں میں بھی پیراسائیکالوجی (روحانیت) کے ادارے بڑے پیمانے پر کام کر رہے ہیں۔ ایٹمی لیبارٹریوں کی طرح پیراسائیکالوجیکل ریسرچ کے بعض پروگرام انتہائی رازداری میں رکھے جاتے ہیں اور بعض بڑی طاقتیں اب اس سائنس کو اپنے سفارتی تعلقات، بین الاقوامی معاملات، جنگی اور جاسوسی

کے معاملات میں بھی استعمال کر رہی ہیں مثلاً امریکہ کا CIA کا خفیہ جاسوسی کا ادارہ (Sun Streak/Stargate) روحانی استعداد رکھنے والے جاسوسوں کو جدید سائنسی طریقوں سے روحانی تربیت دے کر روحانی سراغ رسانی کا کام لیتا ہے۔ اور یہ روحانی سراغ رساں اپنے روحانی وجود AURA کو استعمال میں لا کر دشمن کے خفیہ منصوبوں کا گھر بیٹھے سراغ لگاتے ہیں۔ یہ دشمن کے ہتھیاروں کو گھر بیٹھے ناکارہ بنا سکتے ہیں۔ یہ حکمرانوں کے دماغوں کو گھر بیٹھے کنٹرول کر سکتے ہیں۔ یہ گھر بیٹھے اپنے دشمن کو شکست دے سکتے ہیں۔ یہ سب کچھ ہو رہا ہے اور انسان اپنی روحانی صلاحیتوں کو استعمال میں لا کر مرتخ پر بھی جا پہنچا اور ہماری لاعلمی کی انتہا یہ ہے کہ ہم آج بھی اسے تو ہم پرستی کہہ رہے ہیں جبکہ ہماری بے خبری اور لاعلمی کے سبب آج ہماری سلامتی دشمن کے ہاتھوں میں ہے۔ آج دنیا بھر میں انسان کے باطنی رخ پر نہ صرف روحانی بلکہ سائنسی تجربات ہو رہے ہیں اور سائنسدان ایٹم کی طرح انسان کے اندر جھانک کر اس وسیع و عریض دنیا کو حیرت سے دیکھ رہے ہیں حالانکہ ابھی سمجھ نہیں پارہے۔ دنیا بھر میں اسی موضوع پر کتابیں تحریر کی جا رہی ہیں رسالے نکالے جا رہے ہیں ان موضوعات پر فلمیں اور ڈرامے بھی بنائے جا رہے ہیں۔ اور مختلف ٹی وی چینلز پر اب سائیکالوجی اور پیراسائیکالوجی کے عنوان سے کیسز یا دستاویزی پروگرام بھی آتے ہیں۔ ان تحقیقات سے نہ صرف آج کے لوگ استفادہ کرتے ہیں بلکہ روحانی معلومات بھی حاصل کرتے ہیں۔

صرف یورپ اور امریکہ میں روحانی اداروں سے وابستہ افراد کی ممبرشپ ایک کروڑ سے زیادہ ہو چکی ہے۔

جدید تحقیقات کے نتائج۔ جدید تحقیقات قدیم ادوار کے کاموں کی تصدیق کر رہی ہیں لہذا آج ہر دور کا کام موضوع بحث ہے اور سائنسدان ماہرین محققین بلا تعصب آج ہر دور کے کام کا جائزہ لے کر انسان کی حقیقت سمجھنے کی کوشش میں مصروف کار ہیں۔

## 5۔ انسان کی ابتدائی تعریف

## (1) انکسامندر، ابندر قلیس

انکسامندر اور ابندر قلیس نے سب سے پہلے یہ نظریہ پیش کیا کہ انسان کی موجودہ شکل ہمیشہ سے نہیں ہے بلکہ اس نے رفتہ رفتہ حیوانی حالت سے ارتقاء کی ہے۔

## (2) ارسطو

ارسطو نے (۳۸۲-۳۲۲ ق م) دو ہزار پانچ سو سال قبل یہ نظریہ پیش کیا کہ انسان ایک سیاسی حیوان ہے جس کی جبلت میں جوڑ توڑ آپس میں کھنچا تانی اور دوسروں پہ غلبہ حاصل کرنے کی خواہش ہے۔

## (3) ابوالحسن المسعودی

ابوالحسن المسعودی نے تخلیق آدم سے متعلق یہ نظریہ اپنی مشہور کتاب "التنبیہ والاشراف" میں یوں پیش کیا کہ جمادات، نباتات، حیوانات اور انسان مرحلہ وار وجود میں آئے۔

## (4) چارلس رابرٹ ڈارون (۱۸۸۲-۱۸۰۹)

چارلس رابرٹ ڈارون کے مطابق انسان کی تخلیق نہیں ہوئی بلکہ اس کا ارتقاء ایک خلوی جراثیم سے اتفاقاً ہوا ہے اور وہ موجودہ صورت میں بوزنے (Unicellular Organism) سے اتفاقاً ہوا ہے اور وہ موجودہ صورت میں بوزنے (APE) سے پروان چڑھا ہے ندید یہ کہ فطری انتخاب (Natural Slection) کے ذریعے ایک سے دوسری انواع وجود میں آتی ہیں۔ یعنی کسی بھی ایک نوع کی اصل (Origin) کوئی دوسری نوع ہے۔

## (5) تھامس کارلائل (Thomas Corloyal)

اٹھارویں صدی کے انگریز مصنف نے یہ نظریہ پیش کیا کہ انسان ایک معاشرتی حیوان (Social Animal) ہے۔ یہ مل جل کر معاشرے کو جنم دیتے ہیں۔ بستیاں بساتے ہیں اور قانون وضع کرتے ہیں۔

## (6) بنجمن فرینکلن (Bengimen Feanklin)

انیسویں صدی کے ایک اور مغربی مفکر بنجمن فرینکلن نے یہ نظریہ پیش کیا کہ انسان ہتھیار بنانے والا حیوان ہے۔



کسی نے کہا کہ انسان حیوان ناطق ہے یعنی ایسا حیوان جس کی دیگر حیوانات میں انفرادیت یہ ہے کہ وہ ذریعہ اظہار رکھتا ہے۔

مارکس نے انسان کو معاشی حیوان قرار دیا جبکہ پروفیسر جیمز Principles of Psychology میں کہتا ہے کہ انسان بس ایک تقلید کرنے والا ہے۔

### تبصرہ، تجزیہ، موازنہ:

ان تمام تعریفوں میں انسان کو حیوان کی ترقی یافتہ شکل بتایا گیا ہے۔ صرف ابوالحسن المسعودی نے ارتقاء کا تذکرہ نہیں کیا انہوں نے موجودات یا انواع کی مرحلہ وار تخلیق کا تذکرہ کیا ہے۔

جبکہ باقی تمام تعریفوں میں بتایا گیا ہے کہ انسان نے حیوانی سطح سے رفتہ رفتہ ارتقاء کی ہے۔ اور ہے تو انسان بھی حیوان ہی لیکن دیگر حیوانات میں منفرد اور ترقی یافتہ حیوان ہے۔ اور دیگر حیوانات میں اس کی انفرادیت یہ ہے کہ وہ بولتا ہے، سیاست کرتا ہے، ہتھیار بناتا ہے اور معاشرتی زندگی بسر کرتا ہے۔ جبکہ دیگر حیوانات میں یہ خصوصیات موجود نہیں ہیں۔

جبکہ جدید تحقیقات نے ان قدیم نظریات کی قطعاً نفی کر دی۔ جدید تحقیقات سے ثابت ہو چکا ہے کہ جانور بھی بولتے ہیں اور الفاظ بھی استعمال کرتے ہیں ہاں ان کا ذریعہ اظہار مختلف ہے۔ حالیہ تحقیق کے مطابق بعض بندروں کی زبان میں بھی الفاظ کی تعداد 40 یا 45 کے قریب ہے۔ اور صرف جانور ہی نہیں کائنات کا ہر وجود سماعت و بصارت رکھتا ہے وہ موجودات جن کو کچھ عرصہ پہلے تک بے جان تصور کیا جاتا تھا انہی موجودات یا انواع میں سے کچھ کی آوازوں کو سننے کی آج ہم نے اہلیت حاصل کر لی ہے۔

مثلاً جیالوجیکل ریسرچ کے مطابق درخت دوسرے درختوں سے گفتگو کرتے ہیں۔ جبکہ ان درختوں کا ذریعہ اظہار ٹیلی پیٹھی (Waves) ہے۔

مختلف موجودات یا انواع کا ذریعہ اظہار مختلف ہے جیسے ہم انسان ہی ایک دوسرے سے مختلف زبانوں میں گفتگو کرتے ہیں بعض انسان ہاتھ کے اشاروں سے گفتگو کرتے ہیں بعض انسان ٹیلی پیٹھی (Waves) کی زبان بھی سمجھتے اور سمجھاتے ہیں۔ اسی طرح مختلف انواع کا ذریعہ اظہار اور سماعت مختلف ہے لیکن اس اختلاف کا مطلب یہ نہیں کہ وہ سماعت اور گفتار سے ہی محروم

ہیں۔ لہذا اگر کوئی یہ کہنا چاہے کہ درخت یا جانور یا سمندر انگریزی نہیں بولتے لہذا یہ سننے اور بولنے کی صلاحیت سے محروم ہیں تو یہ احمقانہ دلیل قابل قبول نہیں۔ لہذا جدید تحقیقات سے ثابت ہو گیا کہ بولنا یا سننا محض انسان کی انفرادی خصوصیت نہیں بلکہ جانوروں کے علاوہ تمام موجودات سماعت و گفتار کی صلاحیت رکھتی ہیں۔

دیگر حیوانات میں انسان کی انفرادی خصوصیت یہ بھی بیان کی گئی تھی کہ وہ معاشرتی ہے یا سیاست کرتا ہے۔ یہ بھی محض انسانی انفرادیت نہیں ہے۔

ترجمہ: ان میں سے ہر ایک تمہاری طرح ایک امت ہے۔ (6-38)

صرف انسان معاشرتی نہیں ہے۔ محض انسان سیاست نہیں کرتا بلکہ حیوانات میں بھی سیاست ہوتی ہے سیاسی قوانین کے تحت ان کا باقاعدہ سیاسی لیڈر ہوتا ہے اور یہ بڑے معاشرتی قوانین کے تحت زندگی بسر کرتے ہیں۔ اور ان کا سیاسی اور معاشرتی نظام ہوتا ہے۔ مکھیوں کی ملکہ ہوتی ہے اور چیونٹیوں کا خاندان بھی ہزاروں پر مشتمل ہوتا ہے۔ پورے خاندان کی ایک ملکہ ہوتی ہے، ان میں فنکار اور باغبان چیونٹیاں، انجینئر اور فوجی چیونٹیاں بھی ہوتی ہیں۔ ان میں انسانوں کی طرح ایثار اور قربانی کا جذبہ بھی ہوتا ہے۔ اور حیوان آجکل کے انسان سے کہیں زیادہ نظم و ضبط اور قاعدے قانون کے تحت معاشرتی و سیاسی زندگی بسر کرتے ہیں۔ انسانوں ہی کی طرح بعض جانور ہتھیار بناتے اور استعمال کرتے ہیں۔ اپنا دفاع کرتے ہیں اپنی جگہ کے لئے لڑتے ہیں جو طاقتور ہوتا ہے وہ شیر ہے۔ اب مختلف چینلز پر ہم حیوانوں کی معاشرتی و سیاسی زندگی کی تقریباً تمام تفصیلات دیکھ سکتے ہیں لہذا یہ کہنا کہ انسان معاشرتی و سیاسی ہونے یا ہتھیار بنانے یا بولنے کے سبب دیگر انواع میں منفرد ہے۔ اس کی بنیاد محض لاعلمی ہوگی۔ وگرنہ یہ تمام خصوصیات حیوانات میں انسانوں سے زیادہ ہیں۔

جبکہ کچھ بظاہر خصوصیات یا حیات تو حیوانوں میں انسانوں سے بھی زیادہ ہیں اس حساب سے تو حیوان یا دیگر انواع انسانوں سے منفرد قرار پائیں مثلاً جانوروں کی چھٹی حس تیز ہوتی ہے وہ خطرات کی بو پالیتے ہیں یا آنکھوں سے آنے والے خطرات کے مناظر دیکھ لیتے ہیں لہذا اذلے اور طوفان کی آمد سے پہلے ہی گبھرا کر بھاگنے دوڑنے لگتے ہیں۔ کتے میں سونگھنے کی حس انسان سے کئی ملین زیادہ ہے، انسان کے مقابلے میں شاہین کی آنکھ کسی چیز کو آٹھ گنا بڑا دیکھتی ہے۔ مچھلیاں

سمندر میں انتہائی مدہم ارتعاش کو محسوس کرتی ہیں۔

یہ بظاہر چند خصوصیات جو عام طور پر انسانوں میں دیکھنے میں نہیں آتیں جانوروں میں پائی جاتی ہیں۔ جبکہ انسان میں بیان کی جانے والی معاشرت سیاست گفتار جانوروں میں بھی پائی جاتی ہے۔ یعنی اوپر بیان کی گئی تعریفوں کے حساب سے انفرادی خصوصیات کا حامل انسان نہیں بلکہ حیوانات یا دیگر انواع ہیں۔

انسان معاشرتی ہے یا سیاسی، ہتھیار بناتا ہے یا بولتا ہے درحقیقت یہ انسان کی تعریفیں نہیں ہیں بلکہ یہ اس کی لاشمار خصوصیات میں سے چند خصوصیات کا تذکرہ ہے نہ کہ انسان کی تعریف۔

مثلاً میں "روبینہ نازلی" ہوں میری کتاب روبینہ نازلی نہیں یا میری تحریر کو روبینہ نہیں کہا جاتا بلکہ خود مجھے روبینہ نازلی کہا جاتا ہے۔

لہذا انسان سیاست بھی کرتا ہے ہتھیار بھی بناتا ہے، کاروبار بھی کرتا ہے، ہنستا روتا بولتا ہے اور ہزاروں اسی جیسے مذید کام بھی کرتا ہے اور یہ تمام اس کے کام یا خصوصیات ہیں۔ لہذا اس کے کام انسان نہیں۔

ہاں اگر ہم یہ جاننے کی سعی کریں کہ یہ جو انسان (مادی جسم) نظر آ رہا ہے یہ کن اجزاء کا مجموعہ ہے اس کے اندر کون کون سے جہان آباد ہیں کروڑوں خلیوں کے مجموعے دل جگر گردوں کے علاوہ اس کے اندر کیسے برقی سٹم (AURA، چکراز) کام کر رہے ہیں کیا اس کے اندر کوئی روح بھی ہے یہ نفس کیا ہے اور آخر کیسا مجموعہ ہے یہ دکھائی دینے والا بظاہر سادہ سا انسان؟ اسی انسان کو دریافت کرنے کی سعی انسان کی تعریف کے زمرے میں آئے گی۔

اگرچہ انسان کو حیوان کی ترقی یافتہ شکل قرار دینے کی سازش بے بنیاد اور قدیم ہو چکی ہے اس کے باوجود آج یہ باقاعدہ ایک نظریے (نظریہ ارتقاء) کی صورت اختیار کر گئی ہے۔

اگرچہ آج اس نظریہ ارتقاء کے خلاف بھی ہمارے پاس سائنسی و غیر سائنسی شواہد کے ڈھیر موجود ہیں پھر بھی اس بودے قدیم مفروضے کو سائنسی نظریہ ثابت کرنے کی کوشش کس صورت میں کی جا رہی ہے اور ہزاروں برس سے چلے آ رہے نظریہ ارتقاء کا دفاع ارتقاء کے حامی کیسے کر رہے ہیں اور اس کی موجودہ صورت کیا ہے ذرا جائزہ لیتے ہیں۔

## نظریہ ارتقاء Theory of Evolution

ایک برطانوی یہودی چارلس رابرٹ ڈارون (جو کہ ایک شوقیہ حیاتیات دان Amateur Biologist) نے اپنی کتاب (The Origin of Species by Means of Natural Selection) یعنی فطری انتخاب کے ذریعے انواع کا ظہور)

میں ان نظریات کا اظہار کیا کہ "انسان کی تخلیق نہیں ہوئی بلکہ حیوانی سطح سے ارتقاء ہوا ہے جس پہ ماحول کے اثرات ہیں۔ اربوں سال پہلے غیر متوازن ماحول میں ایک خلوی جرثومے سے حیات پانی میں شروع ہوئی۔ وہیں نمود کی فطری خواہش کی وجہ سے ترقی کرتی رہی۔ وہیں سے مینڈکوں کی ایک نسل خشکی پر آگئی جن مینڈکوں کو درختوں پر چڑھنے کا شوق ہوا وہ بالا آ خراڑنے والے جانور بن گئے انہی میں سے کچھ خشکی پر خوراک و حفاظت کی تلاش میں مختلف اشکال میں بٹ گئے جن میں سے کچھ بندر بن گئے۔ بقاء کی یہ جنگ کروڑوں سالوں سے جاری ہے جس کے نتیجے میں کمزور ناپید ہوتے گئے اور طاقتور بقاء کے لئے موزوں ثابت ہوئے یوں بندروں سے ترقی کر کے ایک نسل انسانوں کی وجود میں آگئی۔"

جبکہ ڈارون خود اپنی اس کتاب میں یہ سوال بھی اٹھاتا ہے کہ "اگر انواع درجہ بدرجہ تغیرات کے ذریعے دوسری انواع میں تبدیل ہوئیں تو ہمیں ہر جگہ لاتعداد انتقالی شکلیں کیوں نظر نہیں آتیں؟" ظاہر ہے اگر ارتقاء ہوا تھا تو ان اربوں سالوں کی ارتقائی زندگی کے نشانات تو موجودہ زندگی سے زیادہ ہونے چاہئے تھے۔ لیکن افسوس ہم آج تک ایک بھی ایسی انتقالی شکل دریافت نہ کر سکے جسے ہم ارتقاء کی گمشدہ کڑی کہہ سکتے۔

لیکن ارتقاء کے حامی زبردستی ان گمشدہ کڑیوں کے کچھ بے نام سرے ڈھونڈ ہی لائے یہ چند کھوپڑیاں، ایک دانت اور کچھ ہڈیوں پر مشتمل رکازی ریکارڈ تھا اور اسی رکازی ریکارڈ کی بنیاد پر تصویری کہانیاں بنائی گئیں جن میں بوزنہ سے انسان تک کے ارتقائی سفر کو دکھایا گیا، ارتقاء پرستوں نے چند کھوپڑیوں کی بنیاد پر بوزنہ (APE) سے انسان تک کی دس ممکنہ اقسام کی دریافت کا ڈھونگ رچایا۔ جھوٹی کہانیاں گھڑی گئیں مقالے لکھے گئے برسوں محققین اسی شغل میں لگے رہے۔ پھر برسوں بعد اس رکازی ریکارڈ کا پول کھلنے لگا معلوم ہوا کھوپڑی انسان کی جبرابن مانس کا اور

دانت سور کا ہے۔ تصویریں من گھڑت، افسانے جھوٹے ہیں۔ یہ سب جعل سازی کے نمونے تھے۔ لہذا خود ماہرین رکازیات کو کہنا پڑا۔

(ڈریک وی ایگر۔ برطانوی ماہر رکازیات)

"اگر ہم رکازات کے ریکارڈ کا تفصیلی مطالعہ کریں خواہ وہ تنظیم و ترتیب کی سطح پر ہو یا انواع کا ہوتو ہمیں بار بار یہی پتا چلتا ہے کہ تدریجی ارتقاء نہیں ہوا تھا"

جب ڈارون ازم کی سائنسی رو سے قطعاً نفی ہو گئی تو ارتقاء پرستوں نے پیچھے ہٹنے کی بجائے جدید ڈارون ازم کی بنیاد رکھی۔ اس نظریے کے مطابق انواع کا ارتقاء تغیرات (Mutations) اور ان کے جین میں معمولی تبدیلیوں سے ہوا۔ مزید یہ کہ ارتقاء پذیر ہونے والی ان نئی انواع میں سے صرف وہی انواع باقی بچیں جو فطری انتخاب کے نظام کے تحت موزوں ترین (Fittest) تھیں۔

یہ نظریہ بھی سائنسی دریافتوں نے غلط ثابت کر دیا اور ثابت ہو گیا کہ نئی انواع کی تشکیل کے لئے معمولی جینیاتی تبدیلیاں کافی نہیں۔

جبکہ کیمبری عصر (زمین کی قدیم ترین پرت کیمبری (Cambrian) ہے جس کی عمر 52 سے 53 کروڑ سال ہے) کی پرتوں سے ملنے والے جانداروں کے رکازات پہلے سے کسی بھی جدا مجد کی غیر موجودگی میں اچانک ہی متعدد انواع کے ظاہر ہونے کی شہادت دیتے ہیں۔ یعنی ارتقاء نہیں ہوا تخلیق ہوئی ہے۔

ان جدید رکازات کی مدد سے نہ صرف ارتقاء کے تمار من گھڑت رکازات کی نفی ہو گئی بلکہ تمار ارتقائی نظریات کی بھی نفی ہو گئی۔ لہذا کیمبری عصر سے ملنے والے رکازی ریکارڈ کی روشنی میں ارتقاء پرستوں کو اپنا موقف پھر تبدیل کرنا پڑا لیکن اب بھی انہوں نے ہار نہیں مانی بلکہ مداخلتی توازن (Punctuated Eovulibrium) کا راگ الاپنے لگے۔ اس نظریے کی رو سے جاندار کوئی درمیانی شکل اختیار کئے بغیر اچانک ہی ایک سے دوسری انواع میں ارتقاء پذیر ہو گئے یعنی کوئی نوع اپنے ارتقائی آباؤ اجداد کے بغیر ہی وجود میں آ گئی۔ اس قدرے معقول نظریے کی انہوں نے یہ احتمال تو جیہہ پیش کیا کہ ریگنے والے جانوروں کا انڈہ ٹوٹا اور اس میں سے پرندہ برآمد ہوا۔ نہ صرف

ہر قسم کی سائنس اس بے سرو پادلیل کی نفی کرتی ہے بلکہ خود ارتقائی نظریات کے مطابق انواع کو ایک سے دوسری شکل میں ڈھلنے کے لئے ذبردست اور مفید قسم کا جینیاتی تغیر درکار ہوتا ہے۔ جبکہ سائنسی رو سے کوئی بھی جینیاتی تغیر خواہ وہ کسی پیمانے کا ہو مثبت نہیں ہوتا نہ ہی یہ جینیاتی معلومات کو بہتر بناتا ہو یا ان میں اضافہ کرتا ہو پایا گیا ہے۔ بلکہ تغیرات سے جینیاتی معلومات تلپٹ ہو کر رہ جاتی ہیں۔

ایسی ہی تحقیقات کی روشنی میں انسان اور بن مانسوں کے مابین جو تعلق قائم کیا جا رہا تھا اس کی بھی نفی ہو گئی اور بالا آخر صحیح رکازات کے مطالعے کی روشنی میں خود ماہرین رکازیات اور سائنسدانوں کو کہنا پڑا کہ لاکھوں برس پہلے زمین پر پائی جانے والی دو ٹانگی مخلوق دراصل انسان نہیں بلکہ انسان اور بندروں کے درمیان کوئی اور ہی مخلوق تھی جس کا موجودہ انسان سے کوئی تعلق نہیں۔

انسان کو بوزنہ کی ترقی یافتہ شکل بتایا گیا تھا جبکہ بوزنہ (APE) تو آج بھی اپنی تمام تر اقسام کے ساتھ موجود ہے اور بوزنہ سے انسان بننے کے درمیان پائی جانے والی دس ممکنہ اقسام کہاں گئیں۔ کو اٹم جمپ جیسے نظریات کے آجانے کے بعد اب ارتقاء پرستوں کا موقف یہ تھا کہ ارتقاء منزل بہ منزل ہوا ہے۔

ان نظریات کی نفی اسٹیفن جے گولڈ کے جدید نظریات سے ہو گئی۔ ان نظریات سے ثابت ہو گیا کہ انسان کا ارتقاء مرحلہ وار نہیں ہوا بلکہ تمام نوع انسانی ایک ہی ماں کی اولاد ہیں۔ یعنی موجودہ تمام انسانوں کا جدا جدا انسان ہی ہے نہ کہ بندر!

انسانی تخلیق کے بارے میں یہ جدید تحقیق امریکہ، یورپ، آسٹریلیا اور ایشیائی ملکوں سے ملنے والی ۱۴۷ (ایک سو سینتالیس) حنوط شدہ لاشوں میں پائے جانے والے DNA کے سائنسی تجزیے کے نتیجے میں سامنے آئی ہے۔ یہ خلیے صرف ماں کے ذریعے ہی اولاد میں منتقل ہو سکتے ہیں۔ تاہم ان میں تغیر و تبدل کے لئے ایک طویل مدت درکار ہے۔ DNA کی ساخت میں تبدیلی کی شرح دس لاکھ برس میں دو سے چار فیصد ہے۔ اس جدید سائنسی تحقیق سے یہ ثابت ہو گیا کہ ارتقاء ہوا ہی نہیں بلکہ تخلیق ہوئی ہے اور انسان بندر کی نہیں انسان ہی کی اولاد ہے ہمیشہ سے!

یہاں ہم نے ارتقائی ادوار کا سرسری جائزہ پیش کیا ہے ہر دور میں ہزاروں برس سے ارتقائی نظریے کی نفی ہو رہی ہے۔

ہمارے پاس انسان کے بارے میں معلومات کے تین مستند ذرائع علم ہیں (1) سائنس (2) تاریخ (3) مذہب۔ ان تینوں ذرائع علم سے حاصل ہونے والی انسانی کہانی میں آج سو فیصد مماثلت پائی جاتی ہے۔

### (۱) سائنس

سائنسدان ڈوانس گش (Duane Gish) پروفیسر گولڈسمتھ (Golde Shmid) اور پروفیسر میکبتھ (Prof. Macbeth) جیسے ماہرین نے مفروضہ ارتقاء کے حامی جھوٹے سائنسدانوں کے جھوٹ کے فریب کا نہ صرف پردہ چاک کیا ہے بلکہ دو ٹوک الفاظ میں اعلان بھی کر دیا ہے کہ ارتقاء محض فلسفیانہ مفروضہ ہے جس کی کوئی سائنسی حقیقت نہیں۔ جدید سائنس مسلسل ارتقاء کی نفی اور تخلیق کی تائید کر رہی ہے جس کے آج ہمارے پاس ڈھیروں ثبوت موجود ہیں جن میں سے چند نکات کا یہاں دوبارہ ذکر کیا جا رہا ہے۔

(1) جنیاتی تغیر خواہ کسی پیمانے کا ہو مثبت نہیں ہوتا۔

(2) کسی بھی نوع کا تعین کرنے والی ساری معلومات پہلے سے جین (Genes) میں موجود ہوتی ہیں لہذا فطری انتخاب کے ذریعے جین میں تبدیلی ممکن نہیں۔ اگرچہ جینیٹک کے سائنسدان جین میں رد و بدل کر کے تجربات کرتے ہیں لیکن یہ جنیاتی تغیر نہ تو مثبت ہے نہ ہی فطری انتخاب۔

(3) زمین کی قدیم پرت کیمبری (Cambrian) سے ملنے والے جانداروں کے رکازات متعدد انواع کے اچانک ظہور کی شہادت دے رہے ہیں یعنی ارتقاء نہیں ہوا اچانک تخلیق ہوئی ہے۔

(4) جن جانوروں اور انسانوں میں نسلی ربط جوڑنے کی باقاعدہ سارٹس کی گئی تھی سائنس نے اس فریب کا پردہ بھی چاک کر دیا اور ثابت ہو گیا کہ انسان کا کسی حیوانی نسل سے کوئی نسلی ربط نہیں۔ جو نقلی کھوپڑیاں اور ڈھانچے اکٹھے کئے گئے تھے ان کا فریب بھی کھل گیا۔

(5) اگر بفرض محال ارتقاء ہوا بھی تھا تو اربوں سالوں کے ارتقائی دور کی انتقالی اشکال موجودہ زندگی سے زیادہ ہونی چاہئے تھیں جبکہ اب تک زندگی کی ایک بھی انتقالی شکل دریافت نہیں ہو سکی۔

(6) پروفیسر میکس ویسٹن ہوفر (Prof. Max Westen Hofer) نے ثابت کیا کہ مچھلیاں، پرندے، ریٹکنے والے جانور اور ممالیہ جانور سب ہمیشہ سے ایک ساتھ موجود رہے ہیں۔

(7) خلیوں کی بنیادی اور ارتقائی اقسام بھی غیر حقیقی ثابت ہو چکی ہیں 1955ء کے بعد اس حقیقت کا انکشاف ہو چکا ہے کہ تمام خلیوں کا تانا بانا 99 فیصد تک ایک جیسا ہوتا ہے اور DNA کے لئے یکسانی کی شرح 100 فیصد تک پائی گئی ہے۔

(8) ایک دعویٰ یہ بھی تھا کہ تمام مخلوقات بقائے اصح Survival of the Fittest کے قانون کے تابع ہیں جو کمزور ہیں وہ فنا ہو جاتے ہیں۔ جبکہ لاکھوں رکازات کی دریافت سے ثابت ہو چکا ہے کہ بہت سی کمزور مخلوقات مشکل ترین حالات کے باوجود لاکھوں سالوں سے زندہ ہیں۔

(9) ارتقاء پرستوں (Evlutionists) کے خیال میں خلیے کا ظہور اربوں سال پہلے غیر متوازن ماحول میں اتفاقاً ہوا تھا۔ جبکہ ہم آج تک ایک خلیہ بھی تجربہ گاہوں میں تیار نہیں کر سکے۔ درحقیقت خلیے سے کائنات تک اتفاقات کا کہیں کوئی عمل دخل نہیں سب کچھ منظم و مربوط اور پری پلینڈ ہے۔ DNA میں موجود بے تحاشا معلومات اتفاقاً نہیں۔ حتیٰ کہ امائنو ایسڈ (Amino Acids) تک اتفاقاً نہیں بنے۔

(10) خرد حیاتیات (Microbiology) کے ماہرین بھی آج تخلیق (Creation) کی حقیقت کو تسلیم کرتے ہیں۔ وہ جان چکے ہیں کہ ہر شے ایک عظیم ترین خالق نے تخلیق کی ہے۔ سائنسدان اس نقطہ نظر کو ذہین ڈیزائن (Intelligent Disign) کا نام دیتے ہیں

(11)۔ جس قسم کے قدیم انسانوں کا تذکرہ ارتقائی ماہرین کرتے ہیں اس قسم کے انسان یا انسان نامی یعنی Yeti آج بھی پائے جاتے ہیں۔ آج بھی ان جھوٹے افسانوں سے مشابہ مخلوق یعنی Yeti زمین پہ موجود ہے یہ درندہ نما انسان یا انسان نما مخلوق آج بھی وسطی امریکہ (گوئے مالا)۔ ایکواڈور، کولمبیا، گیانا، سرنام، برازیل ہندوستان، نیپال، تبت میں پائی جاتی ہے۔ اور یہ درندہ نما انسان تہذیب یافتہ دنیا سے نا آشنا ہیں لیکن ان کی موجودگی سے ہرگز یہ ثابت نہیں ہوتا کہ یہ زمانہ قدیم ہے یا موجودہ دور پتھر کا دور ہے یا انسان بندر کی اولاد ہیں بلکہ ان کی موجودگی ہی ارتقاء کی نفی ہے۔

آج ہر قسم کی سائنس ارتقاء کی نفی اور تخلیق کی تائید کر رہی ہے اور سائنسی دریافتوں سے یہ ثابت ہو چکا ہے کہ کہیں اتفاقات کا کوئی دخل نہیں اور ثابت ہو چکا ہے کہ ہر شے اپنی جگہ بڑی اہم تخلیق ہے جسے کوئی بڑا خالق ہی تخلیق کر سکتا ہے!



## (۲) تاریخ

ہمارے پاس سات ہزار سال پرانی تاریخ " آثار الضادید " اور تحریروں وغیرہ کی شکل میں دستیاب ہے۔ ہزاروں برس کی تاریخ میں کہیں بھی انسان کے ارتقاء کا تذکرہ موجود نہیں پوری تاریخ میں ایک بھی تدریجی انسان کی مثال نہیں ملتی جس کو ثبوت کے طور پر پیش کر کے ہم یہ کہہ سکیں کہ ہاں فلاں دور میں ارتقاء ہوا ہوگا۔

جبکہ 5000ء قبل مسیح سے پیشتر کی تاریخ کی بنیاد زمین سے دستیاب شدہ اوزاروں یا انسانی و حیوانی رکازوں پر ہے۔

ارتقاء سے متعلق رکازی ریکارڈ من گھڑت اور جعل سازی کا شاہکار ہے لہذا اس ارتقائی ریکارڈ کی کوئی تاریخی حیثیت نہیں۔

البتہ اصل رکازی ریکارڈ سے مسلسل تخلیق کے ثبوت میسر آ رہے ہیں اور ارتقاء کی مسلسل نفی ہو رہی ہے۔

## (۳) مذاہب

صحیح آسمانی کتب (ترمیم و اضافہ شدہ نہیں) سے میسر آنے والی " انسانی کہانی " کے مطابق بھی۔

(1) انسان کی تخلیق ہوئی۔

(2) ابتدا کا انسان بھی انسان ہی تھا۔

(3) اور تمام نوع انسانی جو کرہ ارض پر موجود ہیں ایک ہی جوڑے کی نسل ہیں۔

(4) انسان مذہبی تعلیمات کی روشنی میں ابتداء سے معاشرت، سیاست، معیشت اور ہر طرح کے

علوم رکھتا تھا بلکہ ابتدا کا انسان تو روحانی علوم سے بھی لیس تھا۔ (جس کی آج شہادتیں بھی میسر

آ رہی ہیں جدید رکازی اور سائنسی دریافتوں کے ذریعے) جن پر آج کے انسان نے مادیت کی

دبیز تھیں چڑھا دیں۔

یعنی مذاہب بھی تخلیق کی تائید اور ارتقاء کی نفی کر رہے ہیں۔

تاریخ، سائنسی اور مذاہب کی انسان کے بارے میں معلومات میں 100 فیصد مماثلت پائی جاتی

ہے یعنی یہ تینوں مستند ذرائع علم ارتقاء کی نفی اور تخلیق کی تائید کرتے چلے آ رہے ہیں۔ یعنی ارتقاء کو ہر میدان میں 100 فیصد شکست فاش ہوئی ہے۔

اگرچہ نظریہ ارتقاء (Theory of Evolution) کو انیسویں صدی کے وسط میں سائنسی نظریے کی حیثیت سے متعارف کروایا گیا لیکن اسے سائنسی نظریہ ثابت کرنے کی کوشش کوئی ڈیڑھ سو سال سے جاری ہے جبکہ یہ نظریہ محض ڈیڑھ سو سال پرانا بھی نہیں۔ درحقیقت ہزاروں برس قبل قدیم یونانیوں نے یہ نظریہ علمی دنیا میں متعارف کروایا تھا۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ نظریہ ارتقاء ڈارون ازم نہیں بلکہ یونانزم ہے۔

اس ہزاروں برس قدیم نظریے پر ہزاروں برس سے تحقیقی کام ہو رہا ہے اور تحقیق و تجربات کی روشنی میں ہزاروں برس سے اس نظریے کی مسلسل نفی بھی ہو رہی ہے یہ تمام ارتقائی نظریات نہ صرف انسان کے انسان ہونے اور تمام انواع کے نوعی تسلسل کی نفی کرتے ہیں بلکہ ہر قسم کی مذہبی، تاریخی اور سائنسی شہادتوں سے متصادم ہیں۔ آج جبکہ ارتقائی نظریات کے فریب کا پردہ پورے طور پر چاک ہو چکا ہے اور آج جہاں اس نظریے کے خلاف ہمارے پاس سائنسی، تاریخی اور مذہبی ثبوت و شواہد کے ڈھیر ہیں تو وہیں اس کے اثبات میں آج ہمارے پاس ایک بھی دلیل نہیں اس کے باوجود ارتقاء پرست اس کے دفاع پر ڈٹے ہوئے ہیں آخر کیوں؟

اس سوال کا جواب ڈھونڈنا بہت ضروری ہے کہ آخر ارتقاء پرست اتنا بڑا ارتقائی ڈھونگ رچا کر قوموں کو گمراہ کر کے علمی بحران پیدا کرنے کی کوشش کیوں کرتے رہے ہیں۔ یہ جاننے کے لئے ارتقائی نظریات کا پس منظر جاننا ضروری ہے اور پس منظر جاننے کے لئے ارتقاء پرستوں کا جاننا ضروری ہے۔ (ارتقا کا پس منظر جاننے کے لیے دیکھیے عنوان ”نظریہ ارتقا“)

درحقیقت ارتقائی نظریے نے مذہبی اطاعات کو صحیح طور پر نہ سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا جبکہ نہ تو یہ مذہبی عقیدہ ہے اور نہ ہی کوئی سائنسی نظریہ ہاں ایک غلط مفروضہ ہے جس نے مذہبی اطاعات کو نا سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا اور اس کے مقلد اس کو ایک الہامی حقیقت تصور کر کے اسے ہر ممکن طریقے سے ثابت کرنے پر تلے ہوئے ہیں، بحر حال اس تمام بحث کا حاصل یہ ہے کہ ارتقائی نظریات کو ہر میدان میں شکست فاش ہوئی ہے اور آج تین مستند ترین ذرائع علم (سائنس، مذہب، تاریخ) سے ملنے والی مسلسل شہادتوں سے مندرجہ ذیل یکساں نتائج برآمد ہوئے ہیں۔

## نتائج

(1) ثابت ہو گیا کہ ارتقاء کے حامی خود فریبی کا شکار اسے ایک مذہبی عقیدہ تصور کر کے اندھا دھند اس کے دفاع میں مصروف ہیں جبکہ نہ تو یہ مذہبی عقیدہ ہے نہ سائنسی نظریہ، یہ محض مفروضہ ہے جس کی بلاوجہ جھوٹی تائید کی جا رہی ہے۔

(2) ارتقائی نظریہ ہزاروں برس قدیم یونانی نظریہ ہے یعنی یہ ڈارونزم نہیں بلکہ یونانزم ہے۔

(3) ارتقاء سے متعلق رکازی ریکارڈ من گھڑت، افسانے جھوٹے، دلیلیں بے ثبات اور تمام مواد ردی ہے۔ جعل سازی سے مرکب اس رکازی ریکارڈ یا کباڑ کی کوئی تاریخی حیثیت نہیں۔

(4) جبکہ جدید رکازات یا اصل رکازی ریکارڈ سے ثابت ہو گیا کہ تمام انواع اپنی موجودہ حالت میں لاکھوں برس پہلے بھی موجود تھیں۔

(5) جدید تحقیقات سے ثابت ہو گیا کہ ارتقاء نہیں ہوا تھا۔ (جینیاتی تغیر نہیں نوعی تسلسل حقیقت ہے)۔

(6) جدید دریافتوں سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ رفتہ رفتہ نہیں اچانک تخلیق ہوئی تھی۔

(7) ثابت ہو گیا کہ کائنات میں کوئی شے اتفاقات یا فطری انتخاب کا نتیجہ نہیں ہو سکتی۔

(8) جدید تحقیقات سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ کسی حیوانی نسل کا تعلق انسانی نسل سے نہیں۔

(9) جدید تحقیقات سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ تمام انسان ایک ہی ماں کی اولاد ہیں۔

(10) ایک خلیے سے لیکر انسان تک کائنات اور اس کی تمام موجودات میں کہیں بھی اتفاقات کا

کوئی دخل نہیں ہر تخلیق بڑی خاص ہے، سب کچھ بڑا منظم مربوط، اور ترتیب یافتہ ہے۔ کسی بڑے

ذہن کا بڑا مضبوط پلان!

## 6۔ یونانی فلسفیوں کی انسان پر بحث

(۱) سینٹ تھامس اکیولس

کے خیال میں "انسان" محض ذہن اور جسم کا نام نہیں بلکہ وہ ذہن اور جسم کے مرکب کا نام ہے

۔ (جبکہ ذہن سے یونانیوں کی مراد روح ہوتی تھی)

(۲) آگسٹائن

نے جسم اور روح کے درمیان خط کھینچا اور جسم کو فرد کا کم تر پہلو قرار دیا۔

### (۳) افلاطون PLATO

(۳۲۸ - ۳۴۸ ق م) کے مطابق ہمارے جسم کی حرکات و سکنات روح کی وجہ سے ہیں۔ جو نہی جسم اور روح کا تعلق ختم ہوتا ہے جسمانی حرکات و سکنات بھی ختم ہو جاتی ہیں۔  
(۴) دمقراط:-

(۴۶۰ - ۳۶۸ ق م) نے دو ہزار برس قبل کہا تھا ذہن یا روح آگ کی مانند ہے۔ یہ انسانی روح چھوٹے چھوٹے ناقابل تقسیم ذروں یعنی ایٹموں سے بنی ہے۔ جب یہ ایٹم انسانی بدن سے نکل جاتے ہیں تو انسانی موت واقع ہو جاتی ہے۔ یہی حال جانوروں کا ہے۔  
(۵) انیکسا غورث

روح ایک ایسی قوت ہے جو حیوانات و نباتات یعنی ہر جاندار اشیاء کے درمیان جاری و ساری ہے۔

### (۶) سقراط

روح ایک غیر فانی شے ہے۔ سقراط نے روح، نفس اور ذات کی اہمیت پر زور دیا اس کا خیال تھا روح ہمیں نیکی اور بدی میں تمیز کرنے میں مدد دیتی ہے۔ اغلباً سائیکی (Psyche) (روح) کی اصطلاح بھی سقراط نے ہی وضع کی تھی۔

### (۷) ارسطو Aristotle

ارسطو روح کو ایک ایسی اکائی تصور کرتا تھا جو اپنی ذات میں ہر لحاظ سے مکمل ہو یعنی فی ذاتہ مکمل ہو۔ البتہ ارسطو نے روح کو دو حصوں میں تقسیم کیا یعنی روح حیوانی اور روح انسانی۔ حیوانی روح کو وہ نچلے درجے کی بتاتا ہے جبکہ اعلیٰ درجہ کی روح کو وہ ذہن کا نام دیتا ہے ارسطو کے بعد بھی کئی مفکرین نے اس تقسیم کو درست تسلیم کیا ہے۔

### (۸) فیثا غورث

چھٹی صدی قبل از مسیح کا یونانی فلسفی فیثا غورث (جو جیومیٹری میں مثلث کا موجد مانا جاتا ہے) اس کا خیال تھا کہ انسانوں کی روح موت کے بعد جانوروں کی شکل میں نمودار ہوتی ہے۔

## (۲) تاریخ

ہمارے پاس سات ہزار سال پرانی تاریخ "آثار الضادید" اور تحریروں وغیرہ کی شکل میں دستیاب ہے۔ ہزاروں برس کی تاریخ میں کہیں بھی انسان کے ارتقاء کا تذکرہ موجود نہیں پوری تاریخ میں ایک بھی تدریجی انسان کی مثال نہیں ملتی جس کو ثبوت کے طور پر پیش کر کے ہم یہ کہہ سکیں کہ ہاں فلاں دور میں ارتقاء ہوا ہوگا۔

جبکہ 5000ء قبل مسیح سے پیشتر کی تاریخ کی بنیاد زمین سے دستیاب شدہ اوزاروں یا انسانی و حیوانی رکازوں پر ہے۔

ارتقاء سے متعلق رکازی ریکارڈ من گھڑت اور جعل سازی کا شاہکار ہے لہذا اس ارتقائی ریکارڈ کی کوئی تاریخی حیثیت نہیں۔

البتہ اصل رکازی ریکارڈ سے مسلسل تخلیق کے ثبوت میسر آ رہے ہیں اور ارتقاء کی مسلسل نفی ہو رہی ہے۔

## (۳) مذاہب

صحیح آسمانی کتب (ترمیم و اضافہ شدہ نہیں) سے میسر آنے والی "انسانی کہانی" کے مطابق بھی۔

(1) انسان کی تخلیق ہوئی۔

(2) ابتدا کا انسان بھی انسان ہی تھا۔

(3) اور تمام نوع انسانی جو کہ ارض پر موجود ہیں ایک ہی جوڑے کی نسل ہیں۔

(4) انسان مذہبی تعلیمات کی روشنی میں ابتداء سے معاشرت، سیاست، معیشت اور ہر طرح کے علوم رکھتا تھا بلکہ ابتدا کا انسان تو روحانی علوم سے بھی لیس تھا۔ (جس کی آج شہادتیں بھی میسر آ رہی ہیں جدید رکازی اور سائنسی دریافتوں کے ذریعے) جن پر آج کے انسان نے مادیت کی دبیز تہیں چڑھا دیں۔

یعنی مذاہب بھی تخلیق کی تائید اور ارتقاء کی نفی کر رہے ہیں۔

تاریخ، سائنسی اور مذاہب کی انسان کے بارے میں معلومات میں 100 فیصد مماثلت پائی جاتی

ہے یعنی یہ تینوں مستند ذرائع علم ارتقاء کی نفی اور تخلیق کی تائید کرتے چلے آ رہے ہیں۔ یعنی ارتقاء کو ہر میدان میں 100 فیصد شکست فاش ہوئی ہے۔

اگرچہ نظریہ ارتقاء (Theory of Evolution) کو انیسویں صدی کے وسط میں سائنسی نظریے کی حیثیت سے متعارف کروایا گیا لیکن اسے سائنسی نظریہ ثابت کرنے کی کوشش کوئی ڈیڑھ سو سال سے جاری ہے جبکہ یہ نظریہ محض ڈیڑھ سو سال پرانا بھی نہیں۔

درحقیقت ہزاروں برس قبل قدیم یونانیوں نے یہ نظریہ علمی دنیا میں متعارف کروایا تھا۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ نظریہ ارتقاء ڈارون ازم نہیں بلکہ یونانزم ہے۔

اس ہزاروں برس قدیم نظریے پر ہزاروں برس سے تحقیقی کام ہو رہا ہے اور تحقیق و تجربات کی روشنی میں ہزاروں برس سے اس نظریے کی مسلسل نفی بھی ہو رہی ہے یہ تمام ارتقائی نظریات نہ صرف انسان کے انسان ہونے اور تمام انواع کے نوعی تسلسل کی نفی کرتے ہیں بلکہ ہر قسم کی مذہبی، تاریخی اور سائنسی شہادتوں سے متصادم ہیں۔ آج جبکہ ارتقائی نظریات کے فریب کا پردہ پورے طور پر چاک ہو چکا ہے اور آج جہاں اس نظریے کے خلاف ہمارے پاس سائنسی، تاریخی اور مذہبی ثبوت و شواہد کے ڈھیر ہیں تو وہیں اس کے اثبات میں آج ہمارے پاس ایک بھی دلیل نہیں اس کے باوجود ارتقاء پرست اس کے دفاع پر ڈٹے ہوئے ہیں آخر کیوں؟

اس سوال کا جواب ڈھونڈنا بہت ضروری ہے کہ آخر ارتقاء پرست اتنا بڑا ارتقائی ڈھونگ رچا کر قوموں کو گمراہ کر کے علمی بحران پیدا کرنے کی کوشش کیوں کرتے رہے ہیں۔ یہ جاننے کے لئے ارتقائی نظریات کا پس منظر جاننا ضروری ہے اور پس منظر جاننے کے لئے ارتقاء پرستوں کا جاننا ضروری ہے۔ (ارتقا کا پس منظر جاننے کے لیے دیکھیے عنوان ”نظریہ ارتقا“)

درحقیقت ارتقائی نظریے نے مذہبی اطاعات کو صحیح طور پر نہ سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا جبکہ نہ تو یہ مذہبی عقیدہ ہے اور نہ ہی کوئی سائنسی نظریہ ہاں ایک غلط مفروضہ ہے جس نے مذہبی اطاعات کو نا سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا اور اس کے مقلد اس کو ایک الہامی حقیقت تصور کر کے اسے ہر ممکن طریقے سے ثابت کرنے پر تلے ہوئے ہیں، بحر حال اس تمام بحث کا حاصل یہ ہے کہ ارتقائی نظریات کو ہر میدان میں شکست فاش ہوئی ہے اور آج تین مستند ترین ذرائع علم (سائنس، مذہب، تاریخ) سے ملنے والی مسلسل شہادتوں سے مندرجہ ذیل یکساں نتائج برآمد ہوئے ہیں۔

تبصرہ، تجزیہ، موازنہ:

یونانی فلسفیوں کی یہ تعریفیں انسان کے متعلق کی گئیں ابتدائی تعریفوں سے یکسر مختلف تعریفیں ہیں قدیم یونانیوں نے ارتقاء پر بحث نہیں کی ہاں چند فلسفیوں نے ارتقائی نظریات کا سرسری اظہار ضرور کیا ہے جس کی کوئی تفصیل یا وضاحت ہمیں نہیں ملتی۔ جبکہ ارتقائی ماہرین نے ہر دور میں انسان کو بندر کی اولاد ثابت کرنے کی بھرپور کوششیں کی ہیں وہ بس ارتقاء کا دفاع ہی کرتے رہے۔ ارتقائی ماہرین نے روح یا نفس کا کبھی ذکر نہیں کیا جبکہ قدیم یونانی یہاں انسان کی تعریف کسی اور ہی حوالے سے کر رہے ہیں یہاں انسان کے حوالے سے روح یا ذہن، نفس اور جسم کا تذکرہ ہو رہا ہے۔

انسان کو ایک دوسرے رخ سے دیکھنے کے باوجود اس دور کے ماہرین بحیثیت مجموعی انسان کی تعریف کرنے میں ناکام رہے ہیں۔ اور یہ معمہ "انسان" ان کے لئے بھی حل طلب ہی رہا۔ اگرچہ یونانی فلسفی مجموعی انسان کی تعریف نہیں کر پائے لیکن انہوں نے انسان کو جاننے کی کوششوں کو وسیع تر کیا اور انسان کے اندر باطن میں جھانک کر روح و نفس کو سمجھنے کی کوشش کرتے رہے ہیں۔ وہ انسان سے وابستہ، روح یا ذہن، نفس، جسم، کے متعلق محض عقائد نہیں رکھتے تھے بلکہ وہ انسان کے غیر مادی تشخص سے متعلق غیر سائنسی روحانی تجربات و مشاہدات اور گہرا فکر و فلسفہ رکھتے تھے۔ اور یہ دقیق فکری نظریات اور روحانی تجربات و مشاہدات آج کے جدید ترین تجربات و مشاہدات سے 100 فیصد مماثلت رکھتے ہیں مثلاً۔

انیکسا غورث نے روح کو ایک ایسی قوت قرار دیا جو ہر جاندار اشیاء کے درمیان جاری و ساری ہے۔ یہ اگرچہ ایک عمومی فلسفیانہ فکر ہے لیکن آج کی جدید تحقیقات سے مماثلت رکھتی ہے۔

مثلاً 1964ء میں امریکی ماہر جارج گڈ ہارٹ نے دریافت کیا کہ ہمارے جسم کے تمام پٹھوں کا تعلق ایسے پوائنٹس سے ہے جس میں توانائی بہتی رہتی ہے۔ اس کے علاوہ آجکل جو روحانی طریقہ علاج مقبول ہو رہے ہیں ان میں توانائی کے چینلز بتائے جاتے ہیں۔ جسم میں بہنے والی اس توانائی کو وائٹل فورس (Life Force) بھی کہا جاتا ہے۔ اس کے علاوہ سائنسدان انسان سے متصل لطیف جسم AURA میں برقی سسٹم یعنی چکراز (Chakras) کا ذکر کرتے ہیں۔

دمقراط نے بھی روح کو شاید ایسی ہی وائٹل فورس کے روپ میں دیکھا تو کہا کہ روح آگ کی مانند

ہے جو چھوٹے چھوٹے ناقابل تقسیم ذروں سے بنی ہے۔ (درحقیقت روح ناقابل تقسیم ذروں سے نہیں بنی بلکہ یہ ذرے روح سے بنے ہیں) اگرچہ یہ روح کی درست تعریف نہیں۔ لیکن تمام تر غلطیوں کے باوجود یہ تعریف قابل توجہ ہے کیونکہ یہ تعریف دراصل روح کی تعریف کرنے کی راست کوشش ہے۔ آج بھی جدید مشینوں کے ذریعے یا مراقبہ کے ذریعے روح کا مشاہدہ و تجربہ کرنے والے حضرات جب اپنے اس تجربے یا مشاہدے کو بیان کرنے کے لئے روح کی تعریف کرنے کی کوشش کرتے ہیں تو وہ کوشش اسی قسم کی ہوتی ہے جیسا کہ دمقراط نے کی۔ البتہ وہ آج تک اس کوشش میں کامیاب نہیں ہوئے۔ دمقراط نے روح اور ذہن میں بھی امتیاز نہیں برتا۔ اس نے روح کو ذہن قرار دیا۔ جبکہ روح اور ذہن میں امتیازی فرق موجود ہے۔ لیکن آج سے ہزاروں برس پہلے روح اور ذہن میں امتیاز برتنا مشکل تھا اسی وجہ سے اکثر یونانی فلسفیوں نے انسان کو ذہن و جسم کا مرکب قرار دیا۔ لیکن ذہن سے ان کی مراد روح ہوتی تھی۔ جبکہ آج بھی کچھ لوگ یونانی فلسفیوں کی طرح روح کو ذہن سے تشبیہ دیتے ہیں۔ حالانکہ آج روح و ذہن میں امتیازی فرق تجرباتی طور پر ثابت ہو چکا ہے اور آج کے دور میں روح کو ذہن سے تشبیہ دینا انتہائی لاعلمی پہ محمول ہوگا۔ جبکہ یونانی فلسفیوں کی ذہن سے مراد روح ہوتی تھی لہذا ان کا یہ موقف کہ انسان ذہن یعنی روح و جسم کا مرکب ہے کسی حد تک درست ہی تھا۔

لیکن یہ تعریف ایک حد تک درست ہے کیونکہ یونانی فلسفیوں نے انسان کو دو نظاموں یعنی روح اور جسم کا مرکب قرار دیا تھا جبکہ انسان محض دو نظاموں کا مرکب نہیں ہے۔ جبکہ یونانیوں کی طرح آج بھی اکثر محققین انسان کو دو نظاموں یعنی روح و جسم کا مرکب ہی قرار دیتے ہیں جو کہ درست نہیں ہے۔

ایک امریکی ڈاکٹر ریمینڈ موڈی (Raymond Moody) اپنی کتاب (Life after Life) میں افلاطون کی ہزاروں برس قدیم تحریروں کا اپنی آج کی جدید طبیعیاتی تجرباتی تحقیقات سے موازنہ کرتے ہوئے لکھتا ہے۔ افلاطون کی تحریروں میں موت کے تجربات ان مشاہدات اور تجربات سے ملتے جلتے ہیں جو میری (ریمینڈ موڈی) کتاب کے پچھلے ابواب میں بیان ہو چکے ہیں۔

یونانی فلسفی روح کو اہم اور جسم کو انسان کا کم تر پہلو سمجھتے تھے جیسا کہ آگسٹائن نے جسم کو فرد کا کم تر



پہلو قرار دیا۔

ارسطو نے روح کو ایک ایسی اکائی قرار دیا جو ہر لحاظ سے مکمل ہو۔ یہ روح کی وہ تعریف ہے جو ہمیشہ سے رائج رہی ہے اور جو ہمیں مذہبی عقیدوں سے میسر آئی ہے۔ ارسطو نے روح کو دو حصوں (1) روح حیوانی۔ (2) روح انسانی۔ میں تقسیم کیا۔ ہزاروں برس سے لیکر آج تک روح کو ایسے ہی حصوں میں تقسیم کیا جاتا ہے (اور یہ تقسیم کرنے والے انسانی باطن کا مشاہدہ کرنے والے روحانی ماہرین یا باطن سے کسی حد تک واقفیت رکھنے والے فلسفی ہیں) اور آج اس تقسیم کی تصدیق جدید سائنسی تجربات سے بھی ہو رہی ہے۔ روح حیوانی، روح انسانی، یا AURA چکر از کو روح کے حصے قرار دیا جاتا ہے جبکہ یہ مزید لطیف اجسام روح کے حصے نہیں ہیں۔ اور ان لطیف اجسام کو روح کے حصے قرار دینا ایک بڑی غلطی ہے جس نے انسانی علم میں بڑی الجھنیں پیدا کر دی ہیں۔ اور اس کا ازالہ ضروری ہے۔ یہ غلط فہمی انسانی مجموعے کی ترتیب کو سمجھنے میں غلطی کے سبب پیدا ہوئی ہے اور اسی بڑی غلطی نے بہت سی غلط فہمیوں کو جنم دیا ہے جس کا ذکر آگے آئے گا۔

یونانی فلسفی نفس سے بھی واقف تھے اور ان کی یہ واقفیت روحانی مشقوں کے نتیجے میں ہونے والے مشاہدات و تجربات کی مرہونِ منت تھی۔ جیسا کہ افلاطون نے موت کے تجربات میں نفس کا تفصیلی تذکرہ کیا اور اس تذکرے میں اس نے نفس کے اعمال و افعال اور خصوصیات کا تفصیلی تذکرہ کیا جو کہ جدید ترین سائنسی تحقیقات سے مماثلت رکھتا ہے۔

فیثاغورث کا خیال تھا کہ انسانوں کی روح موت کے بعد جانوروں کی شکل میں نمودار ہوتی ہے۔ یہ نظریہ بھی آج تک جوں کا توں چلا آ رہا ہے اور دنیا میں رائج ہے۔ اور زیادہ تر لوگ اس نظریے کے قائل ہیں (بعض غلط فہمیوں کی وجہ سے) آج اس نظریے کو کرما یا آداگون (Reincarnation) کا نظریہ کہتے ہیں۔

ہزاروں برس قبل ارسطو نے "علم الروح" (Psychology) کے نام سے کتاب بھی لکھی تھی۔ اگرچہ اب اس کتاب کا فقط نام ہی باقی ہے۔ لیکن اس موضوع پر کتاب کا ہونا یہ ثابت کرتا ہے کہ اس دور میں بھی روح کے موضوع پر کسی حد تک سیر حاصل بحث ہوئی ہوگی، کچھ عقائد ہوں گے، کچھ اس دور کے نظریات ہوں گے، کچھ روحانی تجربات یا مشقوں کا تذکرہ ہوگا جیسا کہ افلاطون کے تجربوں کا ذکر آیا۔ درحقیقت انسان اس کا باطنی تشخص اور روحانی خصوصیات ابتداء سے آج

تک ایک مخصوص روحانی طبقے کے موضوعات رہے ہیں لیکن علمی میدان میں انسان کے باطن اور باطنی خصوصیات کا تذکرہ پہلی مرتبہ یونانی فلسفیوں نے کیا انہیں کی فلسفیانہ فکر اور انہی کے علم الروح یا یونانی زبان میں Psychology نے آگے بڑھ کر موجودہ سائیکالوجی، پیراسائیکالوجی، نفس، نفسیات وغیرہ وغیرہ کی شکل اختیار کر لی۔ لیکن آگے چل کر مادہ پرستوں نے روح و نفس کی باطنی خصوصیات کو تو نفسیات یا سائیکالوجی وغیرہ کے عنوانات کے ساتھ قبول کر لیا لیکن روح و نفس کا انکار کر دیا۔ یہ بہت بڑی غلطی تھی۔

اس غلطی کی وجہ یہ بنی کہ یونانی فلسفیوں نے باطنی خصوصیات کا تذکرہ تو کیا لیکن وہ انسان کے باطن یا روح و نفس کی شناخت قائم نہ کر سکے انہوں نے انسان کو ذہن و روح و جسم کا مرکب تو قرار دیا لیکن وہ اسے ثابت نہ کر سکے لہذا ان کے بعد آنے والے مادہ پرستوں نے انسان کے باطنی تشخص کو غیر مرئی مفروضہ قرار دے کر علم کی حدود سے خارج کر دیا۔

انسان کے بارے میں روح، نفس، جسم کے حوالے سے یونانیوں کی طرف سے ہزاروں برس قبل علمی بحث کا آغاز درحقیقت صحیح سمت میں ایک راست اقدام تھا جو آگے بڑھتا تو اس کے بہترین نتائج سامنے آتے۔ اور ہزاروں برس اس پر سنجیدہ علمی کام ہوتا تو یقیناً روح اور نفس کی شناخت ہو جاتی اور بحیثیت مجموعی انسان کی تعریف سامنے آچکی ہوتی اور آج انسان ذاتی ترقی کے اوج پر بیٹھا ہوتا مگر افسوس مادہ پرست سائنسدانوں نے انسان کے اصل باطنی تشخص کو جھٹلا کر علم کی حدود سے خارج کر دیا اور یوں انسان کی 95 فیصد شخصیت مادیت کی دبیز تہوں میں دب گئی انسان کی روح صدیوں کے لئے مٹی تلے دب گئی اور انسان بے تحاشا خسارے کا شکار ہو گیا۔

یونانی فلسفیوں کی انسان سے متعلق تعریفوں کے موازنے سے مندرجہ ذیل نکات سامنے آ رہے

ہیں۔  
نتائج:

- (1) یونانی فلسفی انسان کا ابتدائی علم رکھتے تھے۔
- (2) یہ علم روحانی مشقوں سے حاصل شدہ تجربات و مشاہدات اور گہری فلسفیانہ غور و فکر کا نتیجہ تھا۔
- (3) یونانیوں کے روح و نفس کے تجربات و مشاہدات اور فکر و فلسفہ جدید تحقیقات سے 100 فیصد مماثلت رکھتے ہیں۔

- (4) وہ ذہن، روح، نفس، جسم سے متعارف تھے۔
- (5) لیکن وہ ذہن، روح، نفس کی انفرادی شناخت نہیں رکھتے تھے۔
- (6) ذہن کو روح سے تشبیح دی جاتی تھی۔
- (7) روح کو حصوں میں تقسیم کیا جاتا تھا۔
- (8) نفس کو روح کا حصہ تصور کیا جاتا تھا۔
- (9) روح کی تعریفوں میں روح کی تعریف نہیں ہے۔
- (10) روحانی خصوصیات کو روح کی تعریف کے طور پر پیش کیا جاتا تھا۔
- (11) یونانی فلسفیوں نے انسان کو روح اور جسم یا دو نظاموں کا مجموعہ قرار دیا۔
- (12) وہ آجکل کی طرح روح کے دوبارہ جانور کی شکل میں نمودار ہونے یا کرما اور آواگون جیسے مختلف النوع (متضاد) نظریات بھی رکھتے تھے۔
- (13) یونانی فلسفیوں نے مادی جسم کے علاوہ انسان سے متعلق روح، ذہن و نفس کو پہلی مرتبہ علمی میدان میں متعارف کروایا۔ اس سے پہلے یہ علم مذہبی روحانی پیشواؤں تک محدود تھا۔
- (14) جدید تحقیقات سے 100 فیصد مماثلت اور تمامتراہم تفصیلات کے باوجود یونانی فلسفی انسان کے انفرادی اجزاء روح، نفس، جسم اور مجموعی انسان کی صحیح تعریف کرنے میں ناکام رہے یعنی یونانی فلسفیوں کے اس اہم علمی دور میں بھی یہ معممہ "انسان" معممہ ہی رہا۔

## 7۔ مسلمانوں کا کام

### مسلمان صوفی و سائنسدان

انسان کی وہ تعریف جو صدیوں سے کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے اور وہ تعریف جس کی وضاحت کرنے کے لئے ہمیں یہاں دفتر کے دفتر درکار ہیں۔ وہی تعریف شاعر مشرق علامہ اقبال نے محض دو مصرعوں میں بیان کر دی ہے۔

۱۔ علامہ اقبال

اگر نہ ہو تجھے الجھن تو کھول کر کہدوں  
وجودِ حضرتِ انسان نہ روح ہے نہ بدن

## ۲۔ حضرت سلطان باہو

حضرت سلطان باہو نے انسانی مادی جسم کی تعریف کرتے ہوئے لکھا۔

انسان کا وجود اربعہ عناصر سے ہے۔ اور عناصر میں سے ہر ایک کی صورت جدا ہے۔ مثلاً آگ کی صورت علیحدہ اور خاک کی بھی علیحدہ ہے اور پانی اور ہوا کی صورت بھی علیحدہ ہے مگر ان چاروں میں سے ہر ایک کی ستر ستر ہزار صورتیں ظاہر و باطن میں فخر پر ظاہر ہوتی ہیں۔ اور دولاکھ اسی ہزار صورتیں اس کی جلیس ہوتی ہیں۔

## ۳۔ خواجہ شمس الدین عظیمی

نے جسم کو لباس، خول اور سرائے قرار دیا جبکہ روح کو تین حصوں میں تقسیم کیا لہذا وہ انسان کی تعریف ان الفاظ میں کرتے ہیں۔ انسان تین جسم یا تین روحوں سے مرکب ہے۔

(1) روح حیوانی (دائرہ نمبر 1) نفس، (دائرہ نمبر 2) قلب۔

(2) روح انسانی (دائرہ نمبر 1) روح، (دائرہ نمبر 2) سر۔

(3) روح اعظم (دائرہ نمبر 1) خفی، (دائرہ نمبر 2) انھی۔

انسان کے اندر تین کرنٹ کام کرتے ہیں بالفاظ دیگر انسان کے اندر جو صلاحیتیں کام کرتی ہیں وہ تین دائروں میں مظہر بنتی ہیں۔ یہ تینوں کرنٹ محسوسات کے تین ہیولے ہیں اور ہر ہیولہ مکمل تشخص رکھتا ہے۔ ہر کرنٹ سے انسان کا ایک جسم وجود میں آتا ہے اس طرح آدمی کے تین وجود ہیں۔

## ۴۔ مقاتل بن سلیمان

انسان کے لئے زندگی روح اور نفس ہے۔ سونے کی حالت میں اس کا نفس جو صاحب عقل و شعور ہے نکل جاتا ہے لیکن جسم سے علیحدہ نہیں ہوتا جیسے لمبی رسی کی طرح شعاعیں ہوں۔ پھر سونے والا اپنے نکلے ہوئے نفس ہی کہ وجہ سے خواب دیکھتا ہے اور حیات و روح اس کے جسم میں باقی رہتی ہے جن کی مدد سے وہ کروٹ و سانس لیتا ہے اور جب بیدار ہو جاتا ہے تو پلک جھپکنے سے کم مدت میں تیزی سے نفس لوٹ آتا ہے۔ پھر جب اللہ پاک اسے خواب ہی میں مارنا چاہتا ہے تو اس کے

نکلے ہوئے نفس کو روک لیتا ہے۔ دوسری جگہ کہا حالتِ خواب میں نفس نکل کر اوپر کو چڑھتا ہے اور خواب دیکھتے وقت لوٹ کر روح کو خبر دیتا ہے پھر روح انسان کو خبر دے دیتی ہے۔

۵۔ ابو اسحاق محمد بن شعبان

نفس انسان کے جسم کی مانند ایک جسم ہے اور روح جاری پانی کی طرح ہے۔

۶۔ ابن سینا

کے مطابق اگر روح کا انحصار جسم پر ہوتا تو یہ جسم کی موت کے ساتھ فنا ہو جاتی۔

۷۔ علامہ حافظ ابن القیم

جو روح قبض کی جاتی ہے وہ ایک ہی ہے اور اسی کو نفس کہتے ہیں۔

۸۔ الکندی

نے انسانی جسم کو سادہ غیر فانی اور غیر مرکب قرار دیا وہ روح کو جسم سے الگ اور آزاد سمجھتا تھا اس کے خیال سے جسم کا تعلق محض خارجی نوعیت کا ہے۔

۹۔ امام غزالی

کہتے ہیں اگر تو خود کو پہچاننا چاہتا ہے تو یاد رکھ کے تیری تخلیق دو چیزوں سے عمل میں لائی گئی ہے۔ ایک تو یہی ظاہری ڈھانچہ ہے جسے جسم یا تن کہتے ہیں اور جسے ظاہری آنکھ سے دیکھا جاسکتا ہے۔ اور دوسری چیز باطن ہے جسے نفس، قلب اور جان سے موسوم کیا جاتا ہے۔ اسے ظاہری نہیں باطن کی آنکھ سے دیکھا جاسکتا ہے۔ اور تیسری حقیقت اسی معنیٰ باطن کا ادراک ہے۔ قلب سے مراد گوشت کا وہ ٹکڑا نہیں جو سینے میں بائیں جانب رکھا ہے اس کی ایسی کوئی قدر و قیمت نہیں کہ وہ تو جانوروں اور مردوں کے سینے میں بھی ہوتا ہے۔ جس کو ہم قلب کہتے ہیں وہ اللہ تعالیٰ کی معرفت کی جگہ ہے۔ یہ وہ روح نہیں جو جانداروں میں ہوتی ہے وہ نہ جسم ہے نہ عرض بلکہ فرشتوں کے گوہر کی جنس سے ایک جوہر ہے۔ قلب گویا ایک روشن اور شفاف آئینہ ہے اور برے اخلاق دھواں اور ظلمات ہیں، جب قلب تک پہنچتے ہیں تو اسے زنگ لگا دیتے ہیں۔

۱۰۔ حضرت امام مالک

کا قول ہے کہ بے شک روح ایک نورانی صورت ہے جو بالکل جسم کی طرح پوری شکل رکھتی ہے جن لوگوں کو کشف اور مشاہدے کی دولت نصیب ہو وہ عالم غیب کی مخلوقات سے ملاقات کرتے ہیں۔

## ۱۱۔ وہب بن منبہ

انسان کا نفس چو پاپیوں کی طرح پیدا کیا گیا ہے کہ وہ خواہشات رکھتا ہے اور انسان کو برائی کی طرف بلاتا ہے اور اس کا مسکن شکم ہے۔ انسان کی فضیلت اس کی روح ہے اس کا مسکن دماغ ہے انسان اس سے حیات پاتا ہے اور یہی انسان کو بھلائی کی دعوت دیتی ہے۔ قلب کی مثال بادشاہ کی سی ہے اور اعضاء خادم ہیں۔ جب نفس برائی کا حکم دیتا ہے تو اعضاء حرکت کرنے لگتے ہیں۔ مگر روح منع کرتی ہے اور اچھائی کی دعوت دیتی ہے۔ اگر قلب مومن ہوتا ہے تو روح کی اطاعت کرتا ہے اور اگر کافر ہوتا ہے تو نفس کی اطاعت کرتا ہے۔

## ۱۲۔ رازی کے چھ قول

رازی کہتا ہے اگر انسان کسی مخصوص جسم سے مراد ہو جو اس ظاہری بدن کے اندر موجود ہے تو اس قول کے ماننے والے اس جسم کے تعین میں مختلف ہیں۔

(1) بعض کے نزدیک اس جسم سے اخلاط اربعہ مراد ہیں جن سے یہ بدن پیدا ہوا ہے۔

(2) بعض کے نزدیک یہ جسم خون ہے۔

(3) بعض کے نزدیک یہ جسم روح لطیف ہے جو دل سے پیدا ہو کر شریانوں کے ذریعے تمام اعضاء میں پھیلتی ہے۔

(4) بعض کے نزدیک یہ جسم روح ہے جو دل میں پیدا ہو کر دماغ کی طرف چڑھتی ہے اور حفظ و فکر و ذکر کی صالح کیفیت سے متصف ہوتی ہے۔

(5) بعض کے نزدیک یہ جسم دل میں ایک ناقابل تجزی جز ہے۔

(6) بعض کے نزدیک یہ ایک جسم ہے جو ماہیت میں اس جسم محسوس سے الگ ہے اور وہ ایک علوی

نورانی لطیف جسم ہے جو زندہ اور متحرک ہے اور جو ہر اعضاء میں ساری ہے۔ پھر جب تک ان

اعضاء میں اس جسم سے پیدا شدہ آثار کی قبولیت کی صلاحیت رہتی ہے یہ جسم لطیف ان اعضاء میں

گھسا ہوا رہتا ہے اور ان پر حس و ارادے کا فیضان کرتا رہتا ہے اور جب یہ اعضاء غلیظ اخلاط کی

وجہ سے خراب ہو جاتے ہیں اور روح کے آثار قبول کرنے کی صلاحیت کھو بیٹھتے ہیں تو روح بدن

سے جدا ہو کر عالم ارواح میں چلی جاتی ہے۔

## ۱۳۔ شیخ عزالدین ابن سلام

ہر انسان میں دو ارواح ہیں ایک روح یقظہ یعنی وہ روح کہ جب وہ جسم میں ہو انسان عادتاً بیدار ہوتا ہے اور جب نکل جائے تو وہ انسان عادتاً سو جاتا ہے اور یہ انسان خواب دیکھتا ہے۔

اور دوسری روح حیات ہے کہ جب جسم میں ہو تو وہ جسم زندہ ہو جاتا ہے اور جب اسے نکال دیا جائے تو وہ لقمہ اجل ہو جاتا ہے۔

۱۴۔ حضرت خواجہ غلام فرید

جسم کثیف اور ظلماتی جسم سے مفارقت کے بعد روح کا جسم مثالی سے تعلق ہو جاتا ہے جو لطیف اور نورانی ہے جسم مثالی میں روح اسی طرح تصرف اور تدبیر کرتی ہے جس طرح کے اس دنیا کی زندگی میں۔

۱۵۔ ابن سعد

نے اپنی طبقہ میں وہب بن منبہ سے روایت کیا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ابن آدم کو مٹی سے تخلیق کیا پھر اس میں نفس کو تخلیق کیا جس کی وجہ سے اٹھتا بیٹھتا سنتا اور جانتا ہے پھر اللہ تعالیٰ نے روح تخلیق فرمائی جس کی وجہ سے اس نے حق و باطل کو پہچانا۔ ہدایت و گمراہی سے واقفیت حاصل کی۔

۱۶۔ شاہ ولی اللہ

اللہ تعالیٰ نے انسان میں دو قوتیں ودیت کی ہیں۔ ایک قوت ملکیہ (ملکوتی) اور دوسری قوت بہمیہ (حیوانی)۔ ان کی تفصیل یہ ہے کہ انسان میں ایک تو نسیم ہے اور یہ نسیم عبارت ہے روح ہوائی سے اور روح ہوائی کا مطلب یہ ہے کہ روح جسم میں طبعی عناصر کے عمل اور رد عمل سے پیدا ہوتی ہے اس نسیم یا روح ہوائی سے اوپر انسان میں ایک اور چیز بھی ہے جسے نفس ناطقہ روح کہتے ہیں۔ شاہ ولی اللہ اپنی کتاب "البدور البازغہ" میں مزید لکھتے ہیں۔

یہ بھی جاننا چاہیے کہ نفس ناطقہ یعنی صورتِ شخیصہ جس کی وجہ سے انسان کا کوئی فرد کہلاتا ہے، سب سے پہلے اس کا سہارا اخلاط کے بخار سے بنا ہوا لطیف جسم ہوتا ہے کیونکہ صورتوں کا طبعی تقاضا یہ ہے کہ ان کا سہارا وہ ہیولی ہو جس کو اس سے جبلی مناسبت ہے چونکہ نفس ناطقہ جملہ صورتوں میں لطیف ترین، صاف ترین اور مضبوط ترین صورت ہے۔ اس لئے اس کے وجود کا سہارا بھی اسی لطیف ترین جسم پر ہوتا ہے جو لطافت و اعتدال میں اپنی مثال آپ ہو۔ نفس ناطقہ کے حامل ہونے کے لئے ایسا ہی جسم ہیولا کا کام دے سکتا ہے یہ جسم لطیف جو کثیف رگ و پے میں سرایت کیئے

ہوئے ہے اور کمالات نفس ناطقہ کے اظہار کا ذریعہ ہے۔ ہمارے نزدیک نسمہ کہلاتا ہے۔ مزید لکھتے ہیں نسمہ ایک لطیف ترین جسم ہے جو انسان کے نفس ناطقہ سے اس طرح متصل ہے اور جسم عضری میں جاری و ساری ہے جس طرح پھول میں اس کی خوشبو بسی ہوئی ہوتی ہے۔ تمام افعال اور قوتوں کا حاصل بھی نسمہ ہے۔ اسے ہم نسمہ، روح طبعی اور بدن ہوائی کے نام سے بھی موسوم کرتے ہیں۔

غور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ بدن میں ایک لطیف بھاپ ہے جو اخلاط کے خلاصہ سے پیدا ہوتی ہے۔ حس کرنے کی، حرکت کرنے کی، اس میں وہ سب قوتیں ہوتی ہیں جو تدابیر غذا کے متعلق ہیں۔ طب کے احکام کو اس بھاپ سے بڑا تعلق ہے۔ تجربے سے معلوم ہوتا ہے کہ اس بھاپ کے رقیق ہونے کا اور غلیظ ہونے کا صاف اور مکرر ہونے کا بدنی قوتوں پر اور ان افعال پر جو ان قوتوں سے پیدا ہوتے ہیں بڑا اثر پڑتا ہے۔ اگر اس عضو پر یا اس بھاپ کے پیدا ہونے پر جس کو عضو سے تعلق ہے کوئی آفت پہنچتی ہے تو وہ بھاپ بگڑ جاتی ہے اور اس کے کام مختل اور پریشان ہو جاتے ہیں۔ اس بھاپ کی موجودگی سے زندگی باقی رہتی ہے اور اس کے تحلیل ہو جانے سے موت ہو جاتی ہے۔ بادی النظر میں روح اسی کا نام ہے۔ لیکن غور رس نظر میں یہ روح کا ادنیٰ طبقہ ہے۔ بدن میں اس کی مثال ایسی ہے جیسی گلاب میں پانی۔

پھر جب زیادہ غور کیا جاتا ہے تو معلوم ہوتا ہے کہ یہ روح حقیقی کا مرکب ہے اور روح حقیقی کے بدن سے متعلق ہونے کا مادہ ہے۔ حقیقی روح ایک جداگانہ چیز ہے وہ ایک نورانی نقطہ ہے ان تمام متغیرات سے جن میں سے بعض جوہر ہیں بعض عرض اس کا ڈھنگ نرالا ہے۔ وہ بچہ ہونے کی حالت میں بھی ویسی ہے جیسی بڑے ہونے کی حالت میں جیسے کہ وہ سیرنگی کی حالت میں ہے ایسے ہی سپیدی کی حالت میں ہے۔ ایسے ہی وہ تمام اضداد کی حالت میں یکساں ہے۔ اس کو ابتداً روح ہوائی سے تعلق ہے اور ثانیاً بدن سے۔ اس لئے کہ بدن روح ہوائی سے مرکب ہے۔ وہ عالم قدس کا ایک روزن ہے۔ جب ہوائی میں قابلیت اور استعداد پیدا ہو جاتی ہے تو اس روح سماوی کا اس پر نزول ہوتا ہے۔ جن امور میں کہ تغیر پیدا ہوتا ہے وہ زمین کی مختلف استعدادوں کی وجہ سے ہے۔ جیسے کہ دھوپ کپڑے کو سفید کرتی ہے اور دھو بی کو سیاہ۔ اور ہم کو وجدان صحیح سے معلوم ہو گیا ہے کہ موت روح حیوانی کے بدن سے جدا ہونے کا نام ہے۔ جس وقت کہ بدن میں روح ہوائی



پیدا کرنے کی قوت نہیں رہتی۔ روح ہوائی سے روح قدسی کے جدا ہونے کا نام نہیں ہے۔ جب مضعف امراض سے روح ہوائی تحلیل ہو جاتی ہے تو یہ حکمت الہی کا مقتضی ہے کہ روح ہوائی اس قدر باقی رہ جائے کہ روح الہی کا اس سے تعلق رہ سکے۔

۱۷۔ داتا گنج بخش علی ہجویری

مجموعی انسان کی تعریف کرتے ہوئے لکھتے ہیں۔ کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ روح سے مراد خون ہے۔ ایک گروہ کے نزدیک نفس سے مراد روح ہے۔ ایک گروہ کہتا ہے کہ انسان سوائے روح کے اور کچھ نہیں اور یہ جسم تو اس کے لئے ذرہ بکتر ہے یا ایک مکان ہے یا مقام ہے جس میں کہ وہ رہتی ہے یا ایک جگہ ہے کہ جس میں وہ قیام پزیر ہے۔ تاکہ طبائع کی خرابیوں سے اسے تحفظ و پناہ حاصل رہے اور حس و عقل اس (روح) کی صفات میں سے ہیں۔ لیکن یہ خیال باطل ہے کیونکہ روح کے جسم سے الگ ہو جانے کے بعد بھی انسان کو انسان ہی کہتے ہیں اور یہ نام انسان اس شخص کے مردہ ہو جانے سے ختم نہیں ہو جاتا بلکہ ویسا ہی رہتا ہے جیسا کہ اس کے زندہ ہونے کی صورت میں تھا یعنی جب روح اس کے ساتھ تھی تو وہ ایک زندہ انسان تھا اور جب روح نے ساتھ چھوڑ دیا تو وہ مردہ انسان کہلانے لگا لیکن انسان وہ بہر حال رہا دوسرے یہ کہ جان یا روح تو حیوانوں کے جسم میں بھی موجود ہے لیکن اس کے باوجود انہیں انسان نہیں کہتے۔ اگر انسانیت کی علت فقط روح ہی ہوتی تو چاہیے تھا کہ جس شے میں جان ہوتی اسے انسان ہی کہتے۔ پس ان لوگوں کے قول کے باطل ہونے کا ثبوت تو واضح طور پر مل گیا۔ ایک اور گروہ کا کہنا ہے کہ اس اسم انسان کا اطلاق روح اور جسم دونوں پر بیک وقت ہوتا ہے اور جب ایک ان میں سے دوسرے سے جدا ہو جائے تو یہ اسم بھی اس سے ساقط ہو جاتا ہے۔ مثلاً اگر کسی گھوڑے میں اگر سیاہ اور سفید رنگ جمع ہو جائیں تو اسے ابلق کہتے ہیں۔ لیکن اگر وہ دونوں رنگ ایک دوسرے سے جدا ہو جائیں تو لفظ ابلق ساقط ہو گیا اور تب ان میں سے ایک سیاہ اور دوسرا سفید اور یہ قول بھی باطل ہے اور اس کا باطل ہونا خود ارشاد خداوندی سے ثابت ہو جاتا ہے جہاں فرمایا ہے کہ زمانہ میں ایک وقت انسان پر یہ بھی آچکا ہے کہ اس کا کچھ ذکر بھی نہ تھا (سورۃ الدھر) یہاں اشارہ خاک آدم کی طرف ہے۔ یعنی اس بے جان مٹی کی طرف جس سے ابھی انسان کی تخلیق عمل میں نہیں لائی گئی تھی۔ یعنی ایک وہ وقت بھی تھا کہ مٹی تھی لیکن انسان نہیں تھا کیونکہ اس مٹی سے اس کا جسم بنا کر اس میں روح نہیں پھونکی گئی تھی۔

ایک گروہ کا کہنا ہے کہ انسان ایک ایسا جزو ہے جس کا تجزیہ و تقسیم ناممکن ہے اور دل اس کا محل ہے کہ آدمی کے تمام اوصاف کا منبع وہی تو ہے۔ اور یہ بھی محال ہے کیونکہ اگر کسی شخص کو مار ڈالنے کے بعد اس کا دل باہر نکال لیا جائے تو بھی نام انسانیت اس سے ساقط نہیں ہو جاتا اور اس پر بھی متفق ہیں کہ جان سے پیشتر آدمی کے جسم میں دل نہیں تھا اور تصوف کے بعض مدعیوں کو اس کے معنی سمجھنے میں غلطی ہوئی ہے اور وہ کہتے ہیں کہ انسان کھاتا ہے، پیتا ہے لیکن محل تغیر نہیں بلکہ ایک راز خداوندی ہے اور یہ جسم تو بس اس کا لباس ہے اور یہ امتزاج طبع اور اتحاد جسم و روح کی شکل میں اسے ودیعت کیا گیا ہے لیکن میں کہتا ہوں کہ اتفاق اس پر بھی کا ہے کہ عاقل ہوں یا دیوانے اہل فسق ہوں یا جاہل یا کافر کہلاتے تو سب انسان ہی ہیں۔ حالانکہ اس راز کی کوئی ادا ان میں دکھائی نہیں دیتی حالانکہ سبھی کھاتے ہیں پیتے ہیں اور تغیر پذیر بھی ہیں اور کسی شخص کے جسم میں ایسے کون سے معنی از خود نمایاں ہوتے ہیں جن کی وجہ سے اسے انسان کہا جائے؟ اسی طرح اس کے معدوم ہو جانے پر بھی ایسی کوئی چیز نہیں ہوتی جسے انسان کہا جائے۔

اور اللہ تعالیٰ نے ان تمام مادوں کے مرکب کو انسان کہا ہے جس سے انسان کی ترکیب عمل میں لائی گئی ہے۔ بغیر اس معنی کے جو بعض آدمیوں میں ہوتے ہی نہیں۔ ارشاد الہی ہے کہ۔

ترجمہ:- ہم نے پیدا کیا انسان کو مٹی کے خلاصہ سے۔ پھر ہم نے اسے بنایا ایک نطفہ ایک مضبوط قرار گاہ (رحم) میں پھر ہم نے نطفہ کو خون بستہ بنایا پھر خون بستہ کو گوشت کا لوتھڑا اور لوتھڑے کو ہڈیاں پھر ہڈیوں پر گوشت چڑھایا اور پھر اسے اور ہی مخلوق یعنی انسان کامل بنا دیا۔ پس بابرکت ہے اللہ سب سے اچھا بنانے والا (سورۃ المومنون) پس خدائے عزوجل کے ارشاد کے مطابق جو سب سے زیادہ صادق ہے یہ خاک پاک جسے ایک خاص صورت دے دی گئی اور ایک مخصوص انداز سے آراستہ کر دی گئی، بالا آخر انسان کے نام سے موسوم ہوئی، جیسا کہ اہل سنت کے ایک گروہ کا کہنا ہے کہ انسان ایک جاندار چیز ہے۔ جس کی صورت اس انداز سے بنائی گئی ہے کہ اسے موت بھی آجائے تو اسم انسان اس سے علیحدہ نہیں کیا جاسکتا جب تک کہ صورت معبود اور آلت مرسوم ظاہر و باطن میں کسی نہ کسی صورت سے اسکی وابستگی باقی ہے اور صورت معبود سے مراد تندرست یا بیمار ہونا ہے اور آلت مرسوم سے مراد عاقل یا دیوانہ ہونا ہے اور یہ ایک متفقہ حقیقت ہے کہ جو انسان زیادہ صحت مند ہے وہ تخلیق و پیدائش میں اتنا ہی کامل تر ہوتا ہے۔

پس واضح رہے کہ انسان کی وہ ترکیب جسے کامل تر کہا گیا ہے وہ محققین کے نزدیک تین باتوں سے مکمل ہوتی ہے یعنی روح، نفس اور جسم۔

ان میں سے ہر چیز کے لئے ایک صفت ہے جو اس کے ساتھ قائم ہے یعنی روح کو عقل، نفس کو خواہش اور جسم کو حس کے ساتھ تعلق و معنی ہے۔ اور آدمی نمونہ ہے عالم کل کا اور عالم سے مراد ہے دونوں جہان۔ گویا انسان میں دونوں جہان کا نشان پایا جاتا ہے۔ اس جہان کا نشان ہوا مٹی، پانی، آگ اور اس کی ترکیب بلغم، خون، صفراء، سودا ہے۔

اور اس جہان کا نشان بہشت، دوزخ اور عرصات (میدان) ہے۔ چنانچہ جان اپنی لطافت کی وجہ سے بمنزلہ بہشت، نفس اپنی آفت کے باعث بمنزلہ دوزخ اور جسم بمنزلہ عرصات ہے۔ ان ہر دو کا جمال قہر و انس سے عبارت ہے۔ پس بہشت اس کی رضا کی تاثیر ہے اور دوزخ نتیجہ اس کے قہر و غضب کا ہے۔ اسی طرح راحت معرفت سے اور اس کا نفس حجاب و گمراہی سے ہے۔

### تبصرہ، تجزیہ، موازنہ:

مسلمان روحانی صوفیوں مفکروں فلسفیوں اور سائنسدانوں نے انسان کی بہت بہترین تعریف کی ہے۔ مسلمانوں نے صدیوں پہلے غیر سائنسی دور میں مادی جسم، روح، نفس اور مجموعی انسان کی جدید ترین سائنسی تعریف کی ہے۔ آج جدید سائنسی دریافتوں سے ان میں سے اکثر تعریفوں کی سائنسی شہادتیں میسر آ گئیں ہیں جبکہ کچھ تعریفیں تو بہت آگے کی ہیں سائنس کی پہنچ سے دور (لیکن یہ محض چند تعریفیں ہی ہیں کوئی علم نہیں)۔ اگرچہ مسلمانوں کا کام تجرباتی کام نہیں ہے فقط تحریری کام ہے لیکن یہ محض تحریری فلسفیانہ کام ہر دور کے کام سے منفرد کام ہے۔ صرف مسلمانوں کی تحریروں میں مادی جسم، روح اور نفس کی نہ صرف انفرادی تعریف ملتی ہے بلکہ پہلی مرتبہ صرف انہوں نے مجموعی انسان کی بھی تعریف کی ہے جبکہ اور کسی کے کام میں انسان کی ایسی مجموعی تعریف نہیں ملتی۔ مسلمانوں نے نہ صرف ہر روح، نفس اور جسم کی جدید ترین تعریف کی ہے بلکہ ہر ایک کے اعمال و افعال اور خصوصیات کا بھی تذکرہ کیا ہے۔ جبکہ یونانیوں نے اور جدید محققوں نے جدید سائنسی طریقوں سے روح و نفس کی خصوصیات و اعمال کا تذکرہ تو کیا ہے کسی نہ کسی حد تک لیکن وہ ان تمام کی انفرادی شناخت میں ناکام رہے ہیں۔ اور یہ تمام مجموعی انسان کی تعریف بھی کبھی نہیں

کر سکے۔

جبکہ مسلمانوں کی تحریروں میں جو روح و نفس کی خصوصیات بیان ہوئی ہیں وہ درحقیقت آج کی جدید ترین تحقیقات سے بھی آگے کی ہیں اور انسان کی مجموعی تعریف تو جدید ترین تحقیقات سے بھی ممکن نہیں ہوئی ہے۔ اب ہم مسلمانوں کے کام کا تجزیہ و موازنہ کرتے ہیں۔

سلطان باہو نے صدیوں پہلے غیر سائنسی دور میں مادی جسم کی سائنسی تعریف کی ہے انہوں نے مادی جسم کو عناصر کا مجموعہ قرار دیا اور ان عناصر کو مزید چھوٹے اجزاء مثلاً ایٹموں اور خلیوں پر مشتمل بتایا نیز انہوں نے ان کی مقدار کا بھی تعین کیا۔

خواجہ شمس الدین عظیمی نے انسان کو تین جسموں یا تین روحوں کا مرکب قرار دیا ہے انہوں نے ہر دور کے مفکروں کی طرح روح کو حصوں میں تقسیم کیا ہے یہ تقسیم درست نہیں۔ روح کے کوئی حصے نہیں یہ محض غلط فہمی کا نتیجہ ہے ہاں یہ درست ہے کہ انسان تین جسموں کا مجموعہ ہے انہوں نے ان تین اجسام کو روشنی و نور کی لہریں یا کرنٹ یا محسوسات کی تین ہیولے قرار دیا ہے۔ ایسی ہی تعریف جدید محققین AURA یا چکراز Chakras کی کرتے نظر آتے ہیں۔ ہر دور کے دیگر مفکروں نے انسان کو دو نظاموں روح و جسم کا مجموعہ قرار دیا ہے جبکہ فقط مسلمانوں نے انسان کو تین نظاموں کا مجموعہ قرار دیا ہے۔

رازی نے انسان کے بارے میں جن چھ اقوال کا تذکرہ کیا ہے یہ وہ مختلف اور متضاد تعریفیں ہیں جو مختلف مفکرین انسان کے بارے میں کیا کرتے ہیں۔ ہر دور میں مختلف مفکرین انسان کے بارے میں ایسی ہی متضاد رائے دیا کرتے ہیں اس کی وجہ مجموعی انسان سے لاعلمی ہے۔ لہذا کوئی تو مادی جسم کو ہی انسان قرار دیتا ہے تو کوئی روح کو اصل انسان قرار دیتا ہے، کوئی نفس کو اصل محرک قرار دیتا ہے تو کوئی کسی لطیف وجود کو انسان کا اصل تشخص قرار دیتا ہے۔ جبکہ مادی جسم روح یا نفس یا لطیف اجسام ہر ایک انفرادی حیثیت میں انسان نہیں بلکہ انسان ان تمام کی ترکیب کا ایک خاص الخاص مجموعہ ہے۔

جبکہ محققین، فلسفی، سائنسدان انسان کی اسی مجموعی حیثیت سے تاحال ناواقف ہیں لہذا جو محقق انسان کی کسی بھی انفرادی حیثیت (مادی جسم یا روح یا نفس) سے واقف ہے اسی حیثیت کو وہ انسان قرار دیتے ہیں۔ ہر محقق اپنی معلومات کے مطابق انفرادی حیثیت میں ہی انسان کی تعریف کرنے

کی کوشش کرتے ہیں۔ اور ظاہر ہے کہ کوئی بھی غلط کوشش کامیاب نہیں ہو سکتی اور نہ ہی اس کے نتائج مثبت ہو سکتے ہیں۔ لہذا یہ ثابت شدہ امر ہے کہ انسان محض مادی جسم نہیں ہے نہ ہی وہ محض روح ہے۔ لہذا اگر کوئی اسے محض جسم یا محض روح ثابت کرنے کی کوشش کرے گا اسے یقیناً ناکامی کا منہ دیکھنا ہوگا۔

وہب بن منبہ نے روح، نفس، جسم کے تخلیقی عناصر کا بھی ذکر کیا انہوں نے روح و نفس کی کچھ خصوصیات بھی بیان کیں اور دل کو اطلاعات کا منبع قرار دیا جبکہ دل سے ان کی مراد ہر خلیے کا مرکز ہے انہوں نے روح و نفس کی انفرادی شناخت بھی قائم کی۔

شیخ عزالدین نے بھی روح و نفس کی خصوصیات بیان کیں انہوں نے بھی دو ارواح کا تذکرہ کیا روح حیات تو ٹھیک ہے لیکن روح یقظہ روح نہیں ہے یہ غلطی تقریباً ہر دور کے مفکرین کیا کرتے ہیں کہ ہر لطیف وجود کو روح قرار دے دیتے ہیں وہ ایسا کیوں کرتے ہیں اس کی وجہ ہم آگے بیان کریں گے۔

صرف مسلمانوں میں چند ایسے مفکر پائے جاتے ہیں جنہوں نے روح و نفس کو انفرادی حیثیت میں شناخت کیا ہے۔ خواجہ غلام فرید نے موت کے بعد روح کی منتقلی کی صحیح تعریف کی ہے لیکن یہ فنائی ترتیب کی مکمل تعریف نہیں ہے ہر دور میں مادی جسم سے مفارقت کے بعد روح کے سفر یا انتقالی کیفیت کو سمجھنے میں غلطی کی گئی ہے اور اس فنائی ترتیب کو اس برے طریقے سے خلط ملط کیا گیا ہے کہ جس سے بڑے بڑے غلط فلسفوں نے جڑ پکڑ لی ہے جیسا کہ آواگون کا نظریہ یہ اسی غلطی کا نتیجہ ہے۔

مسلمانوں میں کوئی تو روح کی تخلیقی ترتیب کا سرسری علم رکھتا تھا تو کوئی مادی جسم کی تھوڑی بہت تخلیقی ترتیب سے آگاہ تھا لیکن مجموعی انسان کی تخلیقی ترتیب اور فنائی ترتیب کہیں دیکھنے میں نہیں آتی جو سرسری معلومات مسلمانوں کی تحریروں میں ملتی ہیں وہ دوسرے ادوار میں ناپید ہیں۔ اگرچہ قرآن مجید نے یہ تخلیقی و فنائی ترتیب بیان کی ہے لیکن کوئی عالم یا مفکر اس ترتیب کو سمجھ نہیں پایا۔ اگر اس علم پر عبور حاصل کیا جاتا تو شاید یہ ممکن ہو جاتا لیکن ایسا ہوا نہیں۔ ہم اس کتاب میں ہزاروں برس بعد مجموعی انسان کی فنائی اور تخلیقی ترتیب کو بھی مرتب کریں گے۔

شاہ ولی اللہ نے بھی مختلف روحوں کا تذکرہ کیا اس ایک غلطی کے علاوہ ان کی روح و نفس کے حوالے

سے مجموعی تعریف سب سے اچھی تعریف ہے۔ انہوں نے بھی روح و نفس کی انفرادی شناخت کے علاوہ خصوصیات بیان کی ہیں اور لطیف اجسام کے عناصر کا ذکر بھی کیا ہے۔

داتا صاحب نے انسان کو روح و نفس و جسم کا مجموعہ قرار دیا۔

بحیثیت مجموعی مسلمانوں نے نہ صرف انسان کی تعریف کی بلکہ روح، نفس کی انفرادی شناخت بھی قائم کی اور ان تمام کی الگ الگ کچھ بنیادی مرکزی خصوصیات کا بھی ذکر کیا اور ان اجسام کے تخلیقی عناصر کا تذکرہ کرنے کی بھی کوشش کی کہیں کہیں سرسری طور پر روح یا جسم کی تخلیقی ترتیب کا بھی ذکر ہے اگرچہ یہ تعریضیں قدیم اور جدید تعریضوں سے بہت آگے کی تعریضیں ہیں اور صحیح سمت میں راست اقدام ہیں۔ لیکن پھر بھی یہ تمام تعریضیں محض ابتدائی تعریضیں ہیں صحیح سمت میں اشارہ ہیں درست سمت کی نشاندہی ہیں جبکہ راستہ ہمیں خود تلاش کرنا ہوگا جو کہ بہت دشوار گزار ہے۔

مسلمانوں کی ان تعریضوں سے درج ذیل نتائج سامنے آ رہے ہیں۔

نتائج:

- (1) مسلمانوں نے پہلی مرتبہ مجموعی انسان کی تعریف کی ہے۔
- (2) صرف مسلمانوں نے انسان کو تین نظاموں (روح، نفس، جسم) کا مجموعہ قرار دیا ہے۔ ان سے پہلے اور ان کے بعد سب محققوں نے دو نظاموں کا ذکر کیا ہے۔ یعنی روح و جسم۔
- (3) مسلمانوں نے صدیوں پہلے غیر سائنسی دور میں انسان (روح، نفس، جسم) کی جدید سائنسی تعریف کی ہے۔
- (4) مسلمانوں نے پہلی مرتبہ ہر روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کی۔
- (5) مسلمانوں نے ہر روح، نفس، جسم کی خصوصیات کا بھی ذکر کیا۔
- (6) مسلمان روح یا جسم کی تخلیق یا فنائی ترتیب کے کچھ ٹکڑوں سے سرسری واقفیت تو رکھتے تھے لیکن وہ مجموعی ترتیب کو سمجھنے سے قاصر رہے لہذا وہ مجموعی انسان کی تخلیقی اور فنائی ترتیب کو ترتیب دینے میں کامیاب نہیں ہو سکے۔
- (7) مسلمانوں نے غیر سائنسی دور میں مادی جسم کی جدید سائنسی تعریف کی ہے۔
- (8) مسلمانوں کا کام تحریری فلسفیانہ کام ہے۔
- (9) کچھ مسلمانوں نے بھی روح کو حصوں میں تقسیم کیا ہے۔

(10) مسلمانوں کی روح، نفس و جسم کے بارے میں فلسفے، جدید تحقیقات سے تو 100 فیصد مماثلت رکھتے ہی ہیں لیکن یہ جدید تحقیقات سے ذرا آگے کے نظریات ہیں۔ (اگرچہ یہ نظریات ابتدائی نظریات اور محض تعریفیں ہیں)

## 8۔ انسان کی جدید تعریف

۱۔ ڈاکٹر الیکسز کیرل

انسان اپنے جسم سے عظیم تر ایک چیز ہے اور اس پیمانہ خاکی سے باہر چھلک رہا ہے۔

۲۔ مسز گاسکل

اپنی کتاب "What is life" میں لکھتی ہیں کہ جسم میں بیک وقت دو نظام کارفرما ہیں، ایک جسمانی اور دوسرا اشیری۔ اشیری جسم مادی جسم کے ذرات (Atoms) میں رہتا ہے اور بعد از موت الگ ہو جاتا ہے۔ اصلی و حقیقی جسم اشیری ہے۔ اور مادی جسم محض ایک خول یا سرائے ہے جس میں جسم لطیف کا قیام عارضی ہے۔

۳۔ ٹرائسن

اس دنیا میں ہم دو جسم لے کر آتے ہیں۔ مادی اور اشیری۔ یہ اجسام ایک دوسرے میں یوں داخل ہیں جس طرح چینی دودھ میں۔ اشیری جسم مستقل چیز ہے جو زمین سے گزر کر آگے جا رہا ہے اور مادی جسم اس وقفہ کے لئے محض حفاظتی خول کا کام دیتا ہے۔

۴۔ پادری لیڈ بیٹر

تم (انسان) جسم نہیں ہو۔ یہ جسم تمہاری قیام گاہ ہے۔ اجسام محض خول ہیں جنہیں ہم موت کے وقت یوں پرے پھینک دیتے ہیں جس طرح کے کپڑے اتار دیئے جاتے ہیں۔

۵۔ دو نظریے

انسانی وجود کے بارے دو نظریے ہیں مشینی یا مادی دوسرا روحی یا روحانی۔

(1) - (CEBERO CENTRIC) :- کی رو سے روح اس طرح جسم کی پیداوار ہے جس طرح لعاب دہن دہن کی۔

(2) - (PSYCHO CENTRIC) :- انسان کو روحانی وجود قرار دیتے ہیں ان کی نظر میں جسم کی اہمیت لباس سے زائد نہیں جو روح نے بعض مقاصد کے لئے اوڑھ رکھا ہے۔

تبصرہ، تجزیہ، موازنہ

جدید دور کے محققین برسوں کے سائنسی تجربات اور جدید دریافتوں سے انسان کے باطنی رخ کو تو دریافت کر بیٹھے ہیں۔ ایٹم کی طرح انسان کے اندر AURA، چکر از Chakras اور Subtle bodies کا مشاہدہ تو کر رہے ہیں لیکن سمجھ نہیں پا رہے کہ انسان کے اندر یہ کیسا وسیع جہان آباد ہے۔ وہ حیران ہیں کہ انسان تو اپنے اندر اپنے من کی دنیا میں کائنات سمیٹے بیٹھا ہے اور اپنے اندر کے اس وسیع اور حیرت انگیز نامانوس جہان کو وہ حیرت سے دیکھ تو رہے ہیں لیکن اسے بیان کرنے کے لئے ان کے پاس الفاظ نہیں ہیں۔ ہاں لیکن آج انسان کے باطن کی عظمت کا اندازہ کر کے انہیں کہنا پڑ رہا ہے کہ مادی جسم تو محض پیمانہ خاکی ہے، ایک خول ہے سرائے ہے حقیقی روح کے لئے محض عارضی قیام گاہ ہے۔ جسم تو عارضی شے ہے جبکہ روح تو اسے زمین پر چھوڑ کر کہیں لے سفر کی تیاری پر ہے۔ جدید محققین اپنی دریافتوں کی روشنی میں یہ کہنے پر مجبور ہو گئے ہیں کہ انسان فقط مادی جسم نہیں بلکہ اس کا وسیع و عریض باطن بھی ہے اور انسان ایک نہیں دو نظاموں کا مجموعہ ہے۔

یہ وسیع جہان باطن انہوں نے دریافت تو کر لیا لیکن ابھی وہ اس کی کوئی حتمی تعریف نہیں کر پا رہے ابھی تک وہ اسے کوئی حتمی نام بھی نہیں دے پائے کبھی اسے سپرٹ کہتے ہیں کبھی Soul کبھی نفس کبھی متحرک یادداشت

مثلاً ڈبلیو ایچ مائزر (Frederic. W.H. Myers) نے اپنی کتاب

Human Personality and its survival of bodily death میں سینکڑوں پراسرار واقعات، حادثات، تجربات کا سائنسی تجزیہ کرنے کے بعد یہ نتیجہ اخذ کیا کہ جسمانی موت کے بعد انسان کا وہ حصہ باقی رہتا ہے جسے سپرٹ (Spirit) کہتے ہیں۔

ڈاکٹر ریمینڈ موڈی (1975) نے اپنی کتاب لائف آفٹر لائف میں مرکز زندہ ہونے والے ڈیڑھ سو افراد کے بیانات پر سائنسی تجربات و تجزیات کے بعد نتیجہ اخذ کیا کہ انسان محض مادی وجود



نہیں بلکہ ایک اور سمت یا مکمل ذات ہے جسے نفس، Soul یا ادراک جو بھی کہیں وہ ہے ضرور۔  
برطانیہ کے رابن فرامین نے کہا میرا خیال ہے وہ ایک متحرک یادداشت ہے اور روح نہیں ہے یہ  
ایسی یادداشت ہے جو انسان کے مرنے کے بعد رہ جاتی ہے۔

۱۸۸۲ میں لندن میں ایک کمیٹی بنی اس کمیٹی کا مقصد یہ تھا کہ روح اور اس کے متعلق مسائل پہ  
بحث کی جائے۔ اس کمیٹی میں یورپ کے ممتاز علماء اور سائنسدان شامل تھے یہ کمیٹی تیس سال قائم  
رہی اور اس مدت میں اس نے حضرات ارواح کے مختلف واقعات کی جانچ پڑتال کی اور چالیس  
ضخیم جلدوں میں اپنے تاثرات کو شائع کیا تیس سال کی چھان پھٹک کے بعد کمیٹی اس نتیجہ پر پہنچی کہ  
انسان کی جسمانی شخصیت کے علاوہ ایک اور شخصیت بھی ہے جو گوشت پوست کے جسم سے کہیں  
زیادہ مکمل وارفع ہے۔ یہی اعلیٰ وارفع شخصیت موت کے بعد قائم اور برقرار رہتی ہے۔

سوال یہ ہے کہ برسوں کی تحقیقات اور تجربات اور مشاہدوں کے باوجود یہ جدید محقق انسان کے باطنی  
تشخص سے انجان کیوں ہیں۔ کیوں وہ ابھی تک اس کے نام تک کا تعین نہیں کر سکے۔  
تمام تجربات کے باوجود۔ باطنی پہلوؤں کا بغور مشاہدہ کرنے کے باوجود درحقیقت یہ سائنسدان  
اور محقق AURA چکراز، سبیل باڈیز یا نذیر لطیف اجسام کے گھن چکر میں الجھ کر رہ گئے ہیں وہ  
سمجھ نہیں پارے کہ انسان کے جسم سے کتنے لطیف جسم وابستہ ہیں، کتنے نظام اس کے اندر کام کر  
رہے ہیں؟ کیوں؟ اور کیسے وہ ان تمام کا باہم ربط بھی قائم نہیں کر پارے اور ماضی کے ناموں  
روح و نفس کو بھی ان سے منسوب نہیں کر پارے انہیں سمجھ نہیں آ رہی کہ ان ڈھیروں لطیف اجسام  
میں سے آخر روح کونسی ہے اور آخر روح کا مطلب ہی کیا ہے چلیں کوئی ایک روح ہوگی تو باقی  
لطیف اجسام کا کیا مطلب ہے؟ اور کیا اور کیسا تعلق ہے آخر ان لطیف اجسام کا انسان سے اور آخر  
انسان کیا اور کیسا راز ہے کیسے کون کون سے اور نذیر کتنے جہان آباد ہیں بظاہر اس سادہ نظر آنے  
والے انسان میں؟ ان تمام سوالوں کے جواب سائنسدانوں کے پاس نہیں ہیں اور اس جادو نگری  
یعنی انسانی باطن کے اندر جھانک کر اس کی وسیع دنیا کو دریافت کر کے وہ آج حیران اور پریشان  
ہیں سمجھ کچھ نہیں رہے الجھ رہے ہیں۔ بس اتنا ہی کہ پاتے ہیں کہ انسان محض جسم نہیں بلکہ انسان  
روحانی تشخص بھی رکھتا ہے یا انسان دو نظاموں کا مجموعہ ہے۔ درحقیقت انسان محض دو نظاموں یا  
محض روح و جسم کا مجموعہ نہیں ہے تو پھر انسان کتنے نظاموں کتنے اجسام کا مجموعہ ہے، انسان کے

باطنی لطیف اجسام کی کیا تعریف اور تعارف ہے۔ اب ہم یہاں اسی انسانی باطنی دنیا سے متعارف کروائیں گے۔

## نتائج

- (1) جدید محققوں نے انسان کو دو نظاموں کا مجموعہ قرار دیا ہے۔
  - (2) جدید محققین سائنسی دریافتوں کی بدولت انسان کے باطن کو تو دریافت کر بیٹھے ہیں لیکن اسے کوئی حتمی نام نہیں دے پارہے۔
  - (3) وہ ان لطیف اجسام کا مادی جسم سے ربط نہیں جوڑ پائے۔
  - (4) وہ ان تمام کا تعارف، تعریف، مقصد، عمل اور خصوصیات نہیں جانتے اگرچہ کسی نہ کسی حد تک ان کے مادی جسم پر اثرات کا جائزہ لیتے رہتے ہیں۔
  - (5) وہ ان تمام (AURA، چکراز، سبٹل باڈیز یا لطیف اجسام) کی انفرادی شناخت نہیں کر پائے۔ اگرچہ انہوں نے انہیں مختلف نام دے رکھے ہیں۔
  - (6) وہ روح، نفس کو شناخت نہیں کر پائے۔ نہ ہی وہ روح یا نفس سے متعارف ہیں۔
  - (7) جدید محققین لطیف اجسام کی وجہ سے آواگون جیسے نظریات کو درست سمجھنے لگے ہیں حالانکہ یہ محض ان کی غلط فہمی ہے۔
  - (8) جدید محققین انسان کے باطن کے مشاہدے کے بعد بری طرح الجھ گئے ہیں۔ اور سمجھ نہیں پارہے کہ یہ "انسان" کیسا راز ہے۔
- ان صفحات میں ہم پہلی مرتبہ اس معنی "انسان" کو حل کر کے انسان کی تعریف پیش کریں گے۔

## 9۔ قدیم انسان

آج یہ جاننا انتہائی ضروری ہے کہ

۱۔ قدیم انسان حیوان نہیں انسان ہی تھا ہمیشہ سے۔

۲۔ قدیم انسان یا ماضی کا انسان آج کے ترقی یافتہ مہذب انسان سے زیادہ ترقی یافتہ، تعلیم یافتہ اور تہذیب یافتہ تھا۔

۳۔ قدیم انسان اپنے (انسان) بارے میں آج کے انسان سے زیادہ علم رکھتا تھا۔

جبکہ آج جدید دور میں ماضی کے انسان کو غیر مہذب اور غیر ترقی یافتہ تصور کیا جاتا ہے۔ ماہرین نے بڑے اندازے تخمینے لگانے کے بعد یہ ثابت کیا ہے کہ ابتداء کا انسان تہذیب و تمدن سے عاری، بے علم، بے عقل، بے لباس اور بے ہنر تھا۔ اس کا معیشت، معاشرت اور سائنس سے دور کا بھی واسطہ نہیں تھا۔ ابتدا کا انسان جنگلوں میں جانوروں کی سی زندگی بسر کر رہا تھا۔ جبکہ بعض تو اس سے آگے بڑھ کر انسان کو حیوان ہی قرار دے دیتے ہیں یعنی ابتداء کا انسان حیوان ہی تھا اور رفتہ رفتہ بتدریج اس کی جسامت میں تبدیلی آئی اور یوں وہ آج انسانی روپ میں ظاہر ہوا بتدریج اس کی عقل اور علم میں اضافہ ہوا اور انسان تہذیب سے آشنا ہوا۔

یہ سب انتہائی غیر سائنسی اور بے بنیاد مفروضے ہیں جن کی آج ہمیں مسلسل سائنسی و غیر سائنسی شہادتیں میسر آ رہی ہیں۔ جبکہ تاریخ اور مذاہب ہمیں یہی بتاتے چلے آ رہے ہیں کہ انسان ابتداء سے باشعور، باعلم اور بالباس ہے۔ آج ہمیں مسلسل سائنسی شہادتیں میسر آ رہی ہیں جن کے مطابق ماضی کے انسان نے آج کے انسان سے زیادہ سائنسی ترقی کی تھی اور ماضی کے انسان جانور نہیں تھے بلکہ آج کے انسان سے زیادہ ذہنی و جسمانی اعتبار سے مضبوط انسان تھے۔ وہ آج کے انسان سے زیادہ اپنے (انسان) بارے میں علم رکھتے تھے۔ قدیم انسان نہ صرف اپنی باطنی، روحانی صلاحیتوں میں آج کے انسان سے آگے تھا بلکہ مادی ترقی میں بھی آج کے انسان سے زیادہ ترقی یافتہ تھا۔

آج جدید تحقیقات ماضی کے قصوں سے آگے نہیں بڑھیں بلکہ ابھی تک ماضی کے روحانی تجربات کو سمجھنے کی کوشش میں مصروف کار ہیں۔ مذہبی اور تاریخی قصوں کی شہادت آج کی جدید تحقیقات فراہم کر رہی ہیں۔ نیز آج ہم اس قابل ہیں کہ ان تاریخی تجربات کو تجرباتی کسوٹی پر پرکھ سکتے ہیں۔ آج کی جدید تحقیقات ماضی کے روحانی تجربات کے ثبوت تو فراہم کر رہی ہیں لیکن ابھی ان سے بہت پیچھے ہیں۔ ماضی کی تاریخوں میں روحانی کمالات کے جتنے قصے رقم ملتے ہیں ایسے روحانی

کمالات آج دیکھنے میں نہیں آتے۔ چند نام نہاد جادوگر کیمیاگری کے کچھ کرتب تو دکھاتے نظر آتے ہیں لیکن یہ کچھ خاص قابل توجہ نہیں ہیں۔ آئیے ماضی کے انسان کی مادی و روحانی برتری کے کچھ مشہور ثبوت ملاحظہ کیجیے۔

## قدیم انسان کی روحانی برتری

ماضی کا انسان روحانی طور پر آج کے انسان سے زیادہ ترقی یافتہ تھا۔ لہذا ماضی کا انسان اپنے روحانی تشخص یعنی باطن سے آج کے انسان سے زیادہ معلومات رکھتا تھا جس کی تصدیق آج کی جدید سائنس بھی کرنے پر مجبور ہے۔ مثلاً آج کے سائنسدانوں نے (۱۹۳۰ء) میں AURA کی تصویر کشی کی اہلیت حاصل کی ہے جبکہ ہزاروں برس قبل بھی AURA کی تصویر کشی کی جاتی تھی۔ قدیم ادوار میں یونانی، رومی، ہندو اور عیسائی اقوام میں ان کی مذہبی شخصیات کی تصاویر اور مجسموں میں ان کا ہیولا دکھایا جاتا تھا جسے انگریزی میں "HALO" اور قدیم یونانی اور لاطینی زبان میں "AURA" اور "AUREOLA" کہا جاتا تھا۔ جبکہ آج اسی تاریخی مناسبت سے سائنسدانوں نے انسان کے باطنی رخ یا لطیف جسم کا نام "AURA" رکھا ہے۔

جبکہ ڈھائی ہزار برس قبل ایران کے عظیم فاتح (جو سائرس اعظم، کورش اعظم اور ذوالقرنین کے ناموں سے مشہور ہے) کے باپ کے محل کو منحوس اثرات سے محفوظ رکھنے کے لئے دیواروں پر ارواح کی شکلیں کندہ کروائی جاتی تھیں۔ اور آج سے پانچ ہزار سال پہلے فراعنہ مصر لاشوں کو حنوط کر کے مومی کی شکل دے ڈالتے تھے تاکہ مرنے والے کی روح (بع) اور ہمزاد (کع) اپنے جسم کو شناخت کر لیں۔

یعنی قدیم انسان نہ صرف اپنے باطنی تشخص سے واقف تھے بلکہ اس کی تصویر کشی بھی کرتے تھے۔ ریمنڈی موڈی نے اپنی کتاب (Life after Life - 1975) کا موازنہ ایک تبتی کتاب (Tibetan Book of Dead) سے کیا ہے۔ یہ کتاب زمانہ قبل از تاریخ تبت کے دانشوروں کو زبانی پڑھائی جاتی تھی جو سینہ بہ سینہ چل کر آٹھویں صدی عیسوی میں کتابی شکل میں سامنے آئی یہ قدیم کتاب ریمنڈی موڈی کی موجودہ دور کی جدید طبعیاتی تجربات پہ مشتمل کتاب

سے حد درجہ مماثلت رکھتی ہے۔ دونوں کتابوں کے تجربات میں مماثلت ہے۔

تبت میں ایسے ماسٹر پائے جاتے تھے جو مراقبہ کے دوران اپنے اوپر مصنوعی موت طاری کر لیتے تھے یعنی طبعی نقطہ نظر سے ان کی موت واقع ہو جاتی نیز ہپناٹزم (جسے وہ کٹن کہتے تھے) کے ذریعے موکل (جسے وہ 'اورکل' کہتے تھے) سے مستقبل کے حالات معلوم کئے جاتے تھے۔ تبتی لامہ ہوا میں اڑنے، اپنے AURA کو جسم سے الگ کرنے، ہزاروں میل دور کی چیزیں دیکھنے، ماضی و مستقبل میں جھانکنے اور سفر کرنے کی اہلیت رکھتے تھے۔ تبت میں روحانی تعلیم کے باقاعدہ ادارے قائم تھے۔

ابن بطوطہ نے بھی اپنے مشہور سفر نامے میں چند جوگیوں کے روحانی کمالات کا آنکھوں دیکھا حال بیان کیا ہے۔ ایک جوگی کی کھڑاویں خود بخود زمین سے اٹھیں اور فضا میں معلق ہو گئیں۔ بڑے جوگی نے اپنے شاگرد کو اشارہ کیا وہ بھی فضا میں آہستہ آہستہ بلند ہونے لگا اور اتنا بلند ہوا کہ نظر سے اوجھل ہو گیا۔

ایسے ہی واقعات کا تسلسل اہل روحانیت کے ہاں ہمیشہ سے ملتا ہے چاہے وہ مسلمان ہوں یا عیسائی، ہندو ہوں یا یہودی تمام کی مذہبی اور تاریخی کتابوں میں ایسے سپرنارٹل واقعات کا تسلسل ملتا ہے۔ ایسے خرق عادت واقعات کی کوئی سائنسی توجیہہ اگرچہ جدید سائنس پیش نہیں کر سکی مگر آج ان واقعات کی گواہی ضرور دے رہی ہے۔ اور جدید تجربات سے یہ واقعات رفتہ رفتہ ثابت بھی ہو رہے ہیں۔

آجکل بھی ایک انگلش چینل سے 'کرس انجیل' نامی شخص ایسے کرتب دکھاتا نظر آتا ہے، کبھی ہوا میں اڑتا ہے کبھی غائب ہو جاتا ہے وہ اسے (Mind Power) قرار دیتا ہے ماضی کے تمام ادوار میں ان سپرنارٹل واقعات کا تسلسل ملتا ہے مثلاً اولیاء کی کرامات یا انبیاء کے معجزے مثلاً عیسیٰ علیہ السلام اندھے کو بینا اور مردوں کو زندہ کر دیا کرتے تھے۔ جبکہ موسیٰ علیہ السلام کے پاس عصا تھا جو بہت بڑے اثر دھے کا روپ دھار لیتا تھا۔ جبکہ حضرت محمد ﷺ نے انگلی کے اشارے سے چاند کو دو لخت کر دیا تھا۔ اور انہوں نے معراج کا سفر کیا اور ثائم اور اسپیس کو توڑتے ہوئے خالق کائنات تک جا پہنچے۔ جنت اور جہنم کا مشاہدہ کیا۔

اگرچہ مذہب پرست معجزوں پر یقین رکھتے ہیں لیکن مادہ پرست انہیں بھی جھٹلاتے ہیں (یہ فقرہ I

دont beleve this اب محض لاعلمی اور جہالت کا نشان ہے اس لیے کہ کسی بے وقوف کے یقین کرنے نہ کرنے سے حقائق نہیں بدلتے) آج جدید سائنس انتہائی خرق عادت معجزوں تک کی شہادت دے رہی ہے۔ مثلاً اپالوشن کی پروازوں کے درمیان 4 مئی 1967 کے تاریخی دن راکٹ آر بیٹر 4 کے ذریعے ملنے والی تصویروں میں چاند کی سطح پر دو سو چالیس (240) کلومیٹر طویل اور آٹھ کلومیٹر چوڑی ایک بالکل سیدھی لکیر یا دراڑ کا نمایاں طور پر مشاہدہ کیا گیا۔ قدرتی عوامل کے تحت بننے والی لکیر یا دراڑ کبھی خط مستقیم میں نہیں ہوتی یعنی یہ شہادت ہے اس امر کی کہ آج سے چودہ سو سال پہلے انگلی کے اشارے سے چاند دو لخت ہوا تھا (اس معجزے کی تاریخی شہادتیں بھی موجود ہیں) عیسیٰ علیہ السلام کا معجزہ یہ تھا کہ وہ مردے زندہ کرتے تھے۔ آج ان کی قوم یہی کام کلون انسان پیدا کر کے کر رہی ہے۔ اس کا مطلب ہے کہ سائنس ابھی دیگر معجزوں اور کرامات کی بھی گواہی دے گی خود سائنس کی مثال بھی جادو یا کرامت کی سی ہے۔

انبیاء کے معجزوں کے علاوہ اولیاء کی کرامات کا بھی تسلسل تاریخ سے ملتا ہے۔ اولیاء نے بھی مردوں کو زندہ کیا سوکھے درخت کو ہرا کیا۔ سوکھے اور رُکے ہوئے دریا کو چلا دیا اور ایسی بے شمار کرامات دکھائیں جو عام حالات میں ناممکن ہیں۔ غرض روحانی کمالات کے جتنے بھی قصے تاریخ میں رقم ملتے ہیں آج دیکھنے میں نہیں آتے چند نام نہاد جادو گر کیمیا گری کے کچھ کرتب تو دکھاتے نظر آتے ہیں لیکن یہ بچوں کے سے کرتب کچھ خاص قابل توجہ نہیں ہیں۔

ماضی کا انسان محض روحانیت میں آج کے انسان سے بڑھا ہوا نہیں تھا بلکہ وہ سائنس و ٹیکنالوجی میں بھی آج کے انسان سے بڑھا ہوا تھا۔ آج کے انسان نے سائنس و ٹیکنالوجی میں ایسی ترقی نہیں کی جیسی کہ ماضی کے انسان نے کی تھی۔

## قدیم انسان کی سائنسی برتری

ماہرین ابھی تک اہرام مصر کی عجوبہ عمارتوں کی ٹیکنیک میں الجھے ہوئے تھے کہ زیر سمندر ہزاروں برس پہلے کے شہر دریافت ہونے لگے۔ ایسے شہر جنہوں نے سائنس و ٹیکنالوجی میں موجودہ دور سے زیادہ ترقی کی ہوئی تھی۔ ان زیر سمندر شہروں میں گریناٹ پتھر سے تعمیر شدہ بلند و بالا عمارتیں، ڈامر (Asphalt) سے بنی ہوئی طویل سڑکیں، جہازوں کے طویل رن وے، اہرام، مندر،

رومی و مصر کی طرز کے ستون، سیڑھیاں، اور گودام دریافت ہو رہے ہیں۔

مصر میں فنجم (Fagium) کے مقام پر ایسی پینٹنگز ملی ہیں جن کے رنگ ہزاروں برس گزر جانے کے بعد آج بھی ہلکے نہیں پڑے جبکہ ایسے رنگ جدید دور میں ابھی تک دریافت نہیں ہو سکے۔

ولیم کونگ نے نظریہ پیش کیا کہ 2500 قبل مسیح میں عراق میں طلائئ الیکٹرو پلٹنگ کے ثبوت ملتے ہیں، امریکی ریاست کیلی فورنیا میں کوسو (Coso) پہاڑی سلسلہ کے قریب لاکھوں سال پرانا اسپارک پلگ (۱۳ فروری ۱۹۶۱ کو) ملا ہے۔ جرمن ریسرچر ڈاکٹر کولن فنک کے مطابق 4300 برس قبل مصر کے لوگ بجلی کا استعمال جانتے تھے۔ 1938 میں بغداد کے قریب ڈھائی ہزار سال پرانی تہذیب کے کھنڈرات سے ایک الیکٹرک بیٹری دریافت ہوئی۔

ہندوستان میں 1800 قبل مسیح میں لکھی گئی ایک قدیم کتاب آگستا سمہتا (Agasta Samhita) میں الیکٹرک بیٹری کی تیاری کی تمام تفصیل موجود ہے۔ بائبل کتاب پیدائش باب 6 آیت 16 میں تحریر ہے۔ تم (نوح علیہ السلام) اپنی کشتی کے لئے ایک صہر (Tsohar) بناؤ اور اوپر سے ایک ہاتھ تک اسے مکمل کرو صہر کا ترجمہ ایک ایسی روشنی ہے جو سورج کی طرح روشن ہو۔ اسی طرح یہودیوں کی مقدس کتاب (ملکہ سباح اور اس کا اکلوتا بیٹا مینلیک میں بھی سلیمان کے گھر میں الیکٹرک بلب کا ذکر موجود ہے۔ اس کتاب کو کبیرا ناگست (Kebra Nagast) بھی کہا جاتا ہے۔

سائنسدانوں نے 1.5 Million سال پرانا پتھر کا گھر دریافت کیا ہے۔ جبکہ ترکانا (Turkana Body) لڑکے کا فوسل سولہ لاکھ سال پرانا ہے۔

چین میں ایک ایسی پر گوشت لاش ملی ہے جیسے کچھ دیر قبل دفنائی گئی ہو لیکن یہ دو ہزار برس قبل کی ہے۔ مصریوں کی لاشیں بھی آج تک محفوظ ہیں۔ اور باوجود کوشش کے جدید سائنسدان مادی جسم کو محفوظ کرنے کا ایسا مسالہ تیار نہیں کر سکے جیسا ماضی کے انسانوں نے تیار کر کے اپنی لاشوں کو محفوظ کیا تھا۔ ان اصل اور جدید فوسلز کی دریافت سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ انسان لاکھوں سال پہلے نہ صرف انسان تھا بلکہ جدید ترقی یافتہ انسان تھا۔

رومی عہد کے شہر ٹا بئرس (Tiberus) کے مقام پر ایسے شیشے دریافت ہوئے ہیں جو توڑے نہیں جاسکتے جیسا کہ آج بلبٹ پروف شیشے استعمال کئے جاتے ہیں۔

ساؤتھ امریکن جنگل میں کومبین تہذیب پر ریسرچ کرنے والے کولونل پی ایچ فاسٹ کے مطابق امریکن مائن انجینئر کی ایک ٹیم کو سیروڈل پاسکو (Serodel Pasco) کے قریب ایک قدیم مقبرے میں جانچ کے دوران ایک سیل پیک بوتل ملی یہ حادثاتی طور پر گر کر ٹوٹ گئی اس بوتل میں موجود لیکوئڈ کے چند قطرے ایک پتھر پر گرے وہ پتھر لمحہ بھر میں زرم مٹی میں تبدیل ہو گیا لیکن کچھ دیر میں وہ دوبارہ عام پتھر کی طرح سخت ہو گیا۔ جبکہ آج کے سائنسدان ایسے کسی کیمیکل کی ایجاد نہیں کر سکے۔

صحرائے گوپی سے 1950ء میں 20 لاکھ سال پرانا ایسا پتھر ملا ہے جس پہ کسی جوتے کے فٹ پرنٹ ہیں۔ لاکھوں برس قدیم اقوام (جنہیں ماہرین ہتھیار استعمال کرنے والے دو ٹانگوں والے حیوان قرار دیتے ہیں) کے پاس ایسا کونسا فارمولا تھا جس سے وہ پتھر کو موم کر لیتے تھے۔ جبکہ ایک مغربی فزیالوجسٹ کوسات سے نو کروڑ برس قدیم ایک پتھر ملا ہے جس کے اندر سے اسٹین لیس اسٹیل کی گیارہ کیلیں Nails برآمد ہوئی ہیں۔ پیرو (امریکہ) کے شہر ایکا (Ica) سے ملنے والے ہزاروں برس قدیم منقش پتھروں میں ایک گول گیند نما پتھر ایسا ملا ہے جس پر پوری دنیا کا نقشہ گلوب کی صورت میں ابھرا ہوا ہے اس میں موجود تہذیبوں کے علاوہ ماضی کی گمشدہ تہذیبیں بھی دکھائی گئی ہیں۔ مایا (Mayan) تہذیب سے دریافت ہونے والی ڈھائی ہزار برس قدیم تختیوں میں ایسی تصاویر ملتی ہیں جیسے کوئی شخص راکٹ یا ہوائی جہاز اڑا رہا ہو۔ مصر میں عبیدوس کے مقام پر سیتی اول "Seti-1" کا پانچ ہزار برس قدیم معبد موجود ہے جسے نومبر 1988 میں دریافت کیا گیا اس معبد کے شہتیر پر نہ صرف ہیلی کاپٹر اور ہوائی جہاز بلکہ جیٹ طیارے، گلائڈر اور اسپیس شپس کی بھی تصویر بنی ہوئی ہے۔ جبکہ بعض لوگ ان تصویروں کو جھٹلاتے ہیں جبکہ ان آثار کے ثبوت ہمیں تاریخی اور مذہبی کتابوں سے بھی ملتے ہیں۔ مثلاً ہندوؤں کی قدیم کتابوں (مہا بھارت، رامائن اور پرانوں) میں لفظ ومان (Vimana) یعنی اڑنے والی رتھ کہا گیا جبکہ بائبل کی کتاب حزقیل میں انہیں کروبی "Cherub" اور تبت کی قدیم کتابوں میں کنٹویا اور ٹنٹویا (Kentyua-, Tantyua) میں اڑنے والی مشینیں کہا گیا جنہیں تبت کے لوگ پزلز (pearls) کہتے تھے اور یونان کی دیومالائی داستانوں میں بھی اڑنے والی سوار یوں کا ذکر موجود ہے۔ جبکہ تاریخ طبری میں طوفان نوح کے عہد کے دو بادشاہوں کے ہوائی سفر کا تذکرہ



ماتا ہے۔ قدیم بابل کی آشوری تہذیب کے کتبوں میں ایک طاقتور بادشاہ اتانا (Etana) ایک پرندے پر سفر کرتا ہے جو جہاز سے مشابہ ہے۔ ایسے ہی جہازی سفر کا ذکر قرآن نے سلیمان علیہ السلام کے حوالے سے کیا ہے۔ نینوا سے برآمد ہونے والی ماضی کی قدیم ترین رزمیہ داستان گلگامش (Gilgamish) کی ساتویں تختی میں گلگامش کا دوست انکیدو اُسے اپنے خلائی سفر کا چشم دید واقعہ سناتا ہے۔

قدیم یونانی فلسفیوں نے کہا تھا کہ ایٹھرایٹم کی روح ایٹم کا لطیف ترین وجود ہے۔ یونانیوں نے اس تعریف میں ایٹم کے حوالے سے دو انکشاف کئے ہیں۔

(۱)۔ ایٹم کا لطیف وجود

(۲)۔ ایٹم کے اندر مزید وجود

ہزاروں برس بعد آج ایٹم کے اندر مزید وجود (نیوکلیس، نیوٹران، پروٹون، الیکٹران، لیپٹان اور کوراک) دریافت کر لئے گئے جبکہ ان دریافتوں سے پہلے تک سائنسدان ایٹم کو ہی ناقابل تقسیم ذرہ سمجھتے تھے۔

جبکہ یونانیوں نے مزید وجودوں کے علاوہ ایٹم کی روح یا لطیف جسم کا بھی تذکرہ کیا تھا۔ فوٹان کی دریافت یا (Wave Pocket) کی دریافت سے یہ ثابت ہو گیا کہ ایٹم میں لطیف توانائی بھی موجود ہے۔

قدیم معبدوں سے ملنے والی تصویروں میں DNA کی تصویر بھی شامل ہے یعنی وہ DNA سے بھی متعارف تھے۔

ماضی کے انسانوں نے جنینک میں بھی ایسی ترقی کی تھی کہ انہوں نے انسانوں اور جانوروں کے جینز سے ایسی مخلوق تیار کر لی تھی جو انسان اور حیوان کے درمیانی مخلوق تھی جس کی تصویریں ہمیں مقبروں میں نظر آتی ہیں۔ لیکن یہ مخلوق ایسی وحشی تھی کہ اسی قوم کی تباہی کا سبب بن گئی اور خود ہی آپس میں لڑ کر تباہ ہو گئی۔ ان مخلوقات کا نوعی تسلسل قائم نہیں ہو سکتا تھا یہ مٹ گئیں۔ ایسے شواہد بھی ملے ہیں کہ قدیم اقوام نے کشش ثقل (Gravity) پہ بھی کنٹرول حاصل کیا تھا۔ جبکہ آج کے دور میں یہ ابھی تک ممکن نہیں ہو سکا۔

(ایک پاکستانی (شیخ سراج الدین) کشش ثقل پر کنٹرول کا دعویٰ کرتا ہے، اُس کے خیال میں وہ

سائیکل گاڑی سے لیکر ٹر بائن تک اس قوت سے چلا سکتا ہے لیکن یہاں اس کی کوئی سنتا ہی نہیں۔  
 نینڈر تھل (Neandertalensis) ڈھانچوں کی باقیات اور جدید انسان کے باہمی موازنے سے ثابت ہو چکا ہے کہ نینڈر تھل کی کھوپڑی میں زیادہ بڑا دماغ سامنے کی گنجائش تھی جبکہ وہ جسمانی اعتبار سے بھی موجودہ انسان کے مقابلے میں مضبوط اور توانا (مکمل انسان) تھے۔

کَا نُؤِ اٰخَذَ مِنْکُمْ قُوَّةً۔ ترجمہ:- وہ تم سے زیادہ قوت والے تھے (سورہ توبہ ۶۹) یعنی قدیم انسان ذہنی و جسمانی لحاظ سے بھی آج کے انسان سے مضبوط تھے۔ ماضی کا انسان آج کے انسان سے زیادہ طویل العمر تھا۔ قدیم انسان ہزاروں برس کی عمر رکھتے تھے یا تو یہ قدرتی عمل تھا یا پھر ہو سکتا ہے انہوں نے طویل عمری کا راز دریافت کر لیا ہو جیسا کہ آج سائنسدان طویل عمری کا راز دریافت کرنے کی سعی میں لگے ہوئے ہیں۔

ایک امریکی ماہر روحانیت ایڈگر کیسی کے مطابق معدوم شہر اٹلانٹس کے لوگ جدید دور سے بھی زیادہ ترقی یافتہ تھے۔ اہرام مصر، اسٹون ہینج، ایسٹرائی لینڈ کے مجسمے وغیرہ انہی کی تعمیرات تھے۔ یہ لوگ ٹیلی پیٹھی میں بھی مہارت رکھتے تھے ان کے پاس توانائی کا منبع ایک کرشل نما پتھر تھا جسے Tuaoi کہتے تھے یہ انعکاسی پتھر سورج کی روشنیوں کو جذب کر کے دوبارہ منعکس کرنے پر قادر تھا (جب ایڈگر کیسی اٹلانٹس کی سولر انرجی کا ذکر کر رہا تھا تو اس وقت سولر انرجی کے استعمال کی ابتداء نہیں ہوئی تھی)۔ اٹلانٹس کی غرقابی اسی کرشل نما انعکاسی پتھر کے حد سے زیادہ استعمال سے ہوئی کرشل کی مدد سے لامحدود توانائی حاصل کرنے کی کوشش میں کرشل کی توانائی کا شدت سے اخراج ہوا اور یہ براعظم تباہ ہو گیا۔ یہ ہوائی جہاز کی ایجاد بھی کرچکے تھے جسے وہ Vilixi کہتے تھے۔

جبکہ قرآن میں حضرت سلیمان علیہ السلام کی ایسی بادشاہت کا ذکر ہے جو کسی دور میں کسی کو نہیں ملی سلیمان علیہ السلام کے قصے میں ان کی قوم ہر جدید ایجاد سے لیس نظر آ رہی ہے جن میں سربہ فلک عمارتیں ہوائی جہاز، سینما، ٹیلی ویژن اجرام فلکی کا مشاہدہ کرنے والی رسد گاہیں اور دور بینیں، بینک، آبدوز، کشتیاں راکٹ، بجلی کا استعمال، برقی تار، ٹیلی فون وائرلس وغیرہ ہر جدید ایجاد کی تفصیل اس قصے میں موجود ہے۔ قدیم انسانوں کے بارے میں حیرت انگیز دریافتیں جاری ہیں اور ان دریافتوں سے یہ تو ثابت ہو گیا کہ ماضی کا یا قدیم انسان ترقی یافتہ انسان تھا لیکن اب سوال یہ ہے کہ قدیم انسانوں نے آخر کتنی ترقی کی تھی؟

ماضی کی اقوام سے ایک مشہور روایت منسوب ہے کہ ایک قوم نے علم میں اتنی ترقی کی تھی کہ مذید گنجائش ہی نہیں رہی تھی لہذا خالق نے اس قوم کی طرف اپنے فرشتے (جبریل) کو بھیجا اس (جبریل علیہ السلام) نے سڑک پر کھلتے ایک بچے سے سوال کیا کہ بتاؤ جبریل اس وقت کہاں ہے لڑکے نے زمین پر کچھ لکیریں کھینچیں اور بولا۔ جبریل اس وقت آسمان پر ہے نہ زمین پر وہ تم ہو یا میں اور میں تو ہو نہیں سکتا لہذا جبریل اس وقت میرے سامنے ہے۔

مندرجہ ذیل تفصیل سے اندازہ لگائیں کہ وہ کونسا شعبہ ہے جس میں قدیم انسان پیچھے ہے جبکہ وہ ہر میدان میں آگے ہی نظر آ رہا ہے۔ جبکہ ماہرین کا (برسوں کی تحقیقات کے بعد) خیال ہے کہ لاکھوں برس پہلے زمین پر دو ٹانگوں والے حیوان بستے تھے (اور یہی ابتدائی انسان تھے جو رفتہ رفتہ انسانی صورت اختیار کر کے مہذب اور تعلیم یافتہ ہو گئے) جو ایک دوسرے کا خون بہانے والے بے شعور انسان تھے پہلے تو وہ انہیں ہی انسانوں کی ابتدائی صورت کہتے رہے لیکن جدید تحقیقات نے ان کی ان خرافات کی نفی کر دی تو پھر انہوں نے بڑی جدوجہد کے بعد اندازہ لگایا کہ موجودہ انسان 50,000 سال پہلے وجود میں آیا اور کوئی 40,000 سال پہلے دجلہ و فرات کے کنارے اچانک وہ تہذیب یافتہ ہو گیا۔

جبکہ جدید تحقیقات اور نئی دریافتوں سے میسر آنے والے مسلسل شواہد کے نتیجے میں ہمیں ہزاروں برس قبل کا نہیں بلکہ لاکھوں برس قبل کا انسان بھی آج کے انسان سے زیادہ ترقی یافتہ نظر آ رہا ہے۔ آج کے انسان نے مادی ترقی تو کی ہے لیکن اپنی ہی روح پہ مادیت کی صدیوں کی تہہ چڑھا دی ہے اور آج صدیوں کا انسان خود کو شناخت کرنے سے انکاری ہے۔ کچھ ماہرین روحانیت کا خیال ہے کہ ترقی محض آج کے دور کا کارنامہ نہیں ہے بلکہ ہر دور میں ہر قوم تقریباً دس ہزار برس میں ترقی کی اوج پر پہنچ جاتی ہے اور پھر ختم ہو جاتی ہے آثار تو ایسی ہی خبروں کی نشاندہی کرتے نظر آتے ہیں۔

اس ساری بحث کا حاصل یہ ہے کہ ہر قسم کی سائنسی، مذہبی اور تاریخی شہادتوں سے یہ ثابت ہو چکا ہے کہ ہر دور کا انسان نہ صرف انسان تھا بلکہ روحانی و مادی ترقی میں بھی آج کے انسان سے بڑھا ہوا تھا۔ جبکہ آج کچھ نام نہاد ماہرین ان تمام تر حقائق کی طرف سے آنکھیں بند کئے اپنے کچھ ذاتی تعصبات کی بنیاد پر انسان کو حیوان ثابت کرنے کی جدوجہد میں مصروف ہیں۔ ان کے غیر سائنسی



مجموعی انسان کی کوئی تعریف سامنے نہیں آسکی۔ یعنی انسان اور اس کے باطن سے متعلق سب سے اہم معلومات مذہبی معلومات ہی ہیں لہذا انسان کو جاننے کے لئے مذہبی معلومات کا ہونا لازمی ہے۔ آئیے جائزہ لیتے ہیں کہ انسانی باطن (روح و نفس) سے متعلق مختلف اقوام میں کیا عقیدے رائج ہیں۔

### ۱۔ قدیم امریکی

امریکہ کے ریڈ انڈین سمجھتے تھے کہ روہیں ایک خاص مسکن میں چلی جاتی ہیں۔

### ۲۔ قدیم افریقی

قدیم افریقی سمجھتے تھے کہ نیک روہیں دیوتاؤں سے جا ملتی ہیں جبکہ برے لوگوں کی روہیں گتے بن جاتی ہیں۔ افریقہ کے بعض قبائل کا عقیدہ ہے کہ انسان کی روح کالی مکھی بن کر اڑ جاتی ہے اسی لئے وہ مکھی کو کبھی نہیں مارتے۔ افریقیوں میں ارواح کو بلانے اور ان سے مسائل کے حل اور روحانی علاج میں بھی مدد لی جاتی ہے۔ اسی سلسلے کے ڈاکو مینٹری پروگرام ہمیں مختلف چینلز پر دیکھنے کو بھی ملتے ہیں۔

۳۔ آئرلینڈ۔ آئرلینڈ کے بعض قدیم قبائل کا خیال تھا کہ مرنے والے کی روح سفید تلی بن کر اڑ جاتی ہے۔

### ۴۔ قدیم مصری

مصر کے قدیم باشندوں کا عقیدہ تھا کہ مرنے کے بعد انسان کی دوسری زندگی شروع ہوتی ہے اور اس کی روح اور ہمزاد جسے وہ بچ اور کچ کہتے تھے اس کے جسم سے نکل کر اس کے مقبرے میں رہنے لگتے ہیں۔ ان کا خیال تھا کہ (بچ) کا میل جول مرنے والے کے عزیزوں دوستوں کے ساتھ رہتا ہے جبکہ (کچ) دوسری دنیا میں چلا جاتا ہے اور دیوی دیوتاؤں کے ساتھ رہنے لگتا ہے۔ کسی آدمی کے ہمیشہ زندہ رہنے کی ان کے خیال میں بس یہی صورت تھی کہ بچ اور کچ جسم کو پہچانتے ہوں اسی وجہ سے وہ مرنے والے کی لاش کو حنوط کر کے می کی شکل دے ڈالتے۔ می کے پٹیوں میں لپٹے ہوئے سر پر نقاب چڑھایا جاتا جس پر مرنے والے کی تصویر بنی ہوتی تھی۔ ایسا اس لئے کیا جاتا تھا کہ می خراب بھی ہو جائے تو اسکا بچ اور اس کا کچ اسے پہچان لیں اور بھٹکتے نہ پھریں۔ لاش کے جسمے بھی بنائے جاتے تاکہ اگر می خراب ہو جائے تو بچ اور کچ بھٹکتے نہ پھریں۔

۵۔ آسٹریلیا۔ افریقہ اور آسٹریلیا کے پرانے قبائل میں بھی آباؤ اجداد کی ارواح کو پوجنے کا رواج پایا جاتا تھا آسٹریلیا کے آبرنجیل (Aboriginal) میں بھی حیات بعد الموت کا تصور پایا جاتا ہے۔

۶۔ ابتدائی دور کے رومی۔ ابتدائی دور کے رومی قدیم مذہب پر کاربند تھے وہ قدیم مذہب طبعی تھا وہ روحوں کی پرستش کرتے تھے جو گھروں چشموں، کھیتوں اور مفصلات کے دوسرے مقاموں پر کارفرما تھیں۔

۷۔ عربوں کا ایک عقیدہ

قبل از اسلام عربوں میں ایک عقیدہ یہ بھی مروج تھا کہ جب کسی آدمی کو قتل کر دیا جاتا ہے تو اس کے سر سے روح ایک پرندہ کی شکل میں نکلتی ہے اور جب تک اس مقتول کا انتقام نہ لیا جائے اس وقت تک وہ اس کی قبر پر چکر کاٹتی رہتی ہے اور کہتی ہے "مجھے پلاؤ میں سخت پیاسی ہوں"۔ اس عقیدہ کے باعث ان کے ہاں اگر کسی آدمی کو قتل کر دیا جاتا تو اس کے قریبی رشتہ داروں کے لئے اس کے خون کو معاف کرنا مشکل ہو جاتا کیونکہ وہ یہ خیال کرتے تھے کہ جب تک ہم مقتول کا بدلہ نہیں لیں گے اس وقت تک اس کی روح کو چین نہیں آئے گا اور وہ اپنے مشتعل جذبات کو تو ٹھنڈا کر سکتے تھے لیکن اپنے مقتول باپ یا بھائی کی روح کی اس ابدی پریشانی اور اضطراب کو برداشت کرنا ان کے بس کا روگ نہ تھا اس لئے وہ مجبور تھے کہ اپنے مقتول عزیز کا ہر قیمت پر انتقام لیں۔

۸۔ چینوں کا عقیدہ

چینیوں میں فطری طاقتوں کے مظاہر کے علاوہ اپنے اسلاف کی پوجا کا بھی رواج عام تھا۔ ان کا یہ اعتقاد تھا کہ ان کے اسلاف کی روحوں نے اپنے آنے والی نسلوں کو نفع بھی پہنچا سکتی ہیں اور نقصان بھی اور ان اسلاف کی روحوں کو خوش و خرم رکھنے کے لئے ضروری تھا کہ ان کے نام سے کھانا پکایا جائے۔ گذشتہ دو ہزار سال سے کنفیوشس کے نظریات جن میں اپنے اسلاف کی پرستش کا عقیدہ اور یہ عقیدہ کہ بادشاہ آسمان کا بیٹا ہوتا ہے اور وہ ان ارواح کے درمیان جو عالم بالا میں سکونت پذیر ہیں اور ان لوگوں کے درمیان جو اس عالم آب و گل میں زندگی بسر کر رہے ہیں شفاعت کا ایک ذریعہ ہے۔ یہ دونوں عقیدے ان کے ہاں بنیادی اہمیت کے حامل ہیں۔

قدیم چینوں کے مطابق ہر شخص کی روح کے دو حصے ہوتے ہیں۔

(i) - پو (P.O) یہ اس کی شخصیت کا نظر آنے والا حصہ جو کہ اس کے جسم سے جڑا ہوتا ہے۔

(ii) - ہن (HUN) یہ نہ نظر آنے والا حصہ ہے جو کہ جسم میں موجود ہوتا ہے لیکن لازمی نہیں کہ ہمیشہ جسم سے بندھا ہو۔ جب وہ جسم سے باہر پھر رہا ہو تو ظاہر بھی ہو سکتا ہے اور اگر وہ ظاہر ہوگا تو وہ اصل جسم کی صورت میں ظاہر ہوگا جبکہ اصل جسم اس سے دور ہوتا ہے۔ اصل جسم میں P.O موجود ہوتا ہے۔ اور اگر HUN مستقل طور پر جسم سے دور رہے تو جسم کی موت واقع ہو جاتی ہے۔

۹۔ بدھسٹ

ہر سال 13 اگست کو بدھ مذہب کے پیروکار "یوم ارواح" مناتے ہیں۔ اس تہوار پر تمام بدھی لوگ اپنے آباؤ اجداد رشتہ دار اور بزرگوں کی قبروں پر حاضری دیتے ہیں، دعائیں مانگتے ہیں اور پھول چڑھاتے ہیں۔ جاپان میں اس دن "بون میلہ" لگتا ہے۔ موری اوکا شہر کے "دائی شو آن مندر" میں لوگ جوق در جوق آتے ہیں اور ایٹابھا (نور احمد) کی شان میں گاتھا (نعتیں) اور مناجات (درود) پڑھتے ہیں۔ ان کے عقائد کے مطابق ان گاتھاؤں اور مناجات کو پڑھنے سے بدھا (احمد) اپنی روحانی شعاعیں ہمارے اوپر پھینکتے ہیں۔ قبروں پر پھول چڑھاتے وقت وہ لوگ مناجات پڑھنے کے ساتھ ساتھ مرحومین سے اس طرح گفتگو بھی کرتے جاتے ہیں جیسے وہ وہاں ان کے سامنے بیٹھے ہوں۔ دائی شو آن کے مندر میں بون میلہ کی تقاریب میں لوگ ایٹابھا کی گاتھائیں پڑھتے ہوئے وجد میں آ جاتے ہیں اور والہانہ رقص کرتے ہیں انہوں نے تنکوں کی ٹوپیاں پہن رکھی ہوتی ہیں ان کی روایات کے مطابق اس موقع پر بھجن گانے اور رقص کرنے سے مرحومین کو روحانی سکون پہنچتا ہے۔

۱۰۔ تبت

راز ہائے سربستہ کا مدفن تبت تو منسوب ہی پر اسراریت اور ماورائیت سے ہے۔ یہاں کے لوگ مظاہر پرست تھے۔ تبت میں بدھ مت چوتھی صدی عیسوی میں پوری طرح پھیل چکا تھا اور یہ ملک کا اکثریتی مذہب بن گیا تھا۔ بدھ ازم میں بھی آداگون کا عقیدہ بنیادی اساس ہے جسے زندگی کا چکر یا "کرما" کہتے ہیں۔ ان کے مطابق انسان بار بار مر کر دوبارہ پیدا ہوتا ہے اور اس کا اگلا جنم اس کے اعمال کے مطابق ہوتا ہے۔ تبت میں روحانی تربیت کے ہی تعلیمی ادارے قائم تھے اور وہاں کا سربراہ بھی روحانی عالم ہوتا تھا جسے "دلانی لامہ" کہا جاتا ہے۔ بدھ مت میں دلانی لامہ

کی وہی حیثیت ہے جو عیسائیوں میں پوپ کی۔ ایشیا بھر میں قائم بدھ مت کی حکومتیں اس کی اہمیت تسلیم کرتی ہیں۔ چینی زبان میں لاما کے لئے لفظ بیوفو استعمال کیا جاتا ہے جس کے معنی "زندہ بدھا" کے ہیں یعنی ایسا شخص جو بار بار جنم لیتا ہے۔ (روحانی تعلیم و تربیت کے نتیجے میں تبتی لاما دوران مراقبہ اپنے اوپر مصنوعی موت طاری کر لیتے تھے اس دوران طبعی نقطہ نظر سے ان پر موت طاری ہو جاتی یعنی سانس اور دل کی دھڑکن رک جاتی وہ عارضی طور پر اپنے نفس کو جسم سے الگ بھی کر لیتے اس طرح ماضی و مستقبل میں سفر کرتے تھے۔) بدھ مت میں عبادت کا مخصوص تصور نہیں ہے وہ اسے مشق کا نام دیتے ہیں۔ تبتی مختلف روحانی مشقیں کرتے ہیں ان میں سے ایک گروہ چاڈ کا خیال ہے کہ روح جزو خدا ہے اسے جسم کی آلائشوں سے پاک کرنا کمال بندگی ہے۔

۱۱۔ سکھ

سکھ روح کو یونیورسل روح کا حصہ مانتے ہیں ان کے مطابق روح کائنات کا حصہ ہے اور کائنات خدا۔ وہ روح کو آتما اور رب کو پرما مانتے ہیں۔

AGGS (AAD GURU GRANTH SAHIB) کی کتاب میں ہے۔

Soul (ATMA) to be part of universal soul which is God

(Permatma)

۱۲۔ ہندو ازم

ہندو ازم میں سنسکرت کا لفظ Jiva روح سے مطابقت رکھتا ہے جس کا مطلب ہے انفرادی روح یا ذات اور آتما کا مطلب ہے روح یا خدا۔ ہندو ازم کے عقائد کے مطابق آتما برہمن کا کچھ حصہ ہے جو ہمارے اندر آ گیا ہے اور روح برہمن کے ساتھ جڑی ہوئی ہے یعنی یہ خدا کا سر ہے۔

بدھ مت کے عقائد بھی آتما اور پرما سے مماثلت رکھتے ہیں۔

۱۳۔ عقیدہ تناخ

تناخ کا عقیدہ ہندو مذہب کا خصوصی شعار ہے جو اس کا قائل نہیں وہ ہندو دھرم کا فرد نہیں۔ باس دیو، ارجن کو عقیدہ تناخ کی حقیقت سمجھاتا ہے اور بتاتا ہے کہ موت کے بعد اگرچہ جسم فنا ہو جاتا ہے لیکن روح باقی رہتی ہے اور وہ اپنے اچھے اعمال کی جزاء اور برے اعمال کی سزا بھگتنے کے لئے دوسرے اجسام کے لباس پہن کر اس دنیا میں لوٹ آتی ہے اور یہ چکر غیر متناہی مدت تک جاری



رہتا ہے۔

(موت کے بعد روح کے دیگر لباس پہن کر اپنے اعمال کے مطابق سفر کی روداد کو دیگر زندگیوں یا بار بار زندگی تصور کر لیا گیا حالانکہ یہ ایک ہی زندگی کے سفر کی روداد ہے جسے غلط معنوں میں لیا جا رہا ہے اور اسی تاریخی غلطی کو کرما کا نظریہ کہا جاتا ہے)۔

### ۱۴۔ کرما کا نظریہ KARMA

ہندو ازم اور بدھ ازم کے عقائد کے مطابق اس بار بار کے جینے مرنے کے تسلسل سے اس وقت ہی انسان کو نجات مل سکتی ہے جب وہ وجود حقیقی میں کھو جاتا ہے جب بھی روح مادہ کے قفس کو توڑ کر آزاد ہوتی ہے تو ہر قسم کے رنج و الم سے محفوظ ہو جاتی ہے۔ اس عقیدے کی رو سے ایک بار مرنے کے بعد انسان دوسرے جنم میں کسی اور وجود میں ظاہر ہوتا ہے۔ وہ وجود انسانی، حیوانی بلکہ نباتاتی بھی ہو سکتا ہے۔ پہلے جنم میں اس سے جو غلطیاں سرزد ہوئیں تھیں اس کے مطابق اس کو نیا وجود دیا جاتا ہے جس میں ظاہر ہو کر وہ طرح طرح کی مصیبتوں، بیماریوں اور ناکامیوں میں گرفتار ہو جاتا ہے اور اگر اس نے اپنی پہلی زندگی میں نیکیاں کی تھیں تو اس کو ان کا اجر دینے کے لئے نئے وجود کا کوئی ایسا قالب بخشا جاتا ہے جس میں ظاہر ہونے سے اس کو اس کی گذشتہ نیکیوں کا اجر ملتا ہے اور اس طریقہ کار کو کرما (Karma) کا نظریہ کہا جاتا ہے۔

کم بیش اہل یونان کا بھی یہی عقیدہ تھا۔

داتا گنج بخش علی ہجویری اپنی کتاب کشف المحجوب میں اس نظریے پر یوں تبصرہ کرتے ہیں۔

مخد جو روح کو قدیم کہتے ہیں اور اس کی پرستش کرتے ہیں اور سوائے اس کے کسی اور شے کو فاعل و مدبر نہیں سمجھتے ارواح کو معبود قدیمی اور مدبر ازلی قرار دیتے ہیں اور یہ سمجھتے ہیں کہ ایک ہی روح ایک شخص کے جسم سے دوسرے شخص کے جسم میں چلی جاتی ہے اور یہ ایک ایسا شبہ ان لوگوں کا ڈالا ہوا ہے کہ جتنا اجتماع اور اتفاق اس پر ہوا ہے اتنا اور کسی شبہ پر خلق کا نہیں ہوا اس لئے کہ سچ پوچھو تو عیسائی بھی یہی عقیدہ رکھتے ہیں اگرچہ بظاہر کہتے کچھ اور ہیں اور ہندو چین و ماچین میں تو سب کے سب لوگ اسی بات پر متفق ہیں، شعیوں قرامطیوں اور باطنیوں کا بھی یہی عقیدہ رہا ہے اور حلویوں کے دونوں گروہ بھی اسی کے قائل ہیں۔

(جبکہ آج جب روح کا مشاہدہ کیا جاتا ہے روحانی مشقوں کے ذریعے یا آج سائنس دان جو

تجربات و مشاہدات کرتے ہیں وہ بھی یہی نتیجہ نکالتے ہیں کہ روح یونیورسل روح کا حصہ ہے۔ یہاں تک تو ٹھیک ہے کہ روح یونیورسل روح کا حصہ ہے لیکن روح رب نہیں ہے۔ کرما کے نظریے کی بھی تصدیق کی جاتی ہے روح و باطنی اجسام کا مشاہدہ کرنے والے ان باطنی اجسام کی موجودگی کو کرما یا آواگون کے نظریات کی صدیق تصور کرتے ہیں اور یہ غلط فہمیاں روح اور باطن سے لاعلمی پر مبنی ہے ہم جب روح اور باطن کی شناخت اور اس کی مسلسل وضاحت کریں گے تو خود بخود یہ غلط فہمیاں دور ہو جائیں گی۔

### ۱۵۔ یہودی

ترجمہ:- اللہ نے انسان کو زمین کی مٹی سے پیدا کیا اور اس کے نختوں میں زندگی کا دم پھونکا تو انسان جیتی جان ہوا (Genesis 2:7)، HEBREW BIBLE  
بائبل میں روح کی کچھ خاص تعریف موجود نہیں روح کی بہت سی وضاحتیں کلاسیکل لٹریچر میں ملتی ہیں۔ مثلاً

(esoteric jewish mysticism) Kabba Lah کے کام Zohar کے مطابق روح کو تین حصوں میں دیکھا گیا۔

(1) NEFESH (2) RUACH (3) NESHAMA

۱- NEFESH۔ روح کا سب سے نچلا حیوانی حصہ یہ انسان کی جسمانی خواہشات سے تعلق رکھتا ہے۔ تمام انسانوں میں پایا جاتا ہے اور جسم میں پیدائش کے وقت داخل ہوتا ہے۔ باقی کے دو حصے پیدائش کے وقت داخل نہیں ہوتے لیکن وقت کے ساتھ ساتھ آہستہ آہستہ بنتے ہیں۔ اور ان کا بننا انسان کی حرکات اور اس کے اعتقادات پر منحصر ہوتا ہے۔ اور کہا جاتا ہے یہ انہی لوگوں میں پائے جاتے ہیں جو روحانی طور پر بیدار ہوں۔

۲- روح RUACH۔ یہ درمیانی روح یا Spirit ہے۔ اس میں اخلاقی پہلو پایا جاتا ہے اور یہ اچھے اور برے میں تمیز کرتی ہے اور اس کو ہم سائیکی (Psyche) اور Ego بھی کہتے ہیں۔

۳- NESHAMA۔ سب سے اونچی درجے کی روح سب سے برتر حصہ۔ یہ انسان کو تمام تر زندہ چیزوں سے منفرد بناتی ہے اس کا تعلق از سے ہے۔ یہ انسان کو زندگی کے بعد کے

فاندوں سے لطف اندوز ہونے میں مدد دیتی ہے۔ روح کا یہ حصہ یہودیوں اور غیر یہودیوں دونوں کو پیدائش کے وقت دے دیا جاتا ہے یہ کسی بھی فرد کو اس کی موجودگی اور خدا کی موجودگی کا علم دیتا ہے۔ موت کے بعد نفس NEFESH ختم ہو جاتا ہے۔ روح (RUACH) کو ایک عارضی جگہ بھیج دیا جاتا ہے۔ اس کی پاکیزگی کے عمل کے لئے ایک عارضی جنت میں بھیج دیا جاتا ہے۔ NESHAMA کو واپس پلاٹونک ورلڈ میں اپنے محبوب سے وصال کے لئے بھیج دیا جاتا ہے۔

## ۱۶۔ قرآن مجید

قرآن وحدیث میں نہ صرف روح، نفس جسم کا تفصیلی تذکرہ موجود ہے بلکہ ان کی انفرادی شناخت اور تخلیقی و فنائی مراحل کا تذکرہ بھی ہے۔ مثلاً

(1) روح:- (رب امر ہے) یہاں قرآن نے روح کو رب نہیں بلکہ رب کا حکم قرار دیا ہے۔ یہ تعریف دراصل روح کی واحد اور صحیح تعریف ہے۔

(2) نفس:- خواہش و ارادے سے منسوب ہے اس کی دیگر تفصیلات بھی موجود ہیں جنہیں سمجھنے کی یا جن سے استفادے کی کبھی کوئی کوشش نہیں کی گئی۔

(3) جسم:- جسم عمل سے منسوب ہے جسم کے مختلف تخلیقی مدارج کا ذکر قرآن میں تفصیلاً موجود ہے۔

## تبصرہ، تجزیہ، موازنہ

تمام مذاہب (قدیم ہوں یا جدید) میں انسانی باطن (روح، نفس) کا تصور پایا جاتا ہے۔ یعنی یہ کوئی ایسا نیا یا انفرادی تصور نہیں ہے جیسا کہ آجکل کچھ ماڈرن لوگ روح و نفس کے ذکر کو تو ہم پرستی قرار دیتے ہیں۔ روح و نفس سے متعلق یہ رویہ انتہائی احمقانہ رویہ ہے۔ کیونکہ روح تو ہم خود ہیں لہذا خود کو تو ہم پرستی قرار دے کر خود کا انکار کرنا محض حماقت نہیں اس سے بڑی غلطی ہے۔

تمام مذاہب نے روح و نفس کی ایک سی تعریفیں کی ہیں لیکن تمام مذاہب میں ان روح، نفس سے متعلق مختلف عقیدے پائے جاتے ہیں۔ درحقیقت روح و نفس مذہبی آفاقی اطلاعات ہیں اور یہ آفاقی اطلاعات اپنی جگہ درست ہیں لیکن ہر دور میں اور آج بھی ان آفاقی اطلاعات کو کوئی بھی پورے طور پر سمجھ نہیں پایا اس کی دو وجوہات ہیں۔

(1) آفاقی اطلاعات کو پورے طور پر سمجھا نہیں گیا دوسرے ان آفاقی اطلاعات میں فلسفیانہ اضافوں نے انہیں مزید الجھا دیا ہے۔ یعنی روح و نفس کی تعریف کرنے کی کوشش (جو کہ غلط کوششیں رہی ہیں) نے ان اطلاعات کو خلط ملط کر دیا ہے۔

(2) دوسرے اکثر مذاہب میں انہیں سوامیوں اور فلسفیوں نے ترمیم و اضافے کر ڈالے ہیں۔ اور انہیں ترمیم و اضافوں نے روح و نفس کی تعریفوں کو بھی متاثر کیا ہے جس سے نئے فلسفوں اور روح سے متعلق نئے عقیدوں نے جنم لیا ہے جبکہ ان عقیدوں کا تعلق مذاہب سے نہیں بلکہ یہ عقیدے سوامیوں یا فلسفیوں کے قلم کا شاخسانہ ہیں اور ان عقیدوں (یعنی نظریات) میں وہی غلطیاں پائی جاتی ہیں جو کسی بھی فلسفی کے فلسفے میں متوقع ہوتی ہیں۔

ان بڑی اور بنیادی غلطیوں نے ہی دراصل روح و نفس کو ایسا گھمبیر مسئلہ بنا ڈالا ہے کہ آج تک نہ تو روح و نفس کی صحیح تعریف ممکن ہو سکی ہے نہ ہی مجموعی انسان کی تعریف ہی ممکن ہو سکی ہے۔ لیکن تمام ترمیم و اضافوں کے باوجود آج تک روح و نفس کی سب سے بڑی اور اہم تعریف مذاہب ہی نے کی ہے اس کے علاوہ تمام تر برسوں کے تجربوں اور مشاہدوں کے باوجود آج تک روح و نفس کی کوئی تعریف یا شناخت سامنے نہیں آ سکی ہے۔ مذاہب نے روح و نفس یا مجموعی انسان کی جو صحیح تعریف دی ہے اسی تعریف کو فلسفی یا روحانی پیشوا، خلط ملط کرتے چلے آئے ہیں اور آج بھی یہی کر رہے ہیں۔ لہذا ہر مذہب میں روح، نفس، جسم کا تذکرہ تو موجود ہے لیکن ان تمام کو اور ان تمام کے اعمال و افعال کو گڈمڈ کر دیا گیا ہے۔ روح کے حصے بیان کئے گئے ہیں جبکہ یہ محض فلسفیانہ اطلاع ہے مذاہب نے روح کو حصوں میں تقسیم نہیں کیا یہ محض فلسفیانہ فکر ہے جو برسوں سے چلی آ رہی ہے۔

جن اجسام کو روح کے حصے بتایا گیا ہے وہ اپنے علیحدہ انفرادی تشخص رکھتے ہیں وہ دراصل کیا ہیں۔ ان کی انفرادی حیثیت کیا ہے، ان کی خصوصیات و اعمال کیا ہیں ان تمام تفصیلات کا ذکر آگے آئے گا۔

روح کے مادی دنیا سے جانے کے بعد عالم برزخ سے سفر آخرت تک کو صحیح طور پر نہیں سمجھا گیا اور اس غلطی نے باطل عقیدوں کی صورت اختیار کر لی۔

نفس کی بھی انفرادی شناخت نہیں کی گئی نفس کے بعض اجزاء کو روح کے حصے قرار دیا گیا ہے اور نفس

کو انفرادی حیثیت میں شناخت کرنے کے بجائے روح کا حصہ قرار دیا گیا ہے۔ اس غلط فہمی کو آگے دور کر کے نفس کی انفرادی شناخت قائم کی جائے گی۔

اکثر عقائد میں روح اور خالق کو ایک ہی شے تصور کیا گیا ہے جبکہ یہ مذہبی یا کائناتی اطلاع نہیں ہے یہ کوئی عقیدہ نہیں ہے بلکہ کائناتی اطلاع کو سمجھنے کی غلطی نے اس فلسفے کو جنم دیا ہے۔ مختلف اقوام میں روح کی پوجا کا رواج عام ہے اور اس عقیدے نے بھی اس غلط فہمی سے جنم لیا ہے کہ روح اور رب ایک ہی شے کے دو نام ہیں۔

صرف قرآن نے نہ صرف ہر روح، نفس و جسم کی انفرادی تعریف اور شناخت قائم کی ہے بلکہ ان تمام کے تخلیقی و فنائی مدارج کا بھی ذکر کیا ہے لیکن قرآن سے لاعلمی اور علم میں پختگی نہ ہونے کے سبب آج تک کوئی عالم و فاضل ان آفاقی اطلاعات کو پورے طور پر سمجھ نہیں پایا۔ اگرچہ تھوڑا تھوڑا علم چند عالم و فاضل رکھتے ہیں لیکن یہ مجموعی انسان کا پورا علم نہیں ہے نہ ہی ہر روح، نفس و جسم کا انفرادی علم ہی موجود ہے۔ حالانکہ قرآن مجید نے انسان کے ہر انفرادی جز کی نشاندہی کی ہے تعریف اور تعارف بھی کیا ہے۔ لیکن ترجمہ کرنے والے حضرات اس فرق کو ملحوظ خاطر نہیں رکھتے لہذا روح و نفس کا ایک ہی ترجمہ کرتے ہیں یا دونوں کو گڈڈ کر دیتے ہیں یا روح و نفس کا ترجمہ جان کر دیتے ہیں۔ یہ محض لاعلمی پر مشتمل غلطیاں ہیں۔ قرآن نے روح کو رب نہیں کہا بلکہ رب کا حکم قرار دیا ہے۔ یہی تعریف روح کی صحیح تعریف ہے۔ روح کی یہ واحد تعریف ہے جو اپنی اصلی حالت میں موجود ہے۔ لہذا تمام مذاہب کی آفاقی اطلاعات درست تھیں اور درست ہیں لیکن ان اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی سوامیوں، روحانی پیشواؤں اور فلسفیوں نے اور اسی غلطی نے غلط عقائد کو جنم دیا جس کی وجہ سے آج تک انسانی تعریف ممکن نہیں ہو پائی۔ درج ذیل بحث سے مندرجہ ذیل نتائج سامنے آ رہے ہیں۔

## نتائج:

- (1)۔ تمام مذاہب میں انسانی باطن (روح و نفس) کا تصور پایا جاتا ہے۔
- (2)۔ مذاہب نے روح کی انفرادی شناخت اور تعریف کی ہے۔
- (3)۔ مذاہب نے نفس کی بھی انفرادی شناخت اور تعریف کی ہے لیکن آج تک نفس کی انفرادی

تعریف موجود نہیں اور اسے روح کا حصہ قرار دے دیا گیا ہے۔

(4)۔ مذاہب میں ترمیم و اضافوں سے روح و نفس کی تعریفیں متاثر ہوئی ہیں۔

(5)۔ روح و نفس کی مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی ہے جس سے مختلف عقیدوں نے جنم لیا

ہے۔

(6)۔ روح کو حصوں میں تقسیم کیا گیا ہے۔

(7)۔ روح و رب کو ایک ہی شے تصور کیا گیا ہے۔

(8)۔ اکثر مذاہب میں ارواح کی پوجا کا رواج ہے۔

(9)۔ جبکہ قرآن میں یہ مذہبی معلومات اپنی صحیح حالت میں موجود ہیں لہذا قرآن نے نہ صرف

روح و نفس، جسم کی انفرادی تعریف کی ہے بلکہ ان کی تخلیقی و فنائی ترتیب کو بھی بیان کیا ہے لیکن اسے

آج تک سمجھا نہیں گیا یا اس علمی ذخیرے سے استفادے کی کوشش نہیں کی گئی۔

(10)۔ آواگون یا کرما کے غلط نظریے نے بنیادی عقیدے کی شکل اختیار کر لی ہے جبکہ اس

غلط نظریے نے بھی مذاہب کی صحیح اطلاعات کو سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا ہے۔ درحقیقت یہ بھی آفاقی

نظر یہ نہیں ہے۔

## ۱۱۔ انسانی کام کی تاریخ کا جائزہ

اب یہاں تک پہنچ کر ہم انسان پہ ہو رہے مختلف ادوار کے کاموں کا تفصیلی و تنقیدی جائزہ لے آئے

ہیں جس سے یہ بات کھل کر سامنے آگئی ہے کہ اگرچہ انسانی موضوع پر روح، نفس جسم

، ارتقاء، کے حوالے سے صدیوں بہت کام ہوا اور ہو رہا ہے لیکن انسان کے تمام موضوعات پہ

برسوں کی تحقیق و تجربات اور تمام تر کام کا نتیجہ یہ ہے کہ تمام ادوار کے لوگ انسان سے متعلق انتہائی

ابتدائی علم رکھتے تھے جو کہ محض مفروضوں پر مشتمل تھا۔ کبھی مجموعی انسان کا مکمل علم انسان کو حاصل

نہیں ہوا اس لیے کہ انسان ظاہر مادی جسم کے علاوہ ایک وسیع و عریض باطن بھی رکھتا ہے اور

انسان آج تک اپنے اس جہان باطن سے ناواقف رہا ہے نہ صرف ناواقف رہا ہے بلکہ اس

ناواقفیت پہ اصرار بھی کرتا رہا ہے۔ لہذا اگر کبھی کسی نے اس جہان باطن میں جھانک کر اسے

بیان کرنے کی کوشش کی تو مادہ پرست انسانوں نے انہیں وہم پرست قرار دے کر ان کی اطلاعات

کو توہمات قرار دے دیا۔ اگر انسان ان اطلاعات پر کان دھرتا اور اپنے اندر جھانک کر اپنے اندر آباد دنیا کا کھوج لگانے کی کوشش کرتا تو یقیناً آج تک انسان کی تعریف سامنے آچکی ہوتی آج انسان خود سے واقف ہوتا۔ انسان نے ہمیشہ اپنے آپ (اپنی روح اپنے نفس) کو واہمہ قرار دے کر ہمیشہ خود سے صرف نظر کیا جس کے نتائج ہمارے سامنے ہیں کہ ہزاروں برس کا انسان آج خود سے ناواقف ہے۔

اگرچہ آج جدید تحقیقات کے نتیجے میں سائنسدانوں نے انسان کے اندر اس وسیع جہان کا سراغ لگالیا ہے لیکن اپنے آپ سے لاعلمی کے سبب ابھی تک وہ اسے شناخت نہیں کر پارہا الجھ رہا ہے اس سے یہ معمہ سلجھ نہیں رہا۔ اور اب بھی یہ تعین نہیں ہو سکا کہ آخر انسان کیسے کیسے اجسام یا اجزاء کا کیسا مجموعہ ہے۔

یونانیوں نے پہلی مرتبہ انسان کو روح و جسم کا مجموعہ قرار دے کر اسے اس مجموعی حیثیت میں علمی دنیا میں متعارف کروایا۔ ورنہ اس سے پہلے تو فقط چند روحانی پیشوا روح سے واقف تھے۔ اور مادہ پرست مادی جسم کو ہی آخری حقیقت سمجھے ہوئے تھے وہ روح کے تصور تک سے آگاہ نہیں تھے۔

انسان کے جسم میں کوئی روح بھی ہے جو اس مادی جسم کی حرکت و زندگی کا سبب ہے۔ یہ یونانیوں کی فکری پیش قدمی تھی یہ فکر شاید انہوں نے اپنے مذہبی عقائد سے مستعار لی ہو۔ اس فکری پیشقدمی کے علاوہ افلاطون کی تحریروں سے اندازہ ہوتا ہے کہ وہ کسی نہ کسی حد تک روحانی تجربات و مشاہدات بھی رکھتے تھے۔ یعنی انسانی علم کی ابتداء یونانی دور میں ہو چکی تھی۔

یونانی فلسفیوں نے انسان کے حوالے سے روح، ذہن، نفس، ذات وغیرہ کا ذکر تو کیا لیکن وہ نہ تو نفس، ذہن یا روح کی انفرادی تعریف کر پائے نہ ہی مجموعی انسان کا معمہ حل کر پائے یعنی ان کے دور میں یہ انسانی کام اپنی انتہائی ابتدائی حالت میں نمودار ہوا اگرچہ وہ انسان کی تعریف نہیں کر پائے لیکن انہوں نے یہ کوشش ضرور کی اور انسان کی روح اس کے باطن کا تذکرہ کر کے آگے آنے والے محققوں کے لئے تحقیق کے دروا کر دیئے اور ان کی صحیح سمت کی طرف رہنمائی کی جسے بری طرح رد کر دیا گیا ان کے بعد آنے والے سائنسدانوں نے روح کو غیر مرئی قرار دے کر علم کی حدود سے خارج کر دیا اور فقط مادی جسم کو انسان قرار دے کر صدیوں اس پر کام کرتے رہے۔ اس طرز عمل سے انسان پر صدیوں کی گرد چڑھ گئی اور ابھی تو انسان کے علم کی ابتداء ہوئی ہی تھی کہ اسے

وہیں ختم کر دیا گیا۔

مسلمانوں نے بھی جسم کے علاوہ روح و نفس کا تذکرہ کیا اور مجموعی انسان کی بھی تعریف کی لیکن یہ کام بھی بہت ہی ابتدائی نوعیت کا کام رہا جس سے مجموعی انسان کی تعریف ممکن نہیں ہو سکی۔ نہ ہی یہ کام علمی حیثیت میں سامنے آ سکا۔

تمام ادوار میں انسان اس کی روح اس کے نفس کی اتنی تعریفیں اور اتنی متضاد تعریفیں ہیں جنہیں پڑھ کر انسان کچھ سمجھ ہی نہیں سکتا ہاں الجھ ضرور جاتا ہے۔ اب اگر ہم اپنے علم کی بنیاد پر کہیں کے ان صدیوں برسوں کی بے تحاشا اور متضاد تعریفوں میں سے انسان سے متعلق ایک آدھ تعریف ٹھیک تعریف بھی ہے۔ تو پھر اتنی اور متضاد تعریفوں میں سے اس ایک تعریف کو شناخت کرنا محال ہے۔ اور اگر کر بھی لیں تو یہ تعریفیں اتنی ابتدائی تعریفیں ہیں کہ جو تعریف کے معیار پر بھی پوری نہیں اترتیں۔

درحقیقت پچھلے تمام ادوار میں انسان پہ اتنے متضاد موضوعات پہ کام ہوئے ہیں کہ یہ جاننا محال ہے کہ انسان آخر ہے کیا؟ جو روح پہ کام کرتے ہیں وہ کہہ دیتے ہیں کہ اصل انسان تو روح ہی ہے۔ جو جسم پہ کام کرتے ہیں وہ آج تک یہی کہتے آئے ہیں کہ جسم ہی آخری حقیقت ہے۔ AURA کی دریافت کے بعد بھی کچھ لوگ اس حقیقت کو تسلیم کرنے پر رضامند نہیں ہوتے اور اپنے قدیم نظریات پر اڑے رہنے کو ترجیح دیتے ہیں۔ بحر حال ابھی تک نہ تو روح کی شناخت ہوئی ہے نہ نفس کی اور اب تو سائنسدان انسان کے اندر مزید AURA چکراز، سبٹل باڈیز کا مشاہدہ کر رہے ہیں لیکن الجھ رہے ہیں۔ ابھی تک ان تمام کی انفرادی تعریف ہی ممکن نہیں ہو سکی۔ یعنی اگر ہم یہ کہیں کہ انسان ان تمام باطنی لطیف اجسام کا مجموعہ ہے۔ تو نہ تو ابھی تک ان تمام اجسام کی شناخت ہو پائی ہے نہ ہی تعریف یا تعارف موجود ہے لہذا ان تمام کو مجتمع کر کے سادہ سے انسان کی مجموعی تعریف کرنا فی الحال محال ہے۔ یعنی ہزاروں برس سے انسان کا علم آج تک اپنی ابتدائی حالت میں ہی ہے۔

ہاں جب یونانیوں نے انسان کے باطن کی طرف اشارہ کیا تھا اگر اسی وقت ان کے بتائے ہوئے راستے کی طرف قدم اٹھائے جاتے اس صحیح سمت میں پیش قدمی ہوتی سیر حاصل تحقیق ہوتی تو نتائج یقیناً اچھے نکلتے آج انسان خود سے اپنے باطن سے یقیناً آگاہ ہوتا اور شاید مجموعی انسان کی حیثیت



کا بھی تعین ہو جاتا۔

لیکن جب نہ سہی آج ہی سہی آج ہی اپنے آپ کو واہمہ کہنا چھوڑ دیجئے۔ آج بھی روح کا تذکرہ کیا جائے تو لوگ مذاق اڑاتے ہیں کہ یہ کیسی انہونی بات کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ آج بھی انسان کے موضوع کو سنجیدگی سے لے لیجئے اور اپنے آپ کو سمجھنے کی کوشش کیجئے تعصبات کو بالائے طاق رکھ کر خود کو دیکھیئے پہچانیئے۔ اگر آج بھی انسان کی سمجھ میں یہ بات آگئی کہ اسے کم از کم اپنے بارے میں تو علم ہو اسے خود کو تو جاننا ہی چاہئے۔ تب یہ علم اپنی ابتدائی حالت سے نکل آئے گا اور ہم خود کو شناخت کر لیں گے کہ آخر ہم کیا ہیں۔ آخر انسان کیا ہے؟ لیکن ابھی تک انسان خود کو شناخت نہیں کر پایا ہے اور یہ انسان کا ابتدائی علم جس کا یہاں ہم نے تذکرہ کیا ہے یہ بھی محض چند لوگوں کے پاس ہے ورنہ انسانوں کی زیادہ تعداد اپنے بارے میں جانتی ہی نہیں۔ ابتدائی علم بھی نہیں رکھتی۔ اب یہاں جو ہم نے انسان پر ہو رہے تمام ادوار کے مختلف کاموں کا تفصیلی جائزہ لیا ہے اور اس جائزے سے درج ذیل نتائج اخذ کیئے ہیں۔

تمام ادوار کے انسانی کاموں کے نتائج درج ذیل ہیں۔

۱۔ تمام ادوار کے محققین، فلسفی، سائنسدان، انسان کی مجموعی تعریف کرنے میں ناکام رہے ہیں۔

۲۔ تمام ادوار کا کام انتہائی ابتدائی کام رہا ہے۔

۳۔ اور یہ تمام کام بے نتیجہ ہیں۔

۴۔ تمام ادوار میں مجموعی انسان کے اجزاء (روح یا، نفس یا، جسم) پہ انفرادی کام ہوا ہے۔

۵۔ ہر انفرادی کام (یعنی روح کا کام یا نفس کا کام یا جسم کا کام) ایک دوسرے سے غیر متعلق رہا ہے۔

۶۔

۶۔ تمام ادوار میں کبھی مجموعی انسان (روح، نفس، جسم) پہ کام نہیں ہوا۔ اسلیئے کہ آج تک کوئی

انسان کی مجموعی حیثیت کو جان ہی نہیں سکا۔

۷۔ تمام ادوار میں روح کا تذکرہ موجود ہے۔

۸۔ روح کی خصوصیات کو روح کی تعریف کے طور پر پیش کیا جاتا رہا ہے۔

۹۔ روح کی تعریفوں میں روح کی تعریف ہی نہیں ہے۔

۱۰۔ تمام ادوار روح کی تعریف اور انفرادی شناخت کرنے میں ناکام رہے۔

- ۱۱۔ تمام ادوار میں روح کو حصوں میں تقسیم کیا جاتا تھا۔
- ۱۲۔ روح اور رب کو ایک ہی تصور کیا جاتا ہے۔
- ۱۳۔ تمام ادوار میں ارواح کی پوجا کا رواج رہا ہے۔
- ۱۴۔ ہر دور میں نفس کا ذکر موجود ہے۔
- ۱۵۔ نفس کی مروجہ تعریف غلط ہے۔ ہر دور میں نفس کی غلط تعریف کی گئی۔
- ۱۶۔ تمام ادوار نفس کی تعریف اور انفرادی شناخت کرنے میں ناکام رہے۔
- ۱۷۔ تمام ادوار میں اصل نفس کو روح یا روح کے حصے کے طور پر متعارف کروایا جاتا رہا۔
- ۱۸۔ مذاہب نے روح و نفس کی تعریف کی ہے۔
- ۱۹۔ مذاہب میں ترمیم و اضافے سے روح و نفس کی تعریفیں متاثر ہوئی ہیں۔
- ۲۰۔ روح و نفس کی مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی ہے جس سے مختلف عقیدوں (ارتقاء آواگون) نے جنم لیا ہے۔
- ۲۱۔ قرآن نے نہ صرف روح و نفس، جسم کی انفرادی تعریف کی ہے بلکہ ان کی تخلیقی و فنا کی ترتیب کو بھی بیان کیا ہے لیکن اسے آج تک سمجھا نہیں گیا یا اس علمی ذخیرے سے استفادے کی کوشش نہیں کی گئی۔
- ۲۲۔ تمام ادوار میں انسان کے باطنی وجود Auras کا ذکر موجود ہے۔
- ۲۳۔ تمام ادوار کی روحانی مشقوں اور تجربات میں سو فیصد مماثلت ہے۔
- ۲۴۔ یونانی ذہن، روح، نفس، جسم سے ابتدائی حیثیت میں متعارف تھے۔
- ۲۵۔ لیکن وہ ذہن، روح، نفس کی انفرادی شناخت نہیں رکھتے تھے۔
- ۲۶۔ یونانی فلسفیوں نے مادی جسم کے علاوہ انسان سے متعلق روح، ذہن و نفس کو پہلی مرتبہ علمی میدان میں متعارف کروایا۔ اس سے پہلے یہ علم مذہبی روحانی پیشواؤں تک محدود تھا۔
- ۲۷۔ ارتقائی نظریہ ہزاروں برس قدیم یونانی نظریہ ہے یعنی یہ ڈارونزم نہیں بلکہ یونانزم ہے
- ۲۸۔ ہر دور میں روح کے دوبارہ جانور کی شکل میں نمودار ہونے یا کرما اور آواگون جیسے مختلف النوع (متضاد) نظریات موجود رہے ہیں۔
- ۲۹۔ آواگون یا کرما کے غلط نظریے نے بنیادی عقیدے کی شکل اختیار کر لی ہے جبکہ اس غلط

نظریے نے مذاہب کی صحیح اطلاعات کو سمجھنے کی غلطی سے جنم لیا۔ ثابت ہو گیا کہ ارتقاء کے حامی خود فریبی کا شکار سے ایک مذہبی عقیدہ تصور کر کے اندھا دھند اس کے دفاع میں مصروف ہیں جبکہ نہ تو یہ مذہبی عقیدہ ہے نہ سائنسی نظریہ، یہ محض مفروضہ ہے جس کی بلاوجہ جھوٹی تائید کی جا رہی ہے۔

۳۰۔ ارتقاء سے متعلق رکازی ریکارڈ من گھڑت، افسانے جھوٹے، دلیلیں بے ثبات اور تمام مواد ردی ہے۔ جعل سازی سے مرکب اس رکازی ریکارڈ یا کباز کی کوئی تاریخی حیثیت نہیں۔

۳۱۔ جبکہ جدید رکازات یا اصل رکازی ریکارڈ سے ثابت ہو گیا کہ تمام انواع اپنی موجودہ حالت میں لاکھوں برس پہلے بھی موجود تھیں۔

۳۲۔ جدید تحقیقات سے ثابت ہو گیا کہ ارتقاء نہیں ہوا تھا۔ (جینیاتی تغیر نہیں نوعی تسلسل حقیقت ہے)۔

۳۳۔ جدید دریافتوں سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ رفتہ رفتہ نہیں اچانک تخلیق ہوئی تھی۔

۳۴۔ جدید تحقیقات سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ کسی حیوانی نسل کا تعلق انسانی نسل سے نہیں۔

۳۵۔ ماضی کا انسان (نہ صرف پورا انسان تھا حیوان نہیں تھا) بلکہ آج کے انسان سے زیادہ روحانی، ذہنی و جسمانی اعتبار سے مضبوط انسان تھا۔

وہ محض مادی ترقی ہی نہیں بلکہ روحانیت میں بھی درجہ کمال کو پہنچا ہوا تھا۔

۳۶۔ جدید تحقیقات سے یہ بھی ثابت ہو گیا کہ تمام انسان ایک ہی ماں کی اولاد ہیں۔

۳۷۔ مسلمانوں نے پہلی مرتبہ مجموعی انسان کی تعریف کی ہے۔ (لیکن یہ محض انتہائی ابتدائی تعریف ہے یہ کوئی انسانی علم نہیں، ہاں یوں ہے کہ انسان سے متعلق یہ انتہائی ابتدائی تعریف بھی پوری

انسانی کام کی تاریخ میں ایک ہی ہے اور یہ ایک تعریف بھی صرف مسلمانوں کے ہاں موجود ہے)

۳۸۔ صرف مسلمانوں نے انسان کو تین نظاموں (روح، نفس، جسم) کا مجموعہ قرار دیا ہے۔ ان سے پہلے اور ان کے بعد سب محققوں نے دو نظاموں کا ذکر کیا ہے۔ یعنی روح و جسم

۳۹۔ مسلمانوں نے صدیوں پہلے غیر سائنسی دور میں انسان (روح، نفس، جسم) کی جدید سائنسی تعریف کی ہے۔

۴۰۔ مسلمانوں نے پہلی مرتبہ ہر روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کی۔ مسلمانوں نے ہر روح، نفس، جسم کی خصوصیات کا بھی ذکر کیا۔

۴۱۔ مسلمان روح یا جسم کی تخلیق یا فنا کی ترتیب کے کچھ ٹکڑوں سے سرسری واقفیت تو رکھتے تھے لیکن وہ مجموعی ترتیب کو سمجھنے سے قاصر رہے لہذا وہ مجموعی انسان کی تخلیقی اور فنا کی ترتیب کو ترتیب دینے میں کامیاب نہیں ہو سکے۔

۴۲۔ جدید محققین بھی سائنسی دریافتوں کی بدولت انسان کے باطن کو تو دریافت کر بیٹھے ہیں لیکن اسے کوئی حتمی نام نہیں دے پارہے۔

۴۳۔ وہ لطیف اجسام کا مادی جسم سے ربط نہیں جوڑ پائے۔

۴۴۔ وہ ان تمام کا مقصد عمل اور خصوصیات نہیں جانتے اگرچہ کسی نہ کسی حد تک ان کے مادی جسم پر اثرات کا جائزہ لیتے رہتے ہیں۔

۴۵۔ وہ ان تمام (AURA، چکر، سبٹل باڈیز یا لطیف اجسام) کی انفرادی شناخت نہیں کر پائے۔ اگرچہ انہوں نے انہیں مختلف نام دے رکھے ہیں۔

۴۶۔ جدید محققین لطیف اجسام کے مشاہدے کے بعد آواگون جیسے نظریات کو درست سمجھنے لگے ہیں حالانکہ یہ محض ان کی غلط فہمی ہے

۴۷۔ تمام ادوار کی طرح جدید محققین بھی انسان کے باطن کے مشاہدے کے بعد بری طرح الجھ گئے ہیں۔ اور سمجھ نہیں پارہے کہ یہ "انسان" کیساراز ہے یعنی تمام ادوار کا کام بے نتیجہ رہا۔

۴۸۔ یعنی ہزاروں برس بعد آج بھی یہ معمہ "انسان" ابھی تک معمہ ہی ہے۔

۴۹۔ لیکن اب آگے ہم ان تمام الجھنوں اور غلط فہمیوں کو دور کر کے انسان کی تعریف پیش کریں گے۔ اور یہ تمار تعریف نئے نظریات پہ مشتمل ہوگی۔

ان تاریخی غلطیوں سے مندرجہ ذیل سوال سامنے آرہے ہیں یہ سوالات اگرچہ ہر دور میں کھڑے ہوئے ہیں اور ہر دور کے محقق، سائنسدان، فلسفی، صوفی ان سوالات پر کام کرتے رہے ہیں لیکن ہزاروں برس کی تمام تحقیق و جستجو کے بعد آج بھی یہ تمام سوال جوں کے توں تشنہ ہیں۔

وہ سوال مندرجہ ذیل ہیں:-

## 12۔ تاریخی سوال

۱۔ آخر مجموعی انسان کی کیا تعریف ہے؟

۲۔ انسان آخر کن کن اجسام کا کیسا مجموعہ ہے؟

۳۔ روح کیا ہے؟ ہزاروں برس میں روح کی انفرادی شناخت بھی نہیں ہو پائی کیوں؟

۴۔ کیا روح کے حصے بھی ہیں؟

۵۔ کیا روح اور رب ایک ہیں؟

۶۔ نفس کیا ہے؟ اس کی انفرادی شناخت کیا ہے؟

۷۔ آواگون کے نظریے کی حقیقت کیا ہے؟ یہ مذہبی عقیدہ کیسے بن گیا؟

۸۔ ارتقاء جیسے جھوٹے مفروضے نے مذہبی عقیدے اور سائنسی نظریے کی صورت کیسے اختیار کی؟

۷۔ انسان کی تخلیق ہوئی یا ارتقاء۔؟

۸۔ انسان کی تخلیق کیسے ہوئی؟

۹۔ فنائی مراحل کیا ہیں۔؟

۱۰۔ کیا انسان مر کر فنا کے گھاٹ اتر جاتا ہے۔؟

۱۲۔ یا آخرت کے سفر پر روانہ ہو جاتا ہے۔؟

۱۳۔ یا وہ بار بار جنم لیتا ہے۔؟

۱۴۔ (AURA)، چکراز کیا ہیں۔؟

۱۵۔ نظریہء جبر و قدر کی کیا حقیقت ہے۔؟

۱۶۔ نظریہء ہبوط آدم کیا ہے۔؟

۱۷۔ انسانی تعریف میں ناکامی کے کیا اسباب ہیں؟

۱۸۔ کیا انسان کی تعریف ممکن ہے۔؟

یہ علم انسان سے متعلق وہ سوالات ہیں جن میں صدیوں سے سائنسدان، فلسفی، محققین الجھے تو

ہوئے ہیں لیکن انہیں کبھی سلجھا نہیں سکے۔ آئے ان ہزاروں برس کی الجھنوں کو سلجھا کر اس کتاب

میں ان تشنہ سوالوں کے جوابات دیتے ہیں۔

حصہ دوم  
نئے نظریات  
(تاریخی جواب)

انسان سے متعلق ارسطو، سقراط، بقراط، ڈارون، نیوٹن، آئن سٹائن، اسٹیفن ہاکنگ کے مد مقابل  
کئی سونے سائنسی نظریات

حصہ اول میں ہم نے انسان سے متعلق پرانے نظریات کا تنقیدی جائزہ لیا ہے جبکہ  
حصہ دوئم میں اب ہم نئے نظریات کے ذریعے برسوں کے حل طلب تشنہ سوالات کے جوابات  
دیں گے

اور پہلی مرتبہ انسان کی اور انسان کے ہر انفرادی جز (روح، نفس) کی تعریف اور تفصیلی تعارف  
پیش کریں گے

اور درج ذیل موضوعات پر نئے انداز میں نئے سائنسی نظریات پیش کریں گے۔

مادی جسم

زندگی کے بعد زندگی

نفس

روح

تخلیق

پیدائش۔

حرکت

عمل

موت

انتقال

آواگون

نظریہء جبر و قدر

نظریہء ہبوط آدم

AURA چکراز

## 13۔ انسان کی تعریف

ہر دور کے انسان نے انسان کی تعریف کرنے کی کوشش کی ہے اگرچہ اپنی اس کوشش میں کبھی کامیاب نہیں ہوا لہذا آج تک حتمی طور پر یہ فیصلہ ہی نہیں ہو پایا کہ آخر انسان ہے کیا؟ یعنی آج تک انسان کی ایک بھی حتمی تعریف نہیں ہو سکی۔

اب ذرا ہم ان مختلف اور متضاد کوششوں کا جائزہ لیتے ہیں جو انسان کی تعریف کے لیے کی گئی ہیں۔ سب سے پہلے انکسامندر اور ابندرقلیس دو یونانی فلسفیوں نے یہ دعویٰ کیا کہ انسان کی موجودہ شکل ہمیشہ سے نہیں ہے بلکہ اس نے رفتہ رفتہ حیوانی حالت سے ارتقاء کی ہے۔

لہذا ارسطو نے بھی انسان کو سیاسی حیوان قرار دیا جس کی جبلت میں جوڑ توڑ آپس میں کھینچا تانی اور دوسروں پہ غلبہ حاصل کرنے کی خواہش ہے۔

اس کے بعد سے انسان کا یہی حیوانی تشخص مقبول عام ہوا لہذا اچارلس رابرٹ ڈارون نے اس نظریے کو توسیع دی اور وضاحت کی کہ انسان کی تخلیق نہیں ہوئی بلکہ پانی میں ایک خلوی جرثومے سے زندگی کا آغاز ہوا اور رفتہ رفتہ ارتقاء کے ذریعے انسان موجودہ صورت میں بوز نے APE سے پروان چڑھا۔

مارکس نے انسان کو معاشی حیوان قرار دیا جس کی سوچ اور فکر کا دارومدار محض اس کا پیٹ ہے۔ جبکہ تھامس کارلائل نے کہا کہ انسان معاشرتی حیوان ہے جو مل جل کر معاشرے کو جنم دیتے ہیں بستیاں بساتے ہیں قانون وضع کرتے ہیں۔

حزلیٹ نے انسان کو شاعرانہ جانور کہا جبکہ بنجمن فرینکلن نے اسے ہتھیار بنانے والا حیوان قرار دیا کسی نے حیوان ناطق کہا تو کسی نے تقلید کرنے والا حیوان کسی نے اسے قوی الفکر حیوان قرار دیا۔

صدیوں سے ایک مخصوص طبقہ خصوصاً ارتقاء پرست انسان کو حیوان ثابت کرنے پر مصر ہیں۔ ارسطو، ڈارون، مارکس یا سقراط، بقراط، سوال یہ ہے کہ ان میں سے کس کی اور کونسی تعریف صحیح ہے؟ جواب یہ ہے کہ یہ تمام تعریفیں انسان کی تعریفیں ہیں ہی نہیں اور جب ان میں سے کوئی انسانی تعریف ہے ہی نہیں تو پھر صحیح اور غلط کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ یہاں حیوانوں کے بل مقابل انسان کی کچھ انفرادی خصوصیات کا تذکرہ ہے اور انسان کی کچھ خصوصیات انسان نہیں انسان تو ہزاروں



خصوصیات کا مجموعہ ہے۔ ہاں ان تعریفوں کو انسان کو حیوان ثابت کرنے کی کوششیں ضرور کہا جا سکتا ہے۔ اور یہ کوششیں بھی ناکام کوششیں قرار پائیں اس لیے کہ جدید تحقیقات سے ثابت ہو گیا کہ انسان کا کبھی کسی حیوانی نسل سے کوئی تعلق نہیں رہا بلکہ انسان ابتداء سے انسان ہی ہے۔ لہذا یہ تعریفیں انسانی تعریفیں ہیں ہی نہیں۔ سوال یہ ہے کہ کیا ماضی میں انسانی تعریفوں میں انسان کی کوئی صحیح تعریف بھی موجود ہے اور اگر ہے تو پھر صحیح تعریف کا تعین کیسے ہوگا۔

AURA کی دریافت اور جدید تحقیقات کے نتیجے میں اب انسان کی تعریف کا رخ بدل گیا۔ لہذا انسان کو حیوان یا فقط مادی جسم کہنے والے کہنے لگے کہ انسان اپنے جسم سے عظیم تر ایک چیز ہے اور اس پیمانہ خاکی سے باہر چھلک رہا ہے۔

لہذا اب اس سوال کی کوئی اہمیت یا حقیقت نہیں ہے کہ انسان حیوان ہے یا نہیں بلکہ آج یہ سوال اٹھ کھڑا ہوا ہے کہ

آخر انسان کیسے اور کتنے اجسام کا کیسا مجموعہ ہے؟

## 14۔ انسان کیسا مجموعہ ہے؟

ہزاروں برس سے آج تک یہ معمہ حل نہیں ہوا کہ آخر انسان کیسا مجموعہ ہے۔ ہر دور میں روح و جسم کا بھی تذکرہ ہوتا رہا اور آج بھی سائنسدان سائنسی طریقوں سے اس کی جانچ پڑتال کر رہے ہیں اور اُلجھ رہے ہیں۔ اور آج بھی یہ سوال جوں کا توں ہمارے سامنے موجود ہے کہ آخر!

انسان کتنے اور کیسے کیسے اجسام کا کیسا مجموعہ ہے؟

اور آخر اس کے اندر کتنے اور کیسے کیسے نظام کام کر رہے ہیں۔ جتنا انسان اپنے اندر جھانک کر دیکھتا ہے اتنا ہی الجھتا چلا جا رہا ہے۔ اور ہزاروں برس سے انسان اسی الجھن میں مبتلا ہے مثلاً

یونانی فلسفیوں نے انسان کو دو نظاموں یا دو جسموں کا مجموعہ قرار دیا تھا یعنی انہوں نے انسان کو جسم و ذہن کا مجموعہ قرار دیا۔ یونانی فلسفی ذہن اور روح میں امتیاز نہیں برتتے تھے اور ذہن کو روح سے تشبیہ دیتے تھے۔ لہذا ذہن سے ان کی مراد روح ہوتی تھی یعنی یونانی فلسفیوں کے مطابق انسان "روح و جسم کا مجموعہ ہے" اگرچہ یونانیوں نے انسان کو دو نظاموں یعنی روح و جسم کا مجموعہ قرار دیا لیکن غیر اختیاری طور پر انہوں نے ایک تیسری سمت کی طرف بھی اشارہ کیا۔ مثلاً

سقراط نے روح و جسم کے علاوہ ذات اور نفس کا بھی تذکرہ کیا جبکہ ارسطو نے دو روحوں، روح حیوانی اور روح انسانی کا تذکرہ کیا۔ افلاطون کی تحریروں میں بھی نفس کا تفصیلی تذکرہ ہے۔ یعنی یونانی فلسفی اپنے مذہبی عقیدوں یا روحانی مشاہدات و تجربات کی بدولت کسی نہ کسی حد تک کچھ نظاموں سے آگاہ تو تھے لیکن وہ انہیں صحیح طور پر شناخت نہیں کر پائے۔ وہ انسان کو دو نظاموں کا مجموعہ بھی قرار دیتے ہیں اور غیر اختیاری طور پر کسی تیسری سمت کسی تیسرے نظام کی نشاندہی بھی کرتے رہے۔ یونانیوں کی طرح آج کے جدید محقق بھی انسان کو دو نظاموں جسمانی اور اثیری کا مجموعہ قرار دیتے ہیں جبکہ وہ انسان کے اندر محض دو نظام نہیں بلکہ ایک نیا ہی جہان دریافت کر بیٹھے ہیں۔ جس کی تعداد کا تعین بھی نہیں کر پائے ہیں آج تک۔

جبکہ مسلمانوں نے انسان کو تین نظاموں کا مجموعہ قرار دیا یعنی انسان تین جسم یا تین روحوں سے مرکب ہے اسے انہوں نے تین کرنٹ بھی کہا۔ اور انسان کو روح و نفس و جسم کا مجموعہ قرار دیا۔ مسلمانوں کے علاوہ یہودی اور عیسائی اقوام میں بھی روح و نفس کا تصور پایا جاتا ہے اور دونوں کی مذہبی کتابوں میں روح و نفس کا تذکرہ موجود ہے لیکن مذہبی کتابوں کی اطلاعات کو کسی نے سمجھنے کی زحمت نہیں کی جبکہ کلاسیکل لٹریچر میں ہمیں کہیں نہ کہیں کچھ معلومات مل ہی جاتی ہیں مثلاً (Kabbalah (esoteric jewish mysticism کے کام Zohar کے مطابق انسان سے وابستہ تین اجسام کا سراغ ملتا ہے۔

(1) Nefesh. (2) Ruach. (3) Neshama

قدیم چینیوں نے بھی مادی جسم کے علاوہ دو نذید اجسام کا تذکرہ کیا جسے انہوں نے I. P.O. 2. HUN کہا۔

قدیم مصریوں نے بھی مادی جسم کے علاوہ دو نذید اجسام کا تذکرہ کیا انہوں نے ان اجسام کو بلع اور کع کے نام سے پکارا جبکہ مختلف عقائد میں دو اجسام کے تذکرے کے علاوہ ہمیں مختلف النوع قسم کے عقائد بھی ملتے ہیں۔

مثلاً ایک وسیع پیمانے پر عقیدہ کی حیثیت رکھنے والا آواگون کا نظریہ یا عقیدہ ہے۔ جس کے مطابق انسان مرنے کے بعد دوبارہ زندہ ہوتا ہے۔ دوسرے جنم میں اسے ایک دوسرا جسم ملتا ہے وہ جسم انسانی، حیوانی بلکہ نباتاتی بھی ہو سکتا ہے اور یہ سلسلہ جاری رہتا ہے یعنی ایک جسم ختم ہوتا ہے تو

دوسرے جنم میں انسان کو کوئی دوسرا جسم دے کر دوبارہ زندگی دے دی جاتی ہے۔

اس حساب سے تو یہ اندازہ لگانا دشوار ہے کہ انسان کتنے اور کیسے کیسے نظاموں کا مجموعہ ہے۔ اس عقیدے کے حساب سے تو ہر انسان کے بارے میں الگ حساب لگانا ہوگا کہ اس انسان کو کتنے اور کیسے کیسے جنم ملے کبھی وہ کسی سبزی کے روپ میں ظاہر ہوا کبھی جانور کبھی درخت اور کبھی کسی اور روپ میں۔ لہذا یہ حساب کتاب انسانی بس کا نہیں ہے۔

قدیم ادوار میں یونانی، رومی، ہندو اور عیسائی اقوام میں ان کی مذہبی شخصیات کی تصاویر اور مجسموں میں مادی جسم کے علاوہ ان کا ہیولا بھی دکھایا جاتا تھا جسے انگریزی میں ہالو Halo قدیم یونانی میں AURA اور لاطینی میں AUREOLA کہا جاتا تھا۔ جس کا تذکرہ صدیوں سے ہو رہا تھا آج اسی AURA کی جدید سائنسی دریافت بھی ہو گئی اور اس انسان کے باطنی لطیف وجود AURA کے اندر مزید سات اجسام (Subtle Bodies) بھی دریافت کر لیے گئے ہر سات اجسام کے سات مختلف لیول اور سب لیول ہوتے ہیں۔ سائنسدان AURA کے اندر چکراز کا بھی مشاہدہ کر رہے ہیں۔ سات بنیادی چکراز ہوتے ہیں جبکہ سات کے علاوہ بھی AURA میں مزید چکراز دریافت ہوئے ہیں۔ یعنی جدید تحقیقات کے مطابق تو دو، تین یا سات نظاموں سے بھی کہیں زیادہ نظام انسان کے اندر دریافت ہو چکے ہیں اور یہ دریافتیں ابھی جاری ہیں۔

آج انسان، انسان کے اندر Subtle Bodies, Chakras, AURA کا مشاہدہ تو کر رہا ہے لیکن اجسام کے چکر کو سمجھ نہیں پارہا اور اس اجسام کے چکر کو کچھ لوگ آواگون سے منسوب کرنے کی کوشش کرتے ہیں وہ سات جنموں سات جسموں اور انسان سے وابستہ اجسام میں مماثلت پیدا کرنے کی کوشش کرتے ہیں جبکہ آواگون کے عقیدے دو نظاموں، تین نظاموں یا جدید دریافتوں میں زمین و آسمان کا فرق ہے کوئی مماثلت نہیں۔

آخر انسان کے مادی جسم سے کتنے اور کیسے کیسے اجسام یا نظام وابستہ ہیں وہ ان نئے اجسام اور نظاموں کے چکر میں بری طرح الجھ چکا ہے اور اب ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ انسان کیسا مجموعہ ہے؟ اور آج تک انسان مجموعی انسان کی تعریف کا تعین کیوں نہیں کر سکا؟

آج پہلی مرتبہ اپنے نئے نظریات میں انہی سوالوں کے جوابات دیں گے ان الجھنوں کو دور کر کے

(1) انسان کے انفرادی اجزاء کو متعارف کروائیں گے۔

(2) اور مجموعی انسان کی تعریف بھی کریں گے۔

اور وضاحت کے ساتھ بتائیں گے کہ انسان کتنے اور کیسے کیسے اجسام یا نظاموں کا مجموعہ ہے۔  
تاریخی سوالات میں ہم نے یہ سوال اٹھایا تھا کہ انسان کی تعریف کیا ہے اب ہم اس سوال کا جواب دیتے ہوئے انسان کی نئے نظریات کے ذریعے اصل تعریف کرتے ہیں۔

## نئے نظریات

### 15۔ انسان کی اصل تعریف

نظریہ نمبر (۱):۔ انسان جسم، روح اور نفس کا مجموعہ ہے۔

جسم + روح + نفس = انسان

صدیوں سے موضوع انسان پر کام ہو رہا ہے اور انسان کی بے شمار تعریفیں بھی کی گئی ہیں۔ ہر دور میں روح، نفس اور جسم بھی موضوع بحث رہے ہیں لیکن یہ تمام بحث بے نتیجہ رہی ہے۔ ماضی میں بھی محض ایک بار یہ دعویٰ کیا گیا کہ انسان روح، نفس و جسم کا مجموعہ ہے لیکن ہزاروں برس میں فقط اتنا کہ دینا انسانی تعریف کے ذمے میں نہیں آتا۔ اب اگر ہم نے یہاں یہ کہا ہے کہ انسان روح، نفس جسم کا مجموعہ ہے تو اب ہم اس تعریف کی مسلسل وضاحت کریں گے۔ انسان کے ہر انفرادی جز کی تعریف کریں گے اور مجموعی انسان کی تعریف کریں گے۔

۱۔ روح کی انفرادی شناخت قائم کریں گے، روح کی تعریف تعارف اور مسلسل وضاحت کریں گے مادی جسم سے اس کا ربط قائم کریں گے

۲۔ نفس کی اصل شناخت قائم کریں گے اس کا تفصیلی تعارف پیش کریں گے ورنہ آج سے پہلے نفس کی صحیح تعریف ہی نہیں کی جاسکی اور آج نفس بے بنیاد مفروضہ تعریفوں کے ساتھ موجود ہے۔  
مادی جسم کا علم بھی روح و نفس کے تعارف و تعریف سے مکمل ہوگا ورنہ آج سے پہلے روح و نفس سے ناواقفیت کے سبب مادی جسم کا علم بھی ادھورا تھا۔

پھر ہر روح، نفس جسم کو مربوط کر کے مجموعی انسان کی تعریف کریں گے تب جا کر یہ تعریف مکمل ہوگی کہ انسان روح نفس جسم کا مجموعہ ہے اور یہی ہوگی انسان کی تعریف اور یہی ہوگا انسان کا علم اور انسان کی ایسی مجموعی تعریف پہلی مرتبہ ہو رہی ہے۔

ورنہ آج سے پہلے مجموعی انسان کی کوئی تعریف سامنے نہیں آ سکی کہیں صرف روح پہ کام ہوا ہے تو بے نتیجہ روح کی شناخت تک ممکن نہ ہو سکی۔ کہیں نفس پہ کام ہوا ہے تو مفروضوں پہ کہیں محض جسم و روح پہ ادھورا کام ہوا بھی تو ایسے کہ چند ماورائی قصے اکٹھے کر کے ان کی اپنے اپنے عقیدوں کے مطابق تجزیے و تخمینے لگا کر اٹلے سیدھے نتائج برآمد کر لئے جاتے ہیں جو کہ طریقہ ہی غلط ہے۔

انسان روح، نفس و جسم کا مجموعہ ہے اور کبھی بھی انسان پہ اس مجموعی حیثیت میں سنجیدہ کام نہیں ہوا۔ لہذا ماضی میں انسانی کام کی پوری تاریخ میں انسان پہ جو بھی کام ہوا نتائج برآمد نہیں ہو سکتے یا غلط کوششوں سے صحیح نتائج برآمد نہیں ہو سکتے یہی وجہ ہے کہ آج تک انسان کی تعریف سامنے نہیں آ سکی۔

تمام تر تعصبات کو بالائے طاق رکھ دیجئے اور آئیے دیکھیے اور سمجھنے کی کوشش کیجئے کہ آخر انسان ہے کیا؟

## مادی جسم

### 16- مادی جسم

عام روزمرہ اور سائنس کی زبان میں جسم گوشت پوست کے وجود کا نام ہے جو چند گرام کے نطفہ سے وجود میں آتا ہے۔ سائنس کے مطابق انسانی جسم 156 عناصر سے مرکب ہے انسانی مادی وجود میں وہ تمام عناصر پائے جاتے ہیں جو زمین میں پائے جاتے ہیں۔ دل جگر گردے، رگ پٹھوں کے علاوہ انسان کے اندر بے شمار مادی و برقی نظام کام کر رہے ہیں انسان کائنات کی پیچیدہ ترین مشینری ہے۔ اور آج ہم اس تمام نظام سے واقف ہیں۔ لیکن اس کے باوجود کہ ہم انسانی اعضاء، عناصر، عوامل سب سے واقف ہیں پھر بھی ہم ان سب کو صحیح مقداروں اور تناسب سے اکٹھا کر کے انسانی شکل دینے سے قاصر ہیں۔ نہ ہی ہم خلیوں کو مربوط کر کے جسم تخلیق کر سکتے ہیں۔ مٹی سے بت تو بنا لیا جاتا ہے کینوس پر تصویر تو بنالی جاتی ہے۔ لیکن یہ انسان نہیں بے جان و بے حرکت ہیں ان میں انسانوں کی ہی حرکت اور انسانی خصوصیات پیدا کرنا انسان کے بس کی بات نہیں۔ روبوٹ بھی انسان کے ہم پلہ نہیں وہ محض مشین ہے۔ جبکہ سائنسدان کلون انسان تیار کر کے اس خوش فہمی میں مبتلا ہو گیا کہ اس نے از خود انسان تیار کر لئے۔ جبکہ یہ کلوننگ سے تیار شدہ انسان کسی بھی اعتبار سے اصل انسان کے ہم پلہ نہیں اور نہ ہی ہو سکتے ہیں۔ بحر حال یہ ہر لحاظ سے منفرد خون و گوشت، عضلات، رگ پٹھوں خلیوں و عناصر کا مجموعہ جسم مادی جب موت کا شکار ہوتا ہے تو یہ انتہائی پیچیدہ متحرک مشینری یکنخت غیر متحرک ہو جاتی ہے۔ اور پھر موت کے بعد کچھ ہی دنوں میں یہ متحرک وجود مٹی میں مل کر مٹی ہی کا حصہ بن جاتا ہے۔ اب شناخت مشکل ہے کہ مٹی کونسی ہے اور جسمانی ذرات کونسے ہیں۔ پورا وجود جو جسمانی صورت میں موجود تھا چند ہی دنوں میں اس کا وجود

بھی نہ رہا کیوں؟ یہی انسانی مادی جسم کی حقیقت ہے، ہڈیاں، خون، گوشت، دماغ پورے وجود کی حقیقت یہ ہے کہ پورے وجود کا نشان مٹ جاتا ہے فقط موت کی صورت میں پورا انسان مٹی ہو جاتا ہے۔ بظاہر نظر آنے والا وجود درحقیقت اسی مٹی (مادہ) ہی کی ایک شکل تھا یعنی پہنچی وہیں پہ خاک جہاں کا خمیر تھا۔ اسی مٹی کے وجود اسی حضرت انسان کے دم قدم سے ہیں دنیا کے تمام تر کاروبار۔

مادی جسم کے بارے میں سائنسدانوں کا یہ خیال ہے کہ جسم ایک نطفے سے خود بخود صحیح و سالم انسان بن جاتا ہے مزید یہ کہ جسمانی نظام کی اندرونی و بیرونی انتہائی پیچیدہ حرکت و عمل بھی خود کار ہے۔ اگر میں یہ کہہ دوں کہ سوئی کا بنانے والا کوئی نہیں ہے بلکہ یہ خود بخود بن گئی ہے تو یہ بات ہر عقلمند کے لیے ناقابل قبول ہوگی جب ہر جاننے والا یہ جان سکتا ہے کہ ایک سوئی تک خود نہیں بن سکتی تو آپ کی سمجھ میں یہ بات کیوں سما گئی ہے کہ دنیا کی سب سے پیچیدہ مشینری مادی جسم خود بخود بن جاتا ہے اور کوئی اس کا بنانے والا اور ڈیزائن کرنے والا نہیں ہے۔ اور یہ کیسے آج تسلیم کر لیا جاتا ہے کہ دنیا کی سب سے پیچیدہ مشینری کی اندرونی و بیرونی انتہائی پیچیدہ حرکت و عمل محض خود کار ہے۔ سائنسدان مادی جسم کے اندرونی و بیرونی نظاموں کی تو بڑی وضاحت کرتے ہیں، یہ نہیں بتایا جاتا کہ وہ کیا شے ہے جس سے یہ مشینری خود کار متحرک ہے اور وہ کیا وجوہات ہیں کہ یہ انتہائی متحرک پیچیدہ مشینری محض موت کی صورت کیسے یکلخت پتھر سے بھی زیادہ بے جان اور بے حرکت ہو جاتی ہے۔ تمام تر دماغی، جسمانی صلاحیتوں کے باوجود ایک تندرست و توانا متحرک وجود کیسے یکلخت ہی موت کے سبب بے جان بے حرکت ہو جاتا ہے کیسے ایک عظیم الشان انسان چند دنوں میں ہی مٹی میں مل کر بے نشان ہو جاتا ہے؟ کہ پورے وجود کا کوئی وجود ہی نہیں رہتا۔ سوال یہ ہے کہ

کیسے جسمانی مشینری کی اندرونی و بیرونی حرکات خود کار ہیں۔؟

وہ کیا شے ہے جس کی موجودگی سے مادی جسم زندہ و متحرک ہے۔؟

وہ کیا شے ہے جس کی غیر موجودگی سے جسم جسم ہی نہ رہا بے نشان ہو گیا؟

کیا یہ سب کچھ خود بخود ہو رہا ہے۔؟

اب اگرچہ ان سوالوں کے جواب میں کچھ لوگ انسانی جسم کی زندگی اور حرکت و عمل کا سبب روح کو سمجھنے لگے ہیں لیکن وہ اس کا نہ تو اعتراف کرتے ہیں نہ ہی انہیں روح پر یقین ہے اس لیے کہ روح

ان کے لیے ایک معمہ ہے اس لیے کہ بے تحاشا تحقیق کے باوجود بھی وہ روح کو شناخت نہیں کر پائے لہذا آج بھی مادی جسم کو آخری حقیقت قرار دینے والے بلا تعادل یہ کہتے ہیں کہ جسمانی نظام میں روح جیسی کسی شے کی گنجائش نہیں ہے۔ اگر جسمانی نظام میں روح کا کوئی عمل دخل نہیں تو پھر ان تمام سوالوں کے کیا جواب ہیں؟ ظاہر ہے روح کا انکار کرنے والے مادی جسم سے متعلق ان سوالوں کے جواب نہیں دے سکتے۔ اب میں اس کتاب میں انہیں برسوں کے تشنہ سوالوں کے جوابات دوں گی۔

اگرچہ مادی جسم پر بے تحاشا سائنسی کام ہو چکا ہے اور مزید جاری ہے لیکن یہ سمجھ لیجئے کہ روح کے تذکرے کے بغیر مادی جسم کا علم نامکمل ہے۔ اس لیے کہ روح ہے تو جسم ہے روح نہیں تو جسم بھی نہیں ہے۔ اور اس بات کے تو سائنسی شواہد میسر آ گئے ہیں کہ انسان محض جسم نہیں ہے اور انسان کے باطنی لطیف وجود کی نہ صرف تصویر کشی کر لی گئی ہے بلکہ اس پر کافی تحقیق اور تجربات بھی ہو رہے ہیں۔ اگرچہ انسان کا باطن ابھی اسرار میں ہی لپٹا ہوا ہے اور غیر واضح ہے پھر بھی آج انسان کو صرف جسم نہیں بلکہ روح و جسم یعنی دو نظاموں ظاہری و باطنی کا مجموعہ تصور کیا جا رہا ہے۔

جبکہ یہاں میں نے انسان کو دو نہیں بلکہ تین نظاموں یعنی روح، نفس، جسم کا مجموعہ قرار دیا ہے۔ تین نظاموں کا ذکر بھی ماضی میں ایک آدھ بار ہو چکا ہے لیکن محض اتنا کہہ دینا کافی نہیں ہے اب میں نے جو یہاں انسان کو روح، نفس، جسم کا مجموعہ کہا ہے تو اب میں اس نظریے کی مسلسل وضاحت کروں گی اور مادی جسم کی روح و نفس سے تعلق کی مسلسل وضاحت کروں گی۔ لہذا کچھ لوگ یہ کہہ رہے ہیں کہ مادی جسم میں روح کی کوئی گنجائش نہیں جبکہ میں اب یہاں مادی جسم کا تذکرہ نہ صرف روح کے حوالے سے کروں گی بلکہ میں تو یہ کہہ رہی ہوں کہ انسان محض مادی جسم یا روح ہی نہیں بلکہ انسان کے اندر ایک نفس بھی ہے۔ یہ نام تو اگرچہ سب نے سن رکھا ہے اور سب بڑھ چڑھ کر اس کا تذکرہ بھی کرتے ہیں لیکن درحقیقت نفس ہے کیا یہ کوئی نہیں جانتا۔

لہذا روح سے پہلے یہ وضاحت ضروری ہے کہ نفس کیا ہے اور انسانی جسم میں نفس کا کیا عمل دخل ہے۔



# نفس AURA

کل نفس ذائقۃ الموت  
(ہر نفس کو موت کا مزہ چکھنا ہے)

## 17- نفس

پچھلے صفحات میں ہم جائزہ لے آئے ہیں کہ ماضی کے ہر دور میں نفس کا تذکرہ ہوا ہے آج بھی نفس، نفسیات پر بے تحاشا مواد کتابیں، علوم موجود ہیں اور اب تو نفسیاتی تجربہ گاہیں بھی قائم ہیں، نفسیات دان بھی بہت ہیں۔

لیکن یہ خود نفس کیا ہے ؟

ہزاروں برس سے آج تک نفس یا نفسیات کو مطالعہ ذہنی تصور کیا جاتا ہے نفسیات میں انسان کا کردار، شخصیت، خیالات، احساسات، خواہشات موضوع بحث رہے ہیں نفسیاتی ماہرین انسان کے بعض پیچیدہ نفسانی یا نفسیاتی مسائل پر مختلف حوالوں سے تجزیے اور جانچ پڑتال کرتے رہے ہیں اور نفسیات دانوں کے خیال میں یہی ہے نفسیات۔ اور نفسیات دانوں کے یہ خیالات سو فیصد غلط ہیں۔ درحقیقت آج تک نفس کو کوئی خیال کوئی خواہش تصور کیا جاتا رہا ہے، خواہش بھی نفسانی خواہش، اور یہ نفس کی مفروضہ تعریف ہے۔

درحقیقت یہ تعریف نفس کی تعریف ہی نہیں یہ محض مفروضہ ہے کہ نفس کوئی خیال کوئی احساس، کردار یا خواہش ہے، ذہن بھی نفس نہیں۔ نفس کی آج تک تعریف کی ہی نہیں گئی۔ اسی مفروضہ اور غلط تعریف پہ نفس اور نفس کے علوم کی بنیاد ہے یعنی نفس کے موجودہ علوم مفروضہ علوم ہیں۔ اگر نفس ذہن، کردار یا خواہش نہیں تو پھر نفس کیا ہے ؟

## 18- نفس کیا ہے؟

سوال۔ نفس کیا ہے؟

آئیے اس تاریخی سوال کا صحیح جواب دیتے ہیں۔

نفس کا تصور ہر دور ہر عقیدے میں پایا جاتا ہے۔ ہر دور میں نفس کی تعریف بھی کی گئی ہے اور ہر دور میں ہمیشہ ہی نفس کی غلط تعریف کی گئی ہے آج تک نفس کی شناخت نہیں ہو پائی کہ آیا یہ نفس جس کا اتنا چرچا ہے۔ یہ ہے کیا؟

دراصل نفس ایک مذہبی اطلاع ہے۔ جسے کبھی بھی سمجھا نہیں گیا۔ ہر دور کا انسان نفس سے متعارف تو

ہے لیکن نفس سے لاعلمی کے سبب آج تک وہ نفس کی نفس کے طور پر شناخت نہیں کر پایا۔ لہذا نفس سے لاعلمی اور نفس کی شناخت نہ ہو سکنے کی سبب آج ہم ایک ہی نفس سے دو مختلف حیثیتوں میں متعارف ہیں۔

(1) - نفس

(2) - اصل نفس

(۱) - نفس

ہر دور کے انسان نے نفس کو خواہش قرار دیا ہے خواہش بھی محض نفسانی خواہش۔ اور ہر دور کا انسان نفس سے اسی حیثیت میں متعارف رہا ہے۔ اور آج نفس کی اسی حیثیت میں بے تحاشا تعریف کی جاتی ہے، بے تحاشا کتابیں لکھی جاتی ہیں، نفسیاتی علاج کئے جاتے ہیں، نفسیاتی معالجون کے ڈھیر موجود ہیں اور آج نفس ایک نفسیاتی مسئلہ بن کر رہ گیا ہے۔ لیکن یہ نفس جس پر بے تحاشا کام ہو رہا ہے کتابیں لکھی جا رہی ہیں کیا یہ نفس محض مفروضہ خواہش ہے۔؟ جی نہیں۔

نفس کسی خواہش کا نام نہیں ہے۔ ہاں خواہش اور نفسانی خواہش نفس کی بے تحاشا خصوصیات میں سے محض دو خصوصیات ہیں نفس اپنی تمام تر خصوصیات سے منفرد ایک الگ شے ہے۔ ہر دور کے لوگوں نے نفس کی یہی مفروضہ تعریف کی ہے۔ لیکن یہ تعریف نفس کی تعریف نہیں ہے۔ آج نفس کے تمام موجودہ علوم میں نفس کا تذکرہ ہی موجود نہیں۔ یہ تمام علوم جو نفس کے عنوان کے ساتھ آج موجود ہیں دراصل نفس کے علوم نہیں ہیں۔ ہم آج جس حیثیت میں نفس سے متعارف ہیں وہ نفس ہے ہی نہیں۔

تو پھر اصل نفس کیا ہے ؟

(2) اصل نفس

اصل نفس سے بھی ہر دور کا انسان متعارف رہا ہے۔ نفس کا یہ تعارف بہت ہی مخصوص اور محدود طبقہ تک محدود رہا ہے، یہی وجہ ہے کہ ماضی میں ہمیں اصل نفس کا کوئی ایک آدھا ہی تبصرہ ملتا ہے۔ اس

مخصوص اور محدود تعارف کے باوجود انسان نفس سے نہ صرف متعارف رہا ہے بلکہ اسے شناخت بھی کرتا رہا ہے بلکہ اس کی خصوصیات سے بھی کسی حد تک واقف رہا ہے۔ اور یہ واقفیت آج کا انسان بھی رکھتا ہے۔ لیکن ہر دور کا انسان اور آج کا انسان اصل نفس سے واقفیت کے باوجود اصل نفس کو نفس کے طور پر شناخت نہیں کرتا۔

ہر دور کے انسان نے اصل نفس کو ہمیشہ دیگر ناموں سے پکارا ہے جبکہ نفس کی تعریف نفس کی شناخت نفس ہی کے نام سے ہونی ضروری ہے تاکہ انسانی تعریف میں موجود بے تحاشا ابہام کا خاتمہ ہو۔ اور انسانی تعریف ممکن ہو سکے۔ جیسا کہ میں نے بتایا کہ نفس مذہبی آفاقی اطلاع ہے جو ہر آسمانی مذہب نے انسان کو دی ہے، اور ہر مذہب کی اس آسمانی اطلاع نفس کو ہر مذہب کے انسانوں نے سمجھنے میں غلطی کی

مثلاً ٹی وی پر ایک نامور عالم ڈاکٹر ڈاکرنا ٹیک اپنے خطاب میں کہہ رہے تھے۔  
ہر نفس کو موت کا مزہ چکھنا ہے۔ یہ کائناتی اطلاع ہے۔

اس کا ترجمہ انہوں نے انگلش میں یوں کیا (Every Soul Shall be died) یعنی ہر روح کو موت کا مزہ چکھنا ہے۔ یہ ترجمہ غلط ہے۔

نفس کا ترجمہ روح کیا گیا جبکہ نفس اور روح میں امتیازی فرق موجود ہے اور ترجمہ کرنے والے عالم اور فاضل اس فرق کو ملحوظ نہیں رکھتے۔

ترجمہ یہ کیا جا رہا ہے کہ ہر روح کو مرنا ہے جبکہ روح نہیں مرتی۔ یہ غلط ترجمہ ہے صحیح عبارت یعنی نفس کا ترجمہ نفس ہی ہوگا تب یہ ترجمہ صحیح ہوگا۔  
لہذا اصل کائناتی عبارت یہ ہے کہ نفس مر جاتے ہیں۔

لہذا ایسی غلطیاں موجود ہیں

۱۔ آسمانی کتابوں کے تراجم میں بھی

۲۔ روح و نفس کے کاموں میں بھی

۳۔ عام روزمرہ زندگی میں بھی

۴۔ اور ہر سطح پر یہ غلطیاں کی جاتی ہیں روح و نفس سے لاعلمی کے سبب لہذا

۵۔ نہ تو ہم ان مذہبی اطلاعات یعنی روح و نفس سے واقف ہیں

۶۔ جو روح و نفس سے واقف ہیں وہ ان تمام میں امتیاز نہیں رکھتے

۷۔ جو کوئی ایک آدھا ماہر ان تمام میں امتیاز برت سکتا ہے وہ ان تمام کو امتیازی حیثیت میں شناخت نہیں کر سکتا لہذا

۹۔ جنہوں نے ایک آدھ بار انہیں انفرادی حیثیت میں شناخت کیا ہے وہ ان روح و انفس کی تعریف سے معذوری کا اظہار کرتے ہیں۔ لہذا

ہر دور میں نفس کا تذکرہ تو موجود ہے آج تک نفس پر بے تحاشا کام ہوا ہے بے شمار کتابیں بے شمار مواد نفس پر موجود ہے لیکن یہ تمام کام ردی ہے خیالی پلاؤ اور محض مفروضے ہیں کیونکہ نفس کے ان تمام علوم میں کہیں بھی نفس موجود نہیں۔ نفس کے علوم میں نفس کا ذکر ہی نہیں۔ آج نفس کے نام سے جو علوم مروج ہیں وہ نفسی علوم ہی نہیں

ہاں نفس کے علوم کے علاوہ کچھ خاص لوگ ہر دور میں نفس سے واقف رہے ہیں لیکن اصل نفس کو لوگ نفس کے طور پر شناخت ہی نہیں کرتے اگرچہ جانتے اور پہچانتے ہیں لیکن بطور نفس نہیں بلکہ وہ اسے دیگر ناموں سے پکارتے ہیں۔ یہ غلطی صدیوں سے ہر دور میں کی جا رہی ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ نفس مفروضہ حیثیت میں تو موجود ہے لیکن اصل نفس کو آج تک بحیثیت نفس انفرادی حیثیت میں شناخت ہی نہیں کیا گیا لہذا ہزاروں برس سے نفس پہ کام ہونے کے باوجود نتائج صفر ہیں۔

جب آج آپ نفس سے واقف نہیں اسے شناخت نہیں کر پائے تو پھر نفس اور نفسیات کے بے تحاشا علوم کا کیا جواز ہے۔ آج نفس کے تمام موجودہ علوم بے بنیاد اور مفروضہ علوم ہیں تمام ادوار کے ہر قسم کے کام کے باوجود ابھی تک ہم نفس سے ناواقف ہیں اور آج بھی یہ سوال جوں کا توں ہمارے سامنے موجود ہے کہ نفس کیا ہے؟

نتیجہ کیا نکلا؟

۱۔ نفس کا تصور ہر دور ہر عقیدے میں پایا جاتا ہے۔

۲۔ نفس کو خواہش یا نفسانی خواہش تصور کیا جاتا ہے۔ جبکہ نفس محض خواہش نہیں۔

۳۔ نفس کے تمام موجودہ علوم میں نفس کا تذکرہ ہی نہیں

۴۔ لہذا نفس کے موجودہ علوم مفروضہ علوم ہیں

۵۔ اصل نفس سے بھی ہر دور کے لوگ واقف رہے ہیں لیکن بطور نفس نہیں۔

- ۶۔ نفس کو دیگر ناموں سے شناخت کیا جاتا ہے  
 ۷۔ نفس کو آج تک انفرادی حیثیت میں شناخت نہیں کیا گیا۔  
 ۹۔ نفس کے بعض اجزاء کو روح کے حصے تصور کیا جاتا ہے۔  
 ۱۰۔ نفس مذہبی اصطلاح ہے جسے سمجھنے میں غلطی کی گئی۔  
 ۱۱۔ مفروضہ نفس آج علمی حیثیت میں موجود ہے جبکہ اصل نفس بھی دیگر ناموں کے ساتھ علمی حیثیت رکھتا ہے۔

۱۲۔ یعنی ایک ہی شے (نفس) کے آج ہمارے پاس دو مختلف اور متضاد علوم موجود ہیں۔  
 یہ بڑی غلطی ہے اور اس کی وجہ یہ ہے کہ آج تک نفس مفروضہ تعریفوں کے ساتھ تو موجود ہے لیکن نفس کی اصل شناخت نہیں ہو سکی۔ آئیے آج نفس کو مفروضہ قیاس آرائیوں سے مبرا کر کے نفس کو دیگر ناموں کے بجائے اس کے اصل نام سے پکاریں اس کی اصل شناخت قائم کریں تاکہ علوم میں موجود بے تہاشا ابہام کا خاتمہ ہو۔ اب ہم نفس کی انفرادی شناخت قائم کریں گے اور نفس کو بطور نفس متعارف کروائیں گے اس کی تعریف و خصوصیات بیان کریں گے اور مادی جسم سے اس کا ربط قائم کریں گے۔ نفس کی بطور نفس شناخت ہوگی تو انسانی علوم میں موجودہ ابہام کا خاتمہ ہوگا۔

## 19۔ نفس کی تعریف:

نظریہ نمبر: ﴿2﴾

﴿نفس سے مراد اجسام ہیں۔ مادی جسم + لطیف باطنی اجسام = نفس﴾  
 انسانی شخصیت کا ہر پیمانہ نفس ہے۔ یہ ہے نفس کی صحیح تعریف جو آج کی جا رہی ہے۔  
 اجسام انسانی شخصیت کا اظہار اس کے لباس ہیں۔ لہذا انسان کا ہر وہ جسم جس میں انسان موجود ہے نفس ہے۔ یعنی ہم جدید تحقیقات کی بدولت آج ایک انسان کے جتنے بھی اجسام (اورا، چکر از، سبٹل باڈیز وغیرہ وغیرہ) سے واقف ہیں اور وہ اجسام بھی جن سے ابھی ہم واقف نہیں ہو پائے وہ سب نفس ہیں۔ ان تمام اجسام کا اصل آفاقی نام نفس ہے۔  
 لہذا نفس سے مراد کوئی خواہش، یا ذہن یا کوئی پیچیدہ نفسیاتی مسئلہ نہیں بلکہ مادی جسم اور لطیف اجسام کے مجموعے کو نفس کہتے ہیں۔ مادی جسم سمیت ہر جسم نفس ہی کہلائے گا۔ یعنی ہر قسم کا جسم

چاہے مادی ہو یا لطیف وہ نفس ہے۔ یہ ہے نفس کی اصل آفاقی تعریف۔ جبکہ روح ان تمام طرح کے اجسام سے الگ شے ہے۔

نفس کی مروجہ مفروضہ تعریف سے قطع نظر نفس کے لطیف اجسام سے بھی ہر دور کے لوگ واقف رہے ہیں (جس کا تذکرہ ہم پچھلے ابواب میں کر آئے ہیں) لیکن ہر دور کے لوگوں نے نفس کے لطیف اجسام کو نفس کے طور پر شناخت نہیں کیا بلکہ ہر دور کے لوگوں نے اپنے ذاتی علم یا مشاہدے کی روشنی میں ان لطیف اجسام کو

(1)۔ یا تو روح کے طور پر شناخت کیا۔

(2)۔ یا ان لطیف اجسام کو روح کے حصے قرار دیا۔

لہذا یہ لطیف اجسام نہ تو روح ہیں، نہ ہی روح کے حصے بلکہ یہ تمام لطیف اجسام نفس ہیں۔

انسان کے ظاہر اور باطن سے وابستہ تمام اجسام نفس ہیں۔ اور اجسام کو نفس کہا جاتا ہے۔ جبکہ ماضی میں اور آج بھی لطیف اجسام کا مشاہدہ کرنے والے ان لطیف اجسام کو روح یا روح کے حصے سمجھتے اور بتاتے رہے ہیں۔ اور نفس کو کوئی نفسیاتی مسئلہ بتایا جاتا رہا ہے۔ لیکن اب یہاں میں نے وضاحت کر دی ہے کہ نفس کوئی مفروضہ نفسیاتی مسئلہ نہیں بلکہ جسم ہے۔ لہذا یہاں یہ مسئلہ حل ہو گیا کہ

۱۔ کوئی لطیف جسم روح نہیں ہے۔

۲۔ لطیف اجسام روح کے حصے نہیں ہیں۔

۳۔ یہ تمام اجسام نفس ہیں۔

۴۔ لہذا نفس کوئی خواہش یا نفسیاتی مسئلہ نہیں ہے۔ لہذا نفس کی پچھلی تمام مروجہ تعریضیں غلط ہیں۔

۵۔ ان تمام اجسام کا اصل آفاقی نام نفس ہے۔

لہذا اس آفاقی اطلاع یعنی نفس میں تمام ادوار کے صوفیوں، سوامیوں، فلسفیوں، سائنسدانوں نے جو غلط اضافے کر کے اس اطلاع کو خلط ملط کیا تھا۔ اب یہاں نفس کی صحیح شناخت قائم کر کے ہم نے صدیوں کے اس ابہام کو دور کر دیا ہے۔

20۔ نفس (باطنی اجسام) کے نام

مادی جسم اور لطیف اجسام جسم ہونے کے سبب سب نفس کے دائرے میں آتے ہیں۔ اس لئے کہ انسان مختلف اوقات میں مختلف اجسام استعمال کرتا ہے لہذا ہر جسم وہ لطیف جسم ہو یا مادی انسانی شخصیت کا اظہار ہے۔ ہر جسم انسانی شخصیت کا پیمانہ ہے۔ ہر جسم نفس ہے لیکن ہر جسم کا اپنا ایک انفرادی نام بھی ہے۔ مثلاً ظاہری جسم کو مادی جسم کہا جاتا ہے اسی طرح لطیف اجسام کے نام بھی ہیں۔ لیکن ان میں ایک بنیادی نفس (جسم) بھی ہے۔ جس کا نام بھی نفس ہی ہے۔ اور اسی بنیادی نفس کو یہاں ہم نفس کے نام سے پکاریں گے۔ اب یہاں ہم اس بنیادی نفس کو انفرادی حیثیت میں شناخت کرتے ہیں کہ جس کا نام بھی نفس ہی ہے

## 21۔ بنیادی نفس کونسا ہے

نظریہ نمبر: ﴿3﴾۔ ﴿درحقیقت AURA ہی اصل بنیادی نفس ہے﴾۔  
 درحقیقت AURA ہی بنیادی نفس ہے اور نفس کے اس بنیادی جسم کا نام بھی نفس ہی ہے اور آج

اسی لطیف جسم کو ہم نفس کے نام سے پکاریں گے۔ جبکہ

۱۔ آج نفس کے ایک جسم نفس کو ہم AURA کے نام سے جانتے ہیں اور

۲۔ نفس کے دیگر اجسام کو روح یا پھر روح کے حصے کہا جاتا ہے۔ جبکہ

۲۔ آج نفس کو بطور نفس تو کوئی نہیں جانتا لیکن نفس کا آفاقی نام لے کر اس کی مفروضہ تعریفیں کر

لیں گئیں ہیں اور آج نفس کو ہم اسی مفروضہ حیثیت میں جانتے ہیں اور اسی حیثیت میں نفس کے

الگ علوم بھی موجود ہیں۔

جبکہ آج ہمارے پاس AURA کا بھی علم موجود ہے۔ اور اس پر سائنسی تحقیقات ہو رہی ہیں

، کتابیں لکھی جا رہی ہیں۔ یعنی ایک ہی نفس تین مختلف حیثیتوں میں آج ہمارے پاس باقاعدہ علوم

کی صورت میں موجود ہے۔ جبکہ اسی نفس کو ماضی میں دیگر ناموں سے یعنی روح یا روح کے حصوں،

روح حیوانی یا انسانی وغیرہ وغیرہ سے پکارا جاتا رہا ہے۔

یعنی ماضی میں بھی نفس ہمیشہ دو مختلف اور متضاد حیثیتوں میں موجود رہا ہے۔ اور آج نفس تین علوم کی

صورت میں موجود ہے۔



آج بھی کرلین فوٹوگرافی (Kirlian Photography) کے ذریعے اگرچہ AURA کی تصویر کشی کر لی گئی ہے اور اس کے اعمال و خصوصیات کا بھی جائزہ لیا جا رہا ہے کتابیں لکھی جا رہی ہیں تجربات کیے جا رہے ہیں۔ لیکن ابھی تک اسے نفس کے طور پر شناخت نہیں کیا گیا بلکہ وہ اسے روح یا روح کا کوئی حصہ تصور کرتے ہیں حتیٰ کہ ان میں سے اکثر روح کا مشاہدہ بھی کرتے ہیں لیکن روح کو روح کے طور پر شناخت نہیں کرتے۔

مادی جسم کی تمام خصوصیات اور حرکت و عمل کا ذمہ دار اسی AURA کو قرار دے دیا گیا ہے۔ یہ درست نہیں ہے۔

روح کے بغیر AURA کے تقاضے بے معنی ہیں۔ روح کے بغیر AURA میں کوئی تقاضا نہیں ابھر سکتا بلکہ روح کے بغیر خود AURA کا کوئی وجود نہیں۔

درحقیقت جسم میں تقاضوں کے جنم لینے کا ایک تسلسل ہے مادی جسم کی بظاہر حرکت و عمل باطنی طویل سلسلے سے جڑی ہوئی ہے۔ جیسے ایک بلب روشن ہے تو خود بخود نہیں بلکہ یہ بجلی کے ایک طویل سلسلے کا نتیجہ ہے۔

ایسے ہی مادی جسم کی حرکت و عمل روح + نفس + مادی جسم کے ذریعے ایک طویل کائناتی تسلسل کا حصہ ہے۔ اس طویل تسلسل میں نفس کا کیا کردار ہے، نفس کی کیا انفرادیت ہے یہاں ہم اسی کی وضاحت کریں گے۔

یہ جاننا ضروری ہے کہ ہر مخلوق نہ صرف اپنی انفرادی شناخت رکھتی ہے بلکہ اس کا اصل نام بھی ہے۔ لہذا انفرادی شناخت اور اصل نام کی اہمیت کسی بھی علم میں بنیادی اہمیت رکھتی ہے۔ سائنس کے طالب علم یہ بات جانتے ہیں۔ اگر میرے دس زبانوں میں دس مختلف نام ہوں گے اور میرا تذکرہ دس مختلف زبانوں میں دس ناموں سے ہوگا تو یہ اندازہ لگانا ناممکن ہے کہ یہ ایک فرد کا تذکرہ ہے یا دس مختلف افراد کا۔ اسی طرح نفس آفاقی لفظ اور آفاقی اطلاع ہے جو ہر مذہب کے

انسانوں کو ملی اور ان سب نے اس اطلاع کو سمجھنے میں غلطی کی اگر تھوڑی سی سنجیدہ علمی کوشش کی جاتی تو یہ غلطی نہ ہوتی۔ لیکن کبھی بھی کسی نے روح و نفس کی آفاقی اطلاعات پہ کبھی کان نہیں دھرے اور یہی وجوہات ہیں جو آج ان علوم میں اس قدر پیچیدگی ہے۔

یہاں نفس اور نفس کے تمام لطیف اجسام کی انفرادی شناخت سے یہ مسئلہ حل ہو گیا کہ

۱۔ تمام لطیف اجسام روح یا روح کے حصے نہیں ہیں

۲۔ بلکہ وہ اجسام ہیں نفس کے اجسام۔

۳۔ نفس کے تمام اجسام اپنی انفرادی حیثیت اپنا انفرادی تشخص اپنا انفرادی جسم اور اپنا انفرادی نام بھی رکھتے ہیں۔

لہذا AURA نفس کا ایک جسم ہے۔ اور اس کا انفرادی نام بھی نفس ہی ہے  
ابھی ہم مذید لطیف اجسام کی انفرادی شناخت قائم کریں گے اور روح کی تعریف کریں گے تو یہ  
ماضی کے سنگین مسائل اور ان کے حل کھل کر سامنے آ جائیں گے۔

## 22۔ نفس (AURA) جسم ہے

نظریہ نمبر:- ﴿4﴾ - ﴿AURA ایک جسم ہے﴾

AURA مادی جسم ہی کی طرح ایک جسم ہے۔ جبکہ ماضی میں نفس کے اس جسم اور  
AURA کو اس کی لطافت کے سبب روح یا روح کا حصہ تصور کیا جاتا تھا۔

لیکن جس طرح مادی جسم عناصر کا مجموعہ ہے اور مادے سے متشکل ہے اس طرح AURA  
مادی جسم نہیں ہے اس جسم کا فارمولہ مختلف ہے یہ کسی اور شے سے بنا ہے جس طرح مادی جسم روح  
کا مظہر یا لباس ہے اسی طرح AURA بھی روح کا مظہر یا لباس ہے یعنی AURA بھی  
مادی جسم کی طرح فقط روح کا ایک جسم ہے AURA روح کے اظہار کا ایک اور ذریعہ ہے۔ یعنی  
انسانی شخصیت کا ایک پیمانہ ہے یہ نفس

یہ ہے تو مادی جسم ہی کی طرح پورا وجود لیکن ساخت اور ہیئت میں مختلف ہے۔ مادی جسم کا تعلق مادی  
دنیا سے ہے لہذا مادی جسم عناصر سے مرکب وجود ہے تو AURA ایک دوسری فضا کے عناصر  
سے مرکب جسم ہے۔

## 23۔ روشنی کا جسم

نظریہ نمبر:- ﴿5﴾ - ﴿نفس (AURA) روشنی کا جسم ہے﴾

نفس کا یہ جسم ایک قسم کی روشنی کا جسم ہے۔ جس طرح مادی جسم ہے بالکل اسی طرح AURA

جسم ہے مادی جسم مادی عناصر کا مجموعہ ہے تو AURA رنگ و روشنی سے مرکب ایک وجود ہے۔ مکمل وجود۔

جب اس کا مشاہدہ کیا جاتا ہے تو یہ رنگوں کے چکروں کی صورت میں نظر آتا ہے گیس کی صورت میں دھویں کی مانند۔ یہ گیس یہ دھواں دراصل روشنی (بجلی) ہے یہ گیس کا جسم دراصل روشنی کا جسم ہے روشنی کے عناصر یا خصوصیات ہیں جن کا مشاہدہ کیا جاتا ہے۔

مادی جسم کی تمام حرکت و عمل کا دار و مدار اسی روشنی کے جسم پر ہے یہ روشنی کا جسم مادی جسم کی تمام خصوصیات کا حامل تو ہے لیکن اس کی اپنی ذاتی خصوصیات بھی ہیں۔

انسان مادی جسم کو بھی استعمال کرتا ہے اور اس روشنی کے جسم کو بھی استعمال کرتا ہے۔ جیسے ہم اپنی مرضی سے مادی جسم کو استعمال میں لاسکتے ہیں ایسے ہی ہم روشنی کے جسم کو بھی استعمال میں لاسکتے ہیں۔ جو عمل ہم مادی جسم میں رہتے ہوئے کرتے ہیں۔ وہی عمل ہم روشنی کے جسم کے ساتھ ہزاروں گناہ برق رفتاری سے کر سکتے ہیں روشنی کا جسم مادی جسم سے خصوصیات میں ہزاروں گناہ بڑھ کر ہے۔

## 24- نفس (AURA) حرکی قوت ہے

نظر یہ نمبر: ﴿6﴾۔ ﴿نفس (AURA) جسم کی حرکی قوت ہے یا AURA جسم کا فیول ہے۔﴾

سب جانتے ہیں کہ ہر حرکت کا کوئی نہ کوئی محرک ضرور ہوتا ہے جیسے مشین بجلی گیس یا پیٹرول سے چلتی ہے، پین سیاہی سے کار پیٹرول یا گیس سے یعنی ہر قسم کی مشینری حرکت کے لئے کسی نہ کسی فیول کی محتاج ہے۔

اسی طرح مادی جسم بھی کسی مشین کی طرح حرکت کے لئے کسی فیول کا محتاج ہے یا مادی جسم کی حرکت کسی فیول کے سبب ہے یونہی خود بخود نہیں ہے۔ یعنی مادی جسم کی حرکت و عمل کا سبب بھی ایک فیول ایک حرکی قوت ہے۔ یہ حرکی قوت جسم کی بجلی یا گیس ہے جو اسے متحرک رکھتی ہے۔

یہ گیس یا بجلی جسم میں ہو تو جسم چلتی پھرتی متحرک مشینری کی مانند ہے اور یہ بجلی یا گیس جسم میں نہ ہو تو انسان ایک بے حرکت وجود ہے۔

اسی بجلی اسی گیس کو ہم نفس (AURA) کہتے ہیں۔

## 25۔ جسم کی زندگی

نظریہ نمبر: ﴿7﴾۔ ﴿نفس (AURA) مادی جسم کی زندگی اور موت کا سبب نہیں﴾۔  
 AURA یعنی نفس مادی جسم کی حرکی قوت یا فیول تو ہے۔ مادی جسم کی حرکت و عمل نفس (AURA) ہی کی بدولت ہے اگر نفس (AURA) جسم میں ہو تو جسم حرکت و عمل کرتا ہے اگر نفس (AURA) جسم میں نہ ہو تو جسم بے حرکت ہوتا ہے۔ لیکن یہ نفس (AURA) جسم کی زندگی نہیں ہے۔ نفس (AURA) کی غیر موجودگی سے موت واقع نہیں ہوتی نفس (AURA) کی غیر موجودگی سے جسم بے حرکت تو ہو سکتا ہے لیکن جسم پے موت واقع نہیں ہوتی

AURA (نفس) جسم کی حرکت و عمل کا سبب تو ہے لیکن مادی جسم کی زندگی اور موت کا دار و مدار نفس (AURA) پر نہیں ہے اس کی غیر موجودگی سے موت واقع نہیں ہوتی اگرچہ وہ جسم بے حرکت ہو جائے لیکن زندہ رہے گا اس کی مثال نیند یا کوما کی کیفیت ہے۔ کہ انسان بے حرکت بے عمل ہوتا ہے مادی جسم کسی مردے کی طرح ہی بے حس و حرکت پڑا ہوتا ہے لیکن وہ زندہ ہوتا ہے۔ AURA کی معطلی سے انسان کسی مردہ کی طرح بے جان تو ہوتا ہے لیکن وہ پھر بھی زندہ ہوتا ہے مرتا نہیں۔ دراصل آج تک تحقیق کرنے والے AURA کو ہی آخری حقیقت سمجھتے رہے ہیں جبکہ ایسا نہیں ہے۔

AURA کی مادی جسم میں موجودگی زندگی نہیں فقط حرکت ہے اور نہ ہی مادی جسم AURA کی معطلی سے موت کا شکار ہوتا ہے۔

یعنی نفس (AURA) مادی جسم کی حرکت و عمل کا سبب تو ہے۔ لیکن مادی جسم میں زندگی و موت کا سبب نہیں ہے۔ مادی جسم کی حرکت نفس ہے تو مادی جسم میں زندگی و موت کا سبب روح ہے

## 26-(AURA) کے اجسام

نظریہ نمبر: ﴿8﴾ ﴿AURA فقط ایک مکمل جسم ہے﴾۔

روشنی کا جسم مادی جسم کی طرح ایک جسم ہے اور مکمل جسم ہے۔ AURA کا مشاہدہ کرنے والے اسے رنگوں کے ساتھ تیز رفتار چکروں کی صورت میں بھی دیکھتے ہیں یا مزید مشاہدہ کرنے سے اس غلط فہمی کا شکار ہو جاتے ہیں کہ AURA کے اندر مزید اجسام ہیں۔ یہ دراصل AURA کا سٹم ہے جسے ہم نے AURA کے طور پر شناخت کیا ہے

جب ہم انسان کو ایک سرے مشین سے دیکھیں تو ہمیں اس کے اندرونی اعضاء نظر آتے ہیں۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ مادی جسم کے اندر رنگ برنگے چھوٹے بڑے جسم یا مزید مخلوقات ہیں بلکہ ہم ان اعضاء کو جسم کے اعضاء اور جسم کی خصوصیات کے طور پر شناخت کرتے ہیں اور تمام اعضاء و خصوصیات کے مجموعے کو جسم کہتے ہیں۔

اسی طرح سات رنگوں کے چکروں کا مجموعہ دراصل AURA ہے سات چکر، رنگ، روشنی، گیس یہ سب دراصل اس جسم یعنی AURA کے مرکبات ہیں خصوصیات ہیں جن کا مجموعہ ہے یہ جسم یعنی AURA۔ یہ ہمارے مشاہدے کی باریک بینی ہے کہ ہم اس جسم کی الگ الگ خصوصیات کا مشاہدہ کرتے ہیں جب ہم اس کو یکجا کر کے مجسم حالت میں دیکھیں گے تو یہ مادی جسم کی طرح مکمل جسم ہے روشنی کا جسم۔

مثلاً جب ہم مادی جسم کو ایک سرے مشین سے دیکھیں گے تو وہ کچھ اور نظر آئے گا اور عام نظر سے محض جسم۔ اسی طرح روشنی کا جسم جو ہمارے مشاہدے میں ہے وہ بھی خاص روشنی سے ہی ہمارے مشاہدے میں ہے جبکہ عام روشنی میں وہ نظر نہیں آتا۔

اسی طرح خاص روشنی کا مہیج گھٹا بڑھا کر ہم اس روشنی کے جسم کا ایسے ہی مشاہدہ کر سکتے ہیں جیسے مادی جسم کا عام نظر اور ایک سرے مشین سے کرتے ہیں۔ AURA جسم ہی ہے بس فرق ہماری نظر کا ہے۔ اور ابھی ہم اسے جانتے نہیں لائے علمی بھی ہماری نظر میں حائل ہے۔ چاند سورج دور سے روشنی کے گولے نظر آتے ہیں لیکن چونکہ ہم جانتے ہیں کہ یہ فقط روشنی کے چھوٹے چھوٹے گولے نہیں ہیں بلکہ ہماری زمین کی طرح بلکہ اس سے بھی بڑے بڑے اجسام ہیں۔ لہذا فرق دیکھنے کا ہے جسم کا نہیں۔ اور فرق لائے علمی کا ہے۔

لہذا AURA کو ہم باریک بینی سے دیکھیں یا عام نظر سے وہ ایک جسم ہی ہے لیکن وہ روشنی کا جسم ہے اور اس جسم کا مطالعہ ہمیں مادی جسم کے وسیع و عریض مطالعے سے بھی زیادہ کرنا ہوگا کیونکہ

یہ جسم مادی جسم سے خصوصیات میں ہزاروں گنا بڑھ کر ہے۔

## 27۔ جسمانی اعمال کا سبب

نظریہ نمبر: ﴿9﴾۔ ﴿نفس (AURA) جسمانی اعمال کا سبب ہے﴾۔  
انسان اعمال یعنی صفات و حرکات کا نام ہے اور جسم ان اعمال کا عملی مظاہرہ یعنی جسم میں حرکت و عمل کا سبب AURA ہے۔ جسم کی حرکت تو AURA کی بدولت ہی ہے لیکن ہمارے تمام جسمانی اعمال بھی AURA کی بدولت ہیں۔

مثلاً بھوک لگی ہے۔ یہ ایک اطلاع ہے۔ لیکن اس اطلاع کو AURA مادی جسم تک بھوک کے احساس کے ساتھ منتقل کرتا ہے اور انسانی جسم کے اندر بھوک کا احساس بیدار ہوتا ہے۔ انسان یہ سوچتا ہے مجھے بھوک لگی ہے اب مجھے اٹھ کر کھانا گرم کرنا چاہیے اور کھانا چاہیے۔ انسان کا یہ سوچنا AURA کا سوچنا ہے۔ AURA کے اس ترغیبی پروگرام پر جسم میں تحریک پیدا ہوتی ہے اور AURA کی مسلسل ہدایت پر جسم عمل پیرا ہوتا ہے یوں انسان کھانا کھاتا ہے۔

ایک اور مثال سے ہم اس کی مزید وضاحت کرتے ہیں۔ مثلاً

نیند آرہی ہے۔ یہ ایک اطلاع ہے اب انسان کو جمائیاں آرہی ہیں جسم نیند کا متقاضی ہے لیکن AURA کا پروگرام سونے کا نہیں ہے لہذا وہ جسم کو ٹی وی کے پسندیدہ پروگرام کی طرف متوجہ کرتا ہے یعنی مجھے ابھی نہیں سونا اپنا پسندیدہ پروگرام دیکھنا ہے لہذا جسم نیند کی اطلاع کے برعکس AURA کی ہدایت کے مطابق عمل کرتا ہے اور ٹی وی دیکھتا ہے۔

ہم زندگی میں جتنے بھی کام کرتے ہیں جتنے بھی اعمال کرتے ہیں جتنے بھی کارنامے سرانجام دیتے ہیں یہ سب AURA کے ترغیبی پروگرام ہیں ہمارا کھانا پینا، چلنا، عمل کرنا بڑے بڑے کام کرنا اچھائی برائی کرنا یہ سب AURA کے پروگرام ہیں جنہیں وہ جسم کے ذریعے عملی جامہ پہناتا ہے یعنی ہمارے ہر عمل کا سبب AURA ہے۔

## 28۔ جسمانی اعمال کی اطلاعات

نظریہ نمبر: ﴿10﴾۔ ﴿جسمانی اعمال کی اطلاعات AURA کی اطلاعات نہیں ہیں﴾۔

مثلاً بھوک لگی ہے یہ اطلاع ہے لیکن یہ AURA کی اطلاع نہیں ہے AURA فقط اس اطلاع کو عملی جامہ پہناتا ہے یا نہیں پہناتا ہے یعنی AURA کی مرضی پہ منحصر ہے کہ وہ اس اطلاع کا ترغیبی پروگرام بھیج کر جسم کو کھانے کے عملی مظاہرے پر مجبور کرے یا اس اطلاع کو رد کر کے کھانے کا پروگرام ملتوی کر دے۔

AURA پر تحقیقات تجربات اور مشاہدے کرنے والے یہ بات تو کسی حد تک جانتے ہیں کہ انسانی زندگی کے تمام تقاضے جسمانی تقاضے نہیں ہیں بلکہ یہ AURA کے تقاضے ہیں لیکن ان تقاضوں کا منبع ان تقاضوں کی ہدایت کہاں سے آرہی ہیں ہمارے اعمال کی اطلاعات کہاں سے آرہی ہیں یہ کوئی نہیں جانتا اور اسی لاعلمی کے سبب آج تک AURA کو ہی ان اطلاعات کا منبع سمجھا جاتا رہا ہے اور تمام تقاضوں کا سبب اور اصل AURA کو ہی قرار دیا جاتا رہا ہے حالانکہ یہ غلطی ہے۔ AURA تو یہ اطلاعات خود وصول کرتا ہے ہاں عمل کرنا یا عمل نہ کرنا یہ اختیار AURA ہی کے پاس ہے۔ لیکن اگر یہ اطلاعات کا پروگرام یا جسمانی اعمال کی اطلاعات AURA کو موصول نہ ہوں تو AURA کے تمام اختیارات بے کار محض ہیں یعنی AURA کے تمام اختیارات و اعمال محض اطلاعات کے محتاج ہیں۔ جن کا منبع AURA نہیں ہے۔

کھانا، پینا، رونا، ہنسنا، مرنا، جینا اور ہماری زندگی کے تمام اعمال اطلاعات کا نتیجہ ہیں۔ یہ اطلاعات کیا ہیں اور ان کا منبع کیا ہے اس کا تفصیلی ذکر آئے گا۔

## 29-AURA زمان و مکان کا پابند

نظر یہ نمبر:- ﴿11﴾- نفس (AURA) زمان و مکان کا پابند ہے۔ ﴿

AURA کی برق رفتاری کے سبب یہ تصور کر لیا جاتا ہے کہ یہ شاید زمان و مکان کی قید سے آزاد ہے جبکہ ایسا نہیں ہے۔ یہ بھی زمان و مکان کا پابند ہے۔

یہ مادی جسم کے مقابلے میں ہزاروں گنا تیز رفتار ہے۔ AURA کی رفتار روشنی کی رفتار ہے۔ AURA پلک جھپکتے میں فاصلوں کی اڑان بھرتا ہے لیکن پھر بھی زمان و مکان کا پابند ہے وہ مہینوں کا سفر پلک جھپکتے میں اور دنوں کا سفر سیکنڈوں میں طے کرتا ہے لیکن اس سفر میں اسے وقت صرف کرنا پڑتا ہے۔ AURA کی اڑان کو ہم خواب میں محسوس کر سکتے ہیں ہم خواب میں خود کو

اڑتے دیکھتے ہیں۔

AURA حدود و قیود کا پابند ہے اس کی رسائی کائنات کے ہر گوشے تک نہیں۔ ایسا نہیں کہ وہ زمین سے آسمان تک پلک جھپکنے میں جا پہنچے۔ AURA ہر جگہ نہیں جاسکتا۔

جس طرح ہمارا مادی جسم حدود و قیود کا پابند ہے اسی طرح AURA بھی حدود و قیود کا پابند ہے مادی جسم زمین پر چلتا ہے تو AURA فضا میں پرواز کرتا ہے لیکن یہ ہر فضا کا مسافر نہیں۔ مادی جسم دنیا تک محدود ہے تو AURA روشنی کی وسیع دنیا کا مسافر ہے اور لمبی اڑانیں بھرتا پھرتا ہے AURA کی دنیا مادی جسم کی دنیا سے بہت بڑی اور وسیع ہے لیکن AURA بھی اپنی ہی دنیا اپنی ہی فضا کا قیدی ہے۔

جیسے ہر شخص اپنی مالی استطاعت کے مطابق سفر کر سکتا ہے کوئی اپنے شہر تک ہی محدود رہتا ہے کوئی اتنی مالی استطاعت رکھتا ہے کہ پورے ملک میں گھومتا ہے کچھ پوری دنیا میں گھومتے ہیں کچھ دنیا سے باہر بھی ہو آتے ہیں۔ یعنی چاند وغیرہ پر۔

ابھی ہم سورج پر جانے کی استطاعت نہیں رکھتے کیونکہ ہمارا یہ خیال ہے کہ سورج دکھتا ہوا آگ کا گولا ہے جو ہمیں جلا دے گا۔ بالکل اسی طرح AURA بھی کچھ حدود و قیود کا پابند ہے وہ ہر جگہ نہیں جاسکتا انسان مادی جسم کے ساتھ مادی زندگی بسر کرتا ہے تو AURA کے ذریعے روشنی کی دنیا سے متعارف ہوتا ہے۔ AURA روشنی کی دنیا کا مسافر ہے اس کے ذریعے ہم روشنی کی دنیا میں سفر و بسر کرتے ہیں۔

AURA کائنات کی تاروں سے جڑا کچھ آگے تو نکلا ہے لیکن وقت کی قید میں ہی ہے یہ روشنی کی دنیا کا مسافر ہے اس کی پرواز روشنی کی فضاء (Gases) تک محدود ہے جبکہ ہمادری کائنات مختلف قسم کی فضاؤں مختلف دنیاؤں سے بھری پڑی ہے جن تک AURA کی پہنچ نہیں۔

AURA کی صلاحیتیں مادی جسم سے ہزاروں گنا بڑھ کر ہیں لیکن یہ ہزاروں گنا صلاحیتیں بھی محدود صلاحیتیں ہیں۔ لامحدود نہیں ہیں۔

لہذا AURA زمان و مکان کا پابند ہے۔

30۔ اعمال کے اثرات



نظریہ نمبر:- ﴿12﴾ - ﴿پہلے AURA کی روشنی متاثر ہوتی ہے پھر اس کے اثرات مادی جسم پر ظاہر ہوتے ہیں۔﴾

مادی جسم کے اعمال کا اثر پہلے AURA پر پڑتا ہے پھر مادی جسم پر ظاہر ہوتا ہے یعنی AURA کا تغیر و تبدل مادی جسم پر ظاہر ہوتا ہے جسے ہم ذہنی یا جسمانی بیماری، کمزوری یا صحت مندی کہتے ہیں۔

AURA روشنی کا جسم ہمارے مادی جسم کا فیول ہے ہم جو بھی حرکت و عمل کرتے ہیں وہ AURA ہی کے تقاضے ہیں اور ان تقاضوں کی تکمیل میں AURA کی روشنیاں اور رنگ صرف ہوتا ہے۔

سات چکراز جو پیسے کی طرح تیزی سے چکر کھاتے ہیں۔ یہ AURA کی روشنی ہے اور یہ روشنی کا بہاؤ ہے۔ AURA چونکہ روشنی کا جسم ہے یہ روشنی کا بہاؤ AURA کے جسم میں ایسے ہی ہے جیسے ہمارے مادی جسم میں خون کا بہاؤ۔

جیسے جذبات یا خوشی یا غم میں ہمارے خون کا دباؤ بڑھ جاتا ہے ایسے ہی ہماری کیفیات کا روشنی کے بہاؤ پر اثر پڑتا ہے۔ روشنی کے بہاؤ میں کمی بیشی ہمارے مادی جسم کے اعمال کی وجہ سے پیدا ہوتی ہے۔

ہم جو بھی کام سرانجام دیتے ہیں ویسی اور اتنی ہی روشنی اور رنگ استعمال میں آتے ہیں۔ اگر یہ عام روٹین کے مطابق نہ ہوں کم یا زیادہ ہوں تو روشنی کے بہاؤ میں تیزی یا سستی یا رکاوٹ آ جاتی ہے۔ یعنی براہ راست فرق AURA کی روشنی کے بہاؤ پر پڑتا ہے۔ یہ ایسے ہی ہے جیسے جذباتی کیفیت میں بلڈ پریشر بڑھ جاتا ہے اور خوشی کے وقت طمانیت کا احساس جنم لیتا ہے۔

AURA جو ساخت تبدیل کرتا ہے کبھی پھیلتا ہے کبھی سکڑتا ہے لگاتار اس کی حالت میں جو تبدیلی ہوتی رہتی ہے اس کی وجہ یہی ہے کہ اس وجود کی روشنیاں اور رنگ مختلف قسم کے جسمانی اعمال میں صرف ہو رہے ہیں جس کی وجہ سے اس جسم میں مسلسل تغیر و تبدل ہو رہا ہے۔ AURA مسلسل مادی جسم کی تحریک میں استعمال ہو رہا ہے اور جسم اسی فیول AURA کی بدولت باعمل اور متحرک ہے۔

پہلے AURA کی روشنی صرف ہوتی ہے اس میں تغیر و تبدل ہوتا ہے پھر اس کے اثرات خوشی غم یا

بیماری کی صورت مادی جسم پر ظاہر ہوتے ہیں۔ (عمل کے ذریعے)

## 31.- AURA روح نہیں

نظریہ نمبر:- ﴿13﴾۔ ﴿نفس (AURA) روح نہیں ہے۔﴾

نفس (AURA) کا تجربہ و مشاہدہ کرنے والے آج تک اسے ہی روح تصور کرتے آئے ہیں۔ وہ AURA کو ہی جسم لطیف، اصل جسم یا انسان کا اصل تشخص قرار دیتے رہے ہیں اور ان سب (جسم لطیف، اصل جسم یا انسان کا اصل) سے ان کی مراد روح ہوتی ہے۔ جبکہ روح ان سب سے علیحدہ ایک شے ہے۔ لہذا نفس (AURA) روح نہیں ہے!

AURA کو روح کے طور پر پیش کرنے والے روح کا بھی مشاہدہ کرتے ہیں لیکن انہوں نے روح کو روح کے طور پر شناخت نہیں کیا۔ یا اگر صدیوں برسوں میں کبھی کسی نے روح کو الگ پہچان کر اسے ہی اصل تشخص قرار دے بھی دیا ہے تو وہ کبھی خود بھی اسے نہ تو سمجھ سکے ہیں نہ ہی اس کی کوئی تعریف کر سکے ہیں۔ عموماً

۱۔ نفس (AURA) کو روح کے طور پر شناخت کیا جاتا ہے۔

۲۔ جبکہ روح کو روح کے طور پر شناخت نہیں کیا جاتا۔

روح کا مشاہدہ کرنے والے جب AURA کو اصل جسم یا اصل تشخص کہتے ہیں اور روح کو بھی اصل کہتے ہیں تو ایسا کہتے ہوئے وہ خود اپنی تضاد بیانی میں الجھ کر یہ کہنے پر مجبور ہو جاتے ہیں کہ یہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں۔

بحر حال (AURA) روح نہیں ہے! جیسا کہ ماضی میں اسے کہا جاتا رہا ہے۔

## 32۔ نور کا جسم

نظریہ نمبر:- ﴿14﴾۔ ﴿نوری جسم ایک اور لطیف ترین جسم ہے لیکن یہ بھی روح نہیں۔ یہ بھی نفس

کا ایک جسم ہے۔﴾

تجربہ و مشاہدہ کرنے والے AURA کے ساتھ اور نورانی اجسام Chakras کا مشاہدہ کرتے

ہیں وہ یا تو اسے AURA یا Chakras کہہ دیتے ہیں اور اسے بھی AURA ہی کا کوئی جسم یا حصہ تصور کرتے ہیں یا الگ سے شناخت کرتے ہیں تب بھی وہ AURA کو یا مزید دوسرے مشاہدہ میں آنے والے مزید لطیف اجسام کو اصل تشخص یعنی روح قرار دیتے ہیں۔ یہ سب غلطیاں لاعلمی کے سبب کی جاتی ہیں۔

نور کا جسم نفس کا تیسرا جسم ہے۔ ۱۔ مادی جسم، ۲۔ AURA (نفس)، ۳۔ نور کا جسم۔

نوری جسم بھی مادی جسم اور اورا کی طرح اپنی انفرادی شناخت رکھتا ہے۔ نور کا جسم علیحدہ سے ایک جسم ہے جیسے کہ مادی جسم ہے یا AURA ہے۔ جس طرح AURA مادی جسم سے لطافت میں زیادہ ہے رفتار اور خصوصیات میں زیادہ ہے اسی طرح نورانی وجود بھی AURA کی نسبت زیادہ برق رفتار ہے۔

AURA مادی جسم سے ہزاروں گنا زیادہ برق رفتار ہے تو نورانی جسم AURA سے بھی لاکھوں گنا زیادہ برق رفتار ہے۔ لیکن یہ انتہائی برق رفتار جسم بھی زمان و مکان کی قید سے آزاد نہیں۔ AURA روشنی کی دنیا کا مسافر ہے تو نوری جسم ایک اور مزید لطیف نورانی فضا کا مسافر ہے AURA روشنی کا وجود ہے تو نورانی جسم نور کا وجود ہے۔ روح مادی دنیا میں مادی جسم کے ساتھ نمودار ہوتی ہے تو روشنی کی فضا میں روشنی کے جسم کے ساتھ اور اس سے ذرا اور بلند نور کی دنیا میں نورانی جسم کے ساتھ نمودار ہوتی ہے۔

### 33۔ مزید اجسام

نظر یہ نمبر: ﴿15﴾۔ ﴿مادی جسم، نفس (AURA)، نوری جسم کے علاوہ مزید اجسام بھی ہیں۔﴾

AURA کے علاوہ بھی مزید لطیف اجسام انسان سے وابستہ ہیں۔ یہ مزید لطیف اجسام علیحدہ سے نفس کے مزید اجسام ہیں۔

ماضی میں ان لطیف اجسام کو روح یا روح کے حصے تصور کیا جاتا تھا یہ نہ تو روح ہیں نہ روح کے حصے ہر جسم دوسرے جسم سے الگ اور منفرد جسم ہے۔ جیسے مادی جسم ہے یہ مادی خصوصیات کا حامل ہے، نفس AURA بھی ایک جسم ہے اور یہ مادی جسم سے الگ منفرد خصوصیات کا حامل ہے جبکہ نور کا

جسم الگ اور منفرد جسم ہے۔

اسی طرح اور بہت سے اجسام ہیں اور وہ الگ سے اجسام ہیں ہر جسم منفرد جسم ہے۔ اپنا انفرادی تشخص اپنا انفرادی نام رکھتا ہے۔

مادی جسم کے علاوہ جن لطیف اجسام کا آج ہم مشاہدہ کر رہے ہیں اور جن کا ابھی ہم مشاہدہ تجربہ اور علم نہیں رکھتے وہ سب اجسام نفس اور نفس کے اجسام ہیں۔ ہر جسم نفس کا جسم ہے۔ ہر جسم نفس ہے۔ انسان مادی جسم میں رہتے ہوئے غیر اختیاری طور پہ تو ان اجسام کو استعمال کر ہی رہا ہے لیکن انسان مادی جسم کے علاوہ ہر جسم کو انفرادی طور پر بھی استعمال کر سکتا ہے اور انسان جس جسم میں بھی ہو وہ جسم فقط اس کی شخصیت کا اظہار ہے، اس کا لباس اور پیمانہ ہے۔ اور انسانی شخصیت کا ہر پیمانہ نفس ہے۔ یعنی خود انسان ہے۔

## 34۔ اجسام کی تعداد

نظریہ نمبر۔ ﴿16﴾ - کائنات میں جتنے نظام ہیں اتنے ہی اجسام ہیں۔ ﴿﴾  
 ہماری کائنات میں ہماری کہکشاں کی طرح کتنی کہکشاں ہیں ہمارے نظام شمسی کی طرح کتنے آباد اور کتنے غیر آباد نظام ہیں ہم نہیں جانتے یا ہم شمار نہیں کر سکتے اگرچہ اندازے تخمینے تو لگائے جاتے ہیں۔ کائنات کتنی وسیع ہے ابھی تو ہم اسکی وسعت کا ہی اندازہ نہیں کر پائے جبکہ مزید کائناتیں بھی ہیں جنہیں ہم جانتے ہی نہیں جو ہماری نظر سے ابھی تک اوجھل ہیں۔ ابھی ہمارے تجربے حتیٰ کہ ہمارے ادراک کی حد بھی کم ہے۔ لیکن جتنے بھی نظام ہیں جتنی بھی دنیا میں ہیں جتنی بھی فضا میں ہیں ایک روح اتنے ہی اجسام تشکیل دے سکتی ہے۔ روح کائنات کی مسافر ہے۔ وہ کائنات میں مختلف قسم کی دنیاؤں اور مختلف قسم کی فضاؤں میں سفر کرتی ہے اور جس فضا سے گذرتی ہے یا جس فضا میں داخل ہوتی ہے وہاں بسیرا کرتی ہے (یعنی عارضی قیام) تو اسی فضا کے عناصر یا ایٹمز کی مناسبت سے ویسا ہی اسی فضا کے عناصر سے بنا لباس جسم اوڑھ لیتی ہے۔  
 ایسا روح اس وقت تک کرتی ہے جب تک وہ اپنی منزل تک نہ پہنچ جائے۔  
 روح کی منزل کیا ہے؟ وہ کتنی، اور کیسی فضاؤں میں سفر کرتی ہے اور خود کیا ہے اس کا ذکر آگے آئے گا۔

## 35۔ مادی دنیا میں اجسام کی تعداد

نظریہ نمبر: ﴿17﴾۔ ﴿مادی دنیا میں ایک عام انسان بیک وقت تین جسم استعمال کرتا ہے۔﴾  
(1)۔ مادی جسم۔

(2)۔ AURA روشنی کا جسم۔

(3)۔ نور کا جسم۔

جبکہ خاص روحانی لوگوں کے تین سے زیادہ جسم بھی ہوتے ہیں اور وہ ان کا استعمال بھی کرتے ہیں۔ اور روحانی سرگرمیاں سرانجام دیتے ہیں۔ ان کے یہ روحانی اجسام روحانی ریاضتوں کا نتیجہ ہوتے ہیں۔

دراصل انسان کی صلاحیتیں بہت زیادہ ہیں وہ بہت سے جسم استعمال میں لاسکتا ہے بہت سے کارنامے سرانجام دے سکتا ہے۔ تمام کائنات اس کے سامنے مسخر ہے لیکن اپنے آپ اپنی صلاحیتوں سے ناواقفیت کے سبب وہ مجبور بنا ہوا ہے فقط تین جسم استعمال کرتا ہے اور یہ استعمال بھی وہ اختیاری طور پر نہیں بلکہ غیر اختیاری طور پر کرتا ہے۔

یہ اس کا قدرتی عمل ہے جو خود بخود مکمل ہو رہا ہے۔ ورنہ عام انسان تو ان تین اجسام کی موجودگی سے بھی بے خبر ہے اور اسی بے خبری میں ان کا انکار بھی کرتا رہتا ہے لہذا اختیاری طور پر ان تین اجسام کا استعمال تو بہت دور کی بات ہے۔

مادی جسم کے استعمال سے تو ہم واقف ہیں جبکہ باقی دو اجسام روحانی دنیا سے انسان کے رابطے کے ذریعہ ہیں۔

## 36۔ انسان کائنات سے مربوط ہے

نظریہ نمبر: ﴿18﴾۔ ﴿نفس (اجسام) کے ذریعے انسان کائنات سے مربوط ہے۔﴾

نفس کے مختلف اجسام کے ذریعے انسان تمام عالموں سے براہ راست مربوط ہے۔ مثلاً

۱۔ مادی جسم

نظریہ نمبر:۔ مادی جسم کے ذریعے انسان مادی دنیا سے مربوط ہے۔

مادی جسم مادی دنیا کا باسی ہے۔ لہذا روح مادی عناصر کے اشتراک سے مادی جسم ترتیب دیتی ہے

- یہ مادی جسم مادی عناصر سے مرکب مادی دنیا کے لحاظ سے مادی دنیا کے تقاضوں کو پورا کرنے کی اور مادی زندگی مادی دنیا میں بسر کرنے کی صلاحیت رکھتا ہے۔ لہذا روح مادی دنیا میں رہنے کے لئے مادی جسم اوڑھ لیتی ہے۔ اور مادی دنیا میں کچھ وقت گزارتی ہے۔ آج چونکہ ہم مادی جسم کا کافی علم رکھتے ہیں لہذا مادی جسم کی ہیئت ساخت سے کافی حد تک آگاہ ہیں۔ لیکن انسان کے لئے کائنات بنی ہے اور انسان پوری کائنات سے مربوط ہے لہذا انسان محض مادی جسم نہیں بلکہ اس کے اور بھی لطیف اجسام ہیں جو انسان کے کائنات سے رابطے کا ذریعہ ہیں۔ لہذا انسان محض مادی دنیا کا قیدی نہیں بلکہ وہ پوری کائنات سے جڑا ہے۔

## ۲۔ نفس (AURA)

نظریہ نمبر:- ﴿19﴾۔ ﴿AURA﴾ انسان کو روشنی کی دنیا (عالم برزخ) سے مربوط رکھتا ہے۔ ﴿

AURA انسان کو مادی دنیا کے علاوہ اس دنیا سے بھی مسلسل مربوط رکھتا ہے جس دنیا میں انسان مادی جسم سے مفارقت کے بعد جائے گا اور وہاں کچھ عرصہ اسی جسم AURA کے سہارے ٹھہرے گا۔ بالکل اسی طرح جس طرح ہم مادی دنیا میں مادی جسم کے ساتھ ٹھہرے ہوئے ہیں۔ روشنی کے وجود کے ذریعے انسان روشنی کے تقاضے پورے کرتا ہے۔ AURA کے ذریعے انسان روشنی کی دنیا سے بھی مسلسل مربوط ہے۔ اگرچہ بظاہر وہ اس رابطے سے انجان بنا ہوا ہے لیکن پھر بھی وہ اس رابطے کو جانتا اور محسوس کرتا ہے اپنے خوابوں کے ذریعے۔ جب مادی جسم سو جاتا ہے تو نفس متحرک ہو جاتا ہے اور ہم نفس کی اس نقل و حرکت کو محسوس کرتے ہیں خوابوں کے ذریعے۔ خواب میں ہم AURA کو متحرک دیکھ رہے ہوتے ہیں۔ جس طرح ہم اپنے مادی جسم کو اپنی مرضی سے استعمال کرتے ہیں اسی طرح کچھ لوگ اپنے AURA کا استعمال کرنا بھی جانتے ہیں وہ لوگ بیداری میں ہی AURA کے ذریعے روشنی کی دنیا میں سفر کرتے ہیں نقل و حرکت کرتے ہیں اور اس روشنی کے جسم اس کے اعمال و افعال اور روشنی کی دنیا سے واقف ہوتے ہیں۔ لہذا روشنی کی دنیا میں حرکت و عمل اور رہائش کے لیے ہمیں روشنی کے وجود کی ضرورت ہوتی ہے۔ لہذا روح روشنی کی دنیا سے روشنی کے عناصر سے روشنی کا وجود تیار کرتی ہے۔ لہذا روشنی کی دنیا

میں سفر کرنے کے لیے انسان روشنی کا وجود استعمال کرتا ہے۔

لہذا AURA مادی دنیا میں رہتے ہوئے انسان کو روشنی کی دنیا سے بھی مربوط رکھتا ہے اور اس روشنی کی دنیا (عالم برزخ) سے رابطے کی روداد کو ہم نیند کی حالت میں خواب کی صورت میں براہ راست دیکھتے ہیں۔

لہذا AURA مادی دنیا میں رہتے ہوئے بھی روشنی کی دنیا سے رابطے کا ذریعہ ہے۔

### ۳۔ نور کا جسم

نظر یہ نمبر: ﴿20﴾۔ ﴿نور کا جسم انسان کو مادی دنیا میں رہتے ہوئے نور کی دنیا سے مربوط رکھتا ہے۔﴾

یہ فضا حقیقی فضا ہے اسے عالم آخرت کی صورت بھی کہہ سکتے ہیں۔ اس رابطے کی روداد کو بھی ہم خواب کی صورت میں دیکھتے ہیں۔ نور کا جسم روح نور کی فضا سے نور کے عناصر سے تیار کرتی ہے اور یہ جسم نور کی دنیا میں گذر بسر کرنے کے لئے استعمال کرتی ہے۔ اسی طرح روح جس فضا میں قیام کرتی ہے اسی فضا کے تعامل سے اپنے لئے ویسا ہی جسم تیار کر لیتی ہے۔ مادی فضا میں مادی جسم، روشنی کی فضا سے روشنی کا جسم اور نور کی فضا میں نور کا جسم اور اس کے علاوہ کائناتوں میں وہ جہاں بھی جس بھی سیارے پہ بسیرا کرتی ہے اس فضا سے ویسا ہی جسم تیار کر لیتی ہے اور ہر جسم دوسرے جسم سے منفرد جسم ہے ہر اعتبار سے لہذا ہر جسم اور روح کے مجموعے کو ہی ہم انسان کہتے ہیں۔ لہذا ان تین جسموں یعنی مادی جسم کے ذریعے انسان مادی دنیا، AURA یعنی روشنی کے جسم کے ذریعے انسان روشنی کی دنیا (عالم برزخ) اور نور کے جسم کے ذریعے انسان عالم آخرت سے مسلسل مربوط رہتا ہے۔ ان دونوں رابطوں کو ہم خواب کے ذریعے محسوس کرتے ہیں یعنی روشنی کے وجود کو نقل و حرکت کرتے دیکھتے ہیں اور نور کے جسم کے ذریعے اپنے مُردہ عزیز و اقارب سے رابطے میں ہوتے ہیں۔ یعنی ان تین اجسام کے ذریعے انسان مادی دنیا میں رہتے ہوئے بھی مسلسل پوری کائنات سے مربوط ہے۔

### 37۔ زندگی کی صورتیں

نظریہ نمبر: ﴿21﴾ - ﴿ہر زمین پر زندگی موجود ہے، ہر زمین پر زندگی کی طرزیں مختلف ہیں، پوری کائنات زندگی سے معمور ہے۔ اور انسان پوری کائنات میں رہنے بسنے کی صلاحیت اپنے اندر رکھتا ہے۔﴾

لہذا یہ نظریہ فضول ہے کہ انسانی زندگی کے لیے زمین ہی موضوع سیارہ ہے۔ ہر زمین ہر سیارے پر زندگی کے تقاضے مختلف ہیں اور زندگی کی شکلیں مختلف ہیں، مخلوقات مختلف ہیں، مخلوقات کی ساخت مختلف ہے۔

درحقیقت ہر زمین پر اسی زمین کی ماحول کی مناسبت سے زندگی قائم ہے لہذا ہر زمین پر زندگی کی طرزیں مختلف ہیں اور انہیں طرزوں کی مناسبت سے ہر زمین پر مخلوقات کی ساخت بھی مختلف ہے۔ یعنی ہر زمین پر اس کی فضاء کی مناسبت سے اسی فضاء کے عناصر سے ترتیب یافتہ مخلوقات موجود ہیں۔

یعنی کائنات کے ہر سیارے پر مختلف طرزوں پر مشتمل زندگی موجود ہے۔ بلکہ ہر سیارے پر اسی کی مناسبت سے مخصوص مخلوق آباد ہے۔

لیکن محض انسان وہ ہستی ہے جو پوری کائنات میں کائنات کے ہر سیارے پر رہنے بسنے، سفر کرنے کی اہلیت رکھتی ہے۔ یعنی انسانی زندگی کے لیے بھی محض زمینی سیارہ ہی موضوع جگہ نہیں ہے جیسا کہ سائنسدان بتاتے ہیں۔

لہذا انسان محض مادی زمین کے لیے مخصوص نہیں انسان کے لیے پوری کائنات ہے، جہاں چاہے، جب چاہے جائے جہاں چاہے رہے جہاں چاہے بسے یہ انسان کی مرضی اس کا اختیار ہے۔

## 38۔ اجسام کا تشخص

نظریہ نمبر: ﴿22﴾ - ﴿ہر جسم منفرد جسم ہے اور اپنا انفرادی تشخص رکھتا ہے۔﴾  
روح اور نفس (تمام اجسام) اپنا اپنا انفرادی تشخص تو رکھتے ہی ہیں۔ اس کے علاوہ نفس کا ہر جسم اپنا انفرادی تشخص بھی رکھتا ہے۔ ہر وجود کی اہمیت، ہیئت اور خصوصیات دوسرے وجود سے مختلف اور منفرد ہیں۔ مثلاً

۱۔ مادی جسم: مادی جسم سے تو ہم واقف ہی ہیں یہ مادی عناصر سے مرکب مادی وجود ہے مادی دنیا



میں زندگی بسر کرنے کے لیے یہ موزوں جسم حرکت و عمل سے مخصوص ہے مادی جسم کی ہیئت، ساخت خصوصیات سے ہم آگاہ ہیں ہی۔

۲-AURA: جس طرح مادی جسم منفرد ہے اسی طرح AURA بھی اپنی انفرادی حیثیت رکھتا ہے مادی جسم کا ہمارے پاس بہت زیادہ علم ہے۔ مادی جسم کی خصوصیات سے تو ہم آگاہ ہیں ہی لیکن AURA تو اپنی انفرادی خصوصیات میں مادی جسم سے بھی بڑھا ہوا ہے۔ جس طرح مادی دنیا میں انسان کا وجود مادی ہے تو روشنی کی دنیا میں انسان کا وجود AURA ہے۔ اور اپنی انفرادیت میں مادی جسم سے ہزاروں گنا بڑھ کر ہے۔

۱۔ مثلاً AURA روشنی کا جسم ہے اور یہ روشنی یا بجلی

۲۔ مادی جسم کی حرکی قوت ہے۔

۳۔ مادی جسم کے اعمال و افعال کا سبب ہے۔

۴۔ مادی جسم سے ہزاروں گنا برق رفتار ہے،

۵۔ AURA انسان کو روشنی کی دنیا (عالم برزخ) سے مربوط رکھتا ہے۔

یہاں ہم نے اس روشنی کے جسم کی محض چند انفرادی خصوصیات کا ذکر کیا ہے ورنہ

یہ روشنی کا جسم اعمال و خصوصیات میں مادی جسم سے ہزاروں گنا بڑھ کر ہے لہذا اس جسم کا علم بھی مادی جسم سے وسیع تر ہے جس کا اب آغاز ہو رہا ہے۔

۳۔ نور کا جسم

نور کا جسم بھی منفرد جسم ہے اور اپنی انفرادی خصوصیات میں روشنی کے جسم سے بھی لاکھوں گنا بڑھ کر ہے۔

نور کا جسم انسان کو نور کی دنیا (عالم آخرت) سے مربوط رکھتا ہے۔

نور کا جسم بھی اپنی ساخت، خصوصیات میں منفرد ہے۔

اسی طرح جتنی بھی دنیا میں ہیں جتنے بھی اجسام ہیں ہر جسم منفرد جسم ہے۔

یہاں ہم نے اجسام (نفس) کا مختصر ترین تعارف کروایا ہے۔ ورنہ یہ وہ موضوع ہے کہ جس کا

یہاں ہم نے آغاز تو کر دیا ہے لیکن کیا اس کا اختتام بھی ہے ؟

اس کی مثال مادی جسم سے ہی لے لیجئے مادی جسم سے متعلق آج ہمارے پاس اتنے علوم ہیں کہ

جس کا شمار بھی نہیں جبکہ مادی جسم باقی کے لطیف اجسام کے مقابلے میں ایک مختصر موضوع ہے۔ جبکہ باقی کے لطیف اجسام تو ساخت اور خصوصیات میں مادی جسم سے ہزاروں لاکھوں گناہ بڑے موضوعات ہیں۔ لہذا خود ہی اندازہ کر لیجئے کہ یہ لطیف اجسام کتنے بڑے علمی موضوعات ہیں۔ ہم نے تو یہاں آج ان کا مختصر تعارف پیش کیا ہے کہ یہ بھی موجود ہیں انہیں بھی تو دیکھئے۔ یہاں ہم نے صرف ان گناہ اجسام کو متعارف کروایا ہے۔ ابھی تو یہ صرف منظر عام پر آئے ہیں۔ علمی کام تحقیق و تجربات تو ان پر ابھی ہوں گے۔

### 39۔ اجسام کی اہمیت

نظریہ نمبر: ﴿23﴾۔ ﴿اجسام ہی انسان کا اصل تشخص ترتیب دیتے ہیں﴾۔ ہر انسان وہ اچھا ہے یا برا ایک خاص کردار ایک خاص شخصیت ہے اور یہ خاص شخصیت ترتیب دیتا ہے نفس یعنی اجسام۔ لہذا اجسام ہی بنیادی اہمیت کے حامل ہیں۔ روح ابتداء سے انتہا تک ایک مکمل تشخص مکمل پروگرام ہے اور یہ روح انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا مکمل تحریری پروگرام ہے۔ اب یہ تیار شدہ انسانی پروگرام ایک مکمل سادہ انسان ہے ایک معصوم انسان۔

اب اس سادہ پروگرام یعنی انسان میں اچھے یا برے کاموں سے نفس (اجسام) اپنے ذاتی ارادے سے ترمیم و اضافہ کر رہے ہیں۔ لہذا اجسام کے اچھے یا برے اعمال کی وجہ سے انسانی پروگرام میں ترمیم یا اضافہ ہوگا لہذا اجسام کے اچھے اعمال کی وجہ سے اب یہ انسان اچھا انسان ہوگا۔ یا اجسام کے برے اعمال کی وجہ سے یہ انسان برا انسان ہو جائے گا۔

یعنی انسانی پروگرام میں رد و بدل کر رہے ہیں اجسام کے ذاتی اعمال اور یہی اجسام کے اعمال سے تیار کردہ پروگرام حتمی صورت اختیار کرے گا۔ یعنی انسان کی اگلی زندگی کا تمام تر انحصار اجسام کی موجودہ اچھی یا بری کارکردگی پر منحصر ہے۔

لہذا انسان پیدائشی طور پر ایک سادہ پروگرام ہے جس میں ترمیم و اضافہ کر کے اجسام اس پر اچھا انسان یا برا انسان کا لیبل لگا رہے ہیں۔ یعنی انسان کا اصل تشخص ترتیب دے رہے ہیں اجسام (نفس) اپنے ذاتی ارادے سے لہذا اجسام کی اہمیت سب سے زیادہ ہے۔

## 40۔ اجسام کی حقیقت

نظریہ نمبر:- ﴿24﴾۔ ﴿تمام اجسام مفروضہ ہیں۔﴾

اجسام کی بے انتہا صلاحیتوں تمام تر خوبیوں اور بے تحاشا اہمیت اپنی جگہ مسلم ہے لیکن اس کے ساتھ ہی یہ بھی حقیقت ہے کہ اجسام کی تمام تر خوبیوں اور اہمیت کے باوجود اجسام کی کوئی حقیقت نہیں۔ تمام اجسام مفروضہ ہیں۔ جیسے کہ خواب جسے ہم نیند میں دیکھتے ہیں لیکن آنکھ کھلی تو سارا منظر غائب۔ کیا یہ جھوٹ ہے؟

تو پھر بتائیے کہ حقیقت میں چلتا پھرتا بے پناہ صلاحیتوں کا مالک نامور انسان بے حرکت، بے نشان کیسے ہو جاتا ہے۔ ایک جیتا جاگتا انسان بھولا بسرا خواب کیسے ہو جاتا ہے۔

درحقیقت تمام اجسام مختلف مقداروں کے مرکبات کا مجموعہ ہیں اور ان تمام مرکبات کی عرصہ حیات محدود ہے۔ جیسے یہ مرکب ہوتے ہیں ویسے ہی منتشر بھی ہو جاتے ہیں جب ان مرکبات میں سے روح خارج ہو جاتی ہے یہ بے حرکت، منتشر اور بے نشان ہو جاتے ہیں کوئی پتھر کوئی چٹان اپنے وجود میں کسی ایک آدھے وجود کو بطور عبرت محفوظ کر لے تو ہمیں کوئی فوسل کوئی نشانی میسر آ جاتی ہے کہ یہاں پہلے کبھی کوئی وجود بھی تھا یہ چند برائے نام نشانیاں بھی قدرت برائے عبرت چھوڑ دیتی ہے ورنہ تو کسی تیس مارخان کا نشان بھی نہیں بچتا۔ روح کے بغیر ان تمام اجسام کی کوئی حقیقت نہیں اگر ہے تو بتائیے کہ ایک مخصوص مدت کے بعد یہ تمام کہاں چلے جاتے ہیں، کیوں بے نشان ہو جاتے ہیں؟ جیسے کبھی تھے ہی نہیں۔ وہ کیا شے تھی جو ان اجسام میں اپنا اظہار کر رہی تھی۔ وہ کیا تھی جو ان وجودوں کو موجود رکھ رہی تھی اور جس کی غیر موجودگی سے جسم کا وجود ہی نہ رہا دراصل ان تمام اجسام کی اصل کچھ اور ہے۔ اور تمام تر اہمیت کے باوجود بذات خود یہ اجسام مفروضہ ہیں۔

## 41۔ تمام اجسام فانی ہیں

نظریہ نمبر:- ﴿25﴾۔ ﴿تمام اجسام مرجاتے ہیں (فنا ہو جاتے ہیں)۔﴾

مادی جسم ہو یا کوئی بھی لطیف سے لطیف جسم سب اجسام اپنی مدت حیات پوری کر کے مرجاتے ہیں کوئی بھی لطیف سے لطیف جسم غیر فانی نہیں۔

ہر لطیف سے لطیف جسم فانی ہے۔

جیسے مادی جسم دنیا میں ایک مخصوص مدت بسر کرتا ہے پھر موت کا شکار ہو کر بے نشان ہو جاتا ہے بالکل اسی طرح تمام لطیف اجسام بھی فانی ہیں چاہے وہ AURA ہو یا نور کا جسم یا کوئی اور اس سے بھی لطیف جسم یا اجسام سب فانی ہیں مر جاتے ہیں۔ جبکہ ماضی میں لطیف اجسام کو روح تصور کیا جاتا تھا اور روح سمجھ کر ان اجسام کو غیر فانی تصور کیا جاتا تھا جبکہ آج یہاں ہم نے یہ وضاحت کر دی ہے کہ تمام لطیف اجسام روح نہیں نفس ہیں اور تمام لطیف اجسام بھی اپنی مدت میعاد پوری کر کے مادی جسم کی طرح مر جاتے ہیں لہذا تمام تر لطیف اجسام مرکبات ہیں، فانی ہیں۔

## 42۔ اصل جسم

نظریہ نمبر:- ﴿26﴾۔ ﴿کوئی جسم اصل جسم نہیں یا اجسام کی کوئی اصل نہیں﴾۔ آج تک تمام تحقیق و تجربات کرنے والے لطیف اجسام کو روح کے طور پر پیش کرتے رہے ہیں لہذا ان کے مطابق انسان کا اصل اور غیر فانی تشخص یہی لطیف جسم ہوتا ہے۔ اور اس اصل اور غیر فانی تشخص سے ان کی مراد روح ہوتی ہے۔ اور روح سے ان کی مراد جسم لطیف ہوتی ہے۔ یعنی وہ روح کو جسم لطیف بتاتے ہیں اور اس جسم لطیف (یا ان کے خیال سے روح) کو وہ غیر فانی کہتے ہیں۔ کیونکہ ہمیشہ انہوں نے روح کو جسم لطیف کی صورت میں دیکھا سو چاہا محسوس کیا ہے جبکہ جسم کوئی بھی ہو کتنا بھی لطیف ہو وہ محض روح کا لباس ہے لہذا بذات خود اجسام کی کوئی اصل نہیں۔

## 43۔ انسان کی اصل

نظریہ نمبر:- ﴿27﴾۔ ﴿انسان کی اصل روح ہے تمام تر اجسام کی اصل روح ہے﴾۔ تمام تر اجسام موت کا شکار ہو جاتے ہیں چاہے وہ مادی جسم ہو یا کوئی لطیف یا لطیف ترین جسم ہو سب نفس (اجسام) مر جاتے ہیں (ہر نفس کو موت کا مزہ چکھنا ہے) جبکہ انسان ان تمام اجسام کی موت کے بعد بھی اپنی تمام تر خصوصیات کے ساتھ موجود رہتا ہے۔ بلکہ اجسام کی موت کے بعد انسان کی صلاحیتوں میں اضافہ ہو جاتا ہے انسان جسم میں ہے تو اس کا مطلب ہے کہ وہ ایک پنجرے میں قید ہے۔ جسم سے آزادی کے بعد وہ ایسے ہی ہے جیسے کہ ایک آزاد پرندہ جو اس سے

پہلے پنجرے میں قید تھا۔

اجسام تو مفروضے ہیں مرجاتے ہیں جبکہ روح نہیں مرتی! لہذا انسان کی اصل اس کی روح ہے۔ لہذا

## 44۔ لطیف اجسام

نظریہ نمبر:- ﴿28﴾۔ ﴿لہذا لطیف اجسام نہ تو روح ہیں نہ روح کے حصے بلکہ یہ محض اجسام ہیں۔ نفس کے اجسام﴾

جبکہ ماضی میں لطیف اجسام کو یا تو روح سمجھ لیا جاتا تھا یا روح کے حصے۔ یہاں ہم نے مادی جسم کے علاوہ لطیف اجسام کا ذکر کیا ہے اور ان کا علیحدہ علیحدہ تشخص اجاگر کرنے کی ابتدائی کوشش بھی کی ہے لہذا لطیف اجسام سے مراد وہ تمام اجسام ہیں جو مادی جسم کے بعد روح مختلف فضاؤں میں تیار کرتی ہے لہذا مادی جسم کے علاوہ تمام تر باطنی اجسام لطیف اجسام ہیں۔ یہ روح نہیں بلکہ جسم ہیں۔ (جبکہ روح کچھ اور شے ہے) جن میں سے ایک یا دو آج ہمارے مشاہدے میں بھی ہیں جبکہ یہاں میں نے مزید اجسام کا بھی ذکر کیا ہے۔ جبکہ ماضی میں تمام تر اجسام کو لطیف اجسام کہا گیا یا ماورائی مخلوق یا باطنی مخلوق کہا گیا ہے۔ ماضی میں ان باطنی لطیف اجسام کو روح یا روح کے حصے قرار دیا جاتا رہا ہے جبکہ یہاں ہم نے یہ ثابت کیا ہے کہ یہ باطنی لطیف اجسام

(1)۔ نہ تو روح ہیں۔

(2)۔ نہ ہی یہ باطنی لطیف اجسام روح کے حصے ہیں۔

(3)۔ یہ تمام تر لطیف اجسام نفس ہیں۔

(4)۔ جن میں بنیادی نفس (AURA) ہے۔

لہذا اب یہاں تک پہنچ کر ہم نے بڑی تفصیلاً وضاحت کر دی ہے کہ نفس کوئی مفروضہ نفسانی خواہش نہیں ہے۔ بلکہ نفس سے مراد اجسام ہیں لطیف اجسام اور ہم نے نفس کی شناخت کے علاوہ اس کے دیگر اجسام کی بھی بالترتیب وضاحت کر دی ہے۔ اور آج یہاں نفس سے متعلق تمام تر مفروضات کی نفی کر کے نفس کی اصل تعریف اور تعارف پیش کر دیا ہے۔

اب نفس کی تعریف ہو چکنے کے بعد انسانی باطن کی درج، ذیل صورت ہمارے سامنے آرہی ہے۔

## 45۔ انسانی باطن

نظریہ نمبر: ﴿29﴾۔ ﴿باطن مجموعہ ہے روح و نفس کا۔ یعنی روح + نفس (تمامتر

لطیف اجسام) = باطن﴾

یعنی انسان کا ظاہر اس کا مادی جسم ہے تو اس کا باطن روح و نفس پہ مشتمل ہے۔  
ظاہری مادی جسم سے تو ہم واقف ہی ہیں جبکہ کچھ روحانی لوگ ماضی میں انسانی باطن کا بھی مشاہدہ کرتے آئے ہیں اور وہ باطن سے لاعلمی کے سبب ہر لطیف جسم کو روح قرار دیتے رہے ہیں۔ ہر جسم کو وہ روح کہنے کے بجائے ایک جسم کو روح اور باقی اجسام کو روح کے حصے کہتے رہے۔  
جبکہ یہاں ہم نے یہ وضاحت کی ہے کہ جنہیں ماضی میں روح یا روح کے حصے بتایا جاتا رہا ہے وہ روح اور اس کے حصے نہیں ہیں روح تو کوئی اور ہی شے ہے جبکہ یہ تمامتر لطیف اجسام ہیں جنہیں نفس کہا جاتا ہے یا پھر یوں کہنا چاہیے کہ ان تمامتر لطیف اجسام کا اصل نام نفس ہے۔ ظاہری مادی جسم سے تو ہم واقف ہیں اب باطنی لطیف اجسام کی بھی یہاں ہم نے تعریف اور تعارف پیش کر دیا۔ لہذا اب مجموعی انسان کی تعریف کچھ یوں سامنے آئی ہے۔

## 46۔ مجموعی انسان

نظریہ نمبر: ﴿30﴾۔ انسان کا ظاہر و باطن۔ یعنی مجموعی انسان

۱۔ ظاہر = مادی جسم

۲۔ باطن = نفس (تمامتر اجسام) + روح

لہذا انسان مجموعہ ہے: مادی جسم + روح + نفس (تمامتر اجسام) = انسان

مادی جسم کو تو ہم آج سائنسی حیثیت میں شناخت کرتے ہیں۔

نفس کی بھی یہاں ہم نے انفرادی شناخت قائم کر دی۔

لیکن ابھی یہ جاننا باقی ہے کہ روح کیا ہے۔ ماضی میں نفس کے لطیف اجسام کو روح اور اس کے حصے

تصور کیا جاتا رہا ہے جبکہ یہ لطیف اجسام روح نہیں نفس ہیں۔

روح تو ان تمامتر اجسام سے الگ شے ہے! (روح کیا ہے اس کا ذکر آگے آئے گا) چلیے فی الحال

آج یہاں اجسام کا مسئلہ تو حل ہوا۔

## 47۔ اجسام کا مسئلہ:

نفس کی انفرادی شناخت تعارف اور تعریف ہوگئی چلیے اجسام کا مسئلہ تو حل ہوا۔ ہزاروں برس سے لوگ اسی مسئلے میں الجھے ہوئے تھے۔ ماضی کے ہر دور کے لوگ تین یا سات اجسام کا تذکرہ تو کرتے رہے اور آج بھی کرتے ہیں لیکن وہ کبھی بھی ان تین یا سات اجسام کا مطلب نہیں سمجھے وہ ان اجسام کا مشاہدہ تو کر رہے تھے لیکن ان تین یا سات اجسام کے چکر میں بڑی طرح الجھ گئے تھے اور اپنی اس الجھن کو آواگون جیسے قدیم نظریے سے تشبیہ دے کر سلجھانے کی کوشش کر رہے تھے۔

ماضی میں وہ ہر لطیف جسم کو روح اور اس کے حصے کہتے رہے ہیں۔

لیکن وہ یہ بھی فیصلہ نہیں کر پائے کہ ان اجسام میں سے روح کونسی ہے۔

اور وہ یہ بھی جان لیتے ہیں کہ ان اجسام میں سے روح کونسی بھی نہیں۔

اسے علیحدہ سے بھی جان لیتے ہیں اور جان لینے کے بعد پھر روح کو روح کے طور پر شناخت نہیں کرتے۔

پھر لطیف اجسام کو ہی روح اور روح کے حصے کہتے ہیں۔

روح کو ناقابل تقسیم بھی کہتے ہیں ساتھ ہی اسے حصوں میں بھی تقسیم کرتے ہیں

اور جب خود ہی اپنی تضاد بیانیوں کی لپیٹ میں آجاتے ہیں تو کہہ دیتے ہیں کہ یہ جو روح ہے دراصل معمر ہے جو حل طلب نہیں۔

ماضی اور حال کا انسان اپنے باطن کا مشاہدہ تو کرتا رہا لیکن کبھی بھی اسے سمجھ نہیں پایا اور نہ ہی سمجھا پایا اور لطیف اجسام کے چکر میں ہی الجھا رہا لہذا لطیف اجسام کو روح بھی کہتا رہا اور روح کے حصے بھی اور ان اجسام کو انسان کے دوسرے جنموں سے بھی تشبیہ دیتا رہا۔

لہذا یہاں ہم نے یہ اجسام کی گتھی سلجھائی ہے اور یہ ثابت کیا ہے کہ:-

۱۔ تمام لطیف اجسام روح نہیں ہیں۔

۲۔ نہ ہی یہ روح کے حصے ہیں۔

۳۔ بلکہ مادی جسم کی طرح انسان کے مزید باطنی لطیف اجسام بھی ہیں۔

۴۔ تمام لطیف اجسام روح کے میڈیم یا لباس ہیں۔

۵۔ اور انسان اپنے ان مختلف قسم کے اجسام کے ذریعے پوری کائنات اور اس کے نوع بہ نوع

سیاروں سے مربوط ہے۔

۶۔ تمام اجسام فانی ہیں (مرجاتے ہیں)۔

۷۔ نفس مذہبی اطلاع ہے جس کی آج یہاں ہم نے صحیح تعریف کر دی ہے۔

۹۔ لہذا تمام اجسام نفس (لطیف اجسام + مادی جسم) ہیں۔ اور

۱۰۔ تمام اجسام کا اصل نام نفس ہے جو مذاہب نے ان باطنی اجسام کو بخشا تھا۔

۱۱۔ اجسام کی اصل روح ہے۔

۱۲۔ تمام اجسام زندگی کا سبب نہیں۔

۱۳۔ جسم کی اطلاعات کا سبب اجسام نہیں۔

۱۴۔ انسانی باطن مجموعہ ہے۔

روح + نفس (تمام لطیف اجسام) کا

۱۵۔ جبکہ انسان مجموعہ ہے۔

مادی جسم + روح + نفس (تمام اجسام)

لہذا یہاں اجسام کا مسئلہ حل ہوا نفس کی شناخت ہو گئی لیکن ابھی انسان کی تعریف مکمل نہیں ہوئی

ابھی محض نفس کی شناخت ہوئی ہے ابھی روح کی شناخت باقی ہے۔ اور روح کی شناخت اور

تعریف اور تعارف کے بغیر انسان کی تعریف مکمل نہیں ہو سکتی۔

آئیے روح کی شناخت قائم کر کے اس کی تعریف اور تعارف کرتے ہیں۔



## روح (SOUL)

قُلْ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي

کہہ دیجیے روح رب کا حکم ہے۔

## 48- مختلف ادوار میں روح کی علمی حیثیت

اگرچہ روح کو غیر مرئی کہہ کر علم کی حدود سے خارج کر دیا گیا تھا پھر بھی مختلف ادوار میں روح کا تذکرہ ہوتا رہا ہے۔ روح پر ہر دور میں فکری، تجرباتی، تحقیقی ہر طرح کا بہت کام ہونے کے باوجود روح کی تعریف یا شناخت تک نہ ہو سکی۔ یہی وجہ ہے کہ روح کا علم کسی بھی دور میں علمی میدان میں نہ اتر سکا لہذا یہ تذکرہ فقط عقائد تک محدود رہ گیا۔ علمی حیثیت میں پہلی دفعہ روح کو یونانی فلسفیوں نے متعارف کروایا۔

(۱)۔ یونانی فلسفی

لیکن یونانی فلسفیوں کی تعریفیں (جن کا ابتدائی صفحات میں تذکرہ موجود ہے) پڑھنے کے بعد اندازہ ہوتا ہے کہ

(1) ان کی تعریفیں عقیدوں سے متاثرہ تعریفیں ہیں۔

(2) یا وہ یہ احساس رکھتے تھے کہ بدن کے علاوہ بھی کوئی شے ہے جو بدن کی زندگی کا سبب ہے۔

(3)۔ افلاطون کی تحریروں سے اندازہ ہوتا ہے کہ وہ کچھ روحانی مشاہدات اور تجربات بھی رکھتے تھے۔

ارسطو (384 - 322 ق م) نے علم الروح (Psychology) کے نام سے جو کتاب لکھی تھی وہ بھی ظاہر ہے اسی قسم کے نظریات یا عقیدوں پر مبنی ہوگی لیکن اب تو اس کتاب یا کتابچے کا فقط تذکرہ ہی باقی ہے (وہ کتاب اب موجود نہیں)۔ یعنی یونانی فلسفی روح کا بہت ہی ابتدائی عقلی احساس رکھتے تھے کہ کوئی روح بھی ہے جو بدن کی زندگی ہے، وہ روح کیا ہے؟ اس کے اعمال و افعال کیا ہیں؟ وہ نہیں جانتے تھے۔ روح سے اس مختصر تعارف کی وجہ ان کے عقیدے رہے ہو گئے یا وہ فکری و عقلی احساس جو ہر صاحب عقل کو سوچنے پر مجبور کرتا ہے بحر حال ہم اس ابتدائی عقلی احساس کو روح کا علم قرار نہیں دے سکتے۔ یونانی فلسفی روح کی تعریف یا شناخت نہ کر سکے لیکن ان کا یہ کام روح کے علم کی طرف ایک راست قدم ضرور تھا۔ ہاں اگر یونانیوں کے آغاز کردہ اس علم پر مزید علمی پیشقدمی ہوتی تو پھر یونانیوں سے آغاز کر کے یہ علم آج اپنے عروج پر ہوتا۔ مگر افسوس ایسا ہو نہیں پایا۔ یونانی فلسفیوں کے روح سے متعلق اس مبہم عقلی احساس کو ان کے بعد آنے

والے مادہ پرستوں نے جھٹلا دیا۔ یونانی فلسفیوں کے بعد آنے والے یہ مادہ پرست تھے سائنسدان۔

## (۲)۔ سائنسدان

یونانی فلسفیوں کے بعد منظر عام پر آئے سائنسدان۔ اور یہ سائنسدان یونانی فلسفیوں کی علمی فکر سے پھوٹے تھے۔ ان سائنسدانوں نے یونانی فلسفیوں کی فکر پر تجربات کی بنیاد رکھی۔ ان سائنسدانوں نے یونانی فلسفیوں کے روح سے متعلق اپنی پسند کے نظریات تو رکھ لئے جنہیں انہوں نے ذہن، کردار، نفس جیسے نئے نئے عنوانات کے ساتھ پیش کیا اور ان نظریات کی اصل ماخذ یعنی روح کا انکار کر دیا۔ اور صرف اتنا ہی نہیں ان سائنسدانوں نے روح کو غیر مرئی قرار دے کر روح کو علم کی فہرست سے ہی خارج کر دیا۔ یعنی روح کے اعمال و افعال کو تو دیگر ناموں سے قبول کر لیا اور روح کے اعمال و افعال سے روح کو خارج کر دیا۔ ان کا خیال تھا کہ روح غیر مرئی ہے تجربے کی زد میں نہیں آتی لہذا اس کا علم سے تعلق نہیں۔ انہوں نے ہر حقیقت کی بنیاد تجربے کو قرار دیا اور جو سامنے کی حقیقت بھی ان کے ناقص تجربات کی زد میں آنے سے رہ گئی اسے انہوں نے جھٹلا دیا۔ سائنسدانوں کی اس سطحی سوچ نے روح کے علم کو ناقابل تلافی نقصان پہنچایا اور اسی رویہ سے روح کے علم پر صدیوں کی گرد چڑھ گئی۔ لہذا سائنس دانوں نے یونانی فلسفیوں کے روح سے متعلق نظریات کو

۱۔ دیگر عنوانات مثلاً ذہن، کردار، نفس، شعور، لاشعور اور سائیکالوجی وغیرہ کے ساتھ پیش کیا۔

۲۔ اور روح کے ان اعمال و افعال سے روح کو خارج کر دیا۔

## (۳)۔ مسلمان

مسلمانوں نے پہلے تمام ادوار کے مقابلے میں روح پر سب سے زیادہ سیر حاصل اور سب سے بہترین فکری و عملی بحث کی انہوں نے پہلی مرتبہ نہ صرف روح، نفس اور جسم کا غیر سائنسی دور میں سائنسی انداز میں تذکرہ کیا لیکن یہ ابتداء تھی اس کام کو آگے بڑھانا چاہیے تھا لیکن مسلمانوں نے اس کام کو علمی یا عملی تجرباتی سطح پر لانے کی کوئی کوشش نہیں کی اگر کرتے تو یہ معاملہ اب تک سلجھ چکا ہوتا۔ اگرچہ مسلمانوں کا کام بہترین کام ہے۔ لیکن یہ کام کوئی علمی پیشرفت نہیں بلکہ انتہائی ابتدائی کام ہے۔ اور تمام کاموں کی طرح بے نتیجہ کام ہے۔

## (۴)۔ جدید تحقیقات

انیسویں صدی میں روح پھرا بھر کر سامنے آئی اور روح پر بھر پور طریقے سے سائنسی انداز میں تحقیق و تجربات اور تجزیات ہوئے۔ اور یہ تحقیق و تجربات کرنے والے سائنسدان، فلاسفرز، ڈاکٹر اور محققین ہیں لہذا روح کو وہم یا غیر مرمی کہنے والے ہی آج روح پر باقاعدہ علمی فکری سائنسی جانچ پڑتال لیبارٹریوں میں کر رہے ہیں۔ لیکن سو یوں برسوں کی تحقیق کا نتیجہ یہ نکلا ہے کہ انسان کے باطن کی دریافت تو ہو گئی یہ تو ثابت ہو گیا کہ کوئی روح بھی ہے AURA کی بھی تصویر کشی کر لی گئی۔ لیکن ابھی تک سائنسدان اس جہان باطن سے متعارف نہیں ہو پائے۔ روح کیا ہے؟ ابھی تک یہ معمہ حل نہیں ہو اور روح کی نہ تو کوئی انفرادی شناخت ہو سکی ہے نہ ہی کوئی حتمی تعریف سامنے آئی ہے۔ اگرچہ آج روحانی واقعات و تجربات پر بے تحاشا تحقیق و تجربات کئے جا رہے ہیں روح پر بے تحاشا مواد موجود ہے لیکن آج بھی ماضی کی طرح جدید محقق یہی کہتے نظر آ رہے ہیں کہ روح کی تعریف ممکن نہیں۔ آخر ایسا کیوں ہے یہ جاننے کے لئے ہم مختلف ادوار میں کی جانے والی روح کی مختلف اور بہترین تعریفوں کا خلاصہ پیش کرتے ہیں۔ (جن کا تفصیلی تذکرہ ابتدائی صفحات میں ہو چکا ہے)۔

## 49۔ روح کی تعریفیں

کچھ لوگوں نے روح کی تعریف کرنے کی کوشش بھی کی ہے اور یہ کوشش بہت ہی مختصر ہے۔ لہذا ہزاروں برسوں کے کام سے مجھے روح کی چند ہی تعریفیں ملیں ہیں۔ اور ان چند روح کی تعریفوں میں سے زیادہ تر تو روح کی تعریفیں ہیں ہی نہیں۔ ہاں یہ تعریفیں محض روح کی تعریف کی کوششیں ضرور ہیں۔ امادی جسم کے علاوہ بھی کچھ ہے کیا اتنا کہہ دینا اتنا سمجھ لینا کافی ہے ہرگز نہیں۔ روح، سپرٹ، ہمزاد، AURA وغیرہ وغیرہ۔ کیا اتنا کہہ دینا کافی ہے۔ کیا یہ روح کی تعریف ہے؟ ہرگز نہیں۔ اگر ہم یہ کہیں کہ ہزاروں برس کے ادوار میں جو روح کی چند مختصر تعریفیں کی گئی ہیں ان تمام تعریفوں میں سے ایک آدھ تعریف صحیح تعریف بھی ہے۔ تو پھر یہ سوال پیدا ہوتا ہے ان میں سے وہ ایک صحیح تعریف کونسی ہے۔ اتنی متضاد تعریفوں میں سے صحیح تعریف کا اندازہ کرنا تقریباً ناممکن ہے اور ایسا کون کرے گا۔ ایسا صرف وہی کر سکتا ہے جو روح کا نہ صرف علم رکھتا ہے بلکہ روح

کو پورے طور پر شناخت کرنے کی اہلیت رکھتا ہے لیکن روح کے علم کی پوری تاریخ کا جائزہ لے لیجئے ایسا کوئی بھی نہیں عام لوگ تو جانتے ہی نہیں کہ کوئی روح بھی ہوتی ہے۔ جو جانتے ہیں وہ اس کا مشاہدہ نہیں کرتے جو مشاہدہ کرتے ہیں وہ اسے روح کے طور پر شناخت نہیں کرتے جو اسے روح کے طور پر شناخت کرتے ہیں وہ یہ کہتے ہیں یہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں یا اس روح کی تعریف کے لئے ہمارے پاس الفاظ نہیں۔ اگر میں یہ کہوں کہ ان تمام تعریفوں میں سے ایک تعریف روح کی تعریف ہے بھی تو وہ تعریف دراصل تعریف کے معیار پر بھی پوری نہیں اُترتی۔ لہذا اگر ہم یہاں یہ کہہ بھی دیں کہ فلاں فلسفی نے روح کی صحیح تعریف کی تھی تو یہ ماضی کی ایک آدھ صحیح تعریف محض روح کی تعریف کی انتہائی ابتدائی کوشش ہے۔ لیکن یہ انتہائی ابتدائی کوشش نہ تو روح کی تعریف ہے نہ ہی یہ کوئی روح کا علم کہلا سکتی ہیں۔

لہذا یہ تمام تعریفیں محض روح کی تعریف کی انتہائی ابتدائی کوششیں ہیں جو ظاہر ہے کامیاب نہیں رہیں۔

یعنی ہزاروں برسوں سے روح پر ایک مخصوص طبقے میں کام ہو رہا ہے مشاہدات و تجربات بھی کئے جاتے ہیں حتیٰ کی روح کا مشاہدہ و تجربہ بھی کیا جاتا ہے لیکن حیرت انگیز طور پر اسے دیکھنے جاننے کے باوجود آج تک کوئی اس کی تعریف تک نہیں کر سکا۔ روح کی یہ ہزاروں برس کی تعریفیں یہاں ہم نے جمع کی ہیں آئیے ذرا جائزہ لیتے ہیں۔

(1) - انیکسا غورٹ کا خیال ہے کہ روح ایک ایسی قوت ہے جو (حیوانات و نباتات) ہر جاندار اشیاء کے درمیان جاری و ساری ہے۔

(2) - دمقراط نے کہا روح چھوٹے چھوٹے ناقابل تقسیم ذروں پر مشتمل ہے

(3) - ارسطو نے کہا کہ یہ ایک ایسی اکائی ہے جو فی ذاتہ مکمل ہے

(4) - برطانیہ کے رابن فرامین نے روح کو متحرک یا داشت قرار دیا۔

(5) - ڈبلیو ایچ مارز کے خیال میں جسمانی شخصیت کے علاوہ بھی ایک شخصیت ہے جو مادی جسم

سے زیادہ اعلیٰ و ارفع ہے یہ موت کے بعد بھی برقرار رہتی ہے۔

(6) - ڈاکٹر ریمینڈ موڈی نے کہا کہ انسان محض مادی جسم نہیں بلکہ ایک اور سمت یا مکمل ذات ہے

جسے نفس SOUL، یا ادراک جو بھی کہیں وہ ہے ضرور۔

- (7) یونانیوں نے روح کو ذہن قرار دیا۔ یونانی فلسفیوں نے دو روحوں - (i) روح حیوانی اور (ii) روح انسانی کا تذکرہ بھی کیا۔
- (8) - مصر کے قدیم باشندوں نے بع اور کع کا تذکرہ کیا۔
- (9) - بدھٹ، سکھ، ہندو روح کو رب کا حصہ قرار دیتے ہیں اور روح کو آتما اور رب کو پرماتما کہتے ہیں۔
- (10) - مصر کے قدیم باشندوں نے بع اور کع کا تذکرہ کیا۔
- (11) -۔۔۔ قدیم چینوں نے پو P.O اور ہن HUN کا ذکر کیا۔
- (12) - یہودیوں نے تین روحوں (i) - NEFESH (ii) - RUACH اور (iii) NESHAMA کا ذکر کیا
- (13) اکثر مفکرین مثلاً ارسطو، امام غزالی، خواجہ شمس الدین عظیمی، شاہ ولی اللہ وغیرہ نے روح کو تین حصوں (i) روح حیوانی (ii) روح انسانی (iii) روح اعظم میں تقسیم کیا۔
- (14) - امام مالک، ابوالحق نے کہا کہ یہ جسم ہی کی طرح مکمل نورانی صورت یا جسم لطیف ہے۔
- (15) شاہ ولی اللہ نے روح کو روح یقطہ، روح انسانی، روح حیوانی اور نورانی نقطہ کہا
- (16) - علامہ حافظ ابن القیم نے نفس اور روح کو ایک ہی شے قرار دیا۔
- (17) - داتا گنج بخش نے کہا کہ روح ایک جنس اور باقی مخلوقات کی طرح ایک مخلوق ہے۔
- (18) - الکندی نے کہا کہ روح ایک سادہ غیر فانی وغیر مرکب ہے۔۔۔
- (19) - کسی نے روح کو لا شعور یا تحت لا شعور قرار دیا۔
- (20) - کسی نے اسے ایتھری جسم یا اسٹروپل پروجیکشن کہا۔
- (21) - کسی نے روح کو ماورائی مخلوق قرار دیا۔
- (22) - کسی نے کہا کہ مرنے کے بعد شخصیت کا کچھ حصہ باقی رہ جاتا ہے جو ان کے خیال میں روح یا (Spirit) ہے۔
- کسی نے اسے روشنی یا نور کہا۔ کسی نے اسے برقی رویا کرنٹ کہا۔ کسی نے کہا کہ روح جو ہر جسم کا تعلق بدن سے ہے
- (23) - سائنسدانوں نے بھی کرلین فوٹو گرافی سے ایک لطیف وجود کی تصویر کشی کی ہے جسے

انہوں نے " AURA " کہا ہے۔ اور AURA کے اندر مزید سات اجسام Subtle Bodies کا اور چکر از کا مشاہدہ کیا جا رہا ہے۔

## 50۔ اب آپ کی کیا رائے ہے؟

یہاں ہم نے مختلف ادوار کے مشہور و معروف مفکروں سائنسدانوں محققوں کی رائے پیش کی۔ یہ تمام روح کی رنگ برنگی مختلف اور متضاد تعریفیں پڑھنے کے بعد اب، روح کے بارے میں آپ کی کیا رائے ہے۔؟ ظاہر ہے کچھ بھی نہیں اتنی رنگ برنگی اور متضاد تعریفیں پڑھنے کے بعد ظاہر ہے سمجھ تو کچھ نہیں آسکتا ہاں انسان الجھن کا شکار ضرور ہو جاتا ہے اور یہ سوچنے پر مجبور ہو جاتا ہے کہ آخر روح ہے کیا؟ ہے بھی یا نہیں۔

یہ تو بالا آخر اس کی سمجھ میں نہیں آتا لیکن اس الجھن کے بعد روح کے بارے میں ڈھیروں کتابیں اور تفصیلات کے مطالعے کے بعد بھی یہی سمجھ میں آتا ہے کہ مادی جسم کے علاوہ کچھ ہے جسے انسان پھر بالا آخر مجبور ہو کر اپنے عقیدے ہی کے مطابق نام دینے پر مجبور ہے۔ لہذا کبھی وہ اسے روح کہتا ہے کبھی سپرٹ کبھی AURA کبھی نورانی وجود کبھی ہمزاد کبھی ایتھری جسم کبھی آسٹریل باڈی کبھی کرما کبھی چکر از وغیرہ وغیرہ۔۔۔۔۔۔ وغیرہ!

## 51۔ تمام تعریفوں کا نتیجہ

آج تک کی جدید تحقیق اور صدیوں پر مشتمل تمام تحقیقات کا کیا نتیجہ نکلا روح کا مطالعہ کر کے صرف آپ ہی نہیں الجھے حد تو یہ ہے جنہوں نے روح پر تجربات کئے ہیں جنہوں نے مشاہدے کئے ہیں جنہوں نے سو یوں برس کی تحقیق لیبارٹریوں میں کی ہے وہ بھی اسی کشمکش کا شکار ہیں جس کا کہ آپ۔ صدیوں برس کی تحقیق اور آج کے برس ہا برس کے تجربات و مشاہدات کے بعد ماہرین، محققین، سائنسدانوں کی بھی وہی رائے ہے جو ابتداء کے یونانیوں کی تھی یعنی مادی جسم کے علاوہ بھی کچھ ہے اور یہ کچھ کیا ہے؟ یہ ایک سوالیہ نشان بنا ہوا ہے جس پہ کہ بھی کی متفقہ رائے یہ ہے کہ اس روح کی تعریف ممکن نہیں۔ لہذا صدیوں کی تمام تحقیقات کا نتیجہ کیا نکلا کہ روح کی تعریف ممکن نہیں۔

## 52۔ روح کی تعریف ممکن نہیں

روح پر ہزاروں برسوں سے کام ہو رہا ہے۔ ہر دور کے مخصوص روحانی لوگ روح کا مشاہدہ بھی کرتے آئے ہیں۔ اور آج بھی روح کا تجربہ و مشاہدہ کرنے والے لوگ موجود ہیں لیکن آج تک نہ تو روح کی انفرادی شناخت ممکن ہوئی ہے نہ ہی اسکی کوئی تعریف ہی سامنے آسکی ہے۔ لہذا

۱۔ عام لوگ تو روح کو جانتے ہی نہیں۔

۲۔ جو جانتے ہیں وہ اسے انفرادی حیثیت میں شناخت نہیں کرتے۔

۳۔ جو شناخت کرتے ہیں وہ بھی اس کی تعریف نہیں کر سکتے۔

۱۸۸۲ء میں لنڈن میں ایک کمیٹی بنی اس کمیٹی کا مقصد یہ تھا کہ روح اور اس کے متعلقہ مسائل پر بحث کی جائے۔ اس کمیٹی میں یورپ کے ممتاز علماء اور سائنسدان شامل تھے۔ یہ کمیٹی تیس سال قائم رہی اور اس مدت میں اس نے حضرات ارواح کے مختلف واقعات کی چانچ پڑتال کی اور چالیس ضخیم جلدوں میں اپنے تاثرات کو شائع کیا۔ چالیس سال کی چھان پھٹک کے بعد کمیٹی اس نتیجے پر پہنچی کہ انسان کی جسمانی شخصیت کے علاوہ ایک اور شخصیت بھی ہے جو گوشت پوست کے جسم سے کہیں زیادہ مکمل اور اعلیٰ وارفع ہے۔ یہی اعلیٰ وارفع شخصیت موت کے بعد قائم اور برقرار رہتی ہے۔

مثلاً ڈبلیو ایچ مائزر (Frederic. W.H. Myers) نے اپنی کتاب

Human Personality and its survival of bodily death میں سینکڑوں پراسرار واقعات، حادثات، تجربات کا سائنسی تجزیہ کرنے کے بعد یہ نتیجہ اخذ کیا کہ جسمانی موت کے بعد انسان کا وہ حصہ باقی رہتا ہے جسے سپرٹ (Spirit) کہتے ہیں۔

ڈاکٹر ریمینڈ موڈی (1975) نے اپنی کتاب لائف آفٹر لائف میں مرکر زندہ ہونے والے ڈیڑھ سو افراد کے بیانات پر سائنسی تجربات و تجزیات کے بعد نتیجہ اخذ کیا کہ انسان محض مادی وجود نہیں بلکہ ایک اور سمت یا مکمل ذات ہے جسے نفس، Soul یا ادراک جو بھی کہیں وہ ہے ضرور۔

برطانیہ کے رابن فرامین کہتے ہیں ان تجربات میں کیسی ہی غلطی کیوں نہ معلوم ہوتی ہو انہیں رد نہیں کیا جاسکتا۔ وہ ہزاروں لوگ جو روحانی تجربات سے گذرنے کا دعویٰ کرتے ہیں سب خبطی یا جھوٹے تو نہیں ہو سکتے صرف برطانیہ میں ہر دس میں سے ایک شخص کو اس طرح کے تجربات ہوئے



ہیں۔ روحیں کیا ہیں؟ یہ ایک علیحدہ بات ہے۔ میرا خیال ہے کہ وہ ایک متحرک یادداشت ہیں اور روح نہیں ہیں۔ یہ ایسی یادداشت ہیں جو انسان کے مرنے کے بعد رہ جاتی ہیں۔ بعض صورتوں میں ایسے لوگ جو روحانی صلاحیتوں کے مالک ہیں انہیں دیکھ یا سن سکتے ہیں۔ جب یہ سمجھا جاتا ہے کہ کوئی روح کسی شخص کو خطرے سے بچا دیتی ہے یا اسے کوئی اہم معلومات مہیا کرتی ہے تو یہ اس شخص کا تحت الشعور ہوتا ہے جو یہ تصور پیدا کرتا ہے۔

خواجہ شمس الدین عظیمی کے مطابق روح ہمیشہ پردے میں رہتی ہے اور خود کو کسی نہ کسی لباس یا حجاب میں ظاہر کرتی ہے۔ روح کے بارے میں جتنے تذکرے ملتے ہیں اور جن لوگوں نے روح کی تعریف بیان کی ہے انہوں نے روح کو کسی نہ کسی شکل و صورت میں ہی بیان کیا ہے مثلاً روشنی، نور وغیرہ وغیرہ روشنی بھی ایک شکل ہے نور کی بھی ایک تعریف ہے۔ فی الواقع روح کیا ہے؟ اس کی ماہیت کیا ہے؟ اس کو واضح طور پر بیان کرنے کے لئے ہمارے پاس الفاظ نہیں ہیں۔

آج لاکھوں لوگ مراقبہ و مشاہدہ کرتے ہیں لہذا مشاہدہ کرنے والے بھی جب روح کا مشاہدہ کرتے ہیں تو یہی کہتے ہیں کہ یہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں۔ برسوں کی فکر برسوں کی تحقیق برسوں کے تجربات و مشاہدات کا نتیجہ کیا نکلا؟ مشاہدوں تجربوں کے بعد بڑی سوچ و بچار کے بعد بالآخر سب فلسفیوں سب سائنسدانوں سب روحانی عالموں کا متفقہ فیصلہ یہی ہے کہ یہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں!

## 53۔ روح کی تعریف کیوں ممکن نہیں

روح جو ہم خود ہیں کیا ہم خود کو نہیں جان سکتے۔؟ کیا ہماری اصل ہماری روح کی یعنی ہماری اپنی تعریف ممکن نہیں۔؟ روح کی تعریف عین ممکن ہے ناممکن کا لفظ بے کار ہے۔ سب کچھ ممکن ہے۔ لیکن کیا وجہ ہے کہ آج تک روح کی صحیح تعریف کا اور خود روح کا تعین نہیں ہو سکا۔ آئیے یہ جاننے کی کوشش کیجیے کہ آج تک روح کی تعریف کیوں نہیں ہو سکی۔

اس کی سب سے بڑی وجہ یہ ہے کہ آج تک روح پر تحقیق و تجربات کرنے والوں نے روح کو اس کے واضح انفرادی تشخص کے ساتھ کبھی شناخت ہی نہیں کیا صدیوں سے روح پر تحقیق کرنے والوں نے کبھی روح کی تعریف کی ہی نہیں وہ مختلف اجسام اور ہیولوں کو روح کے طور پر پیش کرتے

رہے ہیں۔ حقیقت یہ ہے کہ وہ روح کا علم رکھتے ہی نہیں تھے روح کو جانتے ہی نہیں تھے سو یوں برس کے لیبارٹریوں میں تجربات اور مشاہدات کے بعد بھی وہ روح کو شناخت کر ہی نہیں پائے۔ روح کی تمام تعریفوں میں چند تعریفیں ایسی ہیں جو صحیح ہیں قابل غور ہیں لیکن ان انتہائی ابتدائی چند الفاظ کو ہم روح کا علم یا روح کی تعریف نہیں کہہ سکتے

روح کی تعریف آج تک کیوں نہیں ہو سکی کیا غلطی کرتے رہے ہیں روح پر تجربات کرنے والے آج ہم اس کی نشاندہی کرتے ہیں۔ انیسویں صدی کے بعد روح پر باقاعدہ سائنسی بنیادوں پر لیبارٹری میں بہت کام ہوا ہے لیکن چونکہ روح مشاہدے میں نہیں لہذا یہ بنیادی غلطیاں کبھی کرتے رہے ہیں۔ وہ بنیادی غلطیاں مندرجہ ذیل ہیں۔

۱۔ کسی نے روح کو انفرادی حیثیت میں شناخت نہیں کیا۔ لہذا وہ جانتے ہی نہیں تھے کہ روح کیا ہے اور روح سے اسی لاعلمی کے سبب

۲۔ پچھلے تمام محقق انسان کے باطنی لطیف اجسام یعنی نفس کو روح کے طور پر پیش کرتے رہے۔ اگرچہ وہ روح کو جسم لطیف کہنا چاہتے تھے لیکن درحقیقت وہ اجسام کے چکر میں بُری طرح اُلجھ گئے۔ لہذا یہاں ہم نے دو غلطیوں کی نشاندہی کی ہے۔

۱۔ روح کی شناخت۔

۲۔ اجسام کا چکر۔

روح کی شناخت

روح کی آج تک انفرادی شناخت تو نہ ہو سکی لیکن اس بے شناخت فرضی روح کے لیے مختلف اقوام میں مختلف نام ضرور رائج ہیں آئیے ان بہت سارے ناموں میں سے روح کو اور اس کے اصل نام کو شناخت کریں

## 54۔ روح کے نام

بع، کعب، ذہن یا روح، نفس، روح حیوانی، روح انسانی، روح اعظم، NEFSH،  
ATIMAN، JIVA، SELF، SPIRIT، NESHAMA، RUACH یا آتما  
SOUL قدیم یونانی اسی لفظ کو زندہ (Alive) کے لیے استعمال کرتے تھے لہذا اویسٹرن فلاسفرز

کے خیال میں بھی لفظ SOUL اور Aliveness ہم معنی ہیں۔

پو PO ، ہن HU ، اور AURA ، سبیل باڈیز Subtle Bodies ، چکراز Chakras ، جسم لطیف ، جوہر ، روشنی ، نور ، نقطہ ، لاشعور ، تحت لاشعور ، متحرک یادداشت ، ایتھری جسم ، اسٹروپرو جیکشن ، ماورائی مخلوق ، اعلیٰ وارفع شخصیت ، برقی رویا کرنٹ ، وغیرہ وغیرہ۔

سائنسدانوں نے بھی کرلین فوٹوگرافی (Karlain Photography) کے ذریعے ایک روشنی کے وجود (AURA) کی تصوری کشی کی ہے۔ اکثر لوگ اسے ہی روح قرار دیتے ہیں

## 55۔ یہ سب نام کیا ہیں

(1) کیا یہ سب روح کے نام ہیں ؟  
 (2) یا یہ مختلف اجسام کے مختلف نام ہیں ، اگر یہ مختلف ہیں تو پھر ان تمام کی انفرادی شناخت کا کیا معیار ہے ؟

(3) یا یہ سب نام روح کے حصوں کے نام ہیں ؟

(4) یا ان سب ناموں میں سے کوئی ایک نام روح کا ہے ؟

(5) اگر ان میں سے کوئی ایک روح ہے تو وہ کونسی ہے ؟

جو نام ہم نے یہاں اکٹھے کئے ہیں یہ نام عموماً روح کے بارے میں معلومات رکھنے والے روح ہی کے لئے مختلف زبانوں یا عقیدوں کے مطابق استعمال کرتے ہیں۔

(1) لیکن یہ سب نام روح کے نام نہیں ہیں۔

(2) ان میں زیادہ تر نام تو روح کے لیے استعمال کیئے گئے ہیں لیکن روح کو شناخت کیئے بغیر۔ فرضی نام۔

(3) یہ روح کے حصے بھی نہیں ہیں جیسا کہ بیان کیا گیا ہے۔

(4) دراصل یہ انسانی باطن کے مختلف اجسام کے مختلف نام ہیں جنہیں مشاہدہ کرنے والے روح کے طور پر شناخت کرتے ہیں۔ حالانکہ یہ تمام لطیف اجسام نہ تو روح ہیں نہ ہی روح کے حصے۔

(5) ان ناموں میں ایک آدھ نام اور ایک آدھ تعریف روح کی بھی ہے لیکن روح کو روح کے طور

پر شناخت نہیں کیا جاتا۔

اور ان تمام غلطیوں کا سبب ہے باطن سے لاعلمی۔

ہم رورن کا علم نہیں رکھتے لہذا اس کو شناخت نہیں کر پاتے۔ دوسرے ہم اپنے باطن کا علم بھی نہیں رکھتے لہذا روح کے علاوہ تمام اجسام کو بھی روح کے طور پر شناخت کرتے ہیں اور روح کو روح کے طور پر شناخت ہی نہیں کر پاتے آج تک ان تمام ناموں میں سے روح کی شناخت ممکن نہیں ہوئی یہی وجہ ہے کہ ہم اتنے ناموں میں سے شناخت نہیں کر سکتے اور اس شناخت نہ کر سکنے کی دو بڑی وجوہات ہیں۔

(1)۔ روح سے لاعلمی۔

(2)۔ باطن سے لاعلمی۔

## 56۔ باطن سے لاعلمی

جس طرح ایٹم کے اندر ایک وسیع جہان دریافت ہو چکا ہے اور مزید دریافتیں جاری ہیں۔ اسی طرح اتفاقاً آج سائنسدانوں نے اپنے اندر جھانک کر اپنے باطن کا بھی مشاہدہ کر لیا ہے۔ اور وہ اپنے اندر آباد اس وسیع جہان کو دیکھ کر حیران ہو رہا ہے جس کی دریافت تو ہو گئی ہے لیکن شناخت ہونا باقی ہے۔ ویسے تو جہان باطن کا مشاہدہ کرنے والے ہر دور میں موجود رہے ہیں اور آج بھی ہیں لیکن آج جہان باطن کی دریافت جدید سائنسی طریقوں سے بھی ہو گئی یعنی حجت تمام ہوئی مادہ پرستوں کی۔ ان کی یہ ضد تھی کہ ایسی چیز کو کیوں مانیں جو نظر نہیں آتی۔ بحر حال باطن کا مشاہدہ کرنے والے جب مشاہدہ کرتے ہیں تو دو غلطیاں کرتے ہیں

(1) وہ باطن کے تمام لطیف اجسام کو روح یا روح کے حصوں کے طور پر متعارف کرواتے ہیں۔

(2) وہ ان تمام میں سے روح کو شناخت نہیں کر پاتے۔

یا وہ انسان کے لطیف اجسام کو AURA، چکر، یا سپیل باڈیز کا نام دے دیتے ہیں۔ یہ تمام سنگین خطائیں ہیں۔ یعنی مشاہدہ کرنے والے جہان باطن کا مشاہدہ تو کر رہے ہیں لیکن وہ اسے شناخت نہیں کر پائے اور اسے بری طرح خلط ملط کر کے رکھ دیا ہے۔ اور سب نے اسے مختلف ناموں سے پکارا ہے جس سے یہ معاملہ سلجھ نہیں رہا مزید الجھ رہا ہے۔

اب سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ کیا یہ روح کے یا باطن کے جتنے نام بیان ہوئے ہیں کیا انسان کے اندر اتنے ہی نظام کام کر رہے ہیں اور باطن کا مشاہدہ کرنے کے باوجود وہی صدیوں کے سوال جوں کے توں حل طلب ہیں کہ ان میں سے روح کونسی ہے کیا یہ سب روح اور اس کے حصے ہیں تو جواب ہے نہیں۔ تو پھر یہ سب لطیف اجسام کیا ہیں؟ اور ان تمام تر ناموں کی اصل کیا ہے؟ مثلاً میں روبینہ نازلی ہوں اگر فارسی میں مجھے کسی اور نام سے پکارا جائے عربی میں اور انگلش میں اور یعنی چالیس زبانوں میں مختلف ناموں سے پکارا جائے یا تذکرہ کیا جائے تو پھر یہ اندازہ کرنا محال ہے کہ یہ تذکرہ ایک فرد کا ہے یا 40 افراد کا اور یہ تمام چالیس تذکرے علیحدہ علیحدہ تذکرے تصور کیئے جائیں گے جن کا باہم ربط قائم کرنا ناممکن ہے۔

یہی حال ہوا ہے روح کا اور انسان کے باطن کا اور ان کے ناموں کا۔ انسان کا باطن اور روح ایسی شے ہے کہ ہر ایک وجود ہر شے کا انفرادی تشخص قائم ہونا ضروری ہے ہر ایک کا مخصوص نام ہونا ضروری ہے جیسا کہ یہ مسئلہ حل ہوگا۔

(1)۔ ابھی مسئلہ یہ ہے کہ ہم روح کی شناخت نہیں رکھتے نفس کو نہیں جانتے باطنی اجسام کی انفرادی شناخت نہیں رکھتے اور مزید یہ کہ؛

(2)۔ ان تمام کے نام ہر شخص نے الگ الگ زبان میں الگ الگ رکھ لیے ہیں اور؛

(3)۔ مزید یہ کہ ہر روح و نفس و لطیف اجسام کے ناموں کو ایک ہی فہرست میں روح کے نام کے طور پر درج کر دیا ہے۔

اب کرنا یہ ہے کہ:-

(1)۔ ہر روح، نفس و لطیف اجسام کی الگ الگ انفرادی شناخت قائم کرنی ہے۔

(2)۔ ان کے ناموں یا صحیح ناموں کا تعین کرنا ہے۔

(3)۔ ان تمام کا باہمی ربط قائم کرنا ہے۔

۔ ان تمام کی حیثیت کا تعین کر کے ان کی صحیح تعریف اور تعارف پیش کرنا ہے۔

(5)۔ ان تمام کو مربوط کر کے ہی مجموعی انسان کی تعریف ممکن ہو سکے گی۔

روح اور باطنی اجسام کے قدیم اور مخصوص نام ہیں اور ان تمام کو انفرادی و اجتماعی حیثیت میں شناخت کر کے ہی یہ پیچیدہ مسئلہ حل کیا جاسکتا ہے۔

## 57۔ اجسام کا چکر

اصل مسئلہ یہ ہے کہ پچھلے تمام مفکر تجزیہ نگار فلسفی روحانیت سے وابستہ افراد حتیٰ کے جنہوں نے خود روح کا مشاہدہ کیا ہے وہ بھی مختلف اجسام کے چکر میں پھنس گئے ہیں۔ وہ روح نفس اور جسم کی گتھی کو سلجھا نہیں سکے ہیں اگرچہ وہ تینوں کا تذکرہ کرتے رہے ہیں کبھی وہ روح کا ذکر کرتے ہیں کبھی روشنیوں کے جسم کا کبھی نور کے جسم کا کبھی ہمزاد کا ابھی تک وہ اجسام کی اس تکون کو سلجھا نہیں سکے ہیں وہ

۱۔ نہ تو ان اجسام کا کوئی باہم ربط قائم کر سکے ہیں اور نہ ہی ان کی الگ الگ توضیح و تشریح کر سکے ہیں ایک طرف تو وہ تین چار یا سات اجسام لطیف کا تذکرہ کرتے ہیں جبکہ دوسری طرف جب وہ ۲۔ روح کا تذکرہ کرتے ہیں تو ان میں سے ہر جسم لطیف کو روح کہتے نظر آتے ہیں۔ جب وہ AURA کا مشاہدہ کرتے ہیں تو اسے ہی انسان کا اصل تشخص یا روح قرار دیتے ہیں جب وہ نورانی وجود کا مشاہدہ کرتے ہیں تو اسے ہی روح قرار دیتے ہیں۔

۳۔ اور جب روح کو دیکھتے ہیں تو اسے بھی روح قرار دیتے ہیں۔

۴۔ روح کو ناقابل تقسیم قرار دیتے ہیں۔

۵۔ پھر لطیف اجسام کو روح کے حصے بھی کہتے ہیں۔

ایسا کرتے ہوئے وہ خود اپنی تضاد بیانی میں الجھ جاتے ہیں جب اس گورکھ دھندے کو سمجھ نہیں پاتے تو کہہ دیتے ہیں کہ روح کی تعریف ممکن نہیں نہ تو وہ روح کو واضح شناخت کے ساتھ پہچان پائے ہیں نہ ہی وہ ان تین یا سات اجسام کی صحیح توضیح و تشریح ہی کر پائے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ وہ روح کی صحیح تعریف نہیں کر پاتے جس نے کوشش کی وہ کامیاب نہیں ہوا اگرچہ اس نے مشاہدہ ہی کیوں نہ کیا ہو وہ روح کو بیان کرنے سے قاصر ہے۔

پہلے تو روح و جسم کا ہی مسئلہ تھا لیکن آج روح پر تجربات کرنے والوں نے روح نفس، جسم کے علاوہ جن، فرشتے، شیطان اور دیگر مخلوقات کو خلط ملط کر کے فقط ایک نام دے دیا یعنی ماورائی مخلوق۔ دراصل وہ ان تمام مخلوقات کا مشاہدہ تو کرتے ہیں ان پر تجربات تو کرتے ہیں تجزیے اور تخمینے تو لگاتے ہیں لیکن حقیقت یہ ہے کہ نہ تو وہ ان تمام مخلوقات یا مختلف اجسام میں کوئی تمیز ہی رکھتے ہیں اور نہ ہی ان کے پاس ان تمام مخلوقات کا کوئی علم ہے یہی ہے اصل مسئلہ پچھلے اور آج تک کے تمام

مفکروں نے سائنسدانوں نے تمام مخلوقات کو خلط ملط کر کے آج اسے ایک گھمبیر مسئلہ بنا دیا ہے۔ (اب بتا کون سے دھاگے کو جدا کس سے کریں)۔ وہ یہ کام تو نہیں کر سکتے ہاں یہ ضرور کہہ دیتے ہیں کہ وہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں یہ بذات خود ایک مضحکہ خیز بات ہے کہ روح جو ہم خود ہیں ہماری تعریف ممکن نہیں۔

اب ذرا ہم بڑا زور لگا کے بڑی کوشش کر کے روح کو اس ماوراء کے صدیوں بڑے ڈھیر سے باہر نکالنے کی کوشش کرتے ہیں ہیں ایسی ہی کوششیں ہمیں باقی مخلوقات کے لئے بھی کرنا ہوں گی جب تک ہم کسی شے کے بارے میں جانتے ہی نہیں کسی بھی واقعے کا تجزیہ جانچ پڑتال تو آپ نے کر لی لیکن آپ یہ نہیں جانتے کہ ڈھیروں مخلوق میں سے یہ کس کی کارستانی ہے تو یہ تجزیے یہ جانچ پڑتال محض خیالی پلاؤ ہیں یا ہوا میں تیر چلانے کے مترادف دوسرا بڑا مسئلہ یہ ہے کہ ابھی تک روح کی نشاندہی نہیں ہو سکی ہے روح کی جتنی بھی تعریفیں ہیں وہ سبھی غلط ہیں۔ روح کی تعریف اسی صورت میں ممکن ہے کہ پہلے ہم اجسام لطیف کی صحیح تعریف کریں اور اجسام کے گھمبیر چکر کو سلجھائیں اس کے بعد روح کی انفرادی شناخت قائم کریں تبھی روح کی تعریف ممکن ہے۔

## 58۔ اجسام کا مسئلہ حل ہو چکا:

لہذا پچھلے صفحات میں ہم یہ وضاحت نفس کے عنوان کے تحت کر آئے ہیں کہ:

- (1) تمام تر لطیف اجسام روح نہیں ہیں۔ نہ ہی یہ لطیف اجسام روح کے حصے ہیں
- (2) تمام تر لطیف اجسام محض جسم ہیں مادی جسم کی طرح۔ لیکن مادی جسم سے مختلف۔
- (3) اور تمام اجسام نفس کے ذمے میں آتے ہیں۔

آئیے اب روح کو انفرادی حیثیت میں شناخت کریں اور روح کی تعریف اور تعارف پیش کریں۔

## روح

## نئے نظریات

سوال نمبر۔ روح کیا ہے؟  
اس سوال کا جواب نئے نظریات کے ذریعے دیا جاتا ہے۔

## 59۔ روح کی تعریف

بڑے بڑے روحانی ماہر فلسفی، دانشور روح کی تعریف سے معذوری کا اظہار کرتے رہے ہیں۔ کچھ بڑے مفکروں کی جو روح سے متعلق چند تعریفیں ہمیں میسر ہیں وہ تعریف کے معیار پر بھی پوری نہیں اترتیں نہ ہی وہ روح کی تعریفیں ہیں۔ حتیٰ کے آج روحانیت کے بڑے بڑے ادارے قائم ہیں، کروڑوں لوگ ان اداروں سے وابستہ ہیں مراقبہ کے ذریعے روح کا مشاہدہ کرنے والے بھی موجود ہیں لیکن یہ سب روحانیت کے دعوے دار بڑے روحانی ماہرین بھی آج تک روح کی تعریف نہیں کر پائے کہ آخر یہ روح ہے کیا؟

روح کیا ہے؟ یہاں ہم چند الفاظ میں روح کی تعریف کریں گے جس کو ہم روح کا فارمولہ کہیں گے اور پھر ہم ان چند الفاظ یعنی روح کے فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے تب جا کر روح کی تعریف ممکن ہوگی۔

## 60۔ روح کیا ہے؟

نظریہ نمبر:- ﴿31﴾ - ﴿روح جسم نہیں ہے۔﴾

نفس AURA روح نہیں ہے۔

نور کا جسم روح نہیں ہے۔

کوئی بھی لطیف جسم روح نہیں ہے۔



روح جسم ہے ہی نہیں۔

یعنی انسان کی اصل اس کی روح جسم نہیں ہے۔

جبکہ ماضی میں ہمیشہ روح کو جسم لطیف کے طور پر متعارف کروایا گیا ہے جسم تو مر جاتے ہیں فنا ہو جاتے ہیں اجسام کا تو نام و نشان نہیں رہتا چاہے وہ مادی جسم ہو یا کوئی بھی لطیف سے لطیف جسم ہو سب فنا ہو جاتے ہیں۔ لیکن انسان اپنی تمام تر خصوصیات، احساسات، جذبات، شخصیت سمیت جوں کا توں موجود رہتا ہے۔ بغیر کسی جسم کے! کیسے؟ کیونکر! انسان اور جسم لازم و ملزوم ہیں۔ انسان نے خود کو ہمیشہ مجسم ہی تصور کیا ہے لہذا

انسان بغیر جسم کے بھی موجود ہو سکتا ہے

انسان کے لیے یہ تصور ہی ناقابل فہم ہے کہ اس کا کوئی جسم نہ ہو اور وہ پھر بھی موجود ہو۔ یہی عجیب تصور کبھی انسان کے ذہن میں نہیں سما سکا۔ یہی وجہ ہے روح کی تعریف نہ ہو سکنے کی لہذا جب بھی انسان نے بغیر جسم کے اپنا یعنی اپنی روح کا مشاہدہ کیا تو وہ روح کو دیکھنے اور پہچاننے کے باوجود کبھی روح کی تعریف نہیں کر سکا۔ انسان جسم کے بغیر روح کے طور پر کبھی خود کو متعارف نہیں کروا پایا۔ کیونکہ اس حقیقت کو جانتے بوجھتے ہوئے بھی کبھی اس کے ذہن نے قبول نہیں کیا کہ انسان جسم کے بغیر بھی موجود ہو سکتا ہے۔

دراصل مادی جسم یا لطیف اجسام تو انسان کے لباس ہیں پنجرے ہیں جن میں یہ انسان قید ہے۔ اجسام سے چھٹکارا پا کر ہی انسان اپنی پوری آب و تاب کے ساتھ نمایاں ہوتا ہے وہی انسان جسے ہم مادی جسم کے روپ میں دیکھتے ہیں سوچتے سمجھتے اور جانتے ہیں وہی مادی جسم والا انسان بغیر جسم کے بھی جوں کا توں موجود ہے اسی کو ہم روح کہتے ہیں۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ یہ انسان کی روح کیا ہے جو جسم کے بغیر بھی موجود ہے۔

## 61۔ روح و اجسام

نظریہ نمبر: ﴿32﴾۔ ﴿پس روح و اجسام الگ الگ ہیں۔﴾

(1) تمام تر لطیف اجسام نہ تو روح ہیں نہ ہی روح کے حصے۔

(2) تمام تر اجسام نفس کے ذمے میں آتے ہیں یا اجسام نفس ہیں۔

(3) روح اجسام سے مختلف شے ہے۔

(4) پس روح و اجسام الگ الگ منفرد ہیں۔

روح مادی جسم یا لطیف اجسام سے یکسر الگ اور منفرد شے ہے اور اجسام بھی الگ الگ اپنی انفرادیت رکھتے ہیں۔ روح کی شناخت اور اس کی صحیح تعریف میں سب سے بڑی رکاوٹ ہی یہ رہی ہے کہ روح کو اجسام لطیف کے طور پر شناخت کیا جاتا رہا ہے۔ جبکہ تمام تر اجسام مختصر المدت اور فانی ہیں۔ ان لطیف اجسام کے مشاہدے تجربے کرنے والے ان مختلف لطیف اجسام کی کبھی کوئی واضح توضیح و تشریح نہیں کر پائے لہذا ان اجسام کے چکر میں ہی الجھ گئے لہذا آگے کیسے بڑھتے۔ کیسے روح کو شناخت کرتے جب وہ کبھی ان مختلف النوع لطیف اجسام کا مطلب ہی نہیں سمجھ پائے اور انہیں ہی روح اور روح کے حصے قرار دے کر خود ہی اپنی تضاد بیانی میں الجھتے رہے ایک طرف روح کو ناقابل تقسیم کہہ کر پھر اس کے تین یا سات حصے بھی گنوا دیتے تھے لہذا وہ اجسام جو فانی ہیں انہیں روح کے طور پر پیش کر کے روح کی تعریف کرنے کی کوشش کی جاتی رہی تو بھلا روح کی تعریف کیسے ممکن تھی۔

آئیے ماضی کے سارے ابہامات کو دور کر کے روح کی تعریف کرتے ہیں۔

## 62۔ روح کا فارمولہ

نمبر: ﴿33﴾۔ روح کیا ہے؟ روح کی تعریف کرنے کے لیے یہاں میں چند الفاظ میں روح کا دس نکاتی فارمولہ بیان کرتی ہوں۔ پھر اس فارمولے کی مسلسل وضاحت کروں گی تب جا کر روح کی تعریف مکمل ہوگی۔ لہذا روح کا دس نکاتی فارمولہ درج ذیل ہے۔

روح

↓

نکتہ ہے

↓

یہ نکتہ انرجی ہے

↓  
 انرجی زندگی ہے  
 ↓  
 زندگی مرتب پروگرام ہے  
 ↓  
 مرتب پروگرام متحرک ہے  
 ↓  
 حرکت ارتعاش کے سبب ہے  
 ↓  
 ارتعاش ایک آواز کا ہے  
 ↓  
 آواز ایک حکم ہے  
 ↓  
 حکم خالق کائنات کا ہے  
 ↓  
 یہ حکم مسلسل نشر ہو رہا ہے

یہاں ہم نے روح کی تعریف دس نکاتی فارمولے کے ذریعے کی ہے  
 سادہ لفظوں میں ہم اس دس نکاتی فارمولے کو یا روح کی تعریف کو یوں بیان کریں گے یا روح کی  
 تعریف کو سادہ لفظوں میں بیان کرنے کے لئے ہمیں یہ کہنا ہوگا کہ  
 "روح خالق کائنات کا حکم ہے"

اب ہم اس دس نکاتی فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے۔ کہ یہ روح یا یہ نکتہ کیا ہے؟ انرجی  
 کیا ہے؟ زندگی کیا ہے؟ مرتب پروگرام سے کیا مراد ہے؟ ارتعاش کیا ہے؟ حرکت کیا ہے؟  
 آواز کیا ہے؟ حکم کیا ہے؟ خالق کائنات کا حکم کیا ہے؟ اور یہ خالق کائنات کا حکم کیسے انسان کی

صورت اختیار کر رہا ہے

اس دس نکاتی فارمولے کی مسلسل وضاحت کے بعد انسانی کام کی تاریخ میں پہلی مرتبہ روح کی تعریف مکمل ہوگی۔ نہ صرف روح کی تعریف ہوگی بلکہ انسان بھی کھل کر اپنے واضح تشخص کے ساتھ ابھر کر سامنے آئے گا۔

آئیے روح کی تعریف کرنے کے لیے اب اس دس نکاتی فارمولے کی مسلسل وضاحت کرتے ہیں۔

۱۔ روح نکتہ ہے

نظریہ نمبر: ﴿34﴾۔ ﴿روح ایک نکتہ ہے﴾۔

روح ایک ایسا انتہائی چھوٹا وجود ہے جو ہماری مادی آنکھ سے اوجھل ہے نکتے سے ہماری کیا مراد ہے اور انسان کی اصل روح کو آخر ہم نے نکتہ کیوں کہا ہے؟ اس کی وضاحت ہم ایک مشہور، سادہ اور عام مثال سے کرتے ہیں۔

اگر آپ کسی باریک پن سے سادہ سفید صفحے کے اوپر ایک نقطہ لگائیں پھر کسی سے پوچھیں آپ کو اس صفحے پر کیا نظر آ رہا ہے؟ تو وہ جواب میں کہے گا کہ مجھے تو اس صفحے پر کچھ نظر نہیں آ رہا یہ سادہ صفحہ ہے۔ یہ جواب اس نے اس لئے دیا کہ وہ صفحے پر نقطے کی موجودگی سے ناواقف ہے اور اسی ناواقفیت کی وجہ سے صفحے پر موجود انتہائی چھوٹا نقطہ اس کو نظر نہیں آ رہا جبکہ آپ صفحے پر نقطے کی موجودگی اور مقام سے واقف ہیں لہذا جانتے ہیں کہ صفحے پر نقطہ موجود ہے۔

روح بھی ایسے ہی نکتے کی مانند وجود ہے اور یہ انتہائی چھوٹا وجود مادی آنکھ سے اوجھل ہے۔ یہی وجہ ہے کہ اکثریت نے اپنی روح کو نہیں دیکھا اور چونکہ ہم اپنی روح کو نہیں دیکھ پاتے لہذا اسے جانتے ہی نہیں یعنی ہماری خود سے اپنی روح سے ناواقفیت کی ایک بڑی وجہ یہی نہ دیکھ پانا ہے۔ بہت ہی کم لوگ (روحانی مشقوں وغیرہ کی بدولت) روح کا مشاہدہ کرتے ہیں لیکن وہ بیچارے روح کا مشاہدہ تو کرتے ہیں لیکن اسے روح کے طور پر شناخت نہیں کر پاتے۔ بعض اس نکتے کو انسان کے اصل تشخص کے طور پر شناخت کرتے بھی ہیں تو وہ کبھی اسے بیان نہیں کر پائے وہ کبھی بھی اس نکتے کو اصل انسان قرار نہیں دے پائے۔ کیونکہ ان کے ذہن نے کبھی اس حقیقت کو قبول

نہیں کیا کہ انسان بغیر جسم کے ایک ننھے نکتے کی صورت میں بھی ہو سکتا ہے۔

روح سے ناواقف لوگ تو سادہ صفحے پر نقطے کی طرح روح کی موجودگی تک سے بے خبر ہیں۔ نہ جاننے والوں کو اس کا کچھ علم ہے نہ ہی وہ انہیں نظر آ رہی ہے وہ تو اس کا نام بھی نہیں جانتے اور اسے وہم تصور کر کے جاننا بھی تو ہم پرستی تصور کرتے ہیں یعنی خود کو جاننے کو تو ہم پرستی قرار دیتے ہیں لہذا روح جس کا عام طور پر تصور بھی محال ہے ایسا معلوم اور پیچیدہ مسئلہ ہے کہ عام آدمی کے نزدیک جسکا کوئی حل نہیں۔ لیکن جنہیں یہ نظر آ رہی ہے وہ بھی حیران ہیں روح کا مشاہدہ اور تجربہ کرنے والوں کے لئے بھی یہ سمجھنا یا سوچنا بہت مشکل ہے کہ یہ نکتہ انسان کی اصل کیونکر ہے؟ یہی نکتہ روح جو عام نظر و فہم سے پوشیدہ ہے اور دیدہء بینا کے سامنے ہوتے ہوئے بھی فہم سے ماوراء۔ یہی ننھا وجود روح انسان کی اصل ہے جو کبھی فنا نہیں ہوتا۔ یہی روح مادی جسم اور لطیف اجسام تیار کرتی ہے یہی اجسام کو مربوط کر کے انسانی صورت دیتی ہے۔ تمام اجسام مفروضے اور یہی روح حقیقت ہے۔ یعنی روح اصل ہے تو باقی انسان اسی روح کی مفروضہ شکل۔ اب یہ تو فیصلہ ہو گیا کہ

روح مادی جسم کی مانند جسم نہیں ہے۔ نہ ہی لطیف اجسام روح یا روح کے حصے ہیں۔ روح جسم ہے ہی نہیں بلکہ روح ایک انتہائی چھوٹا وجود ہے۔

جسے ہم نے یہاں نکتے سے تشبیہ دی ہے۔ اب سوال یہ ہے کہ یہ نکتہ کیا ہے؟

سب سے چھوٹا وجود

نظر یہ نمبر:- ﴿35﴾۔ ﴿یہ نکتہ روح سب سے چھوٹا وجود ہے۔﴾

روح کائنات کا سب سے چھوٹا وجود ہے لیکن یہ نہ تو ذرہ ہے نہ ہی جسم۔

کافی عرصہ تک سائنسدان ایٹم کو سب سے چھوٹا ذرہ قرار دیتے رہے ہیں۔ جب ایٹم کو سب سے چھوٹا ذرہ سمجھا جاتا تھا تو اس سب سے چھوٹے ذرے سے مراد یہ تھی کہ اب یہ وجود ناقابل تقسیم ہے۔ ایٹم کا مطلب ہی نہ تقسیم ہونے والا ہے۔ لیکن ایٹم کے بعد الیکٹران، پروٹان، فوٹان وغیرہ کی دریافت سے یہ نظریہ غلط ثابت ہو گیا۔ ایٹم اور آج تک دریافت ہونے والے تمام ذرات تقسیم در تقسیم دریافت ہو رہے ہیں۔

یہ تمام بڑے سے بڑے اور چھوٹے سے چھوٹے ذرات دراصل انرجی اور ماس پر مشتمل ہیں۔

اور ہر وہ ذرہ جو انرجی اور مادہ پر مشتمل ہو وہ تقسیم ہونے والا ذرہ ہے چاہے وہ کتنا ہی چھوٹا ذرہ کیوں نہ ہو۔

یہ تقسیم صرف روح پر آ کر ختم ہوتی ہے روح ہی وہ سب سے چھوٹی شے ہے جو ناقابل تقسیم ہے۔ روح کے علاوہ باقی ہر وجود تقسیم ہو جاتا ہے۔ ہر وجود کی ابتداء یہی روح کرتی ہے اور ہر وجود تقسیم در تقسیم جو باقی بچتا ہے وہ یہی روح ہے۔

روح ہی وہ شے ہے جو نہ تو تقسیم ہوتی ہے اور نہ ہی ختم ہوتی ہے۔ لیکن یہ روح ذرہ نہیں کیونکہ اس میں مادہ نہیں ہے اسی لئے ہم نے روح کو نکتے سے تشبیہ دی تھی۔ اگر روح مادہ نہیں تو پھر روح جسے ہم نے یہاں نکتہ کہا ہے کیا ہے۔

۲۔ یہ نکتہ انرجی ہے:

نظر یہ نمبر: ﴿36﴾ - ﴿روح انرجی ہے﴾۔

روح کائنات کا سب سے چھوٹا وجود فقط انرجی ہے۔

اس کے علاوہ کائنات کا ہر وجود ماس اور انرجی پر مشتمل ہے جبکہ روح فقط انرجی ہے۔ روح ہر قسم کے تعاملات سے پاک ہے اسی لئے ہم نے روح کو نکتے سے تشبیہ دی تھی اسے ذرہ نہیں کہا۔

کائنات کے ہر وجود کی طرح انسان بھی ماس (مادی جسم) اور انرجی (روح) کا مجموعہ ہے۔

یہ انرجی کیا ہے اس کا تفصیلی تذکرہ آگے آئے گا۔ لیکن یہ جو روح کو ہم نے یہاں انرجی کہا ہے تو یہ وہ انرجی ہرگز نہیں ہے کہ انرجی کی جن تمام تر حیثیتوں سے ہم آج واقف ہیں۔

یہ انرجی یعنی روح انرجی کی تمام تر قسموں سے الگ ایک شے ہے۔

۳۔ انرجی زندگی ہے

نظر یہ نمبر: ﴿37﴾ - ﴿انرجی یعنی روح زندگی ہے﴾۔

یعنی روح انرجی ہے اور یہ انرجی ہی جسم یا اجسام کی زندگی ہے۔

AURA مادی جسم کے لئے فیول کی مانند ہے۔ جب تک AURA جسم میں موجود ہے مادی جسم متحرک ہے۔ جب یہ AURA (نفس) مادی جسم سے چلا جاتا ہے تو مادی جسم بے حرکت

ہو جاتا ہے لیکن مرتا نہیں لیکن یہ جسم اب چونکہ روح کی اطلاعات کے مظاہرے کے قابل نہیں رہا لہذا روح اس جسم کو چھوڑ دیتی ہے اور روح کے چھوڑنے سے یہ جسم مردہ ہوتا ہے۔

یعنی جسم کی حرکت AURA ہے تو جسم کی زندگی روح ہے۔

مادی جسم ہوں یا لطیف اجسام روح کی موجودگی سے موجود ہیں۔۔ یعنی

ہر وجود روح کی وجہ سے موجود ہے۔ ہر وجود کی زندگی یہی انرجی یعنی روح ہے۔ یعنی زندگی روح ہے۔

روح کی تعریف میں ہم نے بتایا تھا کہ روح ایک نکتہ ہے نکتہ انرجی ہے اور یہ انرجی ہی زندگی ہے اور یہ زندگی ایک مرتب پروگرام ہے اب ہم جائزہ لیں گے کہ زندگی کیسے ایک مرتب پروگرام ہے

۴۔ زندگی مرتب پروگرام ہے:

نظریہ نمبر: ﴿38﴾۔ ﴿زندگی یعنی روح مرتب پروگرام ہے﴾۔

یعنی روح ماضی، حال اور مستقبل کا مرتب پروگرام ہے۔ روح ہارڈ ڈسک ہے جس میں انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا تمام پروگرام محفوظ ہے۔

یہ انتہائی چھوٹا وجود روح نہ صرف جسم یا اجسام کی زندگی ہے بلکہ یہ وجود بے انتہاء خصوصیات کا حامل ہے۔ اس ننھے وجود روح میں انسان کے ماضی حال اور مستقبل کا تمام پروگرام محفوظ ہے۔ یعنی روح ایک مائیکرو فلم ہے جس میں انسان کا پورا ڈیٹا محفوظ ہے۔ انسان کا ماضی، حال اور مستقبل کیا ہے اسے مادی و لطیف اجسام کی صورت میں کیا کیا اعمال کرنے ہیں ہر حرکت اور ہر انسانی عمل کی مکمل تفصیل اس انتہائی چھوٹے وجود میں موجود ہے۔

مادی اور لطیف اجسام (نفس) روح کے اسی مرتب پروگرام کی اطلاعات کی روشنی میں عمل کرتے ہیں۔

یعنی اجسام کی حرکت و عمل روح کی اطلاعات کا نتیجہ ہیں۔

لہذا اجسام کی ہر حرکت روح میں مرتب ہے یا انسان کا ماضی حال اور مستقبل ایک مرتب پروگرام ہے جو روح میں محفوظ ہے۔

۵۔ پروگرام متحرک ہے:

نظریہ نمبر: ﴿39﴾۔ ﴿یہ مرتب پروگرام (روح) متحرک ہے۔﴾

انسان کا ماضی، حال، مستقبل کا ریکارڈ ساکت نہیں بلکہ متحرک پروگرام ہے۔

بھوک لگی ہے، سونا ہے، جاگنا ہے، رونا ہے، مرنا، جینا یہ سب روح کا مرتب پروگرام ہے۔ جو اجسام کی صورت میں حرکت پذیر ہے۔ اسی مرتب پروگرام کی حرکت کے عملی مظاہرے کو ہم ماضی، حال اور مستقبل کہتے ہیں اور اسی مرتب پروگرام پر عمل درآمد کی صورت کو حرکت، عمل یا اعمال کہتے ہیں۔

اعمال:

نظریہ نمبر: ﴿40﴾۔ ﴿حرکت اعمال ہیں۔﴾

انسان اعمال یعنی صفات و حرکات کا نام ہے اور ان حرکات و صفات کا مظاہرہ جسم کرتا ہے اور

ہمارے ان تمام اعمال کا دار و مدار روح کی اطلاعات پر مبنی ہے

یعنی ہماری عملی زندگی روح کی اطلاعات پر مبنی ہے پہلے ہر عمل کی اطلاع آتی ہے پھر اس پر عمل

درآمد ہوتا ہے۔ لہذا اعمال روح کی اطلاعات پر مبنی ہیں۔

مثلاً بھوک کا احساس روح کی اطلاع ہے۔ یہ اطلاع روح کی طرف سے موصول ہوتی ہے تبھی

کھانا کھانے کا عمل واقع ہوتا ہے۔ جبکہ عمل کی عمل پذیری بھی اسی روح پہ ہی موقوف ہے۔ یعنی

حرکت کا سبب بھی روح ہے اور عمل کا سبب بھی روح ہے اور یہ حرکت و عمل زندگی کی خصوصیات ہیں

جبکہ زندگی کا سبب بھی روح ہی ہے۔ لیکن یہ حرکت کیسے جنم لے رہی ہے۔

۶۔ حرکت کا سبب ارتعاش ہے:

نمبر: ﴿41﴾۔ ﴿ایک غیر معمولی ارتعاش کے ذریعے حرکت پیدا ہو رہی ہے۔﴾

ابھی روح کی تعریف میں یہ وضاحت جاری ہے کہ روح ایک نکتہ ہے یہ نکتہ انرجی ہے۔ انرجی

زندگی ہے، زندگی مرتب پروگرام ہے اور یہ مرتب پروگرام متحرک ہے۔ اور اس مرتب پروگرام کی

حرکت کا سبب ایک ارتعاش ہے۔ اور مرتب پروگرام میں یہ ارتعاش ایک آواز سے جنم لے رہا



۷۔ ارتعاش آواز کا ہے:

نظریہ نمبر۔ ﴿42﴾۔ ﴿ارتعاش ایک آواز سے پیدا ہو رہا ہے۔﴾

نظریہ نمبر۔ ﴿43﴾۔ ﴿انرجی، حرکت، زندگی تینوں آواز کی مختلف صورتیں ہیں۔﴾

نظریہ نمبر۔ ﴿44﴾۔ ﴿کائنات اور اس کی تمام تر موجودات (بشمول انسان) اسی آواز کی

پیداوار ہیں۔﴾

یعنی آواز ہی وہ توانائی ہے جو لہروں کی صورت میں پوری کائنات میں پھیل رہی ہے۔ یعنی آواز ہی انرجی (روح) ہے آواز ہی حرکت آواز ہی زندگی ہے۔

ایک آواز سے انرجی (حرکت + زندگی) نے جنم لیا اور یہی آواز مسلسل حرکت و عمل کا بھی سبب ہے

۔ انرجی (روح) جو مرتب پروگرام کی صورت میں موجود ہے اسی غیر معمولی آواز سے مرتعش اور

متحرک ہو رہی ہے۔ ایک غیر معمولی آواز ہے جس نے ایسا ارتعاش پیدا کر رکھا ہے کہ ہر شے

مسلسل متحرک ہے اور متحرک رہنے پر مجبور ہے۔ یعنی ایک آواز ہے جو توانائی کی لہروں کی صورت

میں پوری کائنات میں پھیل رہی ہے۔ اسی آواز سے انرجی پیدا ہو کر لہروں کی صورت پھیل رہی

ہے یہی انرجی کی لہریں زندگی اور اس کی حرکت ہیں۔ کیا واقعی ایک آواز انرجی زندگی اور اس کی حر

کت ہو سکتی ہے۔ کیا یہ ممکن ہے؟ ایک آواز کائنات کی حرکت اور زندگی ہے کیا اس بات کا کوئی

تجرباتی ثبوت بھی ہو سکتا ہے۔ کیا کبھی ہم اس ارتعاش اس آواز کو سن سکتے ہیں۔ جی ہاں اس کتاب

میں موجود باقی تمام نئے نظریات کی طرح یہاں مجھے یہ نہیں کہنا پڑے گا کہ مستقبل میں شاید سائنس

اس آواز کو سننے کی اہلیت حاصل کر لے۔ اس لیے کہ اگرچہ ابھی تک ہم نہیں جان پائے ہیں کہ

کائنات اور اس کی تمام تر موجودات کی زندگی اور مسلسل حرکت محض ایک آواز ہے، اس لاعلمی کے

باوجود آج ہم کائنات کی زندگی یعنی اس آواز کو سننے کی اہلیت رکھتے ہیں۔ اس آواز کے ذریعے

پیدا ہونے والے ارتعاش، حرکت اور اس کے نتیجے میں جنم لینے والی کائنات اور اس کی موجودات

بشمول انسان اور ظاہر حرکات کو تو ہم دیکھتے اور جانتے ہی ہیں لیکن اس کائناتی موجودگی، زندگی

اور حرکت کی وجہ یعنی آواز کو بھی ہم کئی طرح سے سننے کی اہلیت رکھتے ہیں۔

۱۔ ہم اس آواز کو کئی روحانی مشقوں کے ذریعے تو سن ہی سکتے ہیں۔

۲۔ لیکن اب ہم اس آواز کا تجرباتی ثبوت بھی رکھتے ہیں۔

لہذا 1962ء میں اس آواز کو سن لیا گیا۔

امریکہ کی بیل ٹیلی فون لیبارٹری (Bell Telephone Laboratory) کے دو سائنسدانوں کا کام خلاء کی طرف سے آنے والی ریڈیائی لہروں کو پکڑنا اور ان کو سمجھنا تھا۔ ان لہروں میں ایک ایسی بھی آواز تھی جو ہر سمت سے برابر اور مسلسل آرہی تھی وہ اپنے (Aerials) جدھر بھی کرتے اس میں کوئی تبدیلی نہ آتی۔ اب یہ ہر سمت سے آتی مسلسل آواز تو ہم نے سن لی تجرباتی ثبوت تو ہمیں مل گیا۔ اب سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ یہ آواز کس کی ہے؟ کیسی ہے؟ اس کا منبع کیا ہے؟ یہ آواز کیا ہے؟

۸۔ یہ آواز ایک حکم ہے:

نظر یہ نمبر۔ ﴿45﴾۔ ﴿یہ آواز ایک حکم ہے۔﴾

یہی حکم وہ انرجی ہے جو لہروں کی صورت میں پوری کائنات میں پھیل رہی ہے۔

حکم ہی وہ آواز ہے جو انرجی اور ارتعاش پیدا کر رہی ہے اسی حکم میں وہ تمام انرجی (کائناتی پروگرام) ہے جسے ہم کائنات یا انسان کی زندگی یا روح کہتے ہیں۔

یعنی انسانی روح انرجی ہے اور یہ انرجی دراصل ایک حکم ہے اسی حکم کے اندر ہی وہ انرجی ہے جو

انسان یا کائنات کی زندگی کا مرتب پروگرام ہے۔ یعنی انسان حال، ماضی، مستقبل میں جو بھی

اعمال سرانجام دے رہا ہے وہ اسی روح (حکم) کا پروگرام ہے۔ یہی حکم ہی وہ پروگرام ہے جو

کائنات اور اس کی تمام موجودات کو حرکت کا پروگرام دے رہا ہے اور متحرک کر رہا ہے۔ یعنی

کائناتی حرکت و عمل ایک مرتب پروگرام ہے جو ایک حکم ہے۔ یعنی حکم کائناتی حرکت و عمل کا مرتب

پروگرام ہے۔ یہ کوئی انہونی یا ناقابل یقین بات نہیں ہے۔ اس کی سادہ سی مثال کمپیوٹر ہے۔ کمپیوٹر

میں پروگرام فیڈ ہے اور کمپیوٹر اسی منتخب پروگرام کے تحت خود کار متحرک ہے۔ یعنی کمپیوٹر اپنے مخصوص

مرتب پروگرام کے حکم کا غلام ہے یعنی پروگرام حکم ہے۔

ایسے ہی کائنات (اور کائنات کی تمام موجودات بشمول انسان) کی خود کار حرکت حکم (مرتب

پروگرام) کے تحت ہے

یہ حکم کی شدت پذیری ہے کہ تمام کائنات اور اس کی موجودات مسلسل حرکت و عمل پر مجبور ہے اور کائنات کا ہر چھوٹے سے چھوٹا اور بڑے سے بڑا وجود اسی حکم کا محتاج ہے یہی حکم کائنات اور اس کی تمام موجودات (بشمول انسان) کی حرکت و عمل کا مکمل مرتب پروگرام ہے۔ لہذا کائنات اور اس کی تمام موجودات (بشمول انسان) اسی حکم (مرتب پروگرام) کے مطابق مسلسل متحرک ہیں۔ یہ حکم کیا ہے جو پوری کائنات کو مسلسل حرکت میں رکھے ہوئے ہے۔

کس کا حکم ہے یہ؟

۹۔ خالق کا حکم:

نمبر۔ ﴿46﴾۔ ﴿یہ حکم خالق کا ہے۔﴾

کائنات اور کائنات کی تمام موجودات کا وجود ایک ہی خالق کے ایک ہی حکم کا پروگرام ہے۔ یا خالق کا ایک ہی حکم پوری کائنات کی حرکت کا تسلسل ہے، یا سادہ الفاظ میں ہمیں یوں کہنا ہوگا کہ کائنات اور اس کی تمام موجودات مالک کائنات کے حکم سے متحرک ہیں۔ پوری کائنات میں ایک ہی حکم جاری و ساری ہے ہر ذرے کی حرکت کا قانون ایک ہی قانون ہے اور اسی خالق کے حکم کے زیر اثر ہے۔

کائنات کا کوئی بھی حصہ ایک مالک کی ملکیت نہ ہو تو وہ حکم سے باہر ہو جائے گا اور کائنات کا وجود ایک ہی مالک کی ملکیت ہے اور اسی مالک کے حکم کے زیر اثر کام کر رہا ہے۔ خالق کا حکم کیا ہے اس کی وضاحت ہم ایک مثال سے کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔

حکم حاکم سے نسبت رکھتا ہے۔ کسی بھی شخص کے حکم کو یا دھمکی کو ہم حکم قرار نہیں دے سکتے۔ حکم کی مخصوص ساخت ہے جو حاکم سے منسوب ہے۔ مثلاً اگر ایک نوکر اپنے مالک کو حکم دے کہ آج سے میں نے تمہیں ملکیت سے خارج کیا تو ہم اسے حکم نہیں کہیں گے نہ ہی یہ حکم ہے نہ ہی اس حکم کے کوئی اثرات مرتب ہوں گے لہذا اس حکم کے بعد بھی مالک اور اس کی حیثیت برقرار رہے گی۔ کیونکہ نوکر ایک بے قوت شخص ہے اور ملکیت خود مالک کی لہذا نوکر کے اس حکم سے مالک اپنی ملکیت و اختیار سے خارج نہیں ہو سکتا اس لیے کہ نوکر نہ تو کوئی قوت رکھتا ہے نہ اختیار لہذا اس کا حکم

بے اثر ہے۔

جبکہ مالک جو ملکیت کا اختیار رکھتا ہے صاحب اختیار حاکم ہے۔ لہذا جب حاکم نے حکم صادر کیا ! کہ میں نے آج سے تمہیں نوکری سے برخواست کیا تو اس حکم کے اثرات فوراً ظاہر ہوں گے اس حکم کے تحت نوکر نوکری سے برخواست ہو جائے گا۔ یہ ہے صاحب اختیار حاکم کے حکم کے اثرات۔ اسی قانون کے تحت یہ کائنات اور اس کا ہر وجود (بشمول انسان) ایک خالق کے حکم کے زیر اثر ہیں۔ لہذا

پوری کائنات مالک کائنات کے حکم سے حرکت پذیر ہے وہ مالک جو پوری کائنات کا اختیار رکھتا ہے۔ یعنی اس کائنات کو وہی ہستی مسلسل متحرک رکھ سکتی ہے جو اس کی مالک و مختار ہے۔ یعنی کائنات خالق کے حکم سے متحرک ہے اور انسانی حرکت بھی اس حکم کا اثر ہے۔ اب جاننا یہ ہے کہ یہ حکم کیسے کائنات کو متحرک کر رہا ہے۔

۱۰۔ یہ حکم مسلسل نشر ہو رہا ہے:

نظریہ نمبر۔ ﴿47﴾۔ ﴿یہ حکم مسلسل جاری و ساری ہے نشر ہو رہا ہے۔﴾  
یہ حکم ایک مرتب پروگرام ہے اور یہ ریکارڈ پروگرام خالق کے حکم کے مطابق مسلسل کام کر رہا ہے۔ لہذا پوری کائنات اور اس کی تمام موجودات اسی پروگرام کے مطابق مسلسل منظم و متحرک ہیں۔ جیسے کمپیوٹر کے اندر مکمل پروگرام فیڈ ہوتا ہے اور وہ اسی پروگرام کے مطابق پوری بلڈنگ کو خود کار کنٹرول کرتا ہے۔ اسی طرح خالق کے پروگرام (حکم) کے مطابق پوری کائنات اور اس کی تمام موجودات بشمول انسان خالق کے حکم سے مسلسل منظم و متحرک ہیں۔ لہذا حکم ہی حرکی قوت ہے

## 63۔ حرکی قوت

نظریہ نمبر: ﴿48﴾۔ ﴿خالق کا حکم ہی کائنات کی حرکی قوت ہے۔﴾  
لہذا خالق کا حکم کائنات اور اس کی موجودات کو مسلسل حرکت و عمل کا پروگرام دے رہا ہے۔  
یعنی کائنات اور اس کی تمام موجودات کی حرکت کا سبب ایک ہی بڑی ذبردست طاقتور ہستی ہے۔

سائنس بھی برسوں کی تحقیق و جستجو کے بعد آج اس نتیجے پر پہنچی ہے کہ یہ پوری کائنات کسی ایک ہی قوت کا مظاہرہ ہے۔ اس کائنات کا نظام اتنا منظم، اتنا مربوط، اتنا پیچیدہ اور اتنا مکمل ہے کہ دو طاقتیں ایسے منظم سسٹم کو نہ بنا سکتی ہیں نہ ہی دو طاقتیں ایسے پراسرار نظم و ضبط کو برقرار رکھ سکتی ہیں ذرا سی غلطی پورے سسٹم کو تہہ و بالا کر سکتی ہے۔ یہ نتیجہ سائنسدانوں نے برسوں کی تحقیق و تجربات و مشاہدات کے بعد نکالا ہے کہ کائنات کا یہ نظم و ضبط کسی ایک ہی بہت بڑی قوت کا تابع ہو سکتا ہے۔ وہ قوت کیا ہے؟ کیسے یہ کائنات ایک قوت کے تابع ہے ابھی یہ محض مفروضہ ہے ابھی یہ سوال حل طلب ہیں۔ وہ مفروضہ جو سائنسدانوں نے قائم کیا ہے یا کسی بھی صاحب علم و عقل کی سمجھ میں آ سکتا ہے کہ کائنات کی حرکت کا سبب ایک قوت ہے اب ہم اسی مفروضے کو لے کر آگے بڑھیں گے۔

ایک قوت کی یہ حرکت کیا ہے اور کیسے ہے۔ یہاں ہم نے یہ وضاحت کی ہے کہ یہ حرکت (کائناتی حرکت) خالق کے حکم سے ہے اور محض حکم سے حرکت کیسے ممکن ہے اس کی وضاحت ہم ایک ادنیٰ زمینی مثال سے کرتے ہیں۔

مثال:- مشہور ٹیلی پتھسٹ "جیری بلوم" چائنا گیا۔ وہاں ایک ہوٹل میں چائے پینے بیٹھ گیا۔ سامنے دیوار پر ایک اژدھا کی بڑی تصویر لگی تھی جیری کو شرارت سوچھی اس نے آس پاس بیٹھے لوگوں کو ہراساں کرنے کے لئے ذہنی رو سے اژدھا کو حرکت کرنے کا حکم دیا۔ اژدھا میں حرکت پیدا ہوئی تو آس پاس بیٹھے ہوئے لوگ ڈر گئے۔

ذہنی رو سے مادی اشیاء کو حرکت دینے کے عمل کو سائیکو کینس (Psychokinesis) کہتے ہیں اس لفظ کا عام مخفف (P.K) ہے۔

ٹیلی پتھسٹ کی مشقیں کرنے والے بہت سے حضرات میں سے محض چند بہت ہی اعلیٰ صلاحیتوں کے حامل ٹیلی پتھسٹ کو یہ صلاحیت مدتوں کی ریاضت کے بعد حاصل ہوتی ہے کہ وہ فریم میں لگی تصویر (یا بعض مادی اشیاء) کو حرکت میں لاسکتے ہیں۔ لیکن یہ ماہر تصویر میں مستقل حرکت پیدا نہیں کر سکتا۔ اگر کوئی انسان اس تصویر میں مسلسل حرکت پیدا کر دے تو وہ تصویر سے زندوں میں شمار ہو جائے گی۔ عمر بھر کی ریاضت مشقت کے بعد بھی ماہر کی استعداد محض اتنی ہوتی ہے کہ وہ کسی بے جان شے میں محض چند سیکنڈ کی وقتی حرکت پیدا کر دے۔

ایک انسان کا حکم کسی مادی شے کو وقتی طور پر متحرک کر سکتا ہے لہذا ایسا ہی حکم (حرکی قوت) ہے خالق کا اور خالق کے حکم میں وہ شدت ہے جو پوری کائنات کو مسلسل حرکت پر مجبور رکھتی ہے۔

جیسے ٹیلی پتھسٹ کے الفاظ تصویر میں وقتی حرکت پیدا کر سکتے ہیں۔ تو خالق کے الفاظ میں وہ قوت وہ شدت ہے جو پوری کائنات کو مسلسل متحرک رکھے ہوئے ہے یہ فرق ہے بے اختیار انسان اور با اختیار خالق کا۔

اگر یہ قوت اور اس کے حکم کی شدت نہ ہو تو ہر شے بشمول انسان پتھر کی طرح بے جان ہوں بلکہ ان کا وجود ہی نہ رہے۔

لہذا ایک بے جان کائنات (بشمول انسان) کو خالق کا حکم مسلسل حرکت میں رکھے ہوئے ہے۔ اور پوری کائنات کو مسلسل حرکت میں وہی ہستی رکھ سکتی ہے جو پوری کائنات کی مالک ہو۔ لہذا خالق کا حکم ہی حرکی قوت ہے۔ اور یہ حرکت مسلسل ہے۔ اور خالق کے اسی حکم کو یہاں ہم نے روح کہا ہے۔ یعنی روح خالق کا حکم ہے۔

## 64۔ روح کی قوت

نمبر:- ﴿49﴾۔ لہذا روح بذات خود انرجی نہیں بلکہ یہ کائناتی تسلسل ہے خالق کے حکم کا۔ ﴿﴾  
روح بذات خود قوت (انرجی) نہیں بلکہ روح کی بھی قوت ہے۔

ہم اب جان گئے ہیں کہ روح بذات خود ایک انرجی ہے قوت ہے جسم کی زندگی ہے یہ انرجی (روح) جسم میں ہے تو جسم جسم ہے زندہ ہے یہ جسم میں نہیں تو جسم مردہ ہے جسم جسم ہی نہیں۔ ہماری پوری زندگی اس روح کا پروگرام ہے۔ ہمارا سونا، جاگنا، مرنا، جینا، ماضی، حال مستقبل غرض ہر حرکت و عمل روح کا پروگرام ہے روح کی اطلاعات ہیں لیکن انرجی کے اس سب سے چھوٹے وجود روح کے پاس یہ انرجی یہ معلومات کہاں سے آئیں۔ اب ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ یہ چھوٹا وجود خود بخود اتنا پاورفل ہے یہ انرجی بذات خود انرجی ہے۔

اسی طرح ہر جاندار یا انسان میں اس کا فیول AURA جسم کو متحرک رکھتا ہے لیکن یہ انرجی کا منبع نہیں۔ AURA جسم کا فیول ہے روح جسم کی زندگی روح ایک انرجی ایک قوت ہے۔ جیسا کہ

ہم جانتے ہیں کہ۔ ایک بلب روشن ہو تو یہ اس کی ذاتی روشنی نہیں بلکہ یہ ایک طویل برقی سلسلے سے جڑا ہوا ہے یہ بلب کی روشنی اسی طویل سلسلے کا نتیجہ ہے۔ اسی طرح روح بھی ایک طویل برقی سسٹم حکم سے جڑی ہوئی ہے۔ لہذا حکم جو کہ حرکی قوت بھی ہے یہ حکم ایک باقاعدہ برقی سسٹم ہے۔

## 65۔ برقی سسٹم

نظریہ نمبر:- ﴿50﴾ - ﴿حکم ایک برقی سسٹم ہے﴾

کمرے میں ایک بلب روشنی بکھیر رہا ہے اگر کوئی یہ کہدے کہ یہ بلب تو خود بخود روشن ہے اور یہ بلب کی ذاتی روشنی ہے تو آپ ایسے شخص کو یقیناً حتمی قرار دیں گے جو قبل از مسیح کے کسی دور سے اٹھ آیا ہے جسے کچھ معلوم ہی نہیں۔ جبکہ آپ جانتے ہیں کہ آپ کے اپنے گھر کے اندر بجلی کے تاروں کا جال بچھا ہوا ہے مین بورڈ لگا ہے جس کا مٹن آن کرنے سے پورے گھر میں بجلی کی سپلائی شروع ہو جاتی ہے اور گھر کی سب اشیاء فریج، ٹی وی، استری میں بجلی دوڑ جاتی ہے اور یہ سب اشیاء متحرک ہو جاتی ہیں اور مین سوئچ آف کرنے سے یہ حرکت رک جاتی ہے۔ یہ بجلی مین بورڈ میں سے بھی نہیں پھوٹ رہی بلکہ بجلی کی تاروں اور کھمبوں کے وسیع سلسلے کے ذریعے آپ کے گھر تک پہنچ رہی ہے۔ اور یہ تاریں کھمبے بھی بجلی کا منبع نہیں ہیں بلکہ یہ بجلی پیچھے کہیں مین پاور اسٹیشن سے آرہی ہے یا پھوٹ رہی ہے۔ یعنی بجلی کی سپلائی کا ایک طویل سلسلہ ہے اور اسی طویل سلسلے کے تحت آپ کے گھر میں روشنی ہے ہر شے متحرک ہے اور اسی روشنی میں آپ ہر شے کا نظارہ کر رہے ہیں بالکل اسی برقی سسٹم کی طرح ایک مین پاور اسٹیشن سے انرجی پوری کائنات کو سپلائی ہو رہی ہے یہ بھی بجلی کی تاروں کی طرح ایک طویل سلسلہ ہے جو کائنات میں پھیلا ہوا ہے۔ اسی طویل سلسلے کے تحت ایک مین پاور اسٹیشن سے حرکی قوت یعنی حکم (روشنی + انرجی + پروگرام) کائنات کے ہر وجود بشمول انسان کو پہنچ رہا ہے یا انرجی پوری کائنات کو سپلائی ہو رہی ہے جس سے کائنات کا ہر وجود متحرک ہے عمل کر رہا ہے۔ اور اسی سلسلے کے تحت کائنات کا ہر وجود بشمول انسان متحرک ہے۔ پاور اسٹیشن سے ساری کائنات ایک برقی سسٹم سے جڑی ہوئی ہے اور پاور اسٹیشن سے کائنات کے ہر وجود کو انرجی کی ایک مخصوص مقدار پہنچ رہی ہے نہ زیادہ نہ کم۔

## 66۔ پاور اسٹیشن

نمبر:- ﴿51﴾۔ ﴿پاور اسٹیشن انرجی کا منبع ہے۔﴾

پاور اسٹیشن سے مراد وہ واحد قوت (خالق) ہے جو پوری کائنات کو اپنی آواز کے ذریعے اپنے محض ایک حکم سے متحرک رکھے ہوئے ہے۔ وہ واحد قوت کیا ہے اس کی ماہیت کا اندازہ کرنا مشکل ہے (بندہ ادراک نہیں کر سکتا خالق ہی ادراک بن جاتا ہے)۔

پاور اسٹیشن انرجی کا منبع ہے اس کی وضاحت ایک مثال سے کرتے ہیں۔ مثلاً ایک اندھیرا کمرہ ہے ہاتھ کو ہاتھ بھائی نہیں دیتا کچھ نظر نہیں آتا۔ اگر اسی کمرے میں ایک بلب روشن کر دیا جائے تو آپ کمرے کی ایک ایک چیز کو دیکھ سکتے ہیں، سب کو الگ الگ شناخت کر سکتے ہیں اسی روشنی یا بجلی سے تمام چیزوں کو متحرک بھی کر سکتے ہیں۔ یہی روشنی بند ہو جائے تو کچھ نظر نہیں آئے گا کسی چیز کی شناخت ممکن نہیں سب کچھ ساکت ہے۔ جیسے کچھ ہے ہی نہیں۔ یہی مثال ہے پاور اسٹیشن کی، وہاں سے ایک طویل سلسلہ کے تحت روشنیوں کا اخراج ہو رہا ہے جس سے؛

(1) کائنات اور اس کی تمام موجودات موجود اور متحرک ہیں۔

(2) ہر شے نظر آ رہی ہے۔

(3) ہر شے کا تشخص واضح ہے، شناخت ممکن ہے۔

یہ حرکت کا کائناتی سلسلہ ایک حکم کے ذریعے مسلسل جاری و ساری ہے۔

## 67۔ روح خالق کا حکم ہے

نمبر:- ﴿52﴾۔ ﴿لہذا روح در حقیقت ایک حکم (پروگرام) ہے، خالق کا حکم!﴾

یہاں آ کر اب روح کی تعریف یا شناخت مکمل ہوتی ہے۔ روح کی مسلسل تعریف ہم نے یہ کی ہے کہ روح ایک نکتہ ہے، یہ نکتہ انرجی ہے، انرجی زندگی ہے تمام تر اجسام کی اور یہ زندگی ہی حرکت و عمل کا مکمل مرتب پروگرام ہے جو روح میں محفوظ ہے یعنی یہ پروگرام ساکت نہیں متحرک ہے۔ اور حرکت کا سبب ارتعاش ہے اور ارتعاش ایک آواز سے پیدا ہو رہا ہے اور آواز خالق کائنات کی ہے۔ یہ حکم ہی حرکتی قوت ہے اور حرکتی قوت ایک کائناتی برقی سسٹم کا نتیجہ ہے اور یہ برقی سسٹم پاور اسٹیشن (خالق) سے مربوط ہے۔



یعنی اگر آپ روح کو دیکھنا چاہیں تو یہ انرجی کا انتہائی چھوٹا وجود ہزار کوششوں کے بعد ایک نکتے کی مانند نظر آئے گا جبکہ یہی انتہائی چھوٹا وجود جو ناقابل تقسیم انرجی ہے لیکن یہ وہ انرجی نہیں ہے جس انرجی کی تمام تر اقسام سے آج ہم واقف ہیں۔ یہی انرجی اجسام کی زندگی ہے یہی انرجی اجسام ترتیب دیتی ہے اسی انرجی یعنی روح کے اندر اجسام کے تمام تر حرکت و اعمال کا پروگرام محفوظ ہے یعنی انسان کا ماضی، حال، مستقبل روح کا مرتب پروگرام ہے جس پہ تمام اجسام اپنی مرضی سے عمل کر رہے ہیں۔ اور یہ مرتب پروگرام اجسام کے حرکت و عمل کے ذریعے متحرک ہے اور اسے متحرک کرنے والی بھی یہی روح ہے۔ اور حرکت برقی سسٹم ہے اور اس حرکت کا سبب ارتعاش ہے جو لہروں کی صورت میں سفر کر رہا ہے۔ اور یہ ارتعاش ایک مسلسل آواز سے جنم لے رہا ہے اور یہ آواز خالق کائنات کی ہے۔ سادہ الفاظ میں روح خالق کا حکم ہے۔ اور زندگی، حرکت، اعمال سب حکم کی خصوصیات ہیں۔ لہذا ثابت ہو گیا کہ روح ہی اجسام کی زندگی ہے۔

روح ہی حرکت و عمل کا پروگرام ہے۔ اور یہ روح خالق کا حکم ہے۔ **قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي**۔ ترجمہ۔ کہہ دیجیے روح رب کا حکم ہے۔

## 68۔ انسانوں میں حکم کی خصوصیات

نمبر:- ﴿53﴾۔ ﴿انسانوں میں حکم کی خصوصیت کائناتی حکم (انسان کی اپنی روح) کی بدولت ہے۔﴾

روح خالق کا کائناتی حکم ہے اور ہر انسان کے اندر روح موجود ہے لہذا ہر وہ انسان جو اپنی روح کا استعمال جانتا ہے وہ حکم کی خصوصیات استعمال کر سکتا ہے۔

مثلاً حکم کی ایک خصوصیت یہاں ہم نے حرکت بیان کی ہے۔ اور خالق کے حکم سے کائنات مسلسل حرکت میں ہے۔ جبکہ انسان خالق کے حکم کی طرح کسی شے کو مسلسل متحرک نہیں رکھ سکتا۔ لہذا انسان کے حکم کی خصوصیت محدود ہے۔

انسان کے اندر یہی کائناتی حکم کی خصوصیت یعنی روح موجود ہے یہی وجہ ہے کہ انسان بعض بے حرکت اشیاء کو حرکت دے سکتا ہے۔ اور یہ حکم کی صلاحیت بعض انسانوں میں دیکھنے میں آتی بھی ہے لیکن خالق اور انسان کے حکم میں وہی فرق ہے جو صاحب اختیار اور بے اختیار شخص کے حکم میں

ہوسکتا ہے۔ خالق کے حکم سے کائنات مسلسل متحرک ہے تو انسان اپنی تمام تر صلاحیتوں کو استعمال کر کے بھی محض شعبدے ہی دکھاسکتا ہے۔ جیسے جیری بلوم نے ذہنی رو سے تصویری اثر دھے کو وقتی حرکت دے کر دکھایا تھا۔

آج روح کی اس قوت حکم کو ذہنی قوت قرار دیا گیا ہے۔ اور اس ذہنی قوت کو سائیکو کانس (Psychokinesis) یعنی P.K کا نام دیا گیا ہے۔ ماہرین کے مطابق۔ یہ خیال کہ قوت ہزار ہا اقسام کی لہریں اور توانائیاں ہیں جو ہمارے ارد گرد بکھری ہوئی ہیں۔ اس قوت کو استعمال کرنے کے لئے انہیں یکساں توانائی کے گچھوں میں باندھنا پڑتا ہے اس توانائی کی مدد سے نظر آنے والی چیزوں کے الیکٹرونز کو بغیر گرم کئے نرم بنایا جاسکتا ہے موڑا، توڑا جاسکتا ہے، حرکت دی جاسکتی ہے۔ مثلاً برطانوی نوجوان یوری گیلر (Urigeller) بی بی سی ٹیلی ویژن کے پروگرام میں ذہنی قوت کے ذریعے کانٹے چمچے موڑتا ہوا دکھایا گیا حتیٰ کہ اس نے کیمرے کو گھورا تو گھروں کے اندر سامنے لے کر بیٹھے ہوئے چھری کانٹوں کو بھی دوہرا ہوتے دیکھا گیا۔

ایسے ہی حکم Mind Power کے کارنامے دکھاتا ہوا نظر آتا ہے "کرس انجبل" وہ بھی اپنی ذہنی قوت سے کبھی ہوا میں اڑتا ہے کبھی پانی پہ چلتا ہے کبھی غائب ہو جاتا ہے۔

دنیا میں ایسے بہت سے لوگ آج بھی موجود ہیں جو اپنی روح کی طاقت کو استعمال کر کے ہرے درخت کو سکھا دیتے ہیں رکے ہوئے دریا کو چلا دیتے ہیں کسی چیز کو چھوئے بغیر موڑ دیتے ہیں یا پھر ہوا میں معلق کر دیتے ہیں۔ ان میں سابقہ سویت یونین کی نینا کلا جینا (Nina Kulagina) ، کیلیفورنیا (امریکہ) کے ٹیڈ اوونز (Ted Owens) ، لندن انگلینڈ کی اسٹیلیا سی (Stella C) اور کیمبرج (انگلینڈ) کے میتھیو میننگ (Mathew Manning) ہیں۔

اس کے علاوہ ہمارے پاس مذہبی کتابوں میں بھی روحانی بزرگوں کے کمالات اور پیغمبروں کے معجزے درج ہیں جن میں یہ خصوصیات دیکھنے میں آتی ہیں۔ کہ وہ مردوں کو زندہ کر دیا کرتے تھے۔ خالق کے حکم سے مٹی کے پرندوں میں جان ڈال دیتے تھے۔ ہرے درخت کو سکھا دیتے تھے۔ چاند کو دو لخت کر دیا، سورج کو پھیر دیا یا درخت کو حکم دیا تو وہ جڑوں سمیت چلا آیا۔

ہنا نزم کے ماہر اپنے معمول کو ہننا ناز کر کے جو بھی حکم یا ہدایت دیتے ہیں بیدار ہونے پر معمول مقررہ وقت پر وہی کام کرتا ہے۔ عام لوگ بھی مسلسل ریاضت سے اپنی روح کو استعمال میں لا کر

شعبدے تو دکھا ہی سکتے ہیں۔ انسانوں میں حکم کی ہر مثال چھوٹی مثال ہے۔ یہ خالق کے حکم کے مقابل نہیں خالق کا حکم بہت بڑا حکم ہے جس سے بے انتہاء بڑی کائنات مسلسل متحرک ہے۔ خالق کائنات کے علاوہ حکم کی ایسی خصوصیت کسی میں موجود نہیں اور نہ پائی جاسکتی ہے بے شک کچھ مردوں کو زندہ کرنے کی مثال ہی کیوں نہ ہو۔ یہ صلاحیت بھی کچھ پیغمبروں یا ولیوں کو دی گئی اور ایسا وہ کرتے تھے مگر خالق کے حکم سے یعنی ایکسٹرا صلاحیتوں کے ذریعے۔ یہاں ہم نے حکم کی کچھ زمینی مثالیں تحریر کی ہیں ایسی مثالوں کے ڈھیر موجود ہیں لیکن ان چند مثالوں کو پیش کرنے کا مقصد حکم کی اثر پذیری کا ثبوت فراہم کرنا ہے ورنہ لوگ بے دھڑک انکار کر دیتے ہیں کہ ایسا کیسے ہو سکتا ہے یا ایسا بھی کبھی ہوا ہے۔ تو لہذا یہاں ہم نے حکم کا جو فلسفہ بیان کیا ہے یہ انوکھا ضرور ہے لیکن پھر بھی اس کی دنیاوی مثالیں موجود ہیں۔

لہذا اب یہاں حکم کی مختصر تعریف اور تعارف کے ساتھ ہی روح کی وہ تعریف مکمل ہوئی۔ جو ہم نے روح کیا ہے؟ کے عنوان سے شروع کی تھی لہذا ہم نے یہاں روح کی انفرادی شناخت قائم کرتے ہوئے روح کی ماہیت بیان کرتے ہوئے کہا تھا کہ:

روح ایک نکتہ ہے یہ نکتہ انرجی ہے، انرجی زندگی ہے، زندگی ایک مرتب پروگرام ہے، یہ مرتب پروگرام متحرک ہے، حرکت ارتعاش کے سبب ہے یہ ارتعاش ایک آواز کا ہے اور آواز ایک حکم ہے اور حکم خالق کائنات کا ہے اور یہ خالق کائنات کا حکم مین پاور اسٹیشن سے نشر ہوا ہے اور ایک طویل سلسلے کے تحت اس مین پاور اسٹیشن سے مسلسل مربوط بھی ہے تبھی انسان اور کائنات ایک پروگرام کے تحت منظم و متحرک اور مجسم ہے۔ یہی روح جسم میں زندگی بھی جسم میں حرکت و عمل کا سبب ہے۔ یہی روح اجسام بھی تخلیق کر رہی ہے جسم ہیں تو روح کی وجہ سے انسان کی موجودگی اس کی حرکت و عمل سب کچھ خالق کائنات کے حکم سے ہے اور اس حکم کا وہ ہر لمحہ تابع ہے یہ سلسلہ جہاں ٹوٹتا ہے وہیں انسان وجود سے عدم ہو جاتا ہے۔

یہاں آکر اب روح کی تعریف قدرے مکمل ہوئی ہے لیکن محض تعریف ہوئی ہے تعارف ابھی باقی ہے جس کا تذکرہ آگے آئے گا۔ اگر روح کی اس طویل اور پیچیدہ تعریف کو ہم سادہ چند لفظوں میں بیان کریں تو ہمیں یہ کہنا ہوگا کہ

روح خالق کائنات کا حکم ہے۔

# تخلیق

کائنات کے پہلے انسان (آدم) کی تخلیق کے مراحل

## 69۔ پہلا انسان

پہلا انسان کرہ ارض پر کیسے نمودار ہوا؟

اگرچہ اس سوال پر صدیوں سے کام ہو رہا ہے لیکن یہ وہ سوال ہے کہ جس کا جواب صدیوں کی تحقیق و تجربات کے باوجود آج تک کسی بھی قسم کے ماہرین نہیں دے پائے ہیں۔

درحقیقت انسانی تخلیق کے حوالے سے سائنسدانوں، محققوں، فلاسفوں کو کوئی ایسا سرا نہیں ملتا جہاں سے وہ آغاز کریں۔ صرف اور صرف مذاہب ہیں جو ابتدائی انسان کے بارے میں ہمیں معلومات فراہم کرتے ہیں اس کے علاوہ ابتداء کے انسان کے بارے میں ہمارے پاس کوئی اور ذریعہ معلومات نہیں ہے۔ اور جدید سائنسی نظریات کی بنیاد بھی مذہبی معلومات ہی ہیں۔ لہذا انسان کی ابتداء سے متعلق جو چند مفروضہ نظریات ہمیں ملتے ہیں اگرچہ انہیں سائنسی نظریات کہہ دیا جاتا ہے جبکہ یہ ثابت بھی ہو چکا ہے کہ یہ نظریات نہ صرف یہ کہ غلط مفروضے ہیں بلکہ مذاہب سے مستعار لئے گئے ہیں۔ (جیسے کہ ارتقائی نظریات) اگرچہ ان نظریات کا ماخذ مذہبی اطلاعات ہیں لیکن یہ مذہبی اطلاعات غلط نہیں ہیں بلکہ اس کتاب میں ہم نے تحقیق سے ثابت کیا ہے کہ۔

- (1) انسان پر ہور ہے تمام تر مختلف اور متضاد کاموں کا بنیادی فلسفہ مذاہب سے مستعار لیا گیا۔
- (2) یہ بھی ثابت شدہ امر ہے کہ اکثر مذہبی آسمانی کتابوں میں زمینی انسانی ترمیم و اضافے کر دیئے گئے لہذا اکثر مذہبی اطلاعات اپنی اصل حالت میں نہیں ہیں۔
- (3) تیسرے صحیح مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں بھی غلطی کی گئی اور اسی غلطی سے غلط نتائج اخذ کئے گئے۔

اور یہی غلط نتائج آج انسان کے مختلف اور متضاد علوم کی صورت میں موجود ہیں۔ انہی بنیادی غلطیوں کے سبب فی زمانہ انسان پہ جتنے بھی ارتقاء، روح، نفس، جسم کے حوالے سے سائنسی وغیر سائنسی کام ہو رہے ہیں وہ سب کے سب بے نتیجہ کام ہیں۔ ہر موضوع پر انفرادی حیثیت میں صدیوں سے کام ہونے کے باوجود نہ تو انسان کے انفرادی اجزاء روح، نفس کی شناخت ہی ہو سکی نہ ہی آج تک مجموعی انسان کی حیثیت کا تعین ہو سکا۔

۱۔ لہذا جب تک انسان کے انفرادی اجسام کی شناخت نہیں ہوتی تب تک انسان کی مجموعی حیثیت کا

تعیین کرنا ممکن نہیں۔ اور

۲۔ جب تک مجموعی انسان کی دریافت مکمل نہیں ہوتی تب تک انسان کی تخلیق کا اندازہ لگانا ناممکن ہے۔

جبکہ ہم یہاں انسان کی تخلیق کا تذکرہ کرنے جا رہے ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ ماضی کے تمام تر قدیم و جدید کاموں کے برعکس ہم نے اس کتاب میں نہ صرف انسان کے انفرادی اجسام و اجزاء کا انکشاف کیا ہے بلکہ ہر انفرادی جز کی شناخت قائم کی ہے ان تمام کی خصوصیات اور اعمال بھی بیان کئے ہیں اور مادی جسم سے ان تمام تر باطنی اجسام کے تعلق کی وضاحت بھی کی ہے لہذا پہلے ہر انفرادی جز کی شناخت کے بعد مجموعی انسان کی تعریف کی ہے۔ درحقیقت

انسان کے ہر انفرادی جسم کی شناخت اور انسانی مجموعے (روح، نفس، جسم) کے تعین کے بعد اب ہم انسانی تخلیق کا سراغ لگانے کے قابل ہوئے ہیں لہذا اب ہم انسانی تخلیق کا سراغ لگانے کی سمت راست قدم اٹھا سکتے ہیں۔

## 70۔ انسان کی تخلیق

نظریہ نمبر:- ﴿54﴾۔ ﴿انسان کی تخلیق ہوئی ہے۔﴾

انسان کا کبھی بھی کسی بھی قسم کا ارتقاء نہیں ہوا بلکہ انسان کی تخلیق ہوئی ہے۔

اگرچہ ہر قسم کے سائنسی شواہد ارتقاء کی مسلسل نفی اور تخلیق کی گواہی دے رہے ہیں اس کے باوجود ارتقاء پرست تخلیق کو تسلیم کرنے پر تیار نہیں اور نہ ہی وہ ارتقائی نظریات سے دستبردار ہونے کو تیار ہیں۔ جبکہ انسان پہ ہو رہے دیگر روح و نفس کے کام بھی بے تحاشا الجھ گئے ہیں اور آج تک بے نتیجہ ہیں آج تک روح و نفس کی ہی شناخت نہیں ہوئی لہذا ماضی کے تمام تر محقق اس نہج تک پہنچے ہی نہیں کہ یہ فیصلہ کر سکیں کہ انسان کی تخلیق ہوئی ہے یا نہیں۔

DNA کی دریافت اور دیگر سائنسی ذرائع سے اگرچہ تخلیق کی سائنسی شہادتیں مل رہی ہیں لیکن پھر بھی یہ معمہ حل نہیں ہوتا کہ اگر بفرض محال انسان کی تخلیق ہوئی تھی تو آخر کیسے ہوئی تھی؟

لہذا ہمیشہ یہ سوال حل طلب ہی رہا کہ پہلا انسان کرہ ارض پر کیسے نمودار ہوا؟

یہاں ہم نے ارتقائی نظریات (کہ انسان کی ابتداء پانی میں یک خلوی جرثومے کے طور پر ہوئی

ہے نیز انسان بوزنے سے پروان چڑھا ہے) کی نفی کرتے ہوئے انسان کی تخلیق کا دعویٰ کیا ہے تو انسانی تخلیقی عمل کی وضاحت بھی کرنے جا رہے ہیں۔

## 71۔ منفرد تخلیق:

نظریہ نمبر: ﴿55﴾۔ ﴿انسان ہر نوع (اور کائنات) سے منفرد تخلیق ہے۔﴾

انسان ہر نوع سے منفرد تخلیق ہے یہ نہ تو کسی نوع سے ارتقاء یافتہ ہے نہ ہی کائناتی تخلیقی سلسلے کا حصہ ہے۔ بلکہ انسان انفرادی حیثیت میں تخلیق ہوا ہے۔ اس کے بعد انسانی جسمانی ساخت اور ضروریات کے حساب سے کائنات اور اس کی تمام موجودات کی تخلیق عمل میں لائی گئی۔

ڈاروینی فلسفے کے مطابق تو انسان بوزنے سے پروان چڑھا لہذا انسان کو عرصہ دراز تک دیگر حیوانات میں منفرد حیوان بتایا جاتا رہا اور انسان کی دیگر حیوانات میں انفرادیت یہ بیان کی جاتی تھی کہ وہ بولتا ہے سوچتا ہے سیاسی و معاشرتی ہے۔ لیکن جب انسان کے باطنی روحانی تشخص AURA کی دریافت ہو گئی تو لوگوں کو یہ غلط فہمی ہو گئی کہ انسان کا جسم تو کسی نہ کسی طریقے سے ارتقاء یافتہ ہی ہے جبکہ انسان کی انفرادیت اس کا باطنی روحانی تشخص ہے۔

لیکن یہ جاننا بہت ضروری ہے کہ انسان نہ صرف جسمانی طور پر منفرد ہے بلکہ روحانی طور پر بھی منفرد ہے۔ اور ہر حالت میں انسان اپنی انفرادیت برقرار رکھتا ہے۔ اور کسی قسم کے ارتقاء سے انسان کا تعلق نہیں ہے۔ لہذا پہلے انسانی تخلیق کا منصوبہ مکمل ہوا پھر اس کی جسمانی ضروریات کے حساب سے کائنات اور اس کی موجودات کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔ لہذا

(1) پہلے انسان کی تخلیق ہوئی۔ پھر (انسانی ساخت و ضروریات کے حساب سے)

(2) انسان کے لئے کائنات کی تخلیق ہوئی۔

## 72۔ پیدائش اور تخلیق میں فرق:

نظریہ نمبر: ﴿56﴾۔ ﴿صرف کائنات کا پہلا انسان تخلیق ہوا ہے۔ باقی نوع انسانی تخلیق کے عمل سے نہیں گزری۔ بلکہ پیدا ہوئی ہے۔﴾

پیدائش اور تخلیق میں واضح فرق موجود ہے جبکہ عموماً اس فرق کو ملحوظ خاطر نہیں رکھا جاتا۔

## ۱۔ پیدائش

پوری نوع انسانی پیدا ہوئی ہے، ہر انسان پیدا ہوتا ہے یا پیدائش کے عمل سے گذرا ہے۔ لہذا نوع انسانی نوعی تسلسل کا حصہ ہے نہ کہ ارتقاء یافتہ پیدائش کا مرحلہ نو ماہ کے عرصے پہ مشتمل مرحلہ ہے۔ جو ماں کی کوکھ میں مکمل ہوتا ہے۔ اور پہلے انسان کے علاوہ کائنات کے ہر انسان کا جسم اسی پیدائشی مرحلے سے گذرتا ہے۔ سائنسی ترقی کی بدولت ہر انسان کی پیدائش کے عمل سے تو آج ہم واقف ہو چکے ہیں۔ لیکن ابھی سائنسدان انسان کی تخلیق کا راز نہیں جان پائے لہذا یہاں ہم ہر انسانی جسم کی پیدائش نہیں بلکہ کائنات کے پہلے انسان کی تخلیق کا انکشاف کر رہے ہیں۔

## ۲۔ تخلیق

صرف ایک اور سب سے پہلے انسان کی (منفرد) تخلیق ہوئی ہے۔

پیدائش اور تخلیق کے عمل میں فرق ہے پہلا انسان ہر پیدا ہونے والے انسان کی طرح پیدا نہیں ہوا بلکہ پہلے انسان کی تخلیق ہوئی ہے۔ پہلا انسان تخلیق کے مختلف پیچیدہ اور طویل مراحل سے گذر کر جسمانی صورت میں ظاہر ہوا۔ لیکن ان تخلیقی مراحل سے مراد ہرگز کوئی ارتقاء نہیں ہے۔ جس طرح فیکٹری میں کوئی پرزہ کوئی مشین تکمیل کے مختلف مراحل سے گذرتی ہے یا ماں کے پیٹ میں بچہ ایک نطفہ سے آغاز کر کے مختلف مراحل سے گذرتا بچہ کی صورت نمودار ہوتا ہے بالکل اسی طرح پہلا انسان تخلیق کے بعض مراحل سے گذرا تھا۔ لیکن پہلے انسان کے تخلیقی مراحل اور ہر انسان کے پیدائشی مراحل میں فرق ہے۔ سائنس کی بدولت آج ہر انسان کی پیدائش کے عمل سے تو سب واقف ہیں لیکن پہلے انسان کی منفرد تخلیق کا تذکرہ آج پہلی مرتبہ ہم کرنے جا رہے ہیں۔

چونکہ ہم یہ انکشاف کر چکے ہیں کہ انسان محض مادی جسم نہیں بلکہ یہ باطن بھی رکھتا ہے لہذا انسان روح، نفس اور جسم کا مجموعہ ہے۔ اور ان سب انسانی اجزاء کی شناخت اور علم کے بغیر انسانی تخلیق کا سراغ لگانا ناممکن تھا لہذا ان سب کو جاننے کے بعد اب ہم اس قابل ہوئے ہیں کہ انسانی تخلیق کی وضاحت کر سکیں لہذا اب یہاں ہم یہ وضاحت کریں گے کہ یہ مجموعی انسان کیسے درجہ بدرجہ تخلیقی مراحل سے دوچار ہوا ہے۔

## 73۔ تخلیقی مراحل



نظریہ نمبر: ﴿57﴾۔ انسانی تخلیق کا عمل تین ادوار یا تین بڑے مراحل پر مشتمل ہے۔ ﴿﴾  
یعنی پہلا انسان تخلیق کے تین مختلف ادوار سے گذرا ہے۔ وہ تین ادوار درج ذیل ہیں:

(1) ارواح کی پیدائش۔

(2) نفوس کی تخلیق۔

(3) مادی جسم کی تخلیق۔

جب ہر روح، نفس و جسم کی تخلیق مکمل ہوگئی تو تمام کو یکجا کر دیا گیا۔ یوں انسان کی تخلیق مکمل ہوئی اور انسان جیتی جان ہوا۔ اب ہم یہاں یہ وضاحت کریں گے کہ یہ تین ادوار پہ مشتمل تخلیقی عمل کیسے انجام پایا۔ پہلے انسان کی تخلیق باقاعدہ فارمولے کے تحت انجام پائی۔ اسی طرح ہر پیدا ہونے والا شخص بھی باقاعدہ فارمولے کے تحت پیدائشی عمل سے گذرتا ہے۔ اسی وجہ سے ہر انسان انسان ہی ہوتا ہے اور دوسرے انسان سے مشابہت بھی رکھتا ہے۔ ہر پیدا ہونے والے شخص کے پیدائشی فارمولے اور پہلے انسان کے تخلیقی فارمولے میں فرق ہے۔ لہذا

۱۔ ہر پیدا ہونے والا مخصوص پیدائشی فارمولے سے پیدا ہوتا ہے اور

۲۔ پہلا انسان منفرد تخلیقی فارمولے سے منظر عام پر آیا

ہر انسان کے پیدائشی فارمولے کا ذکر ہم پیدائش کے عنوان سے کریں گے۔

لیکن پہلے اب ہم یہاں پہلے انسان کے تخلیقی فارمولے کی وضاحت کریں گے۔ لہذا تین ادوار پہ مشتمل انسانی تخلیق کا عمل درج ذیل تخلیقی فارمولے کے تحت تکمیل کو پہنچا۔

## 74۔ تخلیقی فارمولہ:

نظریہ نمبر: ﴿58﴾۔ ﴿روح (انرجی، پروگرام، خالق کا حکم) نے پہلا جسم ترتیب دیا۔

آسان الفاظ میں اس کو یوں کہیں گے کہ خالق نے پہلا جسم ترتیب دیا یا خالق کے حکم (جسمانی تخلیق کا مکمل پروگرام) سے پہلا جسم بالترتیب ترتیب پا گیا۔

روح کی تعریف میں ہم نے یہ وضاحت کی تھی کہ روح واحد انرجی ہے جو کہ رب کا حکم ہے۔ یہی روح جسمانی تخلیق و ترتیب کا مکمل پروگرام بھی ہے لہذا یہی واحد انرجی، خالق کا حکم یا روح کائنات کے پہلے انسان کا جسم ترتیب دے رہی ہے۔ یعنی روح ہی وہ فارمولہ ہے جو جسم ترتیب

دے رہا ہے۔ جیسے کمپیوٹر اپنے پروگرام کے مطابق خود کار طریقے سے کام کرتا ہے۔ یعنی سادہ لفظوں میں ہمیں یوں کہنا ہوگا کہ خالق نے خود کائنات کے پہلے انسان کا جسم ترتیب دیا۔ اب ہمیں یہ جاننا ہے کہ کیسے واحد انرجی یعنی روح رب کے حکم (مرتب پروگرام) کے مطابق یا مخصوص فارمولے کے تحت کائنات کا پہلا جسم ترتیب دے رہی ہے۔ اس کی وضاحت کے لئے یہاں ہم ایک تخلیقی فارمولہ پیش کرتے ہیں۔ پھر اس فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے تب پہلے انسان کی تخلیق کے عمل کی تعریف مکمل ہوگی۔

### پہلے انسان کا تخلیقی فارمولہ

۱۔ واحد انرجی سے



۲۔ تمام تر ارواح کی پیدائش



۳۔ نفوس کی تخلیق



۴۔ پہلے مادی جسم کی تخلیق



۵۔ روح و جسم کا اجتماع



پہلا مکمل انسان

اب ہم اس پانچ نکاتی فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے جس سے یہ واضح ہوگا کہ واحد انرجی (روح، رب کا حکم، پروگرام) سے کیسے کائنات کا پہلا جسم تخلیق ہوا۔ اور ایک جسم ایک فرد واحد (نفس واحدہ) سے کیسے پوری نوع انسانی نے جنم لیا۔

جیسا کہ پچھلے صفحات میں ہم وضاحت کے ساتھ بیان کر آئے ہیں کہ انسان روح، نفس (لطیف

اجسام) اور مادی جسم کا مجموعہ ہے یعنی انسان بہت سے مختلف اقسام کے جسموں (مادی ولطیف) اور بہت سے نظاموں کا مجموعہ ہے یعنی ایک مادی جسم ہے تو ایک باطن ہے اور انسانی باطن ایک انوکھا جہان ہے جس میں انسان پوری کائنات سمیٹے بیٹھا ہے۔ لہذا اس عجیب و غریب انسانی شخصیت کی ابتدائی تخلیق کا بیان کوئی چھو منتر نہیں بلکہ یہ بیان دراصل بگ بینگ (Big Bang) کا بیان ہے۔

ہم ہر روز پیدا ہوتے ہوئے بچوں کو بھی دیکھتے ہیں۔ لیکن انسان کی تخلیق کا عمل پیدائش کے عمل کی طرح محض نو ماہ کا چلہ بھی نہیں۔ بلکہ انسان کی تخلیق ایک بہت بڑا پراجیکٹ ہے جو بہت سے مراحل اور ان مراحل کے بہت سے مدارج پہ مشتمل ہے یعنی انسانی تخلیق ایک وسیع و عریض موضوع نہیں بلکہ ایک وسیع و عریض علم ہے۔

لہذا یہاں ہم نے اس تخلیق کے وسیع و عریض موضوع کا آغاز ایک تخلیقی فارمولے سے کر دیا ہے اب اس فارمولے کی مسلسل وضاحت ہوگی بہت سا تحقیقی، سائنسی کام ہوگا۔ تبھی جا کر کائنات کے پہلے انسان (روح + نفس (لطیف اجسام) + مادی جسم) کی تخلیق کی قدرے وضاحت ہو پائے گی۔ تبھی یہ راز کھلے گا کہ پہلا انسان کرہ ارض پر کیسے نمودار ہوا۔

بحر حال آج ہم اس کام کی بنیاد رکھ کر اس کا آغاز کرنے جا رہے ہیں۔ اب ہم دیکھتے ہیں کہ واحد پانچ نکاتی فارمولہ پیش کیا ہے اس کی مسلسل وضاحت کرتے ہیں۔

## ۱۔ واحد انرجی سے تخلیق کا آغاز

### پہلا مرحلہ

نظریہ نمبر: ﴿59﴾ - ﴿واحد انرجی سے تخلیق کا آغاز ہوا۔﴾

ابتداً فقط واحد انرجی تھی۔ اور یہی واحد انرجی کائنات اور کائنات کے پہلے انسان اور تمام تر انسانوں کا تخلیقی مادہ ہے۔

لہذا ڈارون اور ماضی کے تمام سائنسدانوں کے وہ نظریات مفروضہ نظریات ہیں جن کا خیال ہے کہ انسان کا تخلیقی مادہ کوئی یک خلوی جرثومہ ہے نہ ہی حیات پانی میں شروع ہوئی۔ حیات کا مادہ ، مادہ ہے ہی نہیں۔

حیات کا مادہ "انرجی" ہے  
 وہ بھی ہر قسم کی انرجیوں سے منفرد "واحد انرجی" ہے۔ جو ہر قسم کے تعاملات سے پاک ہے۔  
 پانی اور یک خلوی جرثومہ یا نفسِ واحدہ حیات کے دیگر مراحل تو ہیں لیکن حیات کا آغاز پانی  
 میں یا کسی بھی جرثومے سے نہیں ہوا  
 بلکہ حیات کا آغاز انرجی سے ہوا۔ ابتداً کچھ بھی نہیں تھا نہ پانی نہ جرثومہ نہ کچھ اور ابتداً فقط واحد  
 انرجی تھی۔ ہر کثافت سے پاک غیر مرکب فقط واحد انرجی۔ اسی واحد انرجی نے حیات کا آغاز  
 کیا۔  
 کیسے؟

## ۲۔ ارواح کی پیدائش

دوسرا مرحلہ۔

نظریہ نمبر:- ﴿60﴾ - ﴿واحد انرجی یکلخت منتشر ہوئی اور تمام تر ارواح کی صورت میں ظاہر  
 ہوئی﴾

یعنی ایک ہی دھماکے سے یکلخت منتشر ہو کر واحد انرجی نے کائنات کے تمام تر انسانوں کی ارواح  
 کی صورت اختیار کر لی۔ لہذا واحد انرجی کے اس انتشار سے ہر انسان کی انفرادی روح نے جنم لیا۔  
 ہر روح ہر انسان کا انفرادی پروگرام ہے جو فقط واحد انرجی کے انتشار سے یکلخت موجود ہو گیا۔  
 واحد انرجی سے تمام تر ارواح کی پیدائش اور پہلے انسان کی تخلیق سے لے کر آخری انسان کی  
 پیدائش تک کا عمل فشن (Fission) کا عمل ہے۔

لہذا انسانی تخلیق کا ایک مرحلہ مکمل ہوا یعنی ارواح کی پیدائش مکمل ہوئی۔ اب واحد انرجی سے آغاز  
 کر کے ابتدائی انسان کی تخلیق کا عمل ایک دوسرے مرحلے میں داخل ہو رہا ہے۔ لہذا اگلا مرحلہ ہے  
 نفس کی تخلیق۔

۳۔ نفس کی تخلیق

تخلیق کا تیسرا مرحلہ

نظریہ نمبر:- ﴿61﴾۔ ﴿ارواح نے نفوس (لطیف اجسام) یعنی انسانی باطن کو ترتیب دیا۔﴾

۱۔ واحد انرجی نے جب یکنخت منتشر ہو کر نفوذ کیا تو تمام تر ارواح کی صورت میں ظاہر ہوئی۔

۲۔ پہلے منتشر ہوئی پھر ایک دوسرے سے دوبارہ مرکب ہوئی تو اس مرکب سے نور کا وجود ہوا اور

روح کے پروگرام کے مطابق نور کے لطیف ذرات ترتیب دے کر نورانی لطیف جسم تیار کیا گیا

لہذا لطیف نورانی جسم وجود میں آیا۔ یا روح کے پروگرام کے مطابق نور کے لطیف ذرات ترتیب

دے کر نورانی لطیف جسم تیار کیا گیا۔ لہذا نور کے جسم کی تکمیل ہوئی۔

(iii) واحد انرجی مزید مرکب ہوئی تو روشنی وجود میں آئی اور روح کے پروگرام کے مطابق روشنی

کے ذرات اکٹھے کر کے روشنی کا جسم ترتیب دیا۔ یوں روشنی کے جسم (AURA) کی تخلیق عمل

میں آئی۔

لہذا نفس (انسانی باطن) کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا لہذا نفس کی صورت یہ بنی۔

نفس کی صورت = روشنی کا جسم + نور کا جسم = نفس (انسانی باطن)

لہذا انسان کی تخلیق کے دو مرحلے مکمل ہوئے یعنی ارواح کی تخلیق اور نفوس کی تخلیق۔ یوں انسانی

باطن کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔ اب اگلا مرحلہ ہے پہلے انسان کے مادی جسم کی تخلیق کا۔

## 75۔ انسان پیدائش سے پہلے

نظریہ نمبر:- ﴿62﴾۔ ﴿انسان مادی جسم کی پیدائش سے پہلے بھی موجود تھا۔﴾

انسان سے مراد اس کا اصل یعنی روح ہے اور یہ روح ایک مرتب پروگرام ہے جس میں انسان کی ہر

ہر حرکت اور ہر عمل ریکارڈ ہے اور انسان مادی جسم سے پہلے روح (اور نفس) مرتب ریکارڈ کی

صورت میں موجود تھا۔

ہماری پوری شخصیت ہر حرکت و عمل پہلے سے مرتب ریکارڈ شدہ پروگرام ہے یعنی ہم جو کچھ ہیں

اور جو کچھ کر رہے ہیں یا جو ہو چکا یا جو ہو گا سب کچھ کی تفصیل پہلے سے کسی ریکارڈ میں محفوظ ہے۔

یعنی ہمیں بھوک لگی ہے ہاتھ حرکت کر رہے ہیں ذہن کام کر رہا ہے تو یہ تمام حرکات پہلے سے ترتیب

شدہ پروگرام ہیں۔

یعنی ہر وجود کا عمل اور آج جو بھی عملی مظاہرے ہو رہے ہیں یہ پہلے سے طے شدہ پروگرام پہ عمل

درآمد ہو رہا ہے یعنی ریکارڈ فلم جب پردہ زندگی پر متحرک ہوتی ہے تو اس تحریک کو ہم زندگی کہتے ہیں۔

یعنی جتنی بھی موجودات ہیں وہ پہلے کہیں اور ہیں اور وہاں سے بہ ترتیب مادی صورت میں وجود میں آرہی ہیں۔

یعنی انسان آج جو مادی صورت میں موجود ہے اور حرکت و عمل کر رہا ہے تو اس کی موجودگی اور حرکت و عمل اسی ترتیب شدہ پروگرام کے تحت ہے۔ یعنی جسم میں آنے سے پہلے انسان محض ترتیب شدہ خصوصیات کا پروگرام تھا لیکن جسم میں اس پروگرام کی منتقلی سے اس پروگرام میں تحریک پیدا ہوئی اور عمل وجود میں آیا اور انسان کا ارادہ اس میں شامل ہو گیا۔

لہذا انسان کی تخلیق کے مراحل میں پہلے۔

کائنات کی تمام تر ارواح کی پیدائش ہوئی۔

پھر نفوس کی تخلیق ہوئی۔

یعنی کسی بھی مادی جسم کی پیدائش سے پہلے تمام تر انسانوں کے باطن ترتیب پا چکے تھے۔

اب یہی تمام تر باطن یکے بعد دیگرے مادی جسم کے قالب میں ڈھلتے ہوئے نظر آ رہے ہیں۔

لہذا تمام تر انسانوں کے باطن تو ترتیب پا چکے ہیں لیکن یہ باطن ابھی عالم ارواح میں ہیں۔

اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ یہ باطن کیسے زمینی سیارے پر اتر کر یکے بعد دیگرے مادی اجسام کی

صورت میں ظاہر ہو رہے ہیں۔

اور کیسے باطن (روح + نفس) (لطیف اجسام) نے پہلا جسم تیار کیا۔

اور پہلا مادی جسم (آدم) کیسے تخلیق پایا۔ پہلے مادی جسم کی تخلیق اور ہر انسان کی پیدائش کا عمل

مختلف عمل ہے لہذا ہر انسان کی پیدائش کے ذکر سے پہلے ہم پہلے انسان کی منفرد تخلیق کا تاریخی

تذکرہ کر رہے ہیں اور یہ تذکرہ اب چوتھے مرحلے میں داخل ہو چکا ہے۔ لہذا چوتھا مرحلہ ہے

۴۔ پہلے مادی جسم (آدم) کی تخلیق:

تخلیق کا چوتھا مرحلہ

نظریہ نمبر: ﴿63﴾ - ﴿پہلا مادی جسم زمینی مٹی کے ذرات سے پودے کی طرح تخلیق کیا

گیا۔ ﴿

صرف کائنات کے سب سے پہلے انسان کے جسم کو خصوصی طور پر تیار کیا گیا یعنی تخلیق کیا گیا باقی تمام تر انسان پیدائش کے عمل سے گزرے ہیں لہذا پہلا جسم زمینی مٹی کے ذرات سے پودے کی طرح تخلیق کیا گیا۔ لہذا پہلے انسان کے مادی جسم کی تخلیق اور تمام تر انسانوں کے مادی جسم کی پیدائش میں فرق ہے۔

جیسے ماں کے پیٹ میں محض نطفے سے پورا بچہ تخلیق پا جاتا ہے بالکل ایسے ہی ابتدائی انسان کا جسم زمینی عناصر کو ترتیب دے کر تیار کیا گیا۔ لیکن نطفے سے ماں کے جسم میں پیدائش کا عمل اور زمینی عناصر سے جسم کی تیاری کا عمل دو بالکل مختلف عمل ہیں۔

زمینی عناصر سے مادی جسم کی تیاری کا عمل ایسا ہے جیسے کسی گلاس فیکٹری کے اندر ریت کے ذرات کو مختلف مراحل سے گزار کر شیشہ بنا دیا جاتا ہے۔ روح وہ بیج اور فارمولہ یعنی انسانی جسمانی تخلیق کا مکمل پروگرام تھا جس کے عین مطابق پورا انسان وجود میں آیا۔ اسی روح میں جسم کی تکمیل کا تمام پروگرام موجود تھا لہذا اسی پروگرام کے مطابق روح نے مٹی کے ذرات اکٹھے کر کے بلڈنگ بلاکس کی طرح جسم ترتیب دے دیا روح خالق کا حکم ہے یعنی خالق نے خود اپنے حکم (تخلیق کا مکمل پروگرام) سے زمینی مٹی کے ذرات کو مختلف حالتوں میں مختلف مراحل سے گزار کر ایک بہترین جسمانی صورت میں ڈھال دیا۔ مٹی میں پانی ملایا گوندا، خشک کیا، جلایا، سکھایا، حتیٰ کہ مٹی کے ذرات سے ایک بہت ہی خوبصورت جسم تیار کر دیا۔ روح وہ بیج اور فارمولہ تھا جس کے عین مطابق پورے انسانی وجود کا تخلیقی عمل مکمل ہوا۔ اسی روح میں جسم کی تکمیل کا تمام پروگرام موجود تھا۔

یعنی پہلے انسان (آدم علیہ السلام) زمینی پیداوار ہیں جیسے پودے، درخت وغیرہ فقط ایک بیج کی مدد سے زمین سے اگتے ہیں اسی طرح فقط انرجی (یعنی روح) سے آغاز کر کے پورا انسان تیار کر دیا گیا۔ یعنی

واحد انرجی سے تکمیل کو پہنچا پہلا انسان اور اسی پہلے ایک انسان سے بنے ہیں تمام انسان۔  
یعنی تمام انسانوں کا مادہ واحد انرجی ہے۔

واحد انرجی سے آغاز ہوا اسی سے روح بنی پھر اسی انرجی سے نفس اسی سے پانی اسی سے مٹی اور یہ سب مرحلہ وار بڑی ترتیب سے تخلیق ہوئے ہیں۔ لہذا نفس واحدہ سے بنے انسان میں روح بھی

ہے نفس بھی اس میں پانی بھی ہے اس کا جسم مٹی سے بھی بنا ہے۔ اور اسی انسان کی جسمانی پیدائش نطفے سے ہوئی ہے۔ انہی ترتیب وار اطلاعات کو جب سمجھنے کے بجائے بے ترتیب کر دیا گیا تو معاملہ الجھ گیا لہذا کسی نے انسانی تخلیق کا تذکرہ کیا تو کہہ دیا کہ انسان پانی سے بنا ہے کسی نے کہہ دیا نفس واحدہ سے بنا ہے کسی نے جرثومہ کہا تو کسی نے مٹی جبکہ یہاں آج ہم نے ان غلط فہمیوں کو دور کر کے یہ وضاحت کر دی ہے کہ انسان محض پانی

یا محض مٹی یا محض جرثومے سے نہیں بنا بلکہ انسانی تخلیق کے عمل میں یہ تمام عناصر پانی، مٹی، جرثومے، مرحلہ وار استعمال ہوئے ہیں۔ یہ تمام اس کے تخلیقی مراحل ہیں اور یہاں ہم نے ان تخلیقی مراحل کو ترتیب وار بیان بھی کر دیا ہے اب ہم نے یہاں اس ترتیب کو درست کر دیا ہے۔ لہذا واحد انرجی سے آغاز کر کے تمام تر ارواح کی پیدائش عمل میں آئی اور منتشر واحد انرجی ایک نئے انداز سے مرکب ہوئی تو اس سے نور بنا اور نور سے نور کا جسم پھر واحد انرجی نے ایک اور مرکب شکل روشنی کی اختیار کی تو اس روشنی کے ذرات سے روشنی کا جسم تیار کیا گیا لہذا نفوس کی پیدائش کے بعد واحد انرجی ہی کی ایک اور مرکب شکل مادی ذرات سے مادی جسم کی تکمیل کا طویل مرحلہ بھی مکمل ہوا اب پہلے انسان کا مادی جسم بھی تخلیق پا گیا اب یہ جسم تو تیار ہے۔ لہذا تخلیق کے اس مرحلے میں اب ارواح کی پیدائش کا مرحلہ بھی مکمل ہوا نفوس بھی تخلیق پا گئے اور اب پہلا انسانی جسم بھی طویل مراحل طے کر کے تیار ہو چکا ہے۔ اب انسان کا ظاہر مادی جسم اور باطن کا تخلیقی عمل مکمل ہوا اب انسان کی موجودہ صورت درج ذیل ہے

باطن = روح + نفس (لطیف اجسام)

ظاہر = مادی جسم

انسان کا ظاہر و باطن مکمل ہوا یعنی مجموعی انسانی تخلیق کا عمل مکمل ہو چکا ہے لیکن ابھی انسان مکمل نہیں ہوا ابھی ایک مرحلہ باقی ہے۔

۵۔ روح و جسم کا اجتماع:

تخلیق کا پانچواں مرحلہ:

نظریہ نمبر۔ ﴿64﴾۔ ﴿تیار و تخلیق شدہ مادی جسم و روح (باطنی اجسام یا نفس) کو یک جان کر دیا



گیا اور یوں پہلے انسان کی تخلیق کا عمل تکمیل کو پہنچا اور انسان جیتی جان ہوا۔ ﴿  
اب اس پہلے انسانی جسم میں خالق نے اپنی روح (یعنی اپنے حکم (پروگرام) سے تیار کردہ انسانی  
باطن) پھونک دی۔ یعنی تخلیق شدہ روح (باطن) و جسم کو یکجا کر دیا۔ جس کی شکل یوں بنی۔

مادی جسم + روح (باطن) = انسان

اور یوں روح (نفس (لطیف اجسام) + مادی جسم کے اجتماع سے انسان مکمل ہوا اور متحرک ہوا۔ یہ  
ہے پہلا تیار انسان یعنی تمام انسانوں کے باپ آدم۔ اور یہی ہے کائنات کا وہ واحد انسان (نفس  
واحدہ) جس سے نوع انسانی نے آغاز کیا اور تمام نوع انسانی اسی نفس واحدہ یعنی ایک پہلے انسان  
آدم کی اولاد ہیں۔ یہ پہلا انسان طویل تخلیقی مراحل سے گذر کر مکمل انسانی صورت میں اب موجود  
ہے متحرک ہے یہ انسان ہر نوع سے ہر لحاظ سے منفرد اور مکمل انسان ہے یہ کوئی مفروضہ حیوان نہیں  
بلکہ کائنات کی سب سے منفرد اور محترم تخلیق انسان ہے۔ اور اس منفرد تخلیق میں کسی ارتقاء کی گنجائش  
نہیں ہے۔ یہاں پہنچ کر اب پہلے انسان کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔ یہ ہے کائنات کا پہلا مکمل  
انسان۔

## 76۔ پہلا جوڑا

اسی پہلے انسان سے اس کا جوڑا یعنی ایک عورت (حضرت حوا) کی پیدائش ہوئی۔ لہذا حضرت حوا  
کی پیدائش کے ساتھ پہلا جوڑا مکمل ہوا  
پہلے جوڑے کی تخلیق کے بعد اب تخلیقی عمل مکمل ہوا۔ اس پہلے جوڑے کے علاوہ کوئی انسان تخلیق  
نہیں ہوا تخلیقی عمل سے بس یہ پہلا جوڑا ہی گذرا ہے باقی سب انسان پیدائش کے عمل سے پیدا  
ہوتے ہیں

پہلے آدم کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔

پھر حوا کو پیدا کیا گیا۔

یوں پہلا انسانی جوڑا مکمل ہوا۔

پہلے انسان اور پہلے جوڑے کی انفرادیت یہ ہے کہ

پہلا جوڑا تخلیق کیا گیا خصوصی طور پر جبکہ اس کے علاوہ تمام تر انسان پیدائش کے طریقے سے پیدا

ہوتے ہیں۔

(2) دوسری انفرادیت یہ ہے کہ تمام تر انسانوں کا باطن خالق کے ہاں تخلیق ہوئے جبکہ جسم زمین پر پیدائش کے ذریعے پیدا ہوتے ہیں۔ جبکہ پہلے انسان کا جسم بھی خالق نے خود جنت میں تیار کیا۔ لہذا پہلا انسانی جوڑا روئے زمین پر نہیں بلکہ جنت میں نمودار ہوا جو خالصتاً خالق کی ذاتی انفرادی تخلیق ہے۔ یہ کسی نوع سے نہیں بلکہ انفرادی حیثیت میں تخلیق کیا گیا۔

یہ پہلا جوڑا تیار ہو گیا تو اسے زمین پر اتار دیا گیا۔

زمین سے ہی اس پہلے جوڑے کے مادی ذرات اکٹھے کیے گئے تھے۔ یعنی انسانی جسم مادی ہے تو روح حقیقی لہذا انسانی تخلیق کا عمل تو مکمل ہوا۔ اب اگلا مرحلہ ہے "پیدائش" کا۔

## 77۔ پیدائش کا آغاز

نظر یہ نمبر: ﴿65﴾۔ کائنات کے پہلے جوڑے سے پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا لہذا نوعی تسلسل قائم ہوا۔ ﴿

پہلے جوڑے سے پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا۔ اور اسی پہلے جوڑے کے انحطاط سے نوع انسانی کا آغاز ہوا اور نوعی تسلسل قائم ہوا۔ لہذا صرف پہلا جوڑا تخلیقی عمل سے گذرا جبکہ باقی نوع انسانی کی تخلیق نہیں ہوئی بلکہ باقی تمام انسان اسی واحد جوڑے کی نسل ہیں اب اس پہلے جوڑے کی تخلیق کے بعد انسان تخلیق نہیں ہوتے بلکہ پیدا ہوتے ہیں

لہذا آج زمین پر موجود تمام تر انسان خالق کے تخلیق کردہ واحد جوڑے کی نسل ہیں۔ یعنی تمام انسانوں کی اصل ایک (پہلا انسان) (واحد انرجی) ہے۔

## 78۔ نفس واحدہ

نفس واحدہ وہ کائناتی مذہبی اطلاع ہے جس پر تمام تر انسانی فلسفوں کی بنیاد ہے لیکن اس مذہبی اطلاع کو سمجھنے میں غلطی کی گئی اور اسی غلطی سے غلط نظریات نے جنم لیا۔ آج یہاں جدید نظریات کے ذریعے ہم نے ماضی کی ان غلط فہمیوں کو دور کر دیا ہے لہذا یہاں ہم نے یہ وضاحت کر دی ہے کہ نفس واحدہ کا مطلب ہے ایک جان، اور نفس واحدہ سے مذاہب کی مراد دو حقیقتیں ہیں۔

(1) واحد انرجی۔

(2) پہلا انسان۔

نفس واحدہ سے مراد واحد انرجی بھی ہے جس سے کہ تمام تر انسان بنے ہیں۔ اور نفس واحدہ سے مراد پہلا انسان (آدم) بھی ہے کہ تمام انسان اسی کی نسل سے ہیں۔ لہذا اسی پہلے انسان کی اولاد ہے تمام نوع انسانی لیکن آدم کے علاوہ ہر بچہ ماں کی کوکھ سے پیدا ہوتا ہے اور یہ نوعی تسلسل آدم سے شروع ہو کر آخری انسان تک جائے گا اور اس نوعی تسلسل کو دنیا کی کوئی طاقت ختم نہیں کر سکی کبھی بھی۔ ہاں خالق جب چاہے پوری انسانیت کو یکلخت نابود کر دے۔

## 79۔ تخلیقی ترتیب

یہاں ہم نے پہلے انسان کی مرحلہ وار تخلیق کا تذکرہ کیا ہے۔ لہذا کائنات کے پہلے انسان کی تخلیق کی مندرجہ ذیل ترتیب ہمارے سامنے آئی ہے۔

واحد انرجی منتشر ہوئی اور



تمام تر ارواح کی صورت میں ظاہر ہوئی



نفوس کی تخلیق ہوئی



پہلے مادی جسم کی تخلیق ہوئی



روح (نفس) و جسم کا اجتماع ہوا = پہلا انسان مکمل ہوا



حوا کی پیدائش = کائنات کا پہلا جوڑا مکمل ہوا



## پیدائش کے ذریعے نوعی تسلسل کا قیام عمل میں آیا

اس ترتیب کا خلاصہ یہ ہے۔

- (1) واحد انرجی :- ابتداً کچھ بھی نہیں تھا لہذا خالق کا حکم یعنی واحد انرجی متحرک ہوئی منتشر ہوئی اور تمام تر ارواح کی صورت میں ظاہر ہوئی۔ اب یہی روح وہ فارمولہ ہے جو انسان کے ظاہر و باطن کی تخلیق کا مکمل فارمولہ ہے لہذا روح (خالق کا حکم) پروگرام) کے اس فارمولے کے مطابق
  - (2) روشنی کے ذرات سے نفوس کو ترتیب دیا گیا لہذا نفوس کی تخلیق مکمل ہوئی۔
  - (3) مادی ذرات سے مادی جسم ترتیب دیا گیا۔ یہ ہے پہلے انسان کا جسم لیکن یہ جسم انسان نہیں محض جسم ہے بے حرکت جسم۔
  - (4) اب اس مکمل تیار جسم اور روح (اور انسانی باطن یا نفس) کو مادی جسم سے مربوط کر دیا گیا۔ یعنی تخلیق شدہ جسم میں پہلے سے تیار روح پھونک دی گئی اور انسان جیتی جان ہوا۔
  - (5) آدم کے ساتھ ان کا جوڑا یعنی حوا کو پیدا کیا گیا۔
  - (6) پہلا جوڑا مکمل ہو گیا یہ پہلا جوڑا پیدا نہیں ہوا بلکہ خاص تخلیقی مراحل سے گذر کر خصوصی طور پر تیار کیا گیا ہے۔
  - (7) اب اس جوڑے سے پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا۔ یعنی نوعی تسلسل قائم ہوا۔ یعنی اب انسان تخلیق نہیں ہوتے (پہلے انسان کی طرح) بلکہ جوڑے کے ذریعے پیدا ہوتے ہیں۔ اور موجودہ نوع انسانی اسی جوڑے کی نسل ہیں۔ اور آدم تمام انسانوں کے باپ ہیں۔ اور تمام انسانوں کی اصل (آدم، واحد انرجی) ایک ہی ہے۔
- یہ نتائج جو ہم نے برسوں کی تحقیق کے بعد حاصل کئے ہیں مذہبی اطلاعات کی سو فیصد تصدیق کر رہے ہیں۔ لہذا برسوں کی تحقیقات کا یہ نتیجہ نکلا ہے کہ ہماری تحقیقات جہاں جہاں صحیح ہیں وہاں وہاں مذہبی اطلاعات سے مطابقت رکھتی ہیں۔

# پیدائش

الذی خلق فسوی والذی قدری فھدی

ترجمہ: وہ جس نے تخلیق کیا، تناسب قائم کیا وہ جس نے تقدیر بنائی اور ہدایت دی۔

مادی جسم کی پیدائش

نظریہ نمبر۔ رحم مادر میں مادی جسم روح کے پروگرام سے ترتیب پا رہا ہے

## 80- پیدائش کا عمل

ہم تخلیق کے عنوان سے تفصیلی وضاحت کر آئے ہیں کہ صرف پہلا انسان یا پہلا جوڑا "تخلیق" کے عمل سے گذرا تھا۔ اس کے علاوہ کوئی انسان تخلیق کے عمل سے نہیں گذرا۔ تمام تر انسان "پیدا" ہوتے ہیں۔ یا "پیدائش" کے عمل سے گذرتے ہیں۔ اگرچہ انسان کی تخلیق کا تذکرہ پہلی دفعہ میں نے اس کتاب میں کیا ہے لیکن سائنسی تحقیقات کی بدولت پیدائش کے عمل سے تو آج سبھی واقف ہیں لیکن یہاں ہم پیدائش کے کچھ مزید مراحل کا تذکرہ ایک نئے انداز میں اپنے نئے نظریات کے ذریعے کرنے جا رہے ہیں۔

آج ہر شخص جانتا ہے کہ ہر بچہ ماں کی کوکھ سے ۹ ماہ کے عرصہ میں جنم لیتا ہے اور جدید سائنسی تحقیقات کے ذریعے ہم نے اس ۹ ماہ کے دوران حمل کی تمام تر تفصیلات بھی حاصل کر لی ہیں۔ مثلاً انزال کے وقت جسم سے خارج ہونے والے مادہ حیات (Semen) کی قلیل مقدار 300 سے 400 ملین اسپرمز (Sperms) یا اندازاً ایک مکعب سینٹی میٹر مادہ حیات میں  $2\frac{1}{2}$  کروڑ اسپرمز (Sperms) ہوتے ہیں ان کروڑوں خلیوں میں سے ہر ایک بچے کی تشکیل کی صلاحیت رکھتا ہے جبکہ ان کروڑوں اسپرمز (Sperms) میں سے بمشکل ایک عورت کے بیضے میں داخل ہو کر اسے بارور کرتا ہے اور ایک خلیہ ایک ملی میٹر کا دس ہزارواں حصہ ہے۔ فیلوپین ٹیوب (Flopion Tube) سے رحم تک آنے میں اس بارور بیضے کو کم و بیش تین دن لگتے ہیں۔ اس سفر کے دوران یہ بیضہ بڑی تیزی کے ساتھ مختلف خلیوں میں تقسیم ہوتا چلا جاتا ہے یہاں تک کہ ان خلیوں کا ایک گچھ سا بن جاتا ہے یہ گچھا چلتا ہو اور رحم کے استر تک پہنچتا ہے اور اس میں داخل ہو جاتا ہے۔ اس وقت اس گچھے میں تقریباً دو سو خلیے ہوتے ہیں جسے اب "جنین" (Embryo) کہتے ہیں۔ اس وقت اس کی جسامت ایک نقطے کے برابر ہوتی ہے۔ جب بیضہ بار آور ہوتا ہے تو یہ رحمی نالی کے ساتھ ساتھ اس جگہ سے گذرتا ہے جہاں کروموسوم کی تیاری اور خلیوں کی تقسیم کا عمل جاری ہوتا ہے۔ یہ بارور بیضہ تقریباً ایک ہفتے بعد رحم کی رطوبت دار جھلی (Endometrium) میں اپنی جگہ بنا لیتا ہے۔ رحم میں موجود جنین پر دو تہیں ہوتی ہیں ان میں سے اندرونی تہہ تو آگے چل کر بچے میں تبدیل ہو جاتی ہے جبکہ بیرونی تہہ بچے کی آنول نال (Placenta) کی شکل اختیار کر لیتی ہے

ابتدائی ہفتوں میں مضغہ یا جنین محض ایک چھوٹی سی مچھلی کی مانند نظر آتا ہے، حمل کے چوتھے ہفتے کے آغاز پر اس کا برائے نام دل بن کر دھڑکنا شروع کر دیتا ہے۔ عصبی نظام اور اندرونی اعضاء بھی بننا شروع ہو جاتے ہیں۔ اسی ہفتے کے اختتام پر دماغ، ریڑھ کی ہڈی، آنکھیں، کان اور ناک نیز گردے اور پھیپھڑے بھی تشکیل پانے لگتے ہیں۔ وہ جنین جس کا آغاز ایک نقطے سے ہوا تھا، اب تقریباً تین ملی لیٹر "0.12" تک بڑھ چکا ہوتا ہے اور اس کا وزن پانچ سو گنا زیادہ ہو چکا ہوتا ہے۔ تیسرے مہینے کے آخر تک یہ ایک واضح انسانی شکل اختیار کر لیتا ہے اس مرحلے پر اس کو (FETUS) کہتے ہیں۔ تین مہینے کے اس جنین کا وزن تقریباً ۲۸ گرام (ایک اونس) اور لمبائی ۷ سینٹی میٹر ("2.75 انچ) ہوتی ہے۔ اب اس کے بازو اور ٹانگیں بھی واضح ہو جاتی ہیں جن میں انگلیاں بھی نظر آتی ہیں اب یہ ٹانگوں کو چلا سکتا ہے انگلیوں کو بند کر سکتا سر کو گھما سکتا اور اپنا منہ کھول اور بند کر سکتا ہے چوتھے مہینے میں یہ اپنے بازو اور ٹانگیں پھیلا بھی سکتا ہے اب اس کی ماں اپنے پیٹ میں بچے کی نیند اور جاگنے کو محسوس بھی کر سکتی ہے۔ اس مرحلے پر وہ بھکی بھی لیتا ہے۔ ساتویں مہینے میں بچے کی نمو کا آخری مرحلہ شروع ہوتا ہے آٹھویں اور نویں مہینے میں اس کے جسم پر چربی بنتی ہے اور قدرت اس کے اندرونی اور بیرونی اعضاء پر آخری نقاشی کرتی ہے۔ استقرار حمل کے نویں مہینے میں بچے کا وزن 2.25 سے 5.5 کلو گرام (5 سے 12 پاؤنڈ) اور لمبائی 43 سے 56 سینٹی میٹر (17 سے 22 انچ) ہوتی ہے۔ یعنی نو ماہ پہلے ایک نقطے سے آغاز کر کے آج حرکت کرتا ہوا انسان وجود میں آ گیا۔

لیکن کیا واقعی یہ سارا کارنامہ محض ایک نطفے کا ہے؟

یہ تو بتایا جاتا ہے کہ ایک نطفے سے آغاز کر کے کیسے کیسے مرحلوں سے گذر کر بچہ پیدائش کے عمل سے گذرتا ہے۔ یہ نہیں بتایا جاتا کہ یہ اتنا پیچیدہ اتنا منظم نظام کیسے انجام پا رہا ہے سائنسدانوں کا خیال ہے کہ پیدائش کا یہ نو ماہ پر مشتمل تمام عمل خود کار ہے۔

یہ کیسا خود کار عمل ہے جو قرنوں سے خود بخود جاری ہے اس میں کوئی خامی کوئی کمی پیشی نہیں ہوتی یہ کیسی مشین ہے جو خود بخود بے نقص انسان تیار کیے ہی چلی جا رہی ہے۔ اگر دنیا کا سب سے ذہین انسان یہ کہدے کہ یہ سوئی خود بخود بنی ہے تو یقیناً سب اس ذہین آدمی کو خبطی قرار دے دیں گے کیونکہ کوئی یہ تسلیم نہیں کر سکتا کہ سوئی خود بخود بھی بن سکتی ہے۔

جب ایک سوئی خود بخود نہیں بن سکتی تو دنیا کی سب سے پیچیدہ مشین جس کے اسرار صدیوں برس سے کھلتے ہی چلے آ رہے ہیں وہ خود بخود کیسے بن سکتی ہے۔ آخر وہ کیسے لوگ ہیں جو یہ تسلیم کرنے کو تیار نہیں کہ سوئی خود بخود بن سکتی ہے لیکن یہ تسلیم کر لیتے ہیں کہ انسان خود بخود بن جاتا ہے اور کوئی اس کا بنانے والا ڈیزائن کرنے والا نہیں ہے۔

آج سب جانتے ہیں کہ خود بخود کچھ بھی نہیں ہوتا اور اس حقیقت کی سب سے بڑی گواہ خود جدید سائنس ہے جدید سائنس نے آج ہر قسم کے اتفاقات کی سو فیصد نفی کر دی ہے۔ کائنات کا سب سے چھوٹا وجود ہو یا بڑے سے بڑا وجود کچھ بھی اتفاقات کا نتیجہ نہیں ہر وجود اپنی جگہ پرفٹ اور بڑا خاص ہے سب کچھ پری پلینڈ اور سوچے سمجھے منصوبے کا حصہ ہے کسی بڑے دماغ کی بڑی کارستانی۔ لہذا اتفاق سے یا خود بخود کچھ نہیں ہوتا

لہذا انسان کی پیدائش کا عمل بھی خود کار نہیں بلکہ پری پلینڈ ہے اور باقاعدہ پروگرام کے تحت بڑی سخت نگرانی میں انسان پیدائش کے طویل اور انتہائی مشکل مراحل سے گذرتا ہے۔ اگرچہ بظاہر ہم سائنسی تحقیقات کی بدولت پیدائش کے ہر عمل سے پوری واقفیت حاصل کر چکے ہیں لیکن یہ معلومات ادھوری معلومات ہیں۔ کیونکہ جسم کو روح ترتیب دے رہی ہے جبکہ موجودہ پیدائشی عمل میں روح کا کہیں تذکرہ ہی نہیں بلکہ سائنسدان کہہ دیتے ہیں کہ اس عمل میں روح کی کہیں گنجائش ہی نہیں۔ لہذا مادی جسم کی پیدائش کے مراحل پہ بڑی بڑی کتابیں تو موجود ہیں لیکن ان میں کہیں بھی روح کا تذکرہ نہیں اور مادی جسم کی رحم مادر میں پیدائش کا عمل روح کے تذکرے کے بغیر کبھی بھی مکمل نہیں ہو سکتا۔ لہذا اب یہاں ہم پیدائش کے عمل کو ایک نئے انداز سے متعارف کروا رہے ہیں۔ اور اس نامکمل بیان کو روح کے تذکرے کے ساتھ مکمل کرنے جا رہے ہیں۔

لہذا اب ہم مادی جسم کے پیدائشی مراحل کو اپنے نئے نظریات کے ذریعے ایک نئے انداز سے پیش کرتے ہیں۔

## 81۔ مادی جسم کی پیدائش کا آغاز

نظریہ نمبر۔ ﴿66﴾۔ ﴿مادی جسم کی پیدائش کا آغاز نطفے سے ہوتا ہے۔ لیکن فقط نطفہ جسم تیار نہیں کر سکتا انسان فقط چند گرام کے نطفے سے وجود میں نہیں آ سکتا۔ نطفہ طویل اور پیچیدہ پیدائشی عمل کا



فقط ایک جز اور ایک مرحلہ ہے۔ اور یہ مرحلہ بھی مادی جسم کی پیدائش کا ابتدائی مرحلہ ہے۔ آج تک کی تمام تر سائنسی و تجرباتی جدوجہد کا نتیجہ یہ ہے کہ ہم فقط یہ جان پائے ہیں کہ چند گرام کے نطفے سے انسان وجود میں آجاتا ہے۔

لیکن کیا یہ بالکل درست بات ہے؟ ہرگز نہیں!

انسانی تخلیق کے دیگر مراحل روح، نفس اور پہلے جسم کی تخلیق کا تذکرہ تخلیق کے عنوان سے ہم کر آئے ہیں لہذا تخلیق کے عمل سے گزرنے والے پہلے جوڑے کے ذریعے ہی پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا۔ لہذا اب ہر جسم پیدائش کے ذریعے ہی تخلیق پاتا ہے لیکن یہ کام فقط نطفے کا نہیں۔ نطفہ فقط ایک مرحلہ ہے پیدائش کے عمل کا۔ جبکہ پیدائش کے بہت سے دیگر مراحل طے کر کے انسانی مادی وجود مکمل ہوتا ہے، کام کرتا ہے، متحرک ہوتا ہے، زندہ رہتا ہے۔ جبکہ موجودہ سائنس محض نطفے کی کارکردگی کو ہی جان پائی ہے۔ اب یہ کہ دینے سے کام نہیں چلے گا کہ یہ سب کچھ خود بخود ہو رہا ہے اب ہمیں ان سوالات کے جواب دینا ہوں گے کہ

کائنات کی یہ سب سے پیچیدہ مشینری مادی جسم کیسے خود کار ہے؟ کیسے متحرک ہے؟ اس کا اندرونی نظام کیسے خود کار ہے؟

یہ وجود کیسے بن رہا ہے؟ کیسے ہر کل پرزہ اپنی جگہ فٹ بیٹھا ہے؟

کیسے ہر کام بڑے موقع کی مناسبت سے ہو رہا ہے؟

کیسے جسمانی اعمال ہو رہے ہیں؟ اور اس انتہائی منظم اور خود کار سسٹم کو ہدایات کہاں سے مل رہی ہیں؟

کیسے جنین کا تعین ہو رہا ہے؟

کیسے جسم ایک دوسرے سے مشابہ بھی ہیں مختلف بھی؟ کیسے یہ مشینری متحرک ہے اور کیسے موت کی

صورت میں خود کار حرکت خود بخود رک جاتی ہے؟ یہ سب کیسے ہو رہا ہے؟ جسمانی تعمیر کا اتنا بڑا اتنا

پیچیدہ منصوبہ ظاہر ہے خود بخود یا اتفاقاً نہیں ہو سکتا نہ ہی یہ سب محض نطفے کا کمال ہے۔ جبکہ موجودہ

سائنس محض نطفے کی کارکردگی کو ہی جان پائی ہے۔ اب یہ کہ دینے سے کام نہیں چلے گا کہ یہ سب

کچھ خود بخود ہو رہا ہے بلکہ نطفے کی کارکردگی کے علاوہ مادی جسم کے دیگر پیدائشی مراحل کو جاننا نہیں

الگ الگ شناخت کرنا انتہائی ضروری ہے درحقیقت پیدائش کا عمل اتفاقاً یا خود بخود یا محض نطفے سے

مکمل نہیں ہوتا بلکہ پیدائش کا پورا عمل ایک بہت ہی خاص فارمولے کے تحت انجام پاتا ہے اور اب ہم یہاں اسی خاص فارمولے کو بیان کرنا چاہتے ہیں۔ لہذا پیدائش کے مخصوص عمل کو بیان کرنے کے لیے یہاں ہمیں ایک پیدائشی فارمولہ پیش کرنا ہوگا۔

## 82۔ پیدائشی فارمولہ

نظریہ نمبر: ﴿67﴾۔ ﴿ہر مادی جسم کی پیدائش کا فارمولہ درج ذیل چار نکات پر مشتمل ہے۔

(۱)۔ تخلیق (۲)۔ تناسب (۳)۔ تقدیر (۴)۔ ہدایات

تمام تر انسانوں کے مادی اجسام کی پیدائش کا عمل اس چار نکاتی فارمولے کے تحت انجام پاتا ہے یہ چاروں نکات بھی مذید مراحل پر مشتمل ہیں جن کا تفصیلی تذکرہ آگے آئے گا۔ چار نکاتی فارمولے کے تحت کیسے جسم پیدائش کے عمل سے دو چار ہوتا ہے اور یہ فارمولہ کہاں سے آیا؟ یہ جاننا ضروری ہے۔

لہذا یہ کہہ دینا ہرگز کافی نہیں کہ پیدائش کا عمل محض ایک نطفے سے خود بخود مکمل ہو رہا ہے۔ بلکہ یہ جاننا ضروری ہے کہ چار نکاتی فارمولے کے تحت یہ پیدائش کا عمل کیسے انجام پا رہا ہے۔ اب ہم ہر انسان کے پیدائشی عمل کے اس چار نکاتی (تخلیق، تناسب، تقدیر، ہدایات) فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے

لہذا مادہ رحم میں پیدائش کے عمل میں پہلا مرحلہ ہے تخلیق کا۔

۱۔ تخلیق

پہلا مرحلہ

روح جسم تخلیق کر رہی ہے

۱۔ تخلیق

رحم مادر میں مادی جسم کی پیدائش کا پہلا مرحلہ ہے تخلیق

نظریہ نمبر: ﴿68﴾۔ ﴿نطفہ نہیں بلکہ روح جسم تخلیق کر رہی ہے۔﴾

یہ روح ہی ہے جو نطفے سے لے کر جسم کی تکمیل تک ہر لمحہ جسم ترتیب دے رہی ہے اور ہر لمحہ جسم تخلیق کر رہی ہے۔

روح خالق کائنات کا حکم (پروگرام) ہے۔ یعنی سادہ لفظوں میں ہر جسم کا تخلیق کار خود خالق کائنات ہے۔

انرجی کے انحطاط سے خلیات اور خلیات کے انحطاط سے جسم بن رہا ہے۔

روح ہی وہ شے ہے جس سے وجود عدم سے وجود کی طرف بڑھ رہا ہے۔ آئیے دیکھتے ہیں روح کے پروگرام پر رحم مادر میں جسم کیسے تخلیق پارہا ہے

## ۲۔ جسم کی تیاری

نظریہ نمبر:- ﴿69﴾۔ ﴿روح جسم کی تیاری کا پروگرام دے رہی ہے۔﴾

اگرچہ بظاہر یہ عمل فقط نطفے کے ذریعے انجام پارہا ہے لیکن اس تمام عمل کا مکمل پروگرام روح مہیا کر رہی ہے۔ نطفہ درحقیقت جسم کی تیاری کا پہلا نہیں دوسرا مرحلہ ہے۔

روح بچے کی جسمانی تیاری کا مکمل فارمولہ مکمل پروگرام ہے۔ جیسا پروگرام ہے جیسی ہدایات ہیں ویسا ہی بچہ تیار ہوگا۔

مرد، عورت، کالا یا گورا، لمبا، چھوٹا، خوبصورت یا بدصورت جیسا روح کا پروگرام جسم کی تیاری کے لئے ملا ہے ویسی ہی تخلیق ترتیب پا کر انسانی صورت میں ظاہر ہوگی۔ نطفے سے لیکر آخری مرحلے تک جسمانی پیدائش کا تمام پروگرام روح کا پروگرام ہے۔ یعنی ہر لمحہ خالق مخلوق کو تخلیق کر رہا ہے اپنے ذاتی ارادے اور ذاتی اختیار اور ذاتی پروگرام (روح) کے ذریعے۔ لہذا چند گرام کے نطفے سے آغاز کر کے جس پیدائشی عمل سے گذر کر پورا انسان ابھر کر سامنے آتا ہے اس پیدائشی عمل کا تمام تر دار و مدار روح پر منحصر ہے۔

محض نطفے کی کارکردگی کو سامنے رکھا جائے اور وہ اپنا کام پورا کرے اور جسم تیار ہو جائے پھر بھی روح کی عدم موجودگی سے یہ تخلیقی عمل تکمیل نہیں پاسکتا۔ مثلاً تخلیقی عمل کے مکمل ہونے کے باوجود؛

(1) بچہ مردہ پیدا ہوگا۔ (روح کی عدم موجودگی کے سبب)۔

اور اگر روح پورا پروگرام نہ دے تو بچہ مردہ ہونے کے ساتھ ساتھ

(2) ادھورا پیدا ہوگا۔ لہذا روح

(1)۔ روح اس جسم کی زندگی بھی ہے

(2)۔ انسانی جسم کی مکمل تیاری کا پروگرام بھی دے رہی ہے یا انسانی جسم تیار کر رہی ہے۔

اب دیکھنا یہ ہے کہ روح یہ کام کیسے کر رہی ہے۔ ہم نے یہاں یہ کہا ہے کہ جسم روح تیار کر رہی ہے۔

جبکہ سائنسدانوں کا خیال یہ ہے کہ جسم کروڑوں سیلز سے مل کر بنتا ہے جیسے عمارت بلاکس سے بنتی ہے ایسے ہی جسم سیلز سے بنتا ہے اسی لئے وہ سیلز کو جسمانی بلڈنگ کے بلاکس کہتے ہیں۔ سائنسدانوں کا یہ خیال درست ہے لیکن یہ مکمل بیان نہیں ہے۔ کروڑوں سیلز سے مل کر جسم تو بنتا ہے لیکن کیسے؟

سیل جسم کا بہت چھوٹا یونٹ ہے جسے مائیکرو اسکوپ کی مدد سے دیکھا جاتا ہے۔ سائنسدانوں نے سیل کے مرکز میں نیوکلیئس کے اندر کروموسوم اور کروموسوم DNA پر مشتمل ہے دریافت کر لیا ہے۔ اور اب DNA کی تفصیلات سامنے آ رہی ہیں۔ یہ بھی معلوم ہو گیا کہ مختلف اقسام کے خلیے مختلف طریقوں سے اپنے اپنے کام انجام دے رہے ہیں۔ لیکن کیسے؟ کیسے ہر خلیہ اپنا اپنا کام خود بخود کر رہا ہے؟ نظام عصبی کیسے کام کر رہا ہے؟ DNA کے پاس معلومات کہاں سے آئیں؟ رگ، پٹھے، دل، گردے سب کیسے اپنے اپنے کام میں لگے ہوئے ہیں؟

یہ سب تو انسان سے بھی زیادہ سمجھدار ہیں کوئی غلطی نہیں کرتے ایسا کام کر رہے ہیں کہ ایک انتہائی پیچیدہ مشینری (جسم) خود بخود کام کر رہی ہے۔ اور وہ کیا وجوہات ہیں کہ یہ انتہائی خود کار مشینری فقط موت کی صورت میں ہر قسم کا کام بند کر دیتی ہے، دل، جگر، گردے، پھیپھڑے، نظام عصبی، خلیے سبھی کچھ تو بے ٹھیک ٹھاک ہے اپنی جگہ موجود ہے اپنی جگہ قائم ہے پھر یہ حرکت کیوں رک گئی ہر خلیے ہر عضو نے اپنا کام کیوں بند کر دیا؟ کیسے کروڑوں خلیوں سے مل کر بننے والا مضبوط جسم فقط موت کی صورت میں بے نشان ہو گیا بالکل ایسے جیسے تھا ہی نہیں۔

کیا واقعی کروڑوں سیلز کے جڑنے سے انسانی جسم بنتا ہے؟ کیا ہم ایسے سیلز اکٹھے کر کے انسان تشکیل دے سکتے ہیں؟

حقیقت یہ ہے کہ یہ جسمانی عمارت سیلز تیار نہیں کر رہے بلکہ یہ جسمانی عمارت روح تعمیر کر رہی

ہے۔  
لیکن کیسے؟

مادہ پرست تو آج بھی اس سامنے کی دریافت شدہ سائنسی حقیقت یعنی روح کو جھٹلا دیتے ہیں اور کہہ دیتے ہیں کہ مادی جسم میں روح کی کہیں کوئی گنجائش نہیں۔ جبکہ ہم یہاں نہ صرف مادی جسم اور روح کے تعلق کی مسلسل وضاحت کریں گے بلکہ یہ بھی بتائیں گے کہ روح جسم کیسے تیار کر رہی ہے۔

### ۳۔ جسم کی ترتیب:

نظریہ نمبر: ﴿70﴾۔ ﴿دو اجسام کو یکجا کر کے ترتیب دینے والی روح ہے﴾۔  
یعنی خلیے نہیں بلکہ روح جسم ترتیب دے رہی ہے۔ دو خلیوں کو روح مرکب کرتی ہے اس کے علاوہ دو اجسام کو مرکب کر کے جسم ترتیب دینے کا کوئی دوسرا طریقہ نہیں ہے۔  
یعنی روح (انرجی Energy) خلیوں کو مرکب کر کے اجسام ترتیب دے رہی ہے۔  
جبکہ سائنسدانوں کا خیال ہے کہ جسم کروڑوں سیلز سے مل کر بنتا ہے جیسے عمارت اینٹوں سے بنتی ہے۔ لیکن ایسا نہیں ہے۔

سیلز محض جسم کی اینٹیں تو ہیں لیکن صرف اینٹوں سے عمارت کی تعمیر ممکن نہیں اگر ان اینٹوں کے درمیان انہیں جوڑنے والا مسالہ نہ ہو۔ اس مسالے کے بغیر صرف اینٹوں سے پوری عمارت کھڑی نہیں ہو سکتی۔ اینٹیں تو فقط ایک جز ہیں عمارت کی تعمیر کا۔

اسی طرح سیلز بھی فقط ایک مرحلہ ایک جز ہے جسمانی عمارت کی تعمیر کا اور فقط اس ایک جز سے پوری جسمانی عمارت مکمل نہیں ہو سکتی جب تک ان سیلز کو جوڑنے والی روح (Energy) نہ ہو۔  
روح کے بغیر سیلز یکجا ہو کر جسمانی عمارت تعمیر نہیں کر سکتے۔

یہ روح ہی ہے جو خلیوں کو باہم مربوط کر رہی ہے یہ روح ہی ہے جو کروڑوں خلیوں کو ترتیب دے کر باہم مربوط کر کے جسمانی عمارت تعمیر کر رہی ہے۔

### ۴۔ جسم کا نقشہ

نظریہ نمبر:- ﴿71﴾ - ﴿جسم کا نقشہ جسم کی تیاری کا تمام پروگرام روح فراہم کر رہی ہے۔ ہر خلیے کے پاس روح کا پروگرام ہے جس کے مطابق ہر خلیہ وجود پا رہا ہے اور اپنا کام کر رہا ہے۔﴾  
خلیہ جسم کا بہت چھوٹا یونٹ ہے جسے مائیکروسکوپ کی مدد سے دیکھا جاتا ہے سائنسدانوں نے اس ننھے وجود کی اندر کی دنیا بھی دریافت کر لی ہے۔

اتنے ننھے وجود میں اتنی پیچیدگی اور اس کے پاس اتنی معلومات کہاں سے آئیں؟  
مختلف قسم کے خلیے مختلف قسم کے کام سرانجام دے رہے ہیں۔ ہر خلیہ کے پاس روح کا پروگرام ہے ہر خلیہ اسی پروگرام پر عمل پیرا ہے۔ ہر خلیے کو اس کے کام کا پروگرام دے رہی ہے روح

### 5-DNA کی معلومات:

نظریہ نمبر:- ﴿72﴾ - ﴿DNA کے پاس معلومات روح کی معلومات ہیں۔﴾  
جسم کروڑوں سیلز سے مل کر بنتا ہے۔ سیلز کے مرکز میں نیوکلئیس ہوتا ہے۔ نیوکلئیس کے اندر کروموسوم (Chromosomes)۔ کروموسوم DNA یعنی ڈی اوکسی رائبونیوکلئیک ایسڈ پر مشتمل ہوتا ہے اسی DNA کو جین بھی کہتے ہیں۔ ہمارے جسم کے بارے میں تمام معلومات DNA میں چھپی ہوئی ہیں۔ اس لئے ماہرین اسے کتاب زندگی "Book Of Life" کہتے ہیں۔ مثلاً اس جین میں آپکے بالوں کا رنگ، آنکھوں کی پتلیوں کا رنگ، جسم اور چہرے کے خدو خال۔ آپ کا قد، جسم میں سیلز کی تقسیم، ہڈیوں، گوشت، پٹھوں کی ساخت غرض جسم کے حوالے سے تمام معلومات DNA میں درج ہوتی ہیں۔ جسمانی معلومات کے ساتھ بعض وراثی عادات و اطوار بھی ریکارڈ ہوتی ہیں۔ سائنسدان DNA کو جسم کی ڈائریکٹری قرار دیتے ہیں جسے وہ ابھی تک پڑھ نہیں سکے ہیں۔ صرف ایک سیل میں موجود DNA کی تفصیلات لکھنے کیلئے اخبار کے ایک لاکھ صفحات سیاہ کرنے ہوں گے ایک انسانی DNA کے لئے 3 ارب 10 کروڑ الفاظ درکار ہوں گے۔ DNA چار اجزا پر مشتمل ہوتا ہے۔

(G - Guanine) (1)

(T - Thymine) (2)

(C - Cytocine) (3)

(A - Adenine)

(4)

ان اجزاء کو جینیوم کہا جاتا ہے۔ انہی کے الٹ پلٹ سے جسم کی پوری عمارت بنتی ہے۔ مثلاً کون کون سے کوڈ سے ہڈیاں بنتی ہیں کون کون سے کوڈ سے رگ پٹھے، بال، خون، ناخن اور دیگر اعضا کون سے کوڈ سے ہوتی ہے۔ ان کوڈز کے سیٹ کو جینیوم پروجیکٹ بھی کہا جاتا ہے۔ انسان کے اندر جینیوم کے تیس لاکھ جوڑے ہوتے ہیں جو تقریباً 50 سے 100 خلیاتی جینز میں مرتم Code ہوتے ہیں لیکن ابھی ان کوڈز کو پڑھنے کی کوشش جاری ہے۔

DNA کے پاس اتنی معلومات کہاں سے آئیں۔

DNA کے پاس معلومات روح کی معلومات ہیں لہذا جسم کا ہر خلیہ اسی روح کے پروگرام پر اپنا اپنا کام انجام دے رہا ہے روح ہر خلیے کو اس کا پروگرام مہیا کر رہی ہے۔

## 6۔ نظام عصبی:

نظریہ نمبر: ﴿73﴾۔ ﴿نظام عصبی روح کے پروگرام پر کام کر رہا ہے۔ روح نظام عصبی کو قائم اور متحرک رکھے ہوئے ہے۔﴾

جسم انسانی ہڈیوں کے ڈھانچے سے پوستہ عضلات و اعصاب کا مجموعہ ہے جو خلیات سے مرکب ہے۔ اگرچہ خلیات بناوٹ کی اکائی کے لحاظ سے یکساں ہوتے ہیں لیکن کارکردگی کے لحاظ سے مختلف مثلاً اعصابی خلیے، گوشت کے خلیے اور ہڈی کے خلیے اپنے اپنے کام اپنے اپنے طریقوں سے سرانجام دیتے ہیں۔ ذندہ رہنا، مختلف افعال سرانجام دینا اور مناسب وقت پر آنے والے نئے خلیوں کے لیے جگہ خالی کرنا پرانے خلیوں کی خودکشی ان ذہنی احکامات کے تحت ہوتا ہے جو خودکار اعصابی نظام Parasympathetic System کے تحریکی اشاروں کی صورت میں انہیں موصول ہوتے رہتے ہیں۔ یہ اشارے خلیے کو تین اطراف سے موصول ہوتے ہیں۔ اول خود خلیے کا نیوکلئیس اور اس میں موجود DNA اور جینز دوسرا دیگر خلیے اور ان کا ترسیلی نظام، تیسرا اعصابی خلیے اور ان کا ترسیلی نظام۔ یہ تمام ترسیلی نظام دو طرفہ کام کرتے ہیں یعنی دماغ اور مختلف مقامات پر واقع مراکز سے احکامات کی وصولی اور خلیوں کو ترسیل، خلیوں کے حالات، احکامات کی تعمیل بصورت عمل و رد عمل کے ذریعے متعلقہ کارٹیکس کو مطلع رکھنا۔ یہ تمام اعصابی افعال کیمیائی برقی

قوت سے تشکیل پاتے ہیں۔ ان برقی کیمیائی لہروں کی رفتار عام برقی لہروں سے بہت کم ہوتی ہے۔ یہ روعصبانیوں سے گذر کر حرام مغز کو اور وہاں سے دماغ کو پہنچتی ہے اور وہاں سے حرکی اعصاب میں منتقل ہو جاتی ہے۔ مختصراً جانداروں میں نظام عصبی کی بدولت کام کرنے یا روکنے کی سکت اور صلاحیت پیدا ہوتی ہے۔

سوال یہ ہے کہ وہ کیا چیز ہے جو اس نظام عصبی کو قائم اور متحرک رکھے ہوئے ہے۔ اور کیسے؟ خلیوں کو تین اطراف سے موصول ہونے والے تحرکی اشارے دماغ اور مختلف مقامات پر واقع مراکز سے احکامات کی وصولی اور خلیوں کو ترسیل اور خود خلیہ اور DNA کی معلومات یہ سب روح کی بدولت ہے۔ یہ سارا نظام روح کے مرتب پروگرام پر کام کر رہا ہے۔

۷۔ خلیہ مادہ اور روح:

نظریہ نمبر:- ﴿74﴾۔ ﴿خلیہ اور جسم کا ہر چھوٹا بڑا یونٹ مادہ اور روح ہے﴾۔

خود جسم اور جسم کا ہر چھوٹے سے چھوٹا یونٹ اور بڑے سے بڑا یونٹ مادہ اور روح (Energy) ہے۔

لہذا ہر خلیہ ہر یونٹ اسی روح (انرجی) سے زندہ ہے متحرک ہے اور جب اس خلیے میں سے یہ روح یہ انرجی نکل جاتی ہے تو یہ خلیہ مردہ ہو جاتا ہے جسے ہم خلیے کی خودکشی کہتے ہیں اب خلیہ وہ کام سرانجام نہیں دے سکتا جو وہ روح کے پروگرام پہ انجام دے رہا تھا۔ لہذا

- (1) ہر خلیہ یا جسم کا ہر چھوٹا بڑا یونٹ روح اور مادہ ہے۔
- (2) ہر خلیہ یا جسم کا ہر چھوٹا بڑا یونٹ روح (Energy) سے زندہ ہے۔
- (3) ہر خلیے کے پاس حرکت و عمل کا پروگرام (روح کا پروگرام) ہے۔

۸۔ جسم میں روح:

نظریہ نمبر:- ﴿75﴾۔ ﴿روح (Energy) پورے جسم میں ہر جگہ موجود ہے﴾۔

جسم کے ہر عضو، ہر یونٹ ہر ذرے میں روح ہے۔

پورے جسم میں ہر جگہ روح موجود ہے۔



DNA کے پاس روح کا پروگرام موجود ہے۔

نظام عصبی کو تحریک دینے والی روح ہے۔

ہر خلیے ہر عضو کے پاس روح کا پروگرام ہے۔ جس پہ وہ عمل پیرا ہے اور روح کی انرجی سے زندہ اور متحرک ہے۔

دو خلیوں کو مرکب کر کے جسم تعمیر کرنے والی بھی روح ہے۔

AURA میں بھی روح ہے۔

جسم کی زندگی روح ہے۔

جسم کا فیول روح ہے۔

حرکت و عمل کا پروگرام روح ہے۔

پورے جسم کے ہر عضو ہر ذرے کی زندگی اور حرکت و عمل کا مکمل پروگرام روح ہے۔  
لہذا جسم میں روح ہر جگہ موجود ہے۔

## ۹۔ انفرادی روح

نظریہ نمبر: ﴿76﴾ - ﴿جسم کے ہر چھوٹے بڑے یونٹ کے پاس انفرادی روح

(Energy) ہے۔﴾

جسم کے ہر بڑے سے بڑے عضو اور ہر چھوٹے سے چھوٹے یونٹ چاہے وہ خلیہ ہو یا عضو سب کے پاس اپنی انفرادی انرجی (روح) ہے۔

لہذا جسم کے ہر یونٹ کے پاس اپنی انفرادی روح (زندگی، انرجی) ہے جسم کے ہر یونٹ کے پاس اپنا انفرادی حرکت و عمل کا پروگرام ہے ہر خلیہ اپنا کام جانتا ہے ہر خلیے کے پاس حرکت و عمل کا اپنا انفرادی پروگرام موجود ہے روح کی صورت میں۔ اسی اپنے اپنے انفرادی پروگرام کے تحت جسم کا ہر عضو ہر یونٹ زندہ ہے، متحرک ہے۔ اپنا اپنا کام سرانجام دے رہا ہے۔ لہذا خود جسم اور جسم کا ہر بڑا یا چھوٹا یونٹ

(1) مادہ اور روح ہے۔

(2) روح کے ذریعے زندہ ہے۔

- (3) روح کے پروگرام پر عمل پیرا ہے۔  
 (4) روح کی عدم موجودگی سے مردہ ہے۔  
 (5) ہر یونٹ اسی روح (انرجی) کی ایک (مادی) صورت ہے  
 یعنی درحقیقت خلیہ اور ہر یونٹ (چاہے وہ بڑا ہو یا انتہائی چھوٹا) فقط انرجی (روح) ہے۔

## ۱۰۔ جسم کی روح

نظریہ نمبر:- ﴿77﴾ - ﴿پورے جسم میں ایک ہی روح (Energy) ہے﴾۔  
 یہ بھی عجیب بات ہے کہ جسم کے ہر ذرے ہر عضو ہر چھوٹے بڑے یونٹ کے پاس اپنی اپنی انفرادی روح (حرکت و عمل کا پروگرام) ہے یعنی جسم کا ہر ذرہ اپنی انفرادی حیثیت، اپنا ذاتی حرکت و عمل کا پروگرام اپنی ذاتی زندگی اور اپنی انفرادی روح رکھتا ہے۔ اور جسم کے لاشائزروں میں تقسیم در تقسیم ہونے کے باوجود پورے جسم کی ایک ہی واحد روح ہے۔  
 یعنی جسم کا ہر یونٹ اپنی اپنی انفرادی روح بھی رکھتا ہے اور پورے جسم میں بھی ایک ہی روح (Energy) ہے۔

اور یہی پورے جسم کی "ایک روح" جسم کے ہر عضو ہر ذرے کو انفرادی روح (زندگی، انرجی، حرکت و عمل کا پروگرام) بھی دے رہی ہے اور یہی روح ہر ذرے کی انفرادی روح میں تقسیم ہونے کے باوجود بھی واحد ہی ہے ناقابل تقسیم ہے۔ اور ہر حالت میں اپنی وحدانیت بھی برقرار رکھے ہوئے ہے۔ لہذا

- (1) جسم کے ہر ذرے ہر یونٹ کے پاس انفرادی روح (Energy پروگرام) ہے۔
- (2) پورے جسم میں بھی ایک ہی انفرادی واحد روح ہے۔
- (3) یہی واحد روح جسم کے ہر یونٹ میں بھی ہر یونٹ کی انفرادی روح (انرجی، پروگرام) کی صورت میں بھی موجود ہے۔

## ۱۱۔ روح کا مرکز

نظریہ نمبر:- ﴿78﴾ - ﴿جسم میں روح کا مرکز دل ہے﴾۔

یایوں کہنا درست ہوگا کہ جسم کے ہر یونٹ میں روح کا "ہر مرکز" (ہر دل) ہے۔ اس بات کو سمجھنے کے لئے "روح" ، "ہر مرکز" اور "ہر دل" کا جاننا ضروری۔ (اگرچہ ہم اس کی مسلسل وضاحت کر آئے ہیں)۔

روح انرجی ہے۔

ہر مرکز۔ ہر مرکز سے مراد جسم کے ہر چھوٹے بڑے یونٹ کا درمیان یا اس کا مرکز ہے۔

ہر دل۔ اور ہر یونٹ کا مرکز ہی دراصل جسم کے ہر چھوٹے بڑے یونٹ کا دل ہے۔

جسم کے ہر یونٹ کے ہر مرکز کو یہاں ہم نے ہر دل کہا ہے

اسکا مطلب یہ ہے کہ جسم کے ہر چھوٹے سے چھوٹے یونٹ کے مرکز میں روح (Energy) ہے

یعنی جسم کا ہر چھوٹے سے چھوٹا یونٹ مادہ (جسم) اور روح (Energy) پر مشتمل ہے۔

لہذا جسم کے ہر یونٹ کے مرکز میں روح (Energy) ہے۔ لہذا جسم میں روح کا ہر مرکز اپنی

جگہ دل ہے۔

صرف جسم کے ہر مرکز میں ہی دل نہیں ہے بلکہ مجموعی جسم کا مرکز بھی دل ہی ہے۔

اور پورے مجموعی جسم میں روح کا مرکز وہ دل ہے جو سینے کے بائیں جانب دھڑک رہا ہے۔ اور یہ

مجموعی جسم کا دل تمام مرکزوں کا مرکز ہے۔ یعنی جسم میں اور جسم کے ہر مرکز کو سپلائی ہو رہی انرجی

(روح) کا مین پاور اسٹیشن یا مرکز یہی دل ہے یہیں سے انرجی (روح) تمام جسم کے تمام

مراکز (تمام دل) کو سپلائی ہو رہی ہے۔

لہذا جسم میں روح (Energy) کا مرکز یہی مرکزی دل ہے۔ جو جسم کے ہر مرکز کا مرکز ہے۔ یعنی

جسم کے ہر یونٹ کے مرکز کا مرکز دل ہے اور دل روح کا مرکز ہے۔

سادہ الفاظ میں یوں کہنا ہوگا کہ جسم کے ہر ذرے میں روح ہے اور جسم کے ہر ذرے کی روح کا

مرکز دل ہے یعنی دل وہ پاور اسٹیشن ہے جہاں سے انرجی جسم کے ہر یونٹ کے مرکز کو سپلائی ہو

رہی ہے۔ یہ روح جس کا مرکز دل ہے اگرچہ روح کا مرکز دل ہے لیکن جسم کے ہر ذرے کے

مرکز یا دل میں موجود روح اپنے مرکز (دل) میں نہیں ہے۔ جسم کے ہر ذرے میں موجود روح جسم

میں ہے ہی نہیں۔

اب دیکھنا یہ ہے کہ یہ جسم کے ہر ذرے کے مرکز میں موجود روح خود کہاں ہے۔

۱۲۔ جسم کی روح خود کہاں ہے

نظریہ نمبر:- ﴿79﴾ - ﴿پورے جسم کے اندر ہر خلیے ہر ذرے میں موجود روح جسم میں نہیں ہے بلکہ جسم سے باہر ہے۔﴾

اگرچہ روح کا مرکز دل ہے لیکن روح دل میں نہیں ہے۔ اگرچہ پورے جسم میں ہر جگہ ہر خلیے ہر یونٹ کے مرکز میں روح (Energy) اور اس کا پروگرام موجود ہے اور ہر خلیے ہر عضو روح کے اسی پروگرام پر عمل پیرا ہے لیکن یہ جسم کی روح جسم میں ہر جگہ موجود ہونے کے باوجود بذات خود جسم کے اندر نہیں ہے بلکہ یہ جسم سے باہر ہے۔ یہ بھی شائد عجیب اور سمجھ میں نہ آنے والی بات ہے کہ روح جسم کے ہر یونٹ میں موجود بھی ہے لیکن جسم کے باہر بھی ہے۔ یعنی روح خود تو جسم کے باہر ہے لیکن اس کی انرجی اس کا پروگرام جسم کے ہر گوشے میں موجود ہے۔ اس کی مثال بجلی کے نظام کی سی ہے۔ مثلاً

سارے گھر میں بجلی دوڑ رہی ہے گھر کے اندر کی ہر شے اسی بجلی سے متحرک ہے فریج کے اندر بھی بجلی ہے سچھے اور ٹی وی میں بھی لیکن ہر شے میں موجود بجلی کہیں باہر سے آرہی ہے مین بورڈ بھی اسکا منبع نہیں ہے بلکہ گھر کے اندر دوڑنے والی بجلی کہیں باہر سے آرہی ہے۔

لہذا جسم کے اندر دوڑنے والی بجلی جسم کے ہر عضو ہر یونٹ میں موجود بجلی (روح) بھی دراصل باہر سے آرہی ہے۔ اگرچہ جسم میں اس کا مرکز دل ہے لیکن اس مرکز میں روح خود موجود نہیں بلکہ روح جسم میں نہیں روح جسم کے باہر ہے۔

۱۳۔ انسان کی روح

نظریہ نمبر:- ﴿80﴾ - ﴿کائنات کے ہر انسان کے پاس اپنی انفرادی روح ہے﴾

دنیا میں اربوں انسان ہیں۔ ہر انسان کے اندر انفرادی روح ہے۔ مثلاً جو روح (Energy) میرے یعنی "روبینہ نازلی" کے جسم میں ہے وہ روح (Energy) میرے جسم اور حرکت و عمل کا ایک مکمل پروگرام ہے ایک مکمل مقداری فارمولہ ہے۔

میرے اندر یہ روح یہ انرجی ایک انفرادی مقداری فارمولہ ہے۔ اتنی مقدار کا اور ایسا ہی مقداری فارمولہ یا حرکت و عمل کا پروگرام کوئی اور نہیں ہو سکتا۔

کسی بھی رابعہ رضوی یا سلیم یا درخت یا پہاڑ کا مقداری فارمولہ "روبینہ نازلی" کے مقداری فارمولے سے مختلف مقداری فارمولہ ہے۔

ان فارمولوں میں چاہے تھوڑا ہی فرق ہو لیکن فرق ضرور ہے۔ اور یہی مقداری فرق انفرادیت پیدا کر رہا ہے روبینہ نازلی یا رابعہ رضوی میں۔ یا مرد اور عورت میں انفرادیت بھی اسی فارمولے کے فرق سے ظاہر ہو رہی ہے۔ حتیٰ کہ اسی فرق کے برب جڑواں بچوں میں حد درجہ مماثلت کے باوجود انفرادیت برقرار رہتی ہے

اگر ہر وجود کے مقداری فارمولے میں یہ فرق نہ ہو تو دو انسانوں میں ہم فرق نہیں کر سکتے یا دو جنسوں میں فرق کرنا ممکن نہ رہے یا درخت اور پہاڑ کو الگ سے شناخت کرنا دشوار ہو۔ لہذا ہر وجود ایک مکمل اور منفرد فارمولہ ہے۔

اور ہر فارمولے کی انرجی (روح) کی مقدار میں واضح فرق ہے۔ لہذا کائنات کے ہر شخص کی روح واحد اور منفرد روح ہے۔

## ۱۴۔ تمام انسانوں کی روح

نظریہ نمبر:- ﴿81﴾۔ ﴿تمام انسانوں میں ایک ہی روح (Energy) ہے۔﴾

اگرچہ ہر انسان کے پاس انفرادی روح ہے اور ہر روح ایک الگ اور منفرد مقداری فارمولہ ہے اور ہر مقدار ہمیشہ اپنی انفرادیت اور وحدانیت برقرار رکھتی ہے

پھر بھی ہر جسم کی انفرادی روح اور ہر جسم کے ہر یونٹ کی انفرادی روح میں تقسیم در تقسیم ہونے کے باوجود تمام انسانوں میں فقط ایک ہی روح (Energy) ہے۔ اور یہ ایک ہی روح ہر حیثیت میں اپنی وحدانیت برقرار رکھتی ہے یعنی۔

(1) تمام انسانوں کی روح بھی واحد ہے۔

(2) ہر جسم کی روح بھی واحد ہے۔

(3) جسم کے ہر ذرے کی روح بھی واحد ہے۔

(4) یعنی ایک ہی روح تمام انسانوں کی ہر انفرادی روح کی صورت میں بھی موجود ہے اور ہر ذرے کی انفرادی روح کی صورت میں بھی موجود ہے۔

## ۱۵۔ کائنات کی روح

نظریہ نمبر:- ﴿82﴾۔ ﴿پوری کائنات یا کائناتوں کی ایک ہی روح (Energy) ہے۔﴾  
 اگرچہ جسم کے ہر یونٹ کے پاس انفرادی روح (Energy) ہے اور ہر جسم کی بھی اپنی انفرادی  
 روح (Energy) ہے اور تمام انسانوں کی بھی ایک ہی روح (Energy) ہے اور پوری کائنات  
 کی بھی ایک ہی روح (Energy) ہے۔

ہر جسم کی انفرادی روح اور جسم کے ہر یونٹ کی انفرادی روح اور کائناتوں کی روح میں تقسیم در تقسیم  
 ہونے کے باوجود کائنات کی روح واحد ہے۔

کائنات اور اس کا ہر ذرہ وہ بڑے سے بڑا وجود ہو یا چھوٹے سے چھوٹا ذرہ تمام میں ایک ہی روح  
 (Energy) ہے۔ اور ہر ذرے کی روح منفرد روح ہے اور ہر حالت میں اپنی انفرادیت اور اپنی  
 وحدانیت برقرار رکھتی ہے۔ اور ہر ذرے کی وحدانیت اور انفرادیت برقرار رہنے کے باوجود اور  
 انرجی تقسیم در تقسیم ہونے کے باوجود اجتماعی حیثیت میں بھی اپنی انفرادیت برقرار رکھتی ہے۔ یعنی

(1) جسم کے ہر ذرے کی روح (Energy) بھی واحد ہے۔

(2) ہر جسم کی روح (Energy) بھی واحد ہے۔

(3) تمام انسانوں میں بھی ایک ہی واحد روح (Energy) ہے۔

(4) کائنات کے ہر وجود میں واحد روح (Energy) ہے۔

(5) پوری کائنات میں ایک ہی روح (Energy) ہے، اور یہ پوری روح واحد ہے۔

لہذا یہ کہنا درست نہیں کہ انسان میں کوئی اور روح (Energy) ہے جانور میں کوئی اور روح  
 (Energy) درخت میں کوئی اور یا انسانوں کی روح اعلیٰ ہے اور حیوانات میں کوئی کمتر روح  
 ہے۔ ہر وجود میں ایک ہی روح (Energy) ہے ہاں لیکن ہر وجود کی روح (Energy) کی  
 مقدار میں فرق ہے ہر وجود کی روح (Energy) کی مرکب حالت میں فرق ہے۔ ہر وجود کا  
 پروگرام منفرد اور مختلف پروگرام ہے۔ اور اسی انفرادیت کی وجہ سے کائنات کا ہر وجود دوسرے سے  
 مختلف ہے منفرد ہے۔ انسانوں کا پروگرام منفرد ہے درختوں کا الگ، جانوروں کا الگ لہذا کائنات  
 کا ہر وجود اسی انفرادی پروگرام کی وجہ سے منفرد ہے۔ لہذا ایک ہی روح (Energy) مختلف اور  
 منفرد موجودات کی صورت میں ہمارے سامنے موجود ہے۔

ایک ہی روح (Energy) پوری کائنات اور اس کی تمام تر موجودات کی صورت میں موجود ہے کیسے؟

## ۱۶۔ روح کا منبع

نظریہ نمبر:- ﴿83﴾ - ﴿روح کا منبع پاور اسٹیشن ہے۔﴾

یہ ہمارے جسم کی روح جو جسم کے ہر یونٹ میں بھی ہے دل میں بھی ہے اور جسم کے باہر بھی ہر جگہ موجود ہے اس روح کا منبع ایک مین پاور اسٹیشن ہے۔

جیسے گھر کے اندر بجلی ہر شے کے اندر ہے یہ بجلی مین بورڈ سے نہیں پھوٹ رہی بلکہ کہیں باہر تاروں کھمبوں کے ذریعے گھر میں آرہی ہے۔ تاریں کھبے بھی اس بجلی کا منبع نہیں بلکہ یہ بجلی کہیں مین پاور اسٹیشن سے آرہی ہے یہی مین پاور اسٹیشن اس بجلی کا منبع ہے۔

اسی طرح روح کا منبع بھی ایک مین پاور اسٹیشن ہے۔

## ۱۷۔ واحد روح

نظریہ نمبر:- ﴿84﴾ - ﴿کائنات کے ہر وجود کی روح واحد (Energy) (t) قابل تقسیم ہے۔﴾

نظریہ نمبر:- ﴿85﴾ - ﴿پوری کائنات میں بھی ایک ہی روح (Energy) ہے۔ انرجی اجتماعی حیثیت میں بھی واحد ہے۔﴾

﴿روح (Energy) اجتماعی حیثیت میں بھی واحد ہے اور کائنات کی تمام تر موجودات میں منقسم ہونے کے باوجود بھی اپنی وحدانیت برقرار رکھتی ہے۔﴾

ایک ہی روح یا واحد روح کائنات کی واحد روح کیسے ہر ذرے کی حیثیت میں بھی واحد ہے اور اجتماعی حیثیت میں بھی واحد ہے اب ہم اس کی وضاحت کرتے ہیں۔

روح کی تعریف میں ہم یہ بتائے ہیں کہ روح انرجی ہے تو انائی ہے۔ اور یہ تو انائی (Energy) واحد ہے۔

یہ تو انائی مرکب نہیں ہے۔

اس انرجی کے علاوہ توانائی کی جتنی بھی اقسام سے ہم واقف ہیں وہ مرکب توانائیاں ہیں۔ لہذا کائنات کا ہر وجود اسی واحد انرجی کے مرکبات کا مجموعہ ہے۔

فقط کائنات کی یہ اصل "انرجی" (روح) ہی غیر مرکب ہے۔ یعنی پوری کائنات میں ایک ہی انرجی ہے۔ یہاں ہم نے انرجی کی دو حیثیتوں کا تذکرہ کیا ہے

(1) اجتماعی حیثیت

(2) انفرادی حیثیت

(1) اجتماعی حیثیت: انرجی اجتماعی حیثیت میں بھی واحد ہے۔ لہذا پوری کائنات میں

ایک ہی روح (Energy) ہے۔

(2) انفرادی حیثیت: ہر ذرے میں انفرادی روح ہے ہر ذرہ اپنا انفرادی تشخص رکھتا ہے

اور یہ وحدانیت کہیں نہیں ٹوٹی اسی انفرادیت کے سبب ہم مرد و عورت، درخت، پہاڑ غرض کائنات کی ہر شے کو انفرادی حیثیت میں شناخت کرتے ہیں۔

یعنی ایک ہی روح مختلف مقداروں میں منقسم بھی ہے، مختلف مقداروں میں مرکب بھی ہے پھر بھی تقسیم و تقسیم ہونے کے باوجود ہر وجود میں بھی واحد ہے اور اجتماعی حیثیت میں بھی واحد ہے یعنی

روح (Energy) کی وحدانیت انفرادی یا اجتماعی کسی حیثیت میں نہیں ٹوٹی۔

یہ شائد نہ سمجھ میں آنے والی بات ہے لیکن ہم اس کی وضاحت ایک سادہ سی مثال سے کرتے ہیں۔

ہمارے گھر میں بجلی آرہی ہے پورے گھر میں دوڑ رہی ہے گھر کی ہر شے فریج، ٹی وی وغیرہ

سب اسی بجلی سے چل رہے ہیں ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ بلب میں کوئی اور بجلی ہے اور ٹی وی میں کوئی

اور ایک ہی بجلی ہر وجود میں مختلف مقداروں میں موجود ہے (اسی طرح ایک ہی روح جسم کے ہر

ذرے میں موجود ہے)۔

یہ بجلی تاروں کھمبوں کے ذریعے ہمارے گھر میں دوڑ رہی ہے۔ یہ تاریں اور کھمبے بھی بجلی کا منبع نہیں

بلکہ یہ کہیں مین پاور اسٹیشن سے آرہی ہے۔ یعنی مین پاور اسٹیشن سے لیکر ہمارے گھر تک جو بجلی کا

سلسلہ ہے وہ تمام ایک ہی سلسلہ ہے یوں نہیں کہہ سکتے کہ کھمبوں میں کوئی اور بجلی مین پاور اسٹیشن میں کوئی اور

گھر میں کوئی اور ہے بلکہ بجلی ایک ہی ہے اور یہ تسلسل کہیں ٹوٹا نہیں لہذا ایک ہی بجلی ہر وجود میں

مختلف مقدار میں موجود بھی ہے اور مختلف قسم کی موجودات کو حرکت میں بھی رکھے ہوئے ہے۔



بالکل ایسا ہی تسلسل ہے کائنات میں کائناتی انرجی (روح) کا لہذا ایک ہی مین پاور اسٹیشن سے ایک ہی انرجی (روح) پوری کائنات اور اس کی تمام تر موجودات کو مختلف مقداروں میں میسر آ رہی ہے نہ کم نہ زیادہ۔

اور یہ تسلسل برقرار ہے انفرادی سطح پر بھی اور اجتماعی سطح پر بھی لہذا

- (1) واحد روح (یا ایک ہی انرجی (Energy))۔
- (2) ہر وجود میں انفرادی حیثیت میں بھی موجود ہے۔
- (3) اور اجتماعی حیثیت میں اپنی واحدانیت بھی برقرار رکھے ہوئے ہے۔

## ۱۸۔ روح کہاں ہے؟

نظر یہ نمبر: ﴿86﴾۔ ﴿روح بیک وقت ہر جگہ موجود ہے۔﴾

یہ روح (Energy) خالق کائنات کا حکم ہے اور اسی حکم سے تمام کائنات اور اس کی تمام تر موجودات مسلسل متحرک ہیں۔ یہ حکم انرجی ہے یہ انرجی حرکت و عمل کا پروگرام ہے اسی حکم انرجی یا روح سے

ہر وجود اسی روح (Energy) سے وجود ہے۔

ہر وجود اسی روح (Energy) سے تخلیق ہو رہا ہے۔

ہر وجود اس کی عدم موجودگی سے فنا ہو رہا ہے۔

ہر وجود اسی روح (Energy) سے زندہ ہے۔

ہر وجود اسی روح (Energy) سے متحرک ہے۔

ہر وجود اسی روح (Energy) کا ایک مقداری و مرکب فارمولہ ہے۔

یہی روح (Energy) مختلف مرکب حالتوں میں مختلف موجودات (وجود) ہے۔

یہ تمام موجودات جو انرجی ہی کی مختلف مرکب حالتیں ہیں یہ موجودات انرجی ہی کی ایک شکل (AURA) سے متحرک ہیں۔

خود کار مشینری روح (Energy) کے پروگرام سے متحرک ہے۔

نظام عصبی کو تحریک دینے والی روح (Energy) ہے۔

DNA کے پاس روح (Energy) کا پروگرام ہے۔

ہر خلیے میں روح (Energy) اور اس کا پروگرام موجود ہے۔

AURA میں بھی روح (Energy) ہے۔

دو خلیوں کو مرکب کر کے جسم بنانے والی روح (Energy) ہے۔

جسم کے ہر جوڑے ہر خلیے میں روح (Energy) اور اس کا پروگرام ہے۔

روح (Energy) ہی کے پروگرام سے جسم کو جسمانی اعمال کی ہدایات وصول ہو رہی ہیں جس سے

جسمانی عمل کی عملی صورت ظاہر ہو رہی ہے۔

جب روح (Energy) خود ہی خود سے مرکب ہو کر مختلف روپ دھارتی ہے تو مختلف موجودات

کی صورت میں ظاہر ہوئی جس کو کبھی ہم مادہ کہتے ہیں کبھی پلازمہ، کبھی گیس، کبھی پانی، کبھی ہوا، کبھی

آگ، کبھی درخت، کبھی پہاڑ، کبھی صحرا، کبھی دریا، کبھی جانور، کبھی انسان۔ جب یہ موجودات

انرجی کے خارج ہونے سے فنا ہو جاتی ہیں یا جب انرجی یہ مرکب حالت چھوڑ دیتی ہے تو یہ

موجودات فنا ہو جاتی ہیں تو فقط پورا انرجی باقی رہ جاتی ہے اور یہی پورا انرجی ہی حقیقت ہے باقی

تمام موجودات مفروضے ہیں۔

لہذا روح خالق کائنات کا حکم ہے یہ حکم حرکت کا منظم و مسلسل پروگرام ہے اور اسی روح سے مرکب

تمام موجودات اسی حکم کے منظم پروگرام پر عمل پیرا ہیں لہذا ہر وجود کی موجودگی، حرکت و عمل،

زندگی، ارادی و غیر ارادی اعمال کا منبع یہی روح ہے۔

لہذا روح (Energy) جسم تخلیق کر رہی ہے۔ جسمانی مشینری کو چلا رہی ہے۔ اسی روح

(Energy) کے جسم میں ہونے کو ہم زندگی کہتے ہیں اور اسی روح (Energy) کے جسم میں نہ

ہونے کو ہم موت کہتے ہیں، اسی روح (Energy) کی تخلیق کو ہم جسم کہتے ہیں اور اسی روح

(Energy) کے نہ ہونے سے اسی جسم یا انسان کا کہیں نشان بھی باقی نہیں بچتا۔ یعنی خود جسم انرجی

کی ایک ہیئت ایک مظاہرہ یا انرجی کا ایک مرکب ہے۔ یعنی جسم انرجی ہے درحقیقت۔ (یعنی

رب کا حکم)

کائنات اور اس کی تمام موجودات بشمول انسان واحد انرجی کے مختلف مظاہرے ہیں کائنات کی

واحد حقیقت انرجی ہے جو رب کا حکم ہے۔

یعنی کائنات اور اس کی تمام موجودات بشمول انسان خالق کا حکم (پروگرام، انرجی) ہے۔

۱۹۔ روح کائنات سے مربوط ہے

نظریہ نمبر ﴿87﴾۔ ﴿روح پوری کائنات سے مسلسل مربوط ہے۔﴾

پاور اسٹیشن کی انرجی نزول کر رہی ہے یہی انرجی مختلف موجودات کی شکل دھا رہی ہے یہی انرجی ہر وجود میں مختلف مقدار میں موجود ہے یعنی ہر وجود میں پاور اسٹیشن سے ہر لمحہ مربوط ہے۔

جیسے بجلی مین پاور اسٹیشن سے کھمبوں تاروں کے طویل سلسلے سے ہوتی ہوئی ہمارے گھر تک پہنچ رہی ہے اور پورے گھر میں روشنی ہے فریج ٹی وی، بلب غرض گھر کی ہر شے اسی سے چل رہی ہے متحرک ہے۔

یعنی بلب جو روشن ہے اس میں بجلی مین پاور اسٹیشن سے آرہی ہے۔ یعنی یہ بلب مین پاور اسٹیشن کی بجلی سے روشن ہے لیکن یہ بجلی کے تمام تر وسیع سلسلے سے مربوط بھی ہے ایسا نہیں ہے کہ

گھر میں فقط بلب مین پاور اسٹیشن کی بجلی سے روشن ہے، ایسا نہیں ہے ریفریجریٹر کسی اور ذریعے سے متحرک ہے بلکہ جو بجلی بلب میں ہے وہی ٹی وی میں بھی ہے، اسی سے ریفریجریٹر چل رہا ہے

وہی بجلی پنکھے میں ہے وہی تاروں اور کھمبوں میں ہے ہر وجود اسی بجلی کے سلسلے کا تسلسل ہے۔

لہذا روح جو کہ بذات خود انرجی ہے اور یہ روح پاور اسٹیشن کے طویل سلسلے سے مربوط ہے روح کائنات کے ہر وجود سے مربوط ہے۔ پاور اسٹیشن کی انرجی نزول کر کے ایک طویل سلسلے کے تحت ہر وجود تک پہنچ رہی ہے اور کائنات کا ہر وجود بشمول انسان انرجی کے اس تسلسل سے مسلسل مربوط

ہے۔

۲۰۔ واحد حقیقت

نظریہ نمبر ﴿88﴾۔ ﴿لہذا کائنات اور اس کی تمام تخلیقات (موجودات بشمول انسان)

کی ایک ہی حقیقت ایک ہی اصل ہے اور وہ ہے انرجی (Energy) (روح یا رب کا حکم)۔﴾

کائنات کا ہر وجود اسی انرجی (Energy) کی مختلف شکلیں یا مرکبات ہیں۔

ہر وجود انرجی (Energy) کے ایک ہی تسلسل کا حصہ ہے اور اس سے مسلسل مربوط ہے۔

روح (Energy) ہر لمحہ کائناتی اجسام تخلیق کر رہی ہے۔

مادی جسم بھی روح (رب کا حکم) (پروگرام) کی تخلیق ہے۔

یعنی کائنات اور کائنات کی تمام موجودات رب کا حکم (پروگرام) ہیں۔ اسی حکم پر عمل پیرا اور اس سے مسلسل مربوط ہیں۔

کائنات کی اصل کائنات کی واحد حقیقت کائنات کا تخلیقی مادہ واحد انرجی (Energy) ہے جو رب کا حکم ہے یعنی

جو کچھ بھی موجود ہے یا وجود رکھتا ہے سب رب کا حکم (پروگرام) ہے

ابتدا میں پیدائش کے عنوان کے ساتھ ہم نے یہ نظریہ پیش کیا تھا کہ مادر رحم میں نطفہ نہیں بلکہ روح جسم تخلیق کر رہی ہے اب یہاں تک پہنچ کر ہم اس نظریے کی تفصیلاً وضاحت کر چکے ہیں۔ تخلیق کے عنوان سے یہ وضاحت تو ہم کر آئے ہیں کہ رحم مادر میں پورا انسان خود بخود یا محض نطفے سے نہیں بلکہ روح کے پروگرام کے عین مطابق ترتیب پا رہا ہے۔ اب یہاں ہم یہ وضاحت کریں گے کہ روح کا یہ پروگرام کیا ہے اور کیسے روح کے پروگرام کے مطابق جسم ترتیب و تخلیق پا رہا ہے۔

## ۲۱۔ جسمانی ساخت

نظریہ نمبر: ﴿89﴾ - ﴿پیدائش کے عمل میں جسمانی ساخت روح کے دو پروگراموں سے ترتیب پا رہی ہے﴾

(1) موروثی پروگرام۔

(2) ذاتی پروگرام۔

لہذا اب ہم یہاں یہ وضاحت کریں گے کہ روح کا یہ پروگرام (جسمانی ترتیب کا فارمولہ) دو حصوں پر مشتمل ہے۔ لہذا پیدائش کے عمل میں رحم مادر میں جسمانی ساخت روح کے پروگرام سے تو ترتیب پا رہی ہے اور یہ روح کا پروگرام دو حصوں پر مشتمل ہے۔

جسمانی ساخت سے ہماری مراد مادی جسم یا پوری جسمانی شخصیت ہے جس میں جنس کا تعین، قد کاٹھ، رنگ و روپ اس کے علاوہ عادات و اطوار کردار وغیرہ یعنی پوری انسانی شخصیت

یہ جسمانی ساخت ہر شخص کی مختلف ہے۔ اگرچہ دنیا میں اربوں انسان ہیں لیکن ہر انسان دوسرے سے مختلف ہے حالانکہ سب انسان ہیں اور ایک جیسے جسم رکھتے ہیں لیکن ایک ہی طرز کے تمام اجسام ایک دوسرے سے مختلف ہیں۔ اور ہر انسان میں یہ اختلاف اور انفرادیت پیدائش کے عمل میں ہی

مکمل ہو جاتی ہے آئیے دیکھتے ہیں کہ ہر انسان کے اندر پیدائش کے عمل میں یہ انفرادیت کیسے جنم لے رہی ہے۔ جسمانی پیدائش کا عمل نو ماہ کے عرصے پر مشتمل ہے اور یہ نو ماہ کا عرصہ دو ادوار پر مشتمل ہے لہذا انسانی جسم کی تیاری کا عمل روح کے دو مختلف پروگراموں سے ترتیب پا رہا ہے۔ اور یہی روح کے دو مختلف پروگرام ہر انسان کو مختلف بنا رہے ہیں۔

### (۱)۔ موروثی پروگرام

نظریہ نمبر:- ﴿90﴾۔ ﴿120﴾ دن تک بچے کا جسم موروثی پروگرام (روح) سے ترتیب پاتا ہے۔ ﴿

اسی موروثی پروگرام کے تحت انسان وراثتی خصوصیات رکھتا ہے اور اسی روح کے موروثی پروگرام کے تحت ہر انسان نسل در نسل انسان ہے۔

یہ موروثی پروگرام بچے کے والدین کا پروگرام ہے جو والدین کے جراثیم سے بچے میں منتقل ہو رہا ہے۔ ماں اور باپ دونوں کے جراثیم اپنی اپنی انفرادی روح (انرجی، پروگرام) رکھتے ہیں۔

لہذا یہ جراثیم یکجا ہو کر جسم کی ترتیب کا کام شروع کرتے ہیں تو یہ کام ماں اور باپ کے پروگراموں پر مشتمل ہوتا ہے۔ لہذا موروثی پروگرام میں نطفے کی کارکردگی نمایاں ہے اور یہ نطفہ اپنا کام کر رہا ہے ماں باپ کے روح کے پروگراموں پر۔ اور ماں اور باپ کے جراثیموں کے ذریعے بچے کے اندر ماں اور باپ کی وراثت منتقل ہو رہی ہے۔ اور ماں کے شکم کے ذریعے یہ وراثت نسل در نسل منتقل ہوتی ہی چلی آ رہی ہے۔ لہذا

### وراثتی نوعی قانون

نظریہ نمبر:- ﴿91﴾۔ ﴿پیدائشی وراثت پہلی ماں کی کوکھ سے منتقل ہو رہی ہے اور آخری انسان تک منتقل ہوگی﴾

لہذا یہ موروثی خصوصیات کا پروگرام ماں کی کوکھ سے ہر انسان میں منتقل ہوتا ہے۔ موروثی پروگرام کائنات کی پہلی ماں سے چلا ہے اور آخری انسان تک منتقل ہوگا۔ اور اسی نسل در نسل وراثتی منتقلی کا نتیجہ ہے کہ

(1) ہر انسان دوسرے انسان کی طرح انسان ہی ہوتا ہے لہذا ابتدا کا انسان بھی ویسا ہی انسان تھا

جیسا کہ آج کا انسان (ابتداء کا انسان حیوان تھا یا انسان کا بتدریج ارتقاء ہوا یہ نظریہ ہر قسم کے نوعی قانون کے خلاف ہے)۔

(2) اسی وراثتی منتقلی کی وجہ سے انسان اپنے والدین سے مشابہت رکھتا ہے۔

(3) اسی وراثتی منتقلی کی وجہ سے انسان اپنے خاندان سے مشابہت رکھتا ہے۔

(4) اسی وراثتی منتقلی کے سبب سے انسانوں میں تقاضے مشترک ہیں۔

لہذا وراثتی منتقلی کے سبب ہی انسان کی جسمانی ساخت چال ڈھال، انداز، کردار اس کے آباؤ اجداد سے مشابہ ہوتے ہیں۔ دراصل یہ موروثی پروگرام ابتداء کے انسان یا پہلی ماں سے چل رہا ہے اور انتہا کے انسان تک منتقل ہوگا یعنی یہ موروثی پروگرام ماں کے پیٹ سے نسل در نسل منتقل ہو رہا ہے۔ لہذا موروثی قانون کے مطابق

کائنات کا پہلا انسان بھی آج کے انسان جیسا انسان ہی تھا اور تمام انسان ایک ہی جوڑے کی نسل ہیں اور یہ نوعی تسلسل آخری انسان تک منتقل ہوگا

لہذا رحم مادر میں پیدائش کے ابتدائی 120 دن ہر انسان کا جسم اسی نسل در نسل موروثی پروگرام یعنی والدین کے جراثیم سے ترتیب پاتا ہے۔

## ۲۔ ذاتی پروگرام

نظریہ نمبر:- ﴿92﴾ - ﴿120﴾ دن بعد رحم مادر میں بچے کے جسم کو ذاتی پروگرام (روح) مل جاتا ہے۔ یعنی باقی 150 دن بچے کا جسم اپنے ذاتی پروگرام (اپنی روح) سے ترتیب پاتا ہے۔ ﴿

لہذا 120 دن بعد بچے کا جسم اسی ذاتی پروگرام (روح) سے ترتیب پاتا ہے۔ ذاتی پروگرام انسان کی ذاتی شخصی انفرادیت کا پروگرام ہے لہذا رحم مادر میں باقی کے 150 دن جسم اسی ذاتی پروگرام (اپنی روح) پر مشتمل ہوتا ہے۔ اسی ذاتی پروگرام کی وجہ سے۔

ایک انسان تمام انسانوں کی طرح ہونے کے باوجود اپنا انفرادی تشخص رکھتا ہے۔

ہر انسان دوسرے انسان سے مختلف ہوتا ہے اس کی ذات، صفات، شکل، رنگ و روپ، قد کاٹھ، کالا گورا، کردار غرض ہر شے دوسرے انسان سے مختلف اور منفرد ہوتی ہے اسی انفرادیت کے سبب

ہم ہر انسان کو دوسرے انسان سے امتیازی حیثیت میں شناخت کرتے ہیں ہر انسان میں انفرادیت روح کے ذاتی پروگرام یا ذاتی روح سے آتی ہے۔

جنس۔ جنس کا تعین بھی روح کے پروگرام کے مطابق ہوتا ہے۔ جو روح کا پروگرام ہوگا وہی جنس تخلیقی تکمیل تک پہنچے گی یعنی مرد ہو یا عورت مکمل مرد یا مکمل عورت نہ ہو یا مکمل عورت۔

ادھورایا پورا زندہ یا مردہ، گورایا کالا، لسبایا چھوٹا، خوبصورت یا بدصورت۔ ان سب باتوں کا تعین روح کے پروگرام سے ہوتا ہے۔

نطفے کی کارکردگی یا وراثتی اضافے کے ساتھ جیسا روح کا پروگرام ہوگا ویسی ہی صورت تخلیقی عمل سے گذر کر سامنے آئے گی اور یہ روح خالق کا علم یا حکم ہے۔ یعنی جو خالق کا حکم ہوگا وہی صورت ہوگی۔ یعنی خالق نے جو کینوس پہ رنگ بکھیرے وہی تصویر ابھری۔ جو خالق نے چاہا اور جیسا چاہا ویسی ہی تخلیق سامنے آتی ہے۔

لہذا ہر انسان کی جسمانی شخصیت دو حصوں پر مشتمل ہوتی ہے۔ وہ اپنی شخصیت میں اپنے آباؤ اجداد سے بھی مشابہت رکھتا ہے اور اسی کے ساتھ اربوں انسانوں کے درمیان اپنی انفرادیت بھی برقرار رکھتا ہے یعنی اپنی انفرادی شخصیت کا مالک بھی ہوتا ہے۔

لہذا موروثی خصوصیات نطفے (موروثی پروگرام) کے ذریعے اس میں منتقل ہوتی ہیں اور ذاتی خصوصیات ذاتی روح کے ذریعے۔ یوں روح کے دو پروگراموں سے انسان کی شخصیت اور اس کی ظاہری جسمانی ساخت ترتیب پا جاتی ہے۔

## تخلیقی خلاصہ

یہاں ہم تذکرہ کر رہے ہیں رحم مادر میں مادی جسم کی پیدائش کے عمل کا لہذا ہم نے پیدائش کے عنوان کی ابتدا کرتے ہوئے مادی جسم کے پیدائشی فارمولے کے جو چار نکات پیش کیئے تھے اس میں سے ایک نکتہ تخلیق کی اب یہاں وضاحت مکمل ہوئی یہاں مادی جسم کی پیدائش کے حوالے سے ہم نے یہ وضاحت کی ہے کہ مادی جسم کے سب سے چھوٹے ذرے سے لے کر پورے وجود تک تخلیقی عمل سرانجام دے رہی ہے روح یعنی روح مادی جسم تخلیق کر رہی ہے۔ ماں کی کوکھ میں مادی جسم کس فارمولے کے تحت ترتیب پا رہا ہے اب اس فارمولے کے ایک مرحلے تخلیق کی وضاحت

تو ہو گئی لہذا اب ہم اس پیدائشی فارمولے کے دوسرے نکتے یا مرحلے کی وضاحت کرتے ہیں  
تناسب کے عنوان سے۔

## (2)۔ تناسب

رحم مادر میں مادی جسم کی پیدائش کا دوسرا مرحلہ ہے تناسب  
نظریہ نمبر: ﴿93﴾۔ ﴿رحم مادر میں پیدائش کے ہر مرحلے میں مادی جسم میں توازن اور تناسب  
قائم کر رہی ہے روح﴾۔

جسمانی مشینری انتہائی پیچیدہ مشینری ہے اس کے باوجود متوازن ہے۔ پیدائش کے ہر مرحلے میں  
مادی جسم میں توازن اور تناسب قائم کر رہی ہے روح

اربوں انسان ہیں ہزاروں پیدا ہو رہے ہیں۔ ہر ہر پیدا ہونے والا ایک مخصوص طریقے اور ترتیب  
سے پیدا ہو رہا ہے اور جسم کو بہت ہی مناسب انداز میں ترتیب دے رہی ہے روح۔ اور ایسے  
ترتیب دے رہی ہے کہ اربوں انسان پیدا ہو چکے ہیں جو سارے کے سارے انسان ہیں ایک  
جیسے بھی ہیں اور ایک دوسرے سے مختلف بھی ہیں اور متناسب بھی ہیں۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ جسمانی  
مشینری کو روح کیسے متوازن اور متناسب کر رہی ہے۔ روح جسم کو ہزار ہا طریقے سے متناسب بنا  
رہی ہے جن میں سے کچھ کا یہاں ہم تذکرہ کرتے ہیں۔

## ۱۔ خلیوں میں تناسب

نظریہ نمبر: ﴿94﴾۔ ﴿خلیوں کو بڑے تناسب سے بلڈنگ بلاکس کی طرح ترتیب دے رہی  
ہے روح﴾۔

اگرچہ کروڑوں خلیوں سے جسم بنا ہے یہ تو سب جانتے ہیں مگر ابتداء میں محض ایک جرثومے سے  
آغاز ہوتا ہے۔ پھر ماں اور باپ کے جرثومے مل کر بچے کے جسم کا آغاز کرتے ہیں۔ اور ان  
جرثوموں کو بلڈنگ بلاکس کی طرح جسمانی صورت میں تخلیق و ترتیب دے رہی ہے روح یہ ایک  
سے دو۔ دو سے چار بڑھ رہے ہیں پھیل رہے ہیں ترتیب پار ہے ہیں روح کے پروگرام کے عین  
مطابق۔ یعنی خلیوں کے تناسب کا پروگرام دے رہی ہے روح، خلیوں کو متناسب کر رہی ہے روح۔



سائنسدانوں کے مطابق خلیے جسم ترتیب دے رہے ہیں  
جی ہاں خلیے ہی بلڈنگ بلاکس کی طرح جسم ترتیب دے رہے ہیں لیکن یہ کام وہ خود بخود نہیں کر  
رہے بلکہ خلیے جسم ترتیب دے رہے ہیں روح کے پروگرام کے عین مطابق

## ۲۔ اعضاء کا تناسب

نظریہ نمبر: ﴿95﴾۔ ﴿اعضاء کو متناسب کر رہی ہے روح﴾

اعضاء چھوٹے بڑے نہیں ہیں۔ کم یا زیادہ نہیں ہیں۔ اربوں انسان ہیں ہر انسان میں یہ اعضاء  
موجود ہیں ہر عضو کی مخصوص ساخت اور خصوصیات ہیں ہر عضو اپنی جگہ صحیح اور فٹ بیٹھا ہے۔ ہر عضو کو  
جسم کی عین مناسبت سے ترتیب دے رہی ہے روح۔

لہذا اعضاء ایک دوسرے سے ہم آہنگ بھی ہیں اور اپنا اپنا انفرادی کام بھی جانتے ہیں۔  
مثلاً دل جگر گردے ہر عضو کی مخصوص ساخت ہے ہر عضو کا اپنا مخصوص کام ہے ہر عضو معتدل ہے  
اپنے کام میں یہ نہیں ہے کہ دل اپنی رفتار سے زیادہ دھڑک رہا ہے یا گردے باقی جسم کے مقابلے  
میں کم کام کر رہے ہیں۔ ہر عضو پوری جسمانی مطابقت کے مطابق ٹھیک ترتیب پا رہا ہے کام کر رہا  
ہے اور اعضاء میں یہ ہم آہنگی اور تناسب پیدا کر رہی ہے روح۔ ہر عضو کو انفرادی ترتیب بھی  
دے رہی ہے اپنا انفرادی کام بھی سمجھا رہی ہے اور تمام اعضاء کو جسمانی مناسبت سے بھی متوازن  
رکھے ہوئے ہے۔ لہذا ہر عضو جسم کی عین مناسبت سے بالکل صحیح ہے اپنی جگہ فٹ ہے۔ لہذا اعضاء  
کو صحیح تناسب سے ترتیب دے رہی ہے روح۔

## ۳۔ جسمانی نظام میں تناسب

نظریہ نمبر: ﴿96﴾۔ ﴿جسمانی نظام میں تناسب پیدا کر رہی ہے روح﴾

انسانی جسم ایک انتہائی پیچیدہ مشینری ہے اور اس پیچیدہ مشینری کا اندرونی و بیرونی نظام انتہائی  
متناسب ہے کوئی بد نظمی کوئی بے قاعدگی نہیں ہر عضو اپنا مخصوص کام سرانجام دے رہا ہے۔ ایسا نہیں  
کہ کھانے کا عمل تو واقع ہو گیا نظام انہضام بند ہے یا دوران خون کام نہیں کر رہا یا گردے اپنے کام  
سے کوتاہی کر رہے ہیں، یا ہاتھ بے مقصد ہلے جا رہے ہیں، یا منہ چلے جا رہا ہے۔ ایسا کچھ نہیں ہے

بلکہ ہر اندرونی و بیرونی عضو ہر وقت اپنے مخصوص کام میں مصروف ہے اور جسم کا ہر کام بڑے موقع کی مناسبت سے اپنے وقت پر پروگرام کے عین مطابق انجام پا رہا ہے۔

اور دنیا کی یہ سب سے پیچیدہ مشینری خود کار ہے کیونکہ بظاہر یہ لگتا ہے کہ اسے کوئی چلا نہیں رہا بلکہ یہ خود چل رہی ہے۔ جبکہ ایسا ہے نہیں بلکہ اس خود کار مشینری کو روح چلا رہی ہے یہ جسمانی مشینری خود کار طریقے سے کام کر رہی ہے روح کے پروگرام پر جیسے کمپیوٹر اپنے مخصوص پروگرام پر خود کار کام کرتا ہے۔ اور روح خالق کا حکم ہے لہذا خالق خود اس مشینری کو چلانے اور متحرک کرنے والے ہیں لہذا بظاہر خود کار نظر آنے والا پورا اندرونی و بیرونی جسمانی نظام روح کے پروگرام کے عین مطابق انتہائی متوازن اور متناسب ہے۔ جسمانی انتہائی پیچیدہ مشینری میں اس نظام کو قائم کر رہی ہے روح۔ اور جسمانی نظام میں اس تناسب کو برقرار بھی رکھے ہوئے ہے روح۔

لہذا جسم کا ہر چھوٹے سے چھوٹا یونٹ انفرادی طور پر بھی منظم ہے اور اجتماعی حیثیت میں بھی منظم ہے اور پیدائشی مراحل میں ہر جسم کے اندر یہ تناسب پیدا کر رہی ہے روح۔

## ۴۔ جسمانی ساخت میں تناسب

نظریہ نمبر: ﴿97﴾۔ ﴿ہر جسم میں انفرادی تناسب قائم کر رہی ہے روح﴾

دنیا میں اربوں انسان ہیں سب کے تقریباً ایک ہی نوعیت کے اجسام ہیں۔ اجسام کی مشینری، اعضاء اجزائے ترکیب سب ایک ہی جیسے ہیں لیکن تناسب کا اتنا حسین امتزاج ہے اجزائے ترکیبی کا وہ فارمولہ ہے کہ ہم ہر جسم کو الگ سے شناخت کرتے ہیں۔ یہ نہیں کہ تمام جسم ایک جیسی مشینری ہونے کی وجہ سے گڈڈ ہو رہے ہیں۔ ایک جیسی مشینری ہونے کے باوجود ہر وجود دوسرے سے الگ ہے ہم ہر وجود کو دوسرے سے الگ شناخت کرتے ہیں۔ یہ مرد ہے یہ عورت، یہ احمد ہے یہ مریم جبکہ اگر انسان ایک جیسی مشینریاں بنائے تو ایک جیسی لا تعداد مشینریوں میں سے ہر ایک کو علیحدہ شناخت کرنا ناممکن ہے جبکہ اربوں اجسام میں انفرادی تناسب قائم کر رہی ہے روح جو کہ رب کا حکم ہے! لہذا انسان یہ نہیں کر سکتا جبکہ خالق نے یہ خصوصیت محض اپنی مشینری انسان میں رکھی ہے۔

## ۵۔ انواع میں تناسب

نظریہ نمبر:- ﴿98﴾۔ ﴿انواع میں تناسب قائم کر رہی ہے روح جو رب کا حکم ہے یعنی انواع میں تناسب قائم کیا ہے خالق نے﴾

دنیا میں اور کائنات میں بے شمار موجودات لا تعداد انواع ہیں سب کا نظام الگ اور متناسب ہے ہر نوع اپنا انفرادی نظام رکھتی ہے لہذا انسان کے انسان کا بچہ پیدا ہوتا ہے اور شیر کے شیر کا اور درخت کے بیج سے درخت اگتا ہے۔ اور ہر نوع کا نظام انتہائی متناسب ہے۔ اور انواع میں تناسب قائم کر رہی ہے روح۔

جسمانی ساخت میں بھی یہی حد درجہ کا تناسب قائم ہے جسکی وجہ سے انسان تمام انواع میں منفرد ہے۔

اپنی ذاتی حیثیت میں منفرد ہے۔

ہر عضو منفرد اور متناسب ہے۔

جسمانی نظام میں تناسب قائم ہے۔

اور ہر انسان متوازن و مناسب بالکل ٹھیک پورا انسان ہے۔

مادی جسم کو منفرد بنانے کے لیے ہزار ہا قسم کے تناسب قائم کر رہی ہے روح۔ جن میں سے چند کا یہاں ہم نے تذکرہ کر دیا لہذا مادی جسم میں پیدائش کے دوسرے مرحلے میں روح جسم میں متناسب قائم کر رہی ہے اس کی تو وضاحت ہو گئی اب مادی جسم کی پیدائش کا تیسرا مرحلہ ہے تقدیر۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ رحم مادر میں مادی جسم کی پیدائش کے تیسرے مرحلے میں روح تقدیر کے عنوان سے کیا کر رہی ہے۔

(3)۔ تقدیر

ہر کام مقرر تقدیر ہے

مادی جسم کی پیدائش کا تیسرا مرحلہ ہے تقدیر

۱۔ تقدیر کیا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿99﴾۔ ﴿تقدیر کتاب زندگی ہے جس میں انسان کی پوری زندگی درج ہے۔

(روح کی ایک صورت یہی مرتب شدہ کتاب ہے) ﴿

(ہم روح کی تعریف میں یہ وضاحت کر آئے ہیں کہ روح زندگی ہے انرجی ہے، حکم ہے، اور مرتب پروگرام بھی ہے اور روح کے اسی مرتب پروگرام کو یہاں ہم نے تقدیر کہا ہے اور اب یہاں ہم روح کی ایک اور خصوصیت یعنی تقدیر (مرتب پروگرام) کی وضاحت کریں گے کہ کیسے مادی جسم کے پیدائشی مراحل میں روح کا یہ مرتب پروگرام یعنی تقدیر اپنا کردار ادا کر رہا ہے۔

انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا پروگرام اس کے اپنے اندر اس کے ہر جینز ہیریونٹ میں لکھا ہوا ہے۔ جیسے کمپیوٹر خود بخود کام کرتا ہے لیکن اپنے اندر درج پروگرام (ہارڈ ڈسک) کے عین مطابق یعنی کمپیوٹر میں پروگرام ہوتا ہے اور کمپیوٹر اسی پروگرام کے مطابق کام کرتا ہے انسان کے پاس بھی کمپیوٹر کی طرح حرکت و عمل کا پروگرام ہے اسی پروگرام کی وجہ سے انسان کے اندر خود کار حرکت و عمل کی صلاحیت موجود ہے۔

لہذا رحم مادر میں آغاز پیدائش کے 120 دن بعد نئے تشکیل پانے والے جسم کے ہیریونٹ کو یہ تحریری پروگرام (تقدیر) یعنی ذاتی جسمانی تعمیر اور ذاتی حرکت و عمل کا پروگرام مل جاتا ہے یہ تحریری پروگرام روح کے ذریعے پورے جسم کو وصول ہوتا ہے اور اسی روح کے ذریعے جسم کے ہر یونٹ کو اس کی حرکت و عمل کا مکمل پروگرام وصول ہو جاتا ہے یہی پورے جسم اور جسم کے ہیریونٹ کی حرکت و عمل کا تحریری پروگرام جو ہیریونٹ کے مرکز میں تحریر ہے۔ یہی تقدیر ہے۔

120 دن تک تو جسم نطفے سے پرورش پاتا رہا یعنی ماں اور باپ کے جراثیموں سے لہذا 120 دن تک تو جسم والدین کے جراثیموں کے پروگراموں کے مطابق ترتیب پاتا رہا۔ لیکن 120 دن بعد زیر تعمیر جسم کو اپنا ذاتی تعمیر کا پروگرام یعنی تقدیر مل گئی ہے۔ اب اس کا باقی جسم اسی اپنے ذاتی پروگرام سے ترتیب پائے گا۔

اور یہی ذاتی پروگرام اس انسان کے اندر (ارہوں انسانوں کے درمیان) انفرادیت پیدا کرے گا۔ لیکن کتاب زندگی محض جسمانی ترتیب کا پروگرام ہی نہیں ہے بلکہ یہ کتاب انسان کی پوری زندگی کی کہانی (مسودہ) ہے۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ اس کتاب زندگی (تقدیر) میں جسمانی ترتیب کے پروگرام کے علاوہ کیا کیا لکھا ہے۔ تقدیر کتاب زندگی یعنی ایک تحریر تو ہے لیکن اس مرتب کتاب میں کیا لکھا ہے۔

۲۔ تقدیر میں کیا تحریر ہے

نظریہ نمبر:- ﴿100﴾ - ﴿یہ کتاب چار ابواب پر مشتمل ہے۔ ان چار ابواب کے عنوانات درج ذیل ہیں۔

(۱) عمل

(۲) رزق

(۳) عمر

(۴) انجام

لہذا کتاب تقدیر میں ان چار عنوانات چار ابواب کے تحت تحریری مواد موجود ہے۔ ﴿اب دیکھنا یہ ہے کہ ان چار عنوانات کے تحت چار ابواب کے اندر کیا تحریر ہے۔ لہذا تقدیر کا پہلا باب ہے عمل آئیے دیکھتے ہیں اس باب میں عمل کے عنوان کے ساتھ کیا تحریر ہے

(1) عمل

نظریہ نمبر:- ﴿101﴾ - ﴿کتاب زندگی (تقدیر) میں انسان کا ہر عمل لکھا ہوا (ریکارڈ) ہے۔﴾

ماں کے رحم میں ۱۲۰ دن کے بعد سے لے کر موت تک انسان نے جو بھی حرکت اور جو بھی عمل کرنا ہے وہ تمام پروگرام اس کتاب زندگی میں تحریر ہے۔ جو چاہے اپنی روح کی آنکھ سے پڑھ لے۔ لہذا 120 دن بعد جب رحم مادر میں بچے کے جسم میں روح داخل ہوتی ہے تو اس کا باقی جسم اسی ذاتی تحریر سے تشکیل پاتا ہے۔ اس تعمیر کا سارا پروگرام اور پوری زندگی کی جسمانی حرکت و عمل کا پروگرام تقدیر میں درج ہے۔

ہاتھ ہلانا ہے، چلنا ہے، بیٹھنا ہے، کھانا ہے، سونا ہے، جاگنا ہے۔ غرض ماں کے رحم میں ۱۲۰ دن کے بعد سے لے کر موت تک انسان جو بھی حرکت اور جو بھی عمل کرتا ہے وہ اس کتاب زندگی میں تحریر ہے۔ 120 دن بعد رحم مادر میں بچے کے جسم میں روح داخل ہوتے ہی ہاتھوں پیروں کی حرکت شروع ہو جاتی ہے لہذا رحم مادر میں ہی بچہ سننے چوکنے اور محسوس کرنے لگتا ہے۔ ایسا وہ غیر ارادی طور پر کرتا ہے اور بچے کی یہ غیر ارادی حرکت و عمل کتاب زندگی میں لکھی تحریر کی وجہ سے ہے

لہذا پوری زندگی انسان اسی پروگرام کے مطابق ارادی وغیر ارادی حرکت و عمل کرتا ہے۔ انسان کی پوری زندگی کا ہر عمل و حرکت کتاب زندگی میں تحریر ہے اور اس تحریر کے ذریعے جسمانی عمل کیسے واقع ہو رہا ہے یہ ایک بہت بڑا پراجیکٹ ہے لہذا جسمانی عمل کیسے واقع ہو رہا ہے اس کا ذکر آگے آئے گا۔

ابھی جسمانی تعمیر کا فارمولہ مکمل نہیں ہوا لہذا جب ہم مکمل فارمولے سے آگاہی حاصل کر لیں گے تبھی ہم یہ سمجھنے کے قابل ہوں گے کہ کتاب زندگی یعنی تقدیر میں درج تحریر کے ذریعے کیسے ذاتی جسمانی عمل واقع ہو رہا ہے۔ فی الحال ہمیں یہ جاننا ہے کہ کتاب زندگی میں کیا کیا لکھا ہے۔

## (۲) رزق

نظر یہ نمبر:- ﴿102﴾ - ﴿انسان کا رزق بھی تقدیر میں لکھا ہے۔﴾

یعنی ہر انسان کا مخصوص رزق اس کی تقدیر میں لکھا ہے۔ یہ رزق کتنا ہے کہاں سے ملے گا کب ملے گا سب لکھا ہے۔ حتیٰ کہ رزق پہ بھی لکھا ہے کہ اسے فلاں کھائے گا اور اس فلاں کے علاوہ اس کو کوئی دوسرا کھا نہیں سکتا۔ اب اسی لکھے ہوئے کے مطابق انسان اپنے رزق کو پانے کی کوشش کرتا ہے۔ کسی کو کم ملے گا کسی کو زیادہ یہ ہے رزق کے مالک کی منصفانہ تقسیم اور کائنات کے کاروبار کو چلانے کا منفرد طریقہ۔ لہذا اسی انفرادی تقسیم سے کوئی امیر ہے کوئی غریب کوئی فقیر ہے کوئی بادشاہ غرض زندگی کا ہر چھوٹا بڑا کاروبار چل رہا ہے۔ اگر یہ منصفانہ تقسیم نہ ہو تو کاروبار حیات نہ چلے۔ ہر شخص کا مخصوص رزق اس کی تقدیر میں لکھا ہوا ہے۔ لیکن اس کو حاصل کرنے کے لئے کچھ نہ کچھ کوشش ضرور کرنی پڑتی ہے۔ مثلاً ایک بیت المال ہے جہاں ہر شخص کے نام کا رزق پڑا ہے تو انسان کوشش کرے اور جا کر اپنا رزق وصول کر لے۔

کچھ لوگ تھوڑی سی کوشش سے اپنا حصہ وصول کر لیتے ہیں کچھ زیادہ کوشش کر کے اپنا حصہ وصول کرتے ہیں۔ وہ زیادہ کوشش زیادہ حاصل کرنے کے لئے کرتے ہیں لیکن زیادہ نہیں پاسکتے کیونکہ ہر شخص امیر بننا چاہتا ہے مگر باوجود کوشش کے ہر شخص امیر نہیں ہو سکتا ایسے دنیا کا کاروبار نہیں چل سکتا لہذا زیادہ کوشش سے بھی انسان اپنا حصہ ہی وصول کرتا ہے لہذا دنیا کے سارے کام چھوڑ کر صرف رزق کے پیچھے بھاگنا بھی عقل مندی نہیں ہے۔ لیکن بعض ایسے کاہل ہوتے ہیں کہ اپنا حصہ بھی

وصول نہیں کرتے ہاتھ پہ ہاتھ دھرے ہی بیٹھے رہتے ہیں لہذا ایسے فقیروں کا حصہ کوئی اللہ کا بندہ بھیک کی صورت میں ان کی جھولی میں ہی ڈال جاتا ہے لیکن یہ بات اچھی نہیں یہ قابل شرم بات ہے انسان کو حتی المقدور کوشش تو کرنی ہی چاہیے تاکہ وہ اپنی روزی باعزت طریقے سے حاصل کر سکے۔

بعض دفعہ بعض مہربان لوگ اپنے حصے کے رزق سے زیادہ پالیتے ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ دوسروں کی مدد کرتے ہیں لہذا اضافی رزق دراصل ان لوگوں کا رزق ہے جو دوسروں کی مدد پر صرف کرتے ہیں یعنی دوسروں کے کام آ کر ان کی مدد کر کے انسان اضافی رزق پاسکتا ہے۔ یعنی دوسروں کا رزق جو وہ اپنے ہاتھوں سے ان میں تقسیم کرتا ہے۔

رزق لکھا ہوا ہوتا ہے وہ مل ہی جائے گا اور جتنا لکھا ہے اتنا ہی ملے گا۔ لیکن مختلف لوگ اپنے ہی رزق کو دو مختلف طریقوں سے حاصل کرتے ہیں۔ کچھ صحیح طریقوں سے کوشش کرتے ہیں تو کچھ لوگوں کی کوشش غلط ہوتی ہے۔

لہذا صحیح کوشش سے اپنی قسمت کے رزق کو کچھ لوگ حلال رزق میں بدل لیتے ہیں۔ اور کچھ لوگ غلط طریقے اختیار کر کے اپنی قسمت کے رزق کو حرام کر لیتے ہیں۔ لہذا اپنا مقدر اپنا رزق بھیک میں نہ مانگیئے نہ ہی اس کے حصول کے لئے 24 گھنٹے دیوانے بنے رہیئے۔ دنیا میں اور بھی مفید کام ہیں۔

لہذا رزق تقدیر میں لکھا ہے اسے حاصل کیجئے مثبت کوشش سے کم وقت میں اگر رزق میں اضافہ کرنا چاہتے ہیں تو اپنے جیسے دوسرے غریب انسانوں کی مدد کیجئے۔

(۳) عمر

نظر یہ نمبر:- ﴿103﴾ - ﴿ کتاب زندگی کے کل صفحات تقدیر میں تحریر ہیں۔

ماں کے پیٹ سے زندگی کے اختتام تک کتنی عمر ہے یہ تقدیر میں تحریر ہے۔ ﴿ انسان کی زندگی ایک کتاب یا ایک فلم کی مانند ہے چھوٹی کتاب ہے یا موٹی ایک گھنٹے کی فل ہے یا تین گھنٹے کی۔ اور انسان اسی مقرر فلم یا کتاب (تقدیر) کے مطابق مقرر زندگی گزارتا ہے۔ اور جب یہ کتاب ختم ہو جاتی ہے تو زندگی کا اختتام ہو جاتا ہے۔

اسی طرح انسانی زندگی کسی کتاب یا فلم کی مانند ہے ہر انسان کی کتاب کے صفحات تقدیر میں تحریر

ہیں ہر انسان کی زندگی کی فلم کے گھنٹے تقدیر میں درج ہیں۔ کوئی لمبی عمر کا ہے تو کوئی چھوٹی عمر کا۔ لہذا ہر دن زندگی کی کتاب کے یہ صفحے پلٹتے ہیں اور انسان ان صفحات پر لکھی اپنی زندگی اپنی تقدیر اپنی مرضی سے جیتا ہے اور بالا آخر یہ کتاب زندگی ایک دن ختم ہو جاتی ہے اور جب تقدیر کی یہ تحریر ختم ہوتی ہے تو زندگی ختم ہو جاتی ہے۔ اگر ہر دن یہ صفحات نہ پلٹیں انسان کو زندگی گزارنے کا یہ مرتب پروگرام نہ ملے تو انسان کے اندر کسی بھی حرکت و عمل کا پیدا ہونا محال ہے۔ یہ پروگرام انسان کو ملتا ہے تو وہ اس پروگرام میں رد و بدل کر کے اپنی مرضی کی زندگی گزارتا ہے۔ انسان یہ کتاب (تقدیر) خود نہیں لکھتا بلکہ اسی خالق کی ودیت کردہ کتاب زندگی کے مسودے میں ترمیم و اضافہ کرتا ہے۔

لہذا خالق کی ودیت کردہ یہ کتاب زندگی کسی کی مختصر ہے تو وہ جوانی میں ہی مر جاتا ہے کوئی ساٹھ ستر یا سو سال اور بعض تو دو سو سال کی عمر بھی پالیتے ہیں اور پچھلے زمانوں میں تو لوگ ہزاروں برس کے ہوتے تھے۔

لہذا جتنی عمر کتاب زندگی میں درج ہے اتنی ہی انسان کی عمر ہے۔ کتاب میں جتنے صفحات ہیں اتنے ہی انسان ماہ و سال دنیا میں بسر کرے گا۔ جب انسان کی زندگی کی یہ تحریر ختم ہو جاتی ہے تو انسان کی زندگی بھی ختم ہو جاتی ہے۔ انسان اپنی مرضی سے کتاب زندگی کے اوراق میں اضافہ نہیں کر سکتا۔ یعنی تقدیر میں اس کی واپسی کا ٹائم بھی تحریر ہے۔ لہذا انسان ایک مخصوص مدت کی پہلے سے مقرر کردہ زندگی جیتا ہے۔ لہذا اماں کے پیٹ سے زندگی کے اختتام تک کی تمام کتاب تقدیر میں تحریر ہے اور جب یہ تحریر ختم ہو جاتی ہے تو انسان کی زندگی کا اختتام ہو جاتا ہے۔

(۴) انجام

نظریہ نمبر:- ﴿104﴾ - ﴿انسان کے اپنے اندر اس کی تقدیر میں اسکا انجام بھی لکھا ہوا موجود ہے﴾

چونکہ انسان خالق کی تخلیق خالق کا علم ہے لہذا خالق یقیناً جانتا ہے کہ ہر شخص ذاتی ارادے سے کیا کیا عمل کرے گا لہذا انسان کے خالق نے انسان کے اندر اس کا انجام بھی لکھ دیا۔

جب کہ انسان کا علم ابھی اس حد تک نہیں پہنچا کہ وہ اپنے ہی ارادوں کو جان لے۔ انسان اس انجام کو اپنے ذاتی ارادوں سے پہنچتا ہے انسان کو ہر عمل کی مثبت اطلاع ملتی ہے لیکن وہ اس اطلاع



پر عمل ذاتی ارادے سے کرتا ہے۔ (جس کا تفصیلی ذکر آگے آئے گا عمل کے عنوان سے) اگر انسان کی پوری زندگی کے مجموعی اعمال برے ہیں تو وہ برا انسان ہے لہذا اس کا انجام بھی بد ہے۔

زندگی میں زیادہ اچھے عمل کرنے والے کا انجام یہ ہوا کہ وہ پاس ہے وہ اچھا انسان ہے۔ پاس یا فیل یہی نتیجہ، نتیجہ آنے سے پہلے ہی لکھا ہے تقدیر میں۔

اور یہ نتیجہ امتحانِ زندگی سے پہلے لکھا ہے خالق نے اپنے علم سے اس لئے کہ وہ ہر شخص کو اور اس کے ذاتی عمل کو (جسے خود ہر شخص نہیں جانتا) پہلے سے جانتا ہے۔

اور یہ کوئی حیرانی کی بات نہیں ہے کیونکہ خالق اس لئے سب کچھ جانتا ہے کہ سب کچھ اسی کا ہے اسی نے سب کچھ پیدا کیا ہے۔ تو جس نے پیدا کیا، جس کی ملکیت ہے وہ کیوں نہ جانے۔ درحقیقت تمام موجودات اور مخلوقات خالق ہی کا علم ہیں۔

### ۳۔ تقدیر کے دو حصے

نظریہ نمبر:- ﴿105﴾ - ﴿تقدیر انسان کی پوری زندگی کی مرتب کتاب تو ہے لیکن انسان اس تحریر شدہ کتاب کا پابند نہیں ہاں اس پوری کتاب میں درج چند قوانین کا وہ پابند ہے۔﴾ جس طرح ریاست میں انسان اپنی مرضی سے رہتا ہے وہ کسی کا پابند نہیں ہوتا لیکن ریاست میں اپنی مرضی سے رہنے بسنے کی باوجود اس پر کچھ ریاستی قوانین لاگو ہوتے ہیں جن کی اسے پابندی کرنا ہوتی ہے مثلاً وہ کسی کو قتل نہیں کر سکتا، کسی کی چیز نہیں چھین سکتا یعنی ریاست کے قوانین کا وہ پابند ہے لیکن قوانین کی پابندی کا مطلب یہ نہیں کہ وہ ریاست کا غلام یا پابند ہے یا اس کی پوری زندگی اسی پابندی پر مشتمل ہے۔ یہ پابندی محض چند ضروری قوانین تک محدود ہے وہ بھی ریاست کے نظم و ضبط کے قیام کے لئے اس ریاست میں انسان پوری طرح آزاد ہے۔

اسی طرح انسان کے اندر جو تحریر (تقدیر) ہے وہ اس کا پابند نہیں لیکن کچھ قوانین ہیں جو اس پہ لاگو آتے ہیں جن کا وہ پابند ہے۔ لہذا اسی ترتیب سے تقدیر (کتابِ زندگی) کے دو حصے ہیں۔

(۱) مرتب پروگرام (۲) لازمی قوانین

## (1) مرتب پروگرام

نظریہ نمبر:- ﴿106﴾ - ﴿تقدیر انسان کی پوری زندگی کی تحریری کتاب ہے جس میں انسان کی

پوری زندگی تحریر ہے لیکن انسان اسکا پابند نہیں ہے﴾

انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا پروگرام اس کے اپنے اندر اس کے ہر جینز ہر یونٹ میں لکھا

ہوا ہے۔ جیسے کمپیوٹر میں پروگرام ہوتا ہے اور کمپیوٹر اسی پروگرام کے مطابق کام کرتا ہے انسان کے

پاس بھی کمپیوٹر کی طرح حرکت و عمل کا پروگرام ہے اسی پروگرام کی وجہ سے انسان کے اندر حرکت

و عمل کی صلاحیت موجود ہے۔

مثلاً تقدیر میں تحریر ہے کہ

دو پہر کو ایک بچے بھوک لگے گی لہذا کھانا کھانا چاہئے اسی تقدیر میں لکھے کے مطابق دو پہر کو ایک

بچے بھوک لگے گی اور کھانے کی خواہش بیدار ہوگی۔ اب انسان اپنی تقدیر میں لکھے اس پہلے سے

ترتیب شدہ پلان کا پابند نہیں انسان اپنی مرضی کا مالک ہے لہذا چاہے تو اس ترتیب شدہ پلان کی

ترتیب بدل دے یعنی ایک بچے کھانا نہ کھائے یا کھانے کے بجائے کچھ اور کھالے یا کھائے ہی نہ۔

لہذا ہوگا وہی جو انسان کی مرضی ہے۔

لہذا انسان کی مرضی وہ تقدیر کی فطری پروگرام پر عمل کر لے یعنی ایک بچے کھانا کھالے

اس کی مرضی تقدیر کے اس مرتب پروگرام میں رد و بدل کر لے یا اس پہ عمل ہی نہ کرے۔

اگر انسان اپنی مرضی سے اسی تقدیر پر پروگرام پر عمل کرتا ہے تو یہ فطری طرز زندگی ہے یہ عمل صحیح ہے

اگر اس کے مد مقابل کوئی دوسرا مثبت عمل کرتا ہے تو وہ بھی صحیح ہے۔ لیکن اس تقدیر پر پروگرام پر

عمل درآمد کے لئے وہ کوئی منفی طریقہ اختیار کرتا ہے تو یہ غیر فطری طرز عمل ہے۔ جو غلط ہے۔ لہذا

انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا پورا پروگرام تو اس کے اندر تحریر ہے لیکن انسان اس تحریر کا

پابند نہیں بلکہ انسان عمل کے لئے آزاد ہے۔

## ۲۔ لازمی قوانین

نظریہ نمبر:- ﴿107﴾ - ﴿انسان عمل کے لئے آزاد ہے تو تقدیر میں تحریر چند قوانین کا پابند بھی

ہے۔﴾

جن میں سے چند کا یہاں ہم ذکر کرتے ہیں۔

(i) جسمانی ساخت: رحم مادر میں جیسا بھی انسانی جسم تیار ہوتا ہے یہ محض انسان کی تقدیر ہے، رنگ، قد کاٹھ، دل گردے ان کے کام جیسے بھی ہیں یہ انسان کی تقدیر ہے لہذا انسان ذاتی ارادے سے خود اپنی شخصیت میں ترمیم و اضافہ نہیں کر سکتا۔

انسانی ارادے کے بغیر مرد یا عورت کا فرق یعنی جنس کا تعین تخلیقی عمل کے دوران ہوتا ہے کسی عضو میں کمی پیشی بھی ہو سکتی ہے عموماً ٹھیک مرد اور ٹھیک عورت پیدا ہوتے ہیں لیکن کوئی جنسی معذوری بھی ہو جاتی ہے، جسم میں کوئی کمی بیشی بھی ہو سکتی ہے، کوئی کالا ہوتا ہے کوئی گورا، کوئی موٹا کوئی پتلا، کوئی اندھا کوئی لنگڑا کوئی پیدائش کے وقت ہی مر جاتا ہے کوئی لمبی عمر جیتا ہے۔ یہ سب تقدیر کا پروگرام ہے جو تقدیر کی صورت میں تحریر ہے جو خالق کا حکم ہے۔

(نوٹ:- اگرچہ آجکل جنیٹک کے ماہرین جینز کو الٹ پلٹ کر کتاب زندگی کی ترتیب بدل دیتے ہیں لیکن اس سے کچھ زیادہ مثبت نتائج برآمد نہیں ہو سکتے)۔

(ii) خود کار مشینری:- جسمانی مشینری خود کار سسٹم کے تحت متحرک ہے اور اس مشینری کے پاس اور مشینری کے ہر عضو ہر یونٹ کے پاس تحریری پروگرام موجود ہے لہذا ہر عضو اسی تقدیر کے پروگرام پر عمل پیرا ہے۔ اسی پروگرام کی وجہ سے انسان کے اندر حرکت و عمل کی صلاحیت موجود ہے۔

لہذا اس جسمانی سسٹم میں انسانی ارادے کا عمل دخل نہیں بلکہ یہ روح کا تقدیر پر پروگرام ہے لہذا ہر یونٹ اپنے تحریری پروگرام کا پابند ہے۔ اور جسم کا خود کار اندرونی سسٹم کتاب تقدیر کے عین مطابق ہے۔ لہذا تقدیر روح کا تحریری پروگرام ہے جو خالق کا حکم ہے اسی سے یہ خود کار مشینری متحرک ہے اسی حکم سے بند ہوگی نہ کہ انسان کے ذاتی ارادہ سے۔

کچھ مزید قوانین

بعض جگہ انسان تقدیر کے کڑے قوانین کی زد میں ہے مثلاً موت زندگی یہ انسان کے اختیار میں نہیں کہ وہ نہ مرے یا پیدا ہی نہ ہو یا جوانی میں نہ مرے یا سب لوگ امیر ہونا چاہتے ہیں یہ بھی ممکن نہیں بعض دفعہ ہزار کوشش کے بعد بھی انسان کے ہاتھ خالی رہتے ہیں۔ زمینی مادی قوانین کے مطابق تو جو کام جو کوشش کی ہے اس کا رزلٹ آنا چاہیے لیکن عموماً ایسا نہیں ہوتا۔ پیدائش کے وقت،

پیدائش کے بعد، عملی زندگی میں قدم قدم پہ ہمیں اسی اٹل تقدیر کا تجربہ ہوتا ہے جب ہم پوری پلاننگ پوری کوشش کے بعد بھی ناکامی کا منہ دیکھتے ہیں جب وہ نہیں ہوتا جو ہم چاہتے ہیں، یا ہم آئینہ دیکھ کر کہتے ہیں کہ مجھے ایسا نہیں ایسا ہونا چاہیے تھا، ہمیں تقدیر کے اس اٹل تحریری پروگرام کا سامنا اکثر کرنا پڑتا ہے اور یہ تقدیر کے اٹل قوانین کائنات کے بیلنس سسٹم کا حصہ ہیں اگر سب کچھ انسان کی مرضی اس کے اختیار میں ہوتا تو شاید کائنات اتنے عرصے نہ چل سکتی جتنا کہ چل چکی ہے۔ دراصل ہمارا اور کائنات کا سسٹم کسی اور کے ہاتھ میں ہے اور یہ اٹل قوانین کائنات کے توازن کے لئے ضروری ہیں۔

### خلاصہء تقدیر

خلاصہ یہ ہے کہ انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کا پروگرام اس کے اپنے اندر اس کے ہر جینز ہر یونٹ میں لکھا ہوا ہے۔ جیسے کمپیوٹر میں پروگرام ہوتا ہے اور کمپیوٹر اسی پروگرام کے مطابق کام کرتا ہے انسان کے پاس بھی کمپیوٹر کی طرح حرکت و عمل کا پروگرام ہے اسی پروگرام کی وجہ سے انسان کے اندر حرکت و عمل کی صلاحیت موجود ہے۔ لیکن انسان عمل کے لئے اس پروگرام کا پابند نہیں بلکہ عمل کے لئے انسان آزاد ہے اور عمل انسان ذاتی ارادے سے کرتا ہے۔ لیکن انسان اپنی تقدیر میں تحریر کچھ قوانین کا پابند بھی ہے ان لازمی قوانین میں اس کے ذاتی ارادے کا عمل دخل نہیں ہے۔ یعنی انسان محض چند ضروری قوانین کا پابند ہے لیکن انسان عمل ذاتی ارادے سے کرتا ہے انسان عمل کے لئے آزاد ہے۔

یہاں ہم مادی جسم کی پیدائش کے فارمولے کی وضاحت کر رہے ہیں لہذا اس فارمولے کے تین نکات تخلیق، تناسب، اور تقدیر کی تو یہاں وضاحت مکمل ہوئی اب اس فارمولے کا اگلا چوتھا مرحلہ ہے ہدایت۔

### (۴)۔ ہدایت

بے شک ان کے پاس ان کے رب کی طرف سے ہدایت آئی (۲۳) ۵۳  
مادی جسم کی پیدائش کا چوتھا مرحلہ ہے ہدایت

۱۔ ہدایت کیا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿108﴾۔ ﴿اندر سے ایک آواز اٹھ رہی ہے جو ہر عمل کے لئے ہماری مثبت راہنمائی کرتی ہے۔ یہ "ہدایت" ہے۔ اور یہ ہدایت روح کی آواز ہے۔﴾  
 عموماً ہم اس اندر کی آواز کو "ضمیر کی آواز" کہتے ہیں لیکن اس اندر کی آواز کا اصل نام "ہدایت" ہے۔

اچھے کام کی ترغیب، برے کام کی ممانعت اور برے عمل پر ملامت اسی آواز کی طرف سے ہے اور اسی کو کہتے ہیں ہدایت۔ اور انسان کو صحیح سمت کی طرف ہدایت دے رہی ہے روح۔ یعنی یہ آواز جسے ضمیر کی آواز کہہ دیا جاتا ہے دراصل روح کی مسلسل اور مثبت ہدایات ہیں۔ یہ روح کی ہدایات دراصل ہر عمل کے لیے مثبت ترغیبی پروگرام ہے۔

لہذا انسان اچھایا برا عمل تو اپنی مرضی سے کر رہا ہے لیکن اس سے پہلے کہ انسان اپنی مرضی کا عمل کرے اندر کی یہ ہدایت انسان کی راہنمائی کر دیتی ہے کہ جو عمل وہ کرنے جا رہا ہے یہ اچھا عمل ہے یا برا۔ روح کی یہ ہدایت اچھے عمل کی ترغیب دیتی ہے تو برے عمل کے مضمرات بھی بیان کر دیتی ہے۔ لہذا اس ہدایت کی وجہ سے انسان یہ جانتا ہے کہ وہ جو عمل اپنی مرضی سے کرنے جا رہا ہے وہ اچھا ہے یا برا۔ لہذا انسان انجانے میں نہیں بلکہ اپنی مرضی سے جانتے بوجھتے اچھایا برا عمل کرتا ہے۔ لہذا روح کی ہدایت نہ صرف اچھے برے عمل کی وضاحت کر رہی ہے بلکہ برائی کی مذمت اور غلط عمل پر ملامت بھی کرتی ہے لہذا یہ انسان کی ذاتی مرضی ہے۔

چاہے تو اس "ہدایت" پر عمل کر کے اچھا عمل کر لے

چاہے تو اس "ہدایت" کو رد کر کے برا عمل کر لے۔ لہذا انسان اپنے اچھے برے عمل کا خود سو فیصد ذمہ دار ہے

۲۔ ہدایت کی دو صورتیں

نظریہ نمبر:- ﴿109﴾۔ ﴿ہدایت کی دو صورتیں ہیں۔﴾

(1) باطنی ہدایات

(2) ظاہری ہدایات

## (1) باطنی ہدایات

نظریہ نمبر:- ﴿110﴾ - ﴿باطنی ہدایات انسان کو اپنے اندر روح کی آواز کے ذریعے مل رہی

ہیں۔﴾

یہ مثبت ہدایات ہر عمل کی اطلاع کے ساتھ ہی موصول ہونا شروع ہو جاتی ہیں۔ انہیں مثبت ہدایات یعنی روح کی آواز کو ضمیر کی آواز کہا جاتا ہے۔ یہ روح کی ہدایات مثبت ہدایات ہیں انہی مثبت ہدایات پہ مبنی ہونا چاہیے ہمارا طرز زندگی تبھی ہمارا طرز عمل اور طرز زندگی درست طرز زندگی قرار پائے گا۔

لہذا اندر کی اس آواز کے ہوتے ہوئے انسان یہ نہیں کہہ سکتا کہ مجھے تو غلط یا صحیح کا علم ہی نہیں تھا۔ اور میں نے بد عمل انجامانے میں کیئے۔ کوئی مجھے بتانے والا نہیں تھا لہذا انسان کے اچھے برے عمل کی راہنمائی کے لیے روح کی ہدایات کے علاوہ ایک اور صورت بھی ہمارے پاس موجود ہے۔ اور وہ صورت ہے ظاہری ہدایات۔

## (2) ظاہری ہدایات

نظریہ نمبر:- ﴿111﴾ - ﴿ہر عمل کے لئے ہدایت کی ظاہری صورت ہے آسمانی کتابیں۔﴾

لہذا کونسا عمل اچھا ہے کونسا برا، کیا کام کرنا چاہیے اور کیا نہیں کرنا چاہیے اس کی مکمل ہدایات ہمارے پاس باقاعدہ تحریری طور پر آسمانی کتابوں میں بھی موجود ہیں۔ وہی خالق جو انسان کے اندر سے اس کی ہر عمل کے لیے راہنمائی کر رہا ہے اسی نے ظاہری صورت یعنی آسمانی کتابوں کے ذریعے بھی انسان کی راہنمائی کی ہے۔ یعنی آج ہر عمل کے لیے ہدایات (ہر قسم کی اچھائی برائی کی تفصیلات) ہمارے باطن میں ہدایات کی صورت میں بھی موجود ہیں اور ہمارے پاس آسمانی کتابوں کی صورت میں بھی یہ تحریر موجود ہے۔

ظاہری ہدایات دراصل باطنی ہدایات کی ظاہری شکل ہیں یعنی باطنی ہدایات روح (تقدیری ریکارڈ حرکت و عمل کا) ہیں تو ظاہری ہدایات جسم (آسمانی کتابیں) ہیں۔

یعنی ہر عمل کی تقدیری اطلاع موصول ہونے کے ساتھ ہی اس اطلاع پر عمل درآمد کے لیے ہدایات موصول ہونے لگتی ہیں وہ ہدایات دو طرزوں میں ہمارے پاس موجود ہیں۔

(1) روح کی آواز (باطنی ہدایات)

(2) آسمانی کتابیں (ظاہری ہدایات)

انسان کے ذاتی ارادے سے کوئی بھی عمل کرنے سے پہلے ہر عمل کی پوری تفصیلات (کہ یہ عمل اچھا ہے یا بُرا ہے تو اس کے کیا کیا مضمرات ہیں اچھا ہے تو اس کے کیا کیا فائدے ہیں) روح کی اس آواز یعنی ہدایات کے ذریعے انسان کو مل جاتی ہیں لہذا ان ہدایات کے آجانے کے بعد انسان یہ بہانہ نہیں تراش سکتا کہ مجھے تو خبر ہی نہیں تھی اور یہ بُرا عمل مجھ سے انجانے میں ہو گیا اگر مجھے کوئی سمجھانے بتانے والا ہوتا تو میں یہ بُرا عمل نہ کرتا جبکہ سمجھانے اور بتانے والا خود اس کے اندر (جسے انسان نے ضمیر کا نام بھی دے رکھا ہے) سے اسے خبردار کر رہا ہے۔ لہذا ہمارا طرز زندگی اور ہر عمل انہیں دو مثبت ہدایات میں سے کسی ایک ہدایت پہ مبنی ہونا چاہیے تبھی ہمارا طرز زندگی صحیح طرز زندگی ہوگا۔ اور اسی طرز زندگی میں توازن اور ترتیب ہوگی۔

### ۳۔ ہدایت اور تقدیر میں فرق

تقدیر۔ تقدیر انسانی زندگی کا مرتب پروگرام ہے جس میں انسان کی پوری زندگی کے ہر لمحے کی پوری تفصیلات مرتب ہیں اسی مرتب پروگرام سے ہر عمل کی اطلاع آتی ہے تو انسان اسی اطلاع میں اپنی مرضی سے رد و بدل کر کے عمل کرتا ہے ہدایت۔ عمل کے لیے مرتب پروگرام (تقدیر) سے اطلاع آجانے کے بعد اس اطلاع پر عملدرآمد کے لیے مثبت ترغیبی پروگرام بھی ملنے لگتا ہے یہ ہدایت ہے مثلاً بھوک کی اطلاع تقدیری اطلاع ہے اور

کھانے کا عمل مثبت ہونا چاہیے یہ اطلاعات ہدایات ہیں۔ تقدیر انسان کی پوری زندگی کا مرتب پروگرام ہے جس پر انسان اپنی مرضی سے عمل کرتا ہے تو ہدایات ہر عمل کے لیے مثبت ترغیب ہے۔ اس کی مزید تفصیلی وضاحت عمل کے باب میں آگے آرہی ہے۔

### خلاصہ پیدائش:

پچھلے صفحات میں میں نے مادی جسم کی پیدائش کا فارمولہ پیش کیا تھا لہذا پیدائش فارمولے سے آغاز

کر کے مسلسل وضاحت کے بعد اب جا کر اس مادی جسم کے پیدائشی فارمولے (تخلیق، تناسب، تقدیر، ہدایات) کی وضاحت مکمل ہوئی ہے۔ جس کا خلاصہ یہ ہے کہ:

رحم مادر میں نطفے سے لے کر پیدائش تک جسم روح کے پروگرام کے عین مطابق تیار ہو رہا ہے۔

جسم کی تیاری کے بعد تیار جسم کے پاس اب پوری زندگی کی حرکت و عمل کا اپنا روح کا پروگرام موجود ہے۔ اور اب یہ نیا تیار انسان اسی روح کے پروگرام کے ذریعے پوری زندگی اپنی مرضی کی حرکت و عمل کرے گا۔



# حرکت

حرکت، حکم (مرتب پروگرام) ہے

وکان امر اللہ قدرا مقدورا

اور اللہ کا حکم مقرر تقدیر ہے (۳۸) (۳۳)

۸۳۔ حرکت

۸۴۔ غیر ارادی حرکات

۸۵۔ ارادی حرکات

## 83- حرکت

نظریہ نمبر۔ ﴿112﴾۔ ﴿انسان کی ہر حرکت روح کی اطلاعات کی بدولت ہے۔﴾  
 روح ایک مکمل مرتب پروگرام (تقدیر) ہے۔ اس مرتب پروگرام میں انسان کی ایک ایک حرکت تحریر ہے۔ اسی مرتب پروگرام سے ہر عمل کے لیے ہر حرکت کی اطلاع آتی ہے۔ اس اطلاع کے بعد ہی حرکت و عمل کا آغاز ہوتا ہے۔ اگر روح کے مرتب پروگرام سے حرکت کی اطلاع نہ آئے تو حرکت ممکن ہی نہیں۔

انسان دو طرح کی حرکات کر رہا ہے

(۱)۔ ارادی حرکات

(۲)۔ غیر ارادی حرکات

## 84- غیر ارادی حرکات

نظریہ نمبر۔ ﴿113﴾۔ ﴿غیر ارادی حرکات روح کا مرتب پروگرام (تقدیر) ہیں۔﴾  
 ہر غیر ارادی حرکت روح کا مرتب پروگرام ہے۔ اور اسی مرتب پروگرام کے مطابق ہر غیر ارادی حرکت واقع ہو رہی ہے، جیسے کمپیوٹر یا روبوٹ میں پروگرام محفوظ ہوتا ہے اور وہ اسی پروگرام پہ کام کرتے ہیں بالکل اسی طرح انسان کے اندر بھی پروگرام محفوظ ہے اور انسان بھی اپنے اندر محفوظ پروگرام کے مطابق حرکت کرتا ہے۔ لہذا غیر ارادی حرکات روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق ہیں۔

مادی جسم ایک انتہائی پیچیدہ اور مسلسل متحرک مشینری ہے۔ اگرچہ نیند اور بے ہوشی کی کیفیات میں بظاہر جسم بے حرکت نظر آتا ہے، لیکن ایسی ساکت حالتوں میں بھی جسم بے حرکت نہیں ہوتا بلکہ ان حالات میں بھی جسم کے اندر باہر مسلسل حرکت و عمل جاری ہوتا ہے اور جسم میں زندگی اور حرکت موجود رہتی ہے۔ کسی بھی حادثے، بیماری، بے ہوشی کی حالت میں جسم کی حرکت نہیں تھمتی، جسم ہر صورت میں متحرک رہتا ہے۔ فقط موت کی صورت میں جسم میں حرکت ختم ہوتی ہے موت کے علاوہ جسم چاہے برسوں کو ما میں رہے یا نیند میں ہو با حرکت ہوتا ہے لہذا انسانی جسم مسلسل متحرک مشینری ہے اور اس مسلسل متحرک مشینری (مادی جسم) کی غیر ارادی حرکات روح کے مرتب

پروگرام (تقدیر) کی بدولت ہیں۔ غیر ارادی حرکات کی چند صورتیں درج ذیل ہیں۔  
**خلیات کی حرکت**

ہر خلیہ متحرک ہے، جاندار ہے، اپنا کام جانتا ہے، اپنا کام کر رہا ہے روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) کے مطابق۔ یعنی کے ہر خلیہ کے پاس حرکت و عمل کے لیے روح کا پروگرام ہے  
**اعضاء کی حرکت**

اعضاء انفرادی حیثیت میں بھی متحرک ہیں اپنا کام کر رہے ہیں، لہذا ہر عضو کا اپنا مخصوص و مقرر کام مخصوص حرکت مخصوص عمل ہے۔ لہذا دل ایک خاص و مقرر رفتار سے دھڑکتا ہے، گردے اپنا مقرر و مخصوص کام کرتے ہیں۔ لہذا ہر عضو کے پاس اپنا اپنا مقرر و مخصوص کام ہے اور ہر عضو کو اس کا انفرادی مقرر و مخصوص کام دے رہی ہے روح، لہذا روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) پر جسم کے تمام اعضاء اپنا اپنا مقرر و مخصوص انفرادی کام سرانجام دے رہے ہیں۔ لہذا جسم کے ہر عضو کی انفرادی حرکت روح کا مرتب پروگرام ہے۔

## جسم کی اجتماعی حرکت

جسم کا ہر خلیہ ہر یونٹ ہر عضو انفرادی حرکات (کام) کے علاوہ مجموعی طور پر بحیثیت جسم بھی متحرک ہیں۔ پوری جسمانی مشینری بحیثیت مجموعی جسم کے طور پر روح کے پروگرام کے عین مطابق منظم، مسلسل، متحرک ہے۔ لہذا جسمانی مشینری کی اندرونی غیر ارادی حرکات بھی روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق ہیں تو جسمانی مشینری کی بیرونی غیر ارادی حرکات بھی روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق ہیں۔

یوں نہیں ہے کہ اعضاء کی حرکت بے ترتیب ہے دل بے تحاشا دھڑک رہا ہے، منہ خود بخود ہلے جا رہا ہے یا ہاتھ بلاوجہ ہل رہے ہیں۔ جسمانی اعضاء کی اندرونی بیرونی غیر ارادی حرکات میں ترتیب و توازن روح کے مرتب پروگرام کی بدولت ہے۔

کبھی ہم فارغ بیٹھے ہوتے ہیں کبھی سو رہے ہوتے ہیں ان تمام کیفیات میں ہماری اندرونی و بیرونی جسمانی مشینری مسلسل متحرک ہوتی ہے۔

ہاتھوں پیروں میں حرکت ہے، کان، آنکھیں، ناک سب متحرک اور جاندار ہیں، یعنی انسان کوئی ارادی حرکت نہ بھی کرے تب بھی جسم کے اندر باہر حرکت کا سلسلہ کسی وقت رکتا نہیں اور جسم کے اندر باہر حرکت کا یہ منظم تسلسل روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق ہے یعنی جسم جو خود کار مشینری کی طرح کام کر رہا ہے تو یہ خود کار مشینری کمپیوٹر کی طرح ایک پروگرام (روح) کے مطابق خود کار متحرک ہے۔ لہذا

انسانی جسم کی اندرونی بیرونی ہر غیر ارادی منظم و مسلسل حرکت روح کا مرتب پروگرام ہے۔

## 85۔ ارادی حرکات

نظریہ نمبر۔ ﴿114﴾۔ ﴿مادی جسم کی ارادی حرکات کی اطلاعات بھی روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) سے موصول ہوتی ہیں لیکن ان اطلاعات پہ عملدرآمد نفس (AURA) کے پروگرام کے مطابق ہوتا ہے﴾

یعنی روح کے مرتب پروگرام سے عمل کی اطلاع آجانے کے بعد انسان اس اطلاع پہ اپنی مرضی سے رد و بدل کر کے عمل کرتا ہے یہ ارادی حرکات ہیں یعنی ارادی حرکات انسان اپنے ذاتی ارادے سے کر رہا ہے۔

چند مخصوص غیر ارادی حرکات کے علاوہ انسان کی پوری زندگی انہیں ارادی حرکات پر مشتمل ہوتی ہے۔ لہذا انسانی جسم کی حرکت کی ترتیب کچھ یوں بنی

غیر ارادی حرکات۔ روح کا مرتب پروگرام (تقدیر) جس سے جسمانی مشینری خود کار متحرک ہے ارادی حرکات۔ ذاتی ارادہ (نفس کا فیصلہ)۔ ارادی حرکات کی اطلاعات بھی روح کی اطلاعات ہیں جن پہ عملدرآمد انسان اپنے ارادے سے کر رہا ہے۔

اب جسمانی مشینری کی حرکت و عمل کی ترتیب کچھ یوں بنی کہ

جسمانی مشینری جو روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق خود کار متحرک ہے اس متحرک اور با صلاحیت مشینری جسم کو نفس اپنے مقاصد کے لیے اپنی مرضی کے مطابق استعمال کرے گا اور اس جسمانی مشینری سے اپنی مرضی کے اعمال سرانجام دے گا۔

اب دیکھنا یہ ہے کہ روح کے مرتب پروگرام کے عین مطابق متحرک و مستعد خود کار جسمانی مشینری

سے نفس کیسے اپنی ذاتی مرضی کے ارادی اعمال سرانجام دے رہا ہے۔

اب ہم آگے ﴿عمل﴾ کے عنوان سے جائزہ لیں گے کہ انسان اپنے خود کار متحرک جسم سے کیسے اپنی مرضی کے اعمال سرانجام دے رہا ہے۔

# عمل

عملوں کا دارو مدار نیتوں (ذاتی ارادہ) پر ہے

1- عمل

2- عمل کیا ہے

3- عمل کیسے ظہور میں آ رہا ہے۔

4- عملی فارمولہ

1- روح کی (مرتب تقدیر) اطلاع

2- ہدایات

3- منفی اطلاعات۔

4- نفس (AURA) کا فیصلہ

5- دماغ کا کام

6- دماغ کا عمل

7- جسمانی عملدرآمد

8- عمل کے بعد

5- اعمال

6- ذاتی ارادہ

7- پابند مخلوقات و موجودات

8- اچھایا بر عمل

9- اچھا عمل

10- بُرا عمل

11- عمل کا خلاصہ

12- انسانی زندگی

13- نفوس کی درجہ بندی

1- نفس امارہ

2- نفس لوامہ

3- نفس مطمئنہ

## 86- عمل

نظریہ نمبر:- ﴿115﴾ - ﴿عمل مادی جسم کی انفرادی خصوصیت ہے۔ اور عمل کا ظہار مادی جسم کے ذریعے ہو رہا ہے﴾

عمل مادی جسم کی انفرادی خصوصیت ہے۔ مادی جسم میں رہتے ہوئے ہی انسان وہ اعمال کر سکتا ہے جو اس کی حقیقی آخری وابدی زندگی میں کام آئیں گے یعنی مادی جسم کے اعمال یا عملی زندگی وہ امتحانی پرچہ ہے جس میں فیل یا پاس ہونے کی صورت میں اس کی ابدی زندگی کا تمام تر انحصار ہے۔ یہ "عمل" جس کا اظہار مادی جسم کے ذریعے ہو رہا ہے۔ یہ عمل روح، نفس، جسم کے اشتراک سے ظہور میں آ رہا ہے۔

لہذا روح و نفس سے عدم واقفیت کی صورت میں جسمانی عمل کا جاننا دشوار ہے۔ اب چونکہ ہم نے پچھلے صفحات میں روح، نفس اور جسم کی اصل شناخت، تعریف اور تعارف پیش کر دیا ہے۔ لہذا روح، نفس اور جسم سے حقیقی واقفیت کے بعد درحقیقت اب ہم "عمل" کی تعریف کے قابل ہوئے ہیں لہذا اب ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ یہ "عمل" کیا ہے اور کیسے واقع ہو رہا ہے۔

لہذا ہم یہ وضاحت کر آئے ہیں کہ روح (Energy) مرتب پروگرام ہے اور نفس (AURA) جسم کی حرکی قوت اور فیول ہے لہذا جس طرح حرکت نفس کی خصوصیت ہے اسی طرح جسم کی خصوصیت عمل ہے۔

لہذا روح کی اطلاع پہ نفس (AURA) جسم کو حرکت و عمل کا پروگرام پہنچاتا ہے تو جسمانی عمل واقع ہوتا ہے۔ اگرچہ عمل مادی جسم کی انفرادی خصوصیت ہے لیکن یہ عمل روح، نفس و جسم کے اشتراک سے ظہور میں آ رہا ہے۔ لہذا انسانی حرکت و عمل کی صورت درج ذیل ہوگی۔

روح + نفس + مادی جسم = انسانی حرکت و عمل

لہذا ایک متحرک انسان کا ہر عمل درج ذیل ترتیب سے ظہور میں آ رہا ہے۔

(1) روح کی اطلاعات

(2) نفس کی تحریک

(3) جسم کا مظاہرہ = عمل



عمل کیا ہے ؟

روح، نفس و جسم کے اشتراک سے جسمانی عمل کیسے ظہور میں آ رہا ہے اب ہم اس عمل کی تفصیلی وضاحت کرتے ہیں۔

## 87- عمل کیا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿116﴾۔ ﴿عمل روح (تقدیر) کا مرتب پروگرام ہے﴾

ہم تقدیر کے عنوان سے ذکر کر آئے ہیں کہ تقدیر میں انسان کی پوری زندگی ہر حرکت ہر عمل ریکارڈ ہے۔

لہذا حرکت کے علاوہ انسان کا ہر عمل بھی تقدیر میں پہلے سے ریکارڈ ہے۔ یعنی وہ عمل جو ہم نے اپنی مرضی سے انجام دینے ہیں وہ پہلے سے کتاب تقدیر میں محفوظ ہیں۔ اور اگر عمل کا پورا پروگرام ریکارڈ نہ ہوتا تو عمل ناممکن تھا۔ جس طرح کمپیوٹر میں پروگرام فیڈ ہوتا ہے اور کمپیوٹر اسی پروگرام کے تحت کام کر رہا ہوتا ہے۔ اسی طرح مادی جسم کی حرکت و عمل کا پورا پروگرام بھی جسم کے اندر فیڈ ہے اور اسی پروگرام کے اوپر جسمانی حرکت و عمل کا آغاز ہوتا ہے۔ مثلاً جسم کے تقدیری مرتب پروگرام میں سونے، کھانے، پینے غرض ہر عمل کا پروگرام محفوظ ہے۔ نیند کی اطلاع اس ریکارڈ پروگرام کی طرف سے جسم کو موصول ہوگی تبھی جسم نیند کا شکار ہوگا۔ تقدیری ریکارڈ سے بھوک کی اطلاع آئے گی تبھی کھانے کا عمل واقع ہوگا۔

غرض جسمانی مشینری کی ہر حرکت ہر عمل تقدیری ریکارڈ میں محفوظ ہے۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ انسان کا ہر حرکت و عمل جو تقدیر میں پہلے سے لکھا ہوا ہے ریکارڈ ہے وہ کیسے انسان کی ذاتی مرضی سے اچھے یا برے عمل کی جسمانی مظاہراتی شکل میں ظاہر ہو رہا ہے۔

## 88- عمل کیسے ظہور میں آ رہا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿117﴾۔ ﴿مختلف مدارج طے کر کے عمل تقدیری ریکارڈ سے جسمانی مظاہراتی صورت اختیار کر رہا ہے۔﴾

عملی مدارج کی وضاحت کے لیے یہاں ہمیں ایک عملی فارمولہ پیش کرنا ہوگا ﴿

درج ذیل مدارج طے کر کے ایک عمل ظہور میں آتا ہے

## 89۔ عملی فارمولہ

۱۔ پاوا ایشیشن کی اطلاع



۲۔ روح کی (مرتب تقدیر) اطلاع

۳۔ ہدایات



۴۔ منفی اطلاعات



۵۔ نفس (AURA) کا فیصلہ



۶۔ دماغ کا کام



۷۔ دماغ کا عمل



۸۔ جسمانی عملدرآمد

درج ذیل مدارج طے کر کے ایک عمل کا ظہور ہوتا ہے اب ہم اس آٹھ نکاتی فارمولے کی مسلسل وضاحت کریں گے جس سے یہ وضاحت ہوگی کہ ایک عمل مختلف مدارج طے کر کے کیسے ظہور میں آ رہا ہے۔ مثلاً ہم یہ دیکھتے ہیں کہ " کھانے کا عمل " کیسے واقع ہوتا ہے۔ لہذا کھانے کے عمل کا پہلا مرحلہ ہے۔

## ۱۔ روح کی مرتب پروگرام سے (تقدیر) اطلاع

### عمل کا پہلا مرحلہ

نظریہ نمبر:- ﴿118﴾ - ﴿سب سے پہلے عمل کے لیے روح کے ریکارڈ (تقدیر) سے اطلاع موصول ہوتی ہے۔﴾

ہم وضاحت کر آئے ہیں کہ ہر عمل پہلے سے کتاب تقدیر میں ریکارڈ ہے لہذا اسی ریکارڈ پروگرام سے جسم کو ہر عمل کے لیے اطلاعات مل رہی ہیں۔

لہذا عمل کے آغاز میں اسی روح کے تقدیری ریکارڈ سے پہلے مرحلے میں جسم کو بھوک کی اطلاع موصول ہوتی ہے اس روح کی اطلاع کے ملنے سے جسم کے اندر بھوک کا احساس بیدار ہوتا ہے۔ لہذا بھوک، پیاس، رونا، ہنسنا، چلنا، پھرنا، مرنا، جینا ہر ارادی و غیر ارادی اطلاعات روح کی اطلاعات (ریکارڈ پروگرام) ہیں۔

اگر روح کے ریکارڈ پروگرام سے مسلسل اور منظم ترتیب سے جسم کو ہر عمل کی اطلاعات موصول نہ ہوں یعنی اگر بھوک کی اطلاع نہ آئے تو انسان کھانہ سکے نیند کی اطلاع نہ آئے تو سونہ سکے۔ ہر حرکت ہر عمل پہ عملدرآمد کے لیے روح کی طرف سے اطلاع کا موصول ہونا لازم ہے اس عمل کی اطلاع کے بغیر عمل ممکن نہیں۔ لیکن محض اطلاع سے عمل واقع نہیں ہو جاتا روح کے مرتب پروگرام سے عمل کی اطلاع عمل کا پہلا مرحلہ ہے۔ لہذا روح کی طرف سے بھوک کی اطلاع آ جانے کے بعد دوسرا مرحلہ ہے ہدایت

### ۲۔ ہدایت

نظریہ نمبر:- ﴿119﴾ - ﴿ہدایت عمل کے لیے مثبت ترغیبی پروگرام ہے جو روح (رب) کی طرف سے براہ راست موصول ہو رہا ہے﴾

ہدایت "عمل" کا دوسرا مرحلہ ہے۔

جیسا کہ ہدایت کے عنوان سے ذکر ہو چکا ہے کہ یہ روح کی وہ آواز ہے جسے عموماً "ضمیر" کے عنوان سے شناخت کیا جاتا ہے۔

اب دیکھنا یہ ہے کہ یہ ہدایت یعنی روح کی آواز " عمل " کے دوسرے مرحلے پہ کیا کردار ادا کر رہی ہے۔

لہذا پہلی روح کی اطلاع تھی یعنی۔ بھوک کا احساس دوسری ہدایت ہے۔ یعنی عمل کے لیے جائز طریقے اختیار کرنا چاہیے یعنی کما کر کھانا چاہیے لہذا روح کے مرتب پروگرام سے عمل کے لیے بھوک کے احساس کی اطلاع تو آگئی لیکن اب کھانے کا عمل کیسے واقع ہوگا۔

لہذا اب اس بھوک کے احساس کی اطلاع پہ عمل درآمد کے لیے روح کی طرف سے مثبت ہدایات آنے لگیں یعنی کھانے کا یہ عمل جائز ہونا چاہیے، یا کما کر کھانا چاہیے۔ یا چوری جرم ہے، جرم کی سزا ہے دنیا میں بھی اور آخرت میں بھی۔ یہ اور اس قسم کی ہدایات اطلاع کے وارد ہوتے ہی آنے لگیں لہذا۔ یہ ہدایات عمل کے لیے مثبت ترغیبی پروگرام ہے۔ لہذا

عمل کا پہلا مرحلہ۔ بھوک کا احساس۔ روح کے مرتب پروگرام سے اطلاع عمل کا دوسرا مرحلہ۔ ہدایات۔ عمل کے لیے روح کی آواز اور مثبت ترغیبی پروگرام ہے۔ اب عمل تیسرے مرحلے میں داخل ہو رہا ہے لہذا عمل کا تیسرا مرحلہ ہے

### ۳۔ منفی اطلاعات

نظریہ نمبر:- ﴿120﴾۔ ﴿عمل کے تیسرے مرحلے میں منفی اطلاعات بھی آنے لگیں۔ یہ شیطانی اطلاعات ہیں﴾

روح کے مرتب پروگرام سے بھوک کی اطلاع آتے ہی کھانے کے عمل پر عمل درآمد کے لیے مثبت ہدایات کے ساتھ ساتھ منفی اطلاعات بھی آنے لگتی ہیں۔ یہ شیطانی اطلاعات ہیں لہذا اب کھانے کا عمل تیسرے مرحلے میں داخل ہو گیا اور اس کی صورت درج ذیل ہوگی۔

(1)۔ تقدیری روح کی اطلاع ..... بھوک کا احساس۔

(2)۔ ہدایت ..... مثبت اطلاعات (کھانے کا عمل مثبت ہونا چاہیے)۔

(3)۔ منفی اطلاعات ..... کھانے کے عمل کے لیے ناجائز طریقہ آسان ہوگا۔

لہذا جیسے ہی تقدیر کے مرتب پروگرام (روح) سے بھوک کی اطلاع جسم میں نمودار ہوئی تو کھانے

کے عمل کے لئے مزید مثبت و منفی اطلاعات آنے لگیں یعنی ہدایت یہ موصول ہوئی کہ کھانے کا عمل جائز ہونا چاہیے مشقت سے کما کر کھانا چاہیے ذلت کی تن آسانی ٹھیک نہیں یہ جرم ہے جرم کی سزا ہے۔

اس کے ساتھ ہی منفی اطلاعات بھی آنے لگیں

چرا کر کھانا تو بہت آسان ہے لہذا ذرا سے کھانے کے لئے مشقت کے پاڑ کیوں بنیلے جائیں روح کے مرتب تقدیری پروگرام اور ان تمام تر اطلاعات کے ملنے پر انسان کیسے عمل کر رہا ہے اور کیا عمل کر رہا ہے؟

## ۴۔ نفس (AURA) کا فیصلہ

عمل کا چوتھا مرحلہ

نظریہ نمبر:- ﴿121﴾۔ ﴿جسمانی عمل در آمد کا فیصلہ نفس (AURA) کا فیصلہ ہوگا۔﴾

یہ ہے عمل کا چوتھا مرحلہ

سب سے پہلے عمل کے لئے روح کی اطلاع آئی یعنی جسم کے اندر بھوک کا احساس بیدار ہو گیا اور اس اطلاع کے آجانے کے بعد مزید مثبت و منفی ہدایات بھی آگئیں اب نفس کو عمل کے لئے تمام تر اطلاعات موصول ہو گئیں لہذا اب عمل در آمد کی کیا مثبت و منفی صورت ہونی چاہیے یہ فیصلہ کرنے کا اختیار اب نفس کو ہے۔ لہذا چوتھے مرحلے میں عمل کی ترتیب درج ذیل ہوگی۔

(1) روح کی اطلاع:- روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) سے جسم کے اندر بھوک کا احساس بیدار ہوگا یعنی بھوک کی اطلاع ملی۔

(2) ہدایت:- اس کے ساتھ ہی کھانے کے عمل کے لئے مثبت ہدایات بھی ملنے لگیں کہ کھانے کا عمل مثبت عمل ہونا چاہیے۔

(3) منفی اطلاع:- شیطان کی طرف سے منفی ترغیبی پروگرام بھی موصول ہونے لگا کہ ناجائز طریقے آسان ہیں۔

(4) نفس کا فیصلہ:- عمل کے لئے تمام تر اطلاعات آجانے کے بعد عمل کا عملی منصوبہ اپنی مرضی سے ترتیب دے گا نفس۔

لہذا بھوک کی اطلاع آتے ہی مثبت ہدایات کے ذریعے یہ بھی معلوم ہو گیا کہ کھانے کا عمل مثبت ہونا چاہیے نیز اس مثبت عمل کے فائدے بھی اس اندر کی آواز نے بتا دیئے دیگر منفی اطلاعات کے ذریعے ناجائز طریقہ کار بھی معلوم ہو گیا جبکہ روح کی آواز (ہدایت) نے ناجائز طریقے کے مضمرات سے بھی آگاہ کر دیا لہذا اب انسان کسی بھی کام پے عمل درآمد سے پہلے ہی عمل کی تمام تر جزئیات سے آگاہ ہو چکا ہے۔ یعنی عمل پے عمل درآمد سے پہلے ہی انسان اس عمل کی اچھائی برائی سے واقف ہو چکا ہے۔ اب عمل کی تمام تر جزئیات سے واقفیت کے بعد عمل کیا ہونا چاہیے اس کا فیصلہ نفس اپنے ذاتی ارادے سے کرے گا۔ لہذا اب فقط نفس کی مرضی پر منحصر ہے کہ وہ کھانے کی اطلاع یعنی بھوک کے احساس پر؛

کھانا کھائے

یا کھانا نہ کھائے

چرا کر کھالے

یا کما کر کھالے

یا نفس اپنی ذاتی مرضی سے کھانے کے عمل کی کوئی تیسری راہ نکال لے۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ کھانے کے عمل کے لیے تمام تر اطلاعات کے آجانے کے بعد انسان اب کھانے کا عمل کیسے سرانجام دے گا۔

لہذا نفس نے بھوک کی تمام تر اطلاعات مل جانے پر یہ پروگرام ترتیب دیا ہے کہ بھوک محسوس ہو رہی ہے لہذا اب کھانا کھانا ہے اور دیگر یہ کہ کھانے کا عمل مثبت ہونا چاہیے۔

لہذا نفس نے روح کی اطلاع یعنی بھوک کے احساس پے کھانے کا پروگرام تو تیار کر لیا لیکن ابھی فقط کھانے کے عمل کا پروگرام ترتیب پایا ہے ابھی اس پروگرام پے عمل درآمد باقی ہے لہذا ابھی عمل پے عمل درآمد کا فارمولہ مکمل نہیں ہوا بلکہ عمل پے عمل درآمد کے لئے کچھ اور پیچیدہ اور طویل مراحل ابھی باقی ہیں جنہیں طے کر کے عمل عملی صورت میں ظاہر ہوگا۔

لہذا چوتھے مرحلے کے اختتام تک پہنچ کر عمل کا پورا عملی پروگرام ترتیب پا گیا ہے اب نفس یہ ترتیب شدہ عمل کا پروگرام بھیج دے گا دماغ کو یعنی اگلے پانچویں مرحلے میں کھانے کے عمل کا اگلا کام ہے "دماغ کا کام"

اب آئیے دیکھتے ہیں کہ پانچویں مرحلے میں کھانے کے عمل کے عملی پروگرام کو عملی جامہ پہنانے کے لیے دماغ کیا کام کر رہا ہے۔

## ۵۔ دماغ کا کام عمل کا پانچواں مرحلہ

نظریہ نمبر:- ﴿122﴾ - ﴿دماغ، نفس (AURA) کے ترتیب شدہ کھانے کے پروگرام کو جوں کا توں جسم پہ اپلائی کر دے گا۔﴾ یہ ہے دماغ کا کام یعنی عمل کا پانچواں مرحلہ یعنی کھانے کا جو بھی پروگرام نفس نے ترتیب دیا ہے دماغ اس پروگرام کو جوں کا توں جسم پہ اپلائی کر دے گا جبکہ آج تک سائنسدان یہ خیال کرتے رہے ہیں کہ عملی فیصلے کا اختیار دماغ کے پاس ہے۔

وہ ابھی تک محض اتنا دریافت کر پائے ہیں کہ جس وقت کوئی چیز دماغ میں درج ہوتی ہے اس وقت دماغی خلیوں میں کیمیکل اور مادی تبدیلیاں ہونے لگتی ہیں سائنسدان دماغ کے اندر ہورہی کیمیکل اور مادی تبدیلیوں کا تذکرہ تو کر رہے ہیں لیکن یہ تبدیلیاں کیسے رونما ہورہی ہیں ان کا محرک اور منبع کیا ہے وہ کونسے بیرونی ذرائع ہیں جو دماغ کے اندر تبدیلیاں اور تحریک پیدا کر رہے ہیں اس کا کوئی ذکر نہیں جبکہ یہ بیرونی ذرائع (جن کا کوئی ذکر نہیں کرتا) نہ ہوں تو دماغ میں کسی تحریک کا پیدا ہونا محال ہے۔

اب جبکہ ماہرین الفاء، بیٹا اور تھیٹا لہروں کا مشاہدہ بھی کر رہے ہیں اس قسم کے مشاہدات کے بعد بھی ہر قسم کی جسمانی تحریک کا ذمہ دار دماغ کو ٹھہرانا ٹھیک نہیں۔ لہذا اس حقیقت کو تسلیم کیجئے کہ دماغ میں تحریک بیرونی ذرائع سے پیدا ہورہی ہے۔ لہذا پچھلے تمام صفحات میں ہم نے انہی بیرونی ذرائع کا ذکر کرتے ہوئے دماغی کیمیکل و مادی تحریکات کا لمبا چوڑا بیک گراؤنڈ بیان کیا ہے جس کا مختصر خلاصہ یہ ہے کہ۔

(i) دماغ کے اندر ہونے والی تبدیلیاں اور تحریک نفس (AURA) کے اشاروں نفس کے پروگرام سے ہورہی ہیں۔

(ii) نفس (AURA) کو اس پروگرام کی اطلاع ملی ہے روح سے۔

(iii) اور روح پاور اسٹیشن (خالق) کا حکم (انرجی، مرتب پروگرام) ہے۔  
 لہذا دماغ میں پیدا ہونے والی تبدیلیوں کا نہ صرف یہ کہ لمبا چوڑا بیک گراؤنڈ ہے بلکہ دماغی تحریک کا  
 براہ راست تعلق خالق سے ہے  
 لہذا پاور اسٹیشن (خالق) سے مرتب پروگرام (تقدیر) پہلے روح کو ملا روح سے ہر عمل کی اطلاعات  
 بالترتیب نفس کو ملنے لگیں۔ نفس ہر اطلاع کو اپنی مرضی سے ترتیب دے کر دماغ کو بھیج دیتا ہے اور  
 دماغ عمل کے اس پروگرام کو جسم پے اپلائی کر دیتا ہے۔ یعنی دماغ کے اندر ہونے والی تبدیلیوں کا  
 ایک لمبا چوڑا بیرونی بیک گراؤنڈ ہے جس کا براہ راست تعلق نفس، روح اور پوری کائنات اور براہ  
 راست خالق سے ہے۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ دماغ، نفس (AURA) کے پروگرام کو کیسے پورے  
 جسم پہ جوں کا توں اپلائی کر رہا ہے لہذا اب ہم دماغ کے اندر کی تحریکات یا دماغ کے اندرونی عمل  
 کا جائزہ لیتے ہیں۔

## ۶۔ دماغی عمل

نظریہ نمبر:- ﴿123﴾ - ﴿دماغ نفس (AURA) کے ترتیب شدہ پروگرام کو دماغ کے  
 کھربوں خانوں میں بڑی ترتیب سے خانہ در خانہ تقسیم کر دیتا ہے۔﴾  
 لہذا کھانے کا وہ پروگرام جو (AURA) نے روح کی اطلاع اور دیگر مثبت و منفی اطلاعات کے  
 ملنے کے بعد ترتیب دیا ہے اس اس پروگرام پہ عمل درآمد کے انتظامات کر رہا ہے دماغ یعنی۔  
 دماغ پروگرام مینیجر ہے!

لہذا نفس نے جو عمل کی اطلاع پہ کھانے کا عملی پروگرام ترتیب دیا ہے اسی پروگرام کو دماغ نے  
 پورے جسم کے ہر ہر خلیے ہر ہر یونٹ کو بھیج دیا ہے لہذا پورے جسم کے ہر خلیے ہر یونٹ نے اس  
 پروگرام پہ جو کردار ادا کرنا ہے وہ کردار وہ کام سمجھا رہا ہے دماغ۔ لہذا کھانے کے مخصوص پروگرام پہ  
 عمل درآمد کے لئے خلیے نے کیا کردار ادا کرنا ہے اعصاب و عضلات کو کیا کرنا ہوگا خون رگ پٹھے  
 جگر گردے ہاتھ پیرناک کان غرض جسم کے اندرونی بیرونی ہر چھوٹے بڑے یونٹ کو اس کے کام کی  
 پوری تفصیل پورا پروگرام بھیجے گا دماغ اب دماغ نے AURA کا پورا ترتیب شدہ پروگرام بڑی  
 ترتیب اور تنظیم سے جسم کے ہر یونٹ کو بھیج دیا ہے اب اسی ترتیب کے مطابق جسمانی عمل واقع



ہوگا۔

۷۔ جسمانی عمل

(چھٹا مرحلہ)

نظر یہ نمبر: ﴿124﴾۔ ﴿دماغی احکامات کے موصول ہوتے ہی جسم کا ہر یونٹ اپنے اپنے کام

سے لگ جاتا ہے﴾

یہ ہے عمل کا چھٹا مرحلہ۔

اس مرحلے میں دماغی احکامات کے ملتے ہی جسمانی عمل شروع ہو جاتا ہے دماغ کمپیوٹر کی طرح خود کار مشینری ہے اور دماغ کو ایسی پیچیدہ مشینری کا پروگرام ملا روح سے اور اسی روح کے پروگرام کی وجہ سے دماغ و جسم کا ہر خلیہ ہر یونٹ زندہ ہے متحرک ہے اپنا کام جانتا ہے یعنی جسم کے ہر خانے ہر خلیے میں کام کی صلاحیت ہے روح کے مرتب پروگرام کی وجہ سے۔ اسی روح کے پروگرام کے سبب جسمانی خود کار سسٹم منظم و مربوط ہے ایسا نہیں کہ ہاتھ یا پیر خود بخود ہل رہے ہیں منہ چلے جا رہا ہے دل بے ترتیب دھڑک رہا ہے سب کچھ اپنی جگہ بڑا منظم اور مربوط ہے (روح کے مرتب پروگرام کی وجہ سے)

اب روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) کے عین مطابق جسم کا ہر چھوٹا بڑا جاندار، متحرک، باصلاحیت یونٹ کسی بھی حرکت و عمل کے لیے منتظر اور چوکس ہے آرڈر یا روح کی اطلاع کا۔ لہذا جیسے ہی دماغ نے AURA کے پروگرام کو خانہ در خانہ تقسیم کیا ویسے ہی جسم کے ہر چھوٹے بڑے یونٹ کو اس کا کام مل گیا لہذا ہر چھوٹا بڑا یونٹ اپنے کام سے لگ گیا۔ یہ کام مخصوص اور محدود ہے لہذا جتنا اور جیسا پروگرام ہوگا عین وہی عمل ظہور میں آئے گا۔ لہذا کھانا مخصوص مقدار میں مخصوص وقت یا مخصوص حالات میں کھایا جائے گا۔ یعنی کھانے کا تمام عمل منظم مربوط مکمل اور AURA کے پروگرام کے عین مطابق ہوگا۔

جسم کا ہر چھوٹا بڑا یونٹ انہی دماغی احکامات کے مطابق اپنے اپنے کام سے لگ گیا۔ لہذا جسم کے اندر بھوک کا احساس پیدا ہوا، پیر میں حرکت ہوئی، ہاتھ کھانے کے لیے متحرک ہوئے، ناک نے خوشبو سونگھی، زبان نے ذائقہ محسوس کیا، منہ چلنے لگا، جسم کی اندرونی مشینری بھی اس کھانے کا بندوبست کرنے میں مصروف ہو گئی۔ لہذا پوری جسمانی مشینری دماغی احکامات پہ عمل پیرا ہوتے

ہوئے AURA کے پروگرام پہ عمل درآمد میں مصروف ہو گئی۔  
لہذا روح کی اطلاع پر (AURA) کے پروگرام پہ دماغی احکامات کے ذریعے جسمانی عمل واقع ہو گیا۔

جسمانی عمل تو واقع ہو گیا لیکن (AURA) کا پروگرام " کھانا کھانا ہے " کا پروجیکٹ ابھی مکمل نہیں ہوا بلکہ ابھی یہ عمل جاری ہے۔ ابھی دماغ کو بہت سے کام کرنے ہیں۔ لہذا اب یہ عمل ساتویں مرحلے میں داخل ہو گیا۔

## ۸۔ عمل کے بعد

(ساتواں مرحلہ)

نظریہ نمبر:- ﴿125﴾۔ عمل کے بعد دماغ اس کھانے کے عمل (جو واقع ہو چکا ہے) کی ایک ایک تفصیل کو دماغ کے مختلف خانوں (فولڈرز) میں محفوظ کر دے گا۔

یہ ہے عمل کا ساتواں مرحلہ

اب وہ عمل جو واقع ہو چکا ہے اس کا تمام تر ڈیٹا ریکارڈ ہو چکا جو اب مختلف خانوں (فولڈرز) میں محفوظ ہو گیا۔ موجود ہے۔

دماغ کس کس فائل کو کس کس فولڈر میں رکھ رہا ہے آگے ہم یہی تذکرہ کریں گے۔ دماغ کے عنوان سے

دماغی ماہرین کا خیال ہے کہ ہمارا دماغ بیک وقت پیغامات وصول بھی کرتا ہے آگے روانہ بھی کرتا ہے۔ یہ پیغامات عصبی نظام میں موجود کروڑوں خلیات کے ذریعے سفر کرتے ہیں۔ پیدائش سے پہلے اور بعد میں ان خلیات میں ربط بڑھتا رہتا ہے چنانچہ ان کے درمیان ایک پیچیدہ جال (نیٹ ورک) بن جاتا ہے ابھی تک ماہرین یہ بتانے سے قاصر ہیں کہ اس جال میں کس قسم کی یادیں یا خیالات ہوتے ہیں اب ہم آگے اسی پیچیدہ جال کو سلجھائیں گے " دماغ کے عنوان سے "

اب یہاں تک پہنچ کر عمل کی عملی تفصیلات مکمل ہوئیں جس میں ہم نے بالترتیب وضاحت کی کہ ایک عمل کیسے مختلف پیچیدہ اور طویل مراحل سے گذر کر جسمانی عمل کی صورت میں ظاہر ہو رہا ہے۔ یہاں ہم نے جسمانی عمل کا تفصیلی بیک گراؤنڈ بیان کیا ہے جس سے یہ ثابت ہوا ہے کہ جسم کا

کوئی بھی عمل دماغی فیصلے سے نہیں بلکہ نفس (AURA) کی ذاتی مرضی سے ہو رہا ہے (عملوں کا دارومدار نیتوں پر ہے)۔ جسم کا ہر عمل کائناتی تسلسل کا حصہ ہے۔ ہر عمل کا براہ راست تعلق روح نفس اور خالق سے ہے۔

## 90۔ اعمال

نظریہ نمبر: ﴿126﴾۔ ﴿لہذا ہماری زندگی کی ہر حرکت ہر عمل ریکارڈ ہو رہا ہے اور یہی ریکارڈ اعمال ہیں﴾

لہذا تقدیر (روح) کے مرتب پروگرام سے ارادی و غیر ارادی حرکت و عمل کے لئے اطلاعات آرہی ہیں۔ ان اطلاعات پہ انسان اپنی مرضی سے رد و بدل کر کے عمل کر رہا ہے اور یہ عمل ریکارڈ ہو رہے ہیں اور یہ حرکت و عمل کی ریکارڈنگ (تیار فلم) ہی اعمال نامہ ہے۔ لہذا ہر حرکت ہر عمل کی تمام تر تفصیلات (اطلاع سے لیکر عمل کے اختتام تک) ریکارڈ ہو رہی ہیں۔ اسی طرح اسی ترتیب سے انسان کی پوری زندگی کی ہر حرکت ہر عمل ریکارڈ ہو رہا ہے اور اس ریکارڈ کو ہم دیکھیں گے۔

یہ بالکل ایسے ہی ہے جیسے ہم اپنی ویڈیو ریکارڈ کرتے ہیں اور پھر اس ریکارڈ فلم کو دیکھتے ہیں۔ بالکل اسی طرح انسان کے اندر بھی ریکارڈنگ کا سسٹم نصب ہے لیکن یہ آٹومیٹک سسٹم بہت جدید ہے ہمارے پاس ریکارڈنگ کے جو سسٹم ہیں اس میں محض آڈیو ویڈیو ریکارڈ ہوتا ہے۔ جبکہ انسان کے اندر نصب ریکارڈنگ سسٹم میں آڈیو ویڈیو کے علاوہ انسان کی نیت اس کے محسوسات اور ارادے تک ریکارڈ کرنے کی صلاحیت ہے لہذا اس ریکارڈنگ میں انسان کی ہر حرکت، ہر عمل (اندرونی و بیرونی) اس کے محسوسات اس کے ارادے تک ریکارڈ ہو رہے ہیں۔ جب یہ زندگی کی ریکارڈنگ مکمل ہو جائے گی تو انسان اپنی اس ریکارڈ فلم کو دیکھے گا۔ اور اپنی یہ فلم دیکھنے کے بعد انسان اپنے جرائم کا ذمہ دار دوسروں کو نہیں ٹھرا سکتا دنیا میں کچھ لوگ بہت چالاک بنتے ہیں۔ مجرم اپنے آپ کو بے گناہ بتاتے ہیں حتیٰ کہ گناہ گار اپنے آپ کو بے قصور اور بے گناہوں کو گناہگار ثابت کر دیتے ہیں۔ قتل چوری، جرائم کر کے دوسروں کے سر تھوپ دیتے ہیں۔ کچھ لوگ اپنے جرائم کو مجبوری اور کچھ موروثی بیماری قرار دیتے ہیں لیکن اعمال نامے میں تو نیت بھی درج ہے۔

موت کے بعد آج مجرم اپنی فلم میں اپنے ذہن کا منصوبہ تک دیکھ رہا ہے۔ آج اپنا نامہ اعمال دیکھ کر بد از خود اپنی بدی کا اقرار کریں گے نیک آج خوش ہیں اپنی زندگی کی ریکارڈ فلم دیکھ کر کے دیکھا ہم نہ کہتے تھے کہ ہمیں صلہ ضرور ملے گا۔

## 91۔ آزاد ارادہ

نظریہ نمبر:- ﴿127﴾۔ ﴿انسان آزاد ارادے کا مالک ہے﴾۔

اب عمل کی تفصیلی وضاحت کے بعد یہ بات واضح ہو چکی ہے کہ اگرچہ انسان کی کتاب (تقدیر) میں انسان کی پوری زندگی کی ہر حرکت ہر عمل ریکارڈ ہے اور اسی ریکارڈ سے اسے ہر ارادی و غیر ارادی عمل کی اطلاع مل رہی ہے اور اسی اطلاع پہ جسمانی عمل درآمد کی صورت واقع ہوتی ہے اس کے

باوجود

انسان تقدیر کا پابند نہیں ہے بلکہ آزاد ارادے کا مالک ہے روح کے مرتب پروگرام سے پہلے ہر عمل کی اطلاع آتی ہے پھر ان اطلاعات میں نفس اپنی ذاتی مرضی سے رد و بدل کر کے عملی صورت

دیتا ہے

مثلاً کتاب تقدیر سے جسم کو بھوک کی اطلاع ملی تو جسم کے اندر بھوک کا احساس بیدار ہوا۔ روح کی اطلاع (تقدیری پروگرام) یعنی بھوک کے احساس کو نفس (AURA) مادی جسم کو یوں منتقل کر رہا ہے۔

میرا خیال ہے مجھے بھوک لگی ہے مجھے کھانا کھالینا چاہیے۔

مادی جسم، نفس (AURA) کی خواہشات یا ترغیبات کو نفس کی تحریک پر عملی جامہ پہناتا ہے جسے ہم کھانے کا عمل کہتے ہیں۔ لہذا ہمارے روزمرہ کے تمام اعمال اسی ترتیب سے ترتیب پاتے ہیں۔

روح کی ریکارڈ تقدیری اطلاع پر نفس (AURA) کے تحریک دلانے پر جسمانی عمل واقع ہوا۔ یہ روح کی ہدایت پر مثبت عمل درآمد ہے لیکن ہمیشہ ایسا نہیں ہوتا کیونکہ عمل محض نفس یعنی انسان کی ذاتی مرضی پہ منحصر ہے۔

چاہے تو ان تقدیری ریکارڈ اطلاعات کو قبول کر لے چاہے تو رد کر دے۔

لہذا روح کی ریکارڈ تقدیری اطلاع یعنی بھوک کے احساس کے باوجود نفس جسم کو کھانے کی ترغیب و تحریک نہ دے تو کھانے کا عمل واقع نہیں ہوگا۔ (لیکن یہاں تقدیر کے ان قوانین کا ذکر نہیں جن کا انسان غیر ارادی طور پر پابند ہے)۔

لہذا تقدیری ریکارڈ پروگرام پر عملدرآمد ہوگا یا نہیں ہوگا یہ فقط نفس (AURA) کی مرضی پر منحصر ہے۔

لہذا جسم کو تقدیری اطلاع (بھوک کا احساس) ملنے پر جسمانی عمل وہی ہوگا جو نفس (AURA) کا فیصلہ ہوگا۔

یعنی تمام تر اطلاعات کے باوجود عمل انسان خود اپنے ذاتی ارادے اپنی خواہش اپنی مرضی سے کرتا ہے۔

## 92۔ پابند مخلوقات و موجودات

نظریہ نمبر:- ﴿128﴾۔ انسان (اور جنات جیسی چند دیگر مخلوقات جو جزوی طور پر ذاتی ارادے کی مالک ہیں) کے علاوہ کوئی مخلوق آزاد ارادہ کی مالک نہیں ہر مخلوق تقدیر کے مخصوص مرتب پروگرام کی پابند ہے۔ اور اسی مخصوص پروگرام پر عمل پیرا ہے۔ ﴿

مثلاً سورج کا پروگرام یہ ہے کہ وہ صبح ایک مخصوص وقت پر مخصوص مقام سے نمودار ہوگا اور شام کو ایک مخصوص وقت اور مخصوص مقام پہ غروب ہوگا۔ سورج کا مخصوص جگہ اور وقت سے نمودار ہونا اور اپنے مخصوص مقام پہ سفر کرنا اور مخصوص منزل پر غروب ہونا اس کا تقدیری مرتب پروگرام ہے۔

سورج اپنا ذاتی ارادہ نہیں رکھتا کہ اپنی اس مخصوص روٹین میں تھوڑا رو بدل کر لے۔ اپنے ذاتی ارادے سے مشرق کی بجائے شمال سے نکل آئے یا راستہ بدل کر چلے یا تھوڑا لیٹ نکل آئے یا مغرب کی بجائے کسی اور سمت نکل جائے ایسا ممکن نہیں۔ اس لیے کہ وہ ذاتی ارادہ رکھتا ہی نہیں۔

فقط انسان ذاتی ارادے کا مالک ہے۔ انسان کے علاوہ کائنات کی تمام موجودات مخصوص تقدیری پروگرام کی پابند ہیں (ان میں ذاتی ارادہ نہیں) تبھی کائنات کا سسٹم اتنا منظم ہے۔

جبکہ انسان اپنے ذاتی ارادے کے انتہائی غلط استعمال سے کائنات کے سسٹم کو انتہائی متاثر کر رہا ہے۔

## 93۔ اچھایا بر عمل

نظریہ نمبر:- ﴿129﴾۔ عمل کی پہلے سے ریکارڈ شدہ تقدیری اطلاع، ہدایت اور منفی اطلاعات کے بعد اچھے یا برے عمل کا فیصلہ انسان خود کرتا ہے اپنے ذاتی ارادے کا استعمال کرتے ہوئے۔ ﴿

لہذا تقدیر کے مرتب پروگرام سے جب جسم کو بھوک کی اطلاع موصول ہوئی تو بھوک کے اس احساس اس اطلاع کے ملتے ہی نفس کو تمام تر مثبت و منفی اطلاعات بھی موصول ہو گئیں لہذا اب فیصلے کا اختیار نفس (انسان) کے پاس ہے۔

دیکھئے اب نفس بھوک کی اطلاع پہ عملدرآمد کے لئے کون سے طریقے کا انتخاب کرتا ہے۔

روح کی ہدایت کا تجویز کردہ جائز طریقہ یا

شیطانی اطلاعات کا تجویز کردہ ناجائز طریقہ یا اپنی ذاتی خواہش پر مبنی کوئی تیسرا طریقہ

لہذا اچھے یا برے عمل کی صورت درج ذیل ہوگی۔

## 94۔ اچھا عمل

نظریہ نمبر:- ﴿130﴾۔ اچھے عمل انسان اپنی مرضی سے انجام دے رہا ہے ﴿

اچھے عمل کی صورت درج ذیل ہوگی۔

(1) تقدیر کے مرتب پروگرام سے اطلاع ..... بھوک کا احساس۔

(2) ہدایت (روح کی آواز) ..... عمل پر عملدرآمد کا طریقہ مثبت ہونا چاہیے۔

(3) منفی اطلاع (شیطانی اطلاع) ..... عمل پر عملدرآمد کے لئے ناجائز طریقہ اختیار کیا جائے

(4) نفس کا ذاتی فیصلہ۔ تمام تر مثبت و منفی اطلاعات کے موصول ہو جانے پر نفس اپنے ذاتی اختیار

سے عمل پر عملدرآمد کا انتخاب کرے گا

(5) دماغ نفس کے ترتیب شدہ عملی منصوبے کو جوں کا توں جسم پر اپلائی کر دے گا۔

6 جسمانی عملدرآمد۔ لہذا نفس کی ذاتی مرضی سے ترتیب شدہ عملی منصوبے کے عین مطابق جسمانی

عمل واقع ہوگا

تقدیر کے مرتب پروگرام سے عمل کی اطلاع جب جسم کو ملی تو جسم میں بھوک کا احساس بیدار ہوا

اس اطلاع کے ملتے ہی روح کی ہدایت یعنی مثبت ترغیب بھی آنے لگی کہ عزت کی روزی بہتر ہے۔

منفی اطلاعات بھی ملنے لگیں کہ چرا کر کھالینا آسان ہے۔ اب تمام تر اطلاعات موصول ہو گئیں لہذا بھوک کے احساس پہ کھانے کے عمل پہ عملدرآمد کے لیے کونسا طریقہ اختیار کیا جائے یہ فیصلہ کرنا ہے نفس (انسان) کو،

اب نفس (AURA) اگر روح کی مثبت ہدایات کو قبول کر کے جسم کو مثبت طریقے سے کھانے کے عمل کی تحریک دیتا ہے اور انسان کھانے کا عمل مثبت طریقے سے انجام دیتا ہے تو یہ انسان کا اچھا عمل ہے۔

اور یہ اچھا عمل ذاتی اختیار سے کرنے والا انسان اچھا انسان ہے۔  
اور یہ اچھا عمل انسان (نفس) نے اپنے ذاتی ارادے سے منتخب کیا ہے۔

## 95۔ برا عمل

نظریہ نمبر۔ ﴿131﴾۔ ﴿اپنے برے اعمال کا انسان سو فیصد خود ذمہ دار ہے﴾  
برے عمل کی صورت درج ذیل ہوگی۔

- (1) تقدیر کے مرتب پروگرام سے اطلاع ..... بھوک کا احساس
- (2) ہدایت ..... مثبت ترغیب
- (3) منفی اطلاع ..... منفی ترغیب
- (4) نفس کا فیصلہ۔
- (5) دماغ کا کام۔
- (6) جسمانی عملدرآمد۔

تقدیر کے ریکارڈ پروگرام سے جسم کو جب بھوک کی اطلاع ملی تو جسم میں بھوک کا احساس بیدار ہوا۔ اس اطلاع کے ساتھ ہی اس اطلاع پہ عملدرآمد کے لیے مثبت ترغیبی پروگرام روح کی طرف سے ملنا شروع ہو گیا کہ کھانے کا عمل مثبت ہونا چاہیے کما کر کھانا چاہیے۔

اس ہدایت کے ساتھ ہی منفی شیطانی اطلاعات بھی ملنے لگیں کہ چرا کر کھانا آسان ہے اب فیصلہ

نفس (AURA) کی ذاتی مرضی بر منحصر ہے۔

اگر نفس چرا کر کھانے کی جسم کو ترغیب اور تحریک دیتا ہے لہذا اس تحریک کے تحت جسمانی عمل چوری کر کے کھانا ہے تو انسان کا یہ عمل

برا عمل ہے اور یہ برا عمل کرنے والا انسان برا انسان ہے۔

اور یہ برا عمل انسان نے اپنی مرضی، خواہش اور ذاتی ارادے کے تحت کیا۔

عمل کے لیے نفس اپنے ذاتی ارادے اور خواہش کے تحت ہر مثبت و منفی اطلاعات کو رد کر کے کوئی تیسری راہ بھی نکال سکتا ہے جو منفی بھی ہو سکتی ہے مثبت بھی لہذا تقدیر کا تحریری پیغام اور مثبت و منفی اطلاعات اگر چہ انسان کو موصول ہو رہی ہیں لیکن اچھے برے عمل کا انتخاب نفس (AURA) کے ذاتی ارادے پر منحصر ہے لہذا عمل وہی ہوگا جو نفس یعنی انسان کی خواہش ہوگی۔

لہذا اچھا عمل یا برا عمل انسان کے ذاتی ارادے کے تابع ہے چاہے تو تقدیر کے لکھے کو قبول کر کے اسی پہ عمل کر لے

چاہے تو مثبت ہدایت کو قبول کر کے مثبت عمل کر لے

عمل کے لیے چاہے تو منفی طریقہ اختیار کر لے

بحر حال عمل کی تمام تر ذمہ داری انسان کی ذاتی مرضی پہ ہے۔

آجکل بعض لوگ خود کو بے قصور ثابت کرنے کے لیے اپنے اعمال کا ذمہ دار موروثی خصوصیات کو قرار دیتے ہیں۔ جبکہ ایسا ہے نہیں۔ موروثی خصوصیات انسان کے اندر موجود ہیں لہذا موروثی خصوصیات کو عملی جامعہ پہنانا یا نہ پہنانا انسان کے ذاتی اختیار میں ہے۔

انسان اس ذاتی اختیار کو استعمال میں لاتے ہوئے چاہے تو اپنے اندر موجود اپنے آباؤ اجداد کی سی بہادری کا مظاہرہ کرے اور چاہے تو اپنی صلاحیتوں کا استعمال نہ کرے اور بزدل اور کاہل الوجود بنا رہے۔

چاہے تو ذاتی اختیار سے اپنے اجداد کی طرح چوری کرے چاہے تو نہ کرے۔

چاہے تو اپنے ذاتی اختیار سے اپنے اجداد کے پیشے اور صلاحیتیں اختیار کر لے چاہے تو نہ کرے۔

لہذا تقدیر میں ہر عمل ہر حرکت ریکارڈ ہونے کے باوجود ہر عمل کی مظاہراتی صورت وہی ہوگی

جو انسان اپنے ذاتی ارادے سے عمل کرے گا۔ (سوائے چند تقدیری قوانین کے)



لہذا انسان تقدیر کا پابند نہیں بلکہ اپنے ہر اچھے برے عمل کا سو فیصد ذمہ دار ہے۔

## 96۔ عمل کا خلاصہ

یہاں ہم نے جسمانی عمل کا تفصیلی بیک گراؤنڈ بیان کیا ہے جس سے یہ ثابت ہوا ہے کہ جسم کا کوئی بھی عمل دماغی فیصلے سے نہیں بلکہ نفس (AURA) کی ذاتی مرضی سے ہو رہا ہے (عملوں کا دارو مدار نیوتوں (ذاتی مرضی ذاتی خواہش پر ہے) جسم کے اعمال دماغی عمل کا نتیجہ نہیں بلکہ جسم کا ہر عمل کائناتی تسلسل کا حصہ ہے۔ ہر عمل کا براہ راست تعلق روح نفس اور خالق سے ہے۔ لہذا عمل کی جو تفصیلات یہاں میں نے بیان کیں ہیں ان کا مختصر خلاصہ درج ذیل ہے۔

### عمل کا فارمولہ

- ۱۔ خالق کا حکم یعنی (روح)
- ۲۔ روح (یعنی حرکت و عمل کا مرتب و مکمل پروگرام یعنی تقدیر
- ۳۔ (تقدیر یعنی روح کے مرتب پروگرام سے کھانے کی اطلاع
- ۴۔ ہدایات۔ کھانے کے عمل کے لیے مزید مثبت ترغیبی پروگرام
- ۵۔ منفی اطلاعات۔ کھانے کے عمل کے لیے مزید اطلاعات یعنی منفی (شیطان کی طرف سے) ترغیبی پروگرام
- ۶۔ نفس کا فیصلہ۔ عمل کی تمام تر اطلاعات آجانے کے بعد عمل پہ عملدرآمد کے لئے نفس کا فیصلہ
- ۷۔ دماغ کا کام۔ نفس کے ترتیب شدہ عملی پروگرام کو دماغ جوں کا توں جسم پر اپلائی کر دے گا
- ۸۔ جسمانی عملدرآمد۔ اور اسی منظم ترتیب کے مطابق جسم کا ہر یونٹ نفس کے عملی پروگرام کو عملی جامہ پہنانے میں مصروف ہو جائے گا اور یوں مجموعی جسم کا ایک عمل ظہور میں آئے گا۔ لیکن ابھی عمل مکمل ہو جانے کے بعد بھی عمل کا عمل مکمل نہیں ہوا بلکہ ابھی عمل کا عمل جاری ہے لہذا
- ۹۔ عمل کے بعد۔ عمل مکمل ہونے کے بعد دماغ اسے مختلف خانوں (فولڈرز) میں محفوظ کر دے گا۔
- ۱۰۔ اعمال۔ ہر عمل کی یہ تمام تر ریکارڈ تفصیلات اعمال ہیں۔

عمل کی اس صورت اس تفصیل سے یہ ثابت ہو گیا کہ انسان عمل کے لیے آزاد ہے، انسان تقدیر کا پابند نہیں۔ وہ فیصلے اپنی مرضی سے کرتا ہے۔

## 97۔ انسانی زندگی

نظریہ نمبر۔ ﴿132﴾۔ ﴿انسانی زندگی حرکت و عمل کا مرتب پروگرام ہے۔﴾  
لہذا انسانی زندگی کی عملی تصویر کچھ یوں بنے گی۔

- (1)۔ (روح) مرتب پروگرام۔ (زندگی کا مسودہ)
- (2)۔ (جسم) جسمانی حرکت و عمل۔ (پہلے سے مرتب مسودے میں ترمیم و اضافہ کے بعد ریکارڈنگ کا عمل)
- (3)۔ اعمال۔ (تیار قلم (اعمال نامہ))

روح کے مرتب پروگرام کے مطابق انسان پوری زندگی اپنی مرضی سے اعمال سرانجام دیتا ہے۔ کبھی وہ روح کے مرتب پروگرام پر ہی چلتا ہے۔ کبھی اس پروگرام میں اپنے ذاتی ارادے سے تبدیلی کر لیتا ہے۔

اور یہ تبدیلی کبھی مثبت ہوتی ہے تو کبھی منفی۔ مثبت تبدیلی کرنے والا انسان اچھا انسان ہے اور مرتب پروگرام میں منفی تبدیلی (اپنے ذاتی ارادے سے) کرنے والا برا انسان ہے۔ لہذا جب روح کا یہ حرکت و عمل کا مرتب پروگرام ختم ہو جاتا ہے تو زندگی کا اختتام ہو جاتا ہے۔ یعنی زندگی کی فلم مکمل ہو گئی۔

یہی انسان کی پوری زندگی کی حرکت و عمل کی ریکارڈنگ یعنی مکمل فلم اعمال نامہ ہے۔ جسے ہم ملاحظہ کریں گے۔

## 98۔ نفوس کی درجہ بندی

نظریہ نمبر۔ ﴿133﴾۔ ﴿زندگی کی اسی ریکارڈ فلم کے مطابق نفوس کی درجہ بندی ہوگی﴾  
ہماری زندگی کی پوری فلم ریکارڈ ہو چکی ہے۔ اسی ریکارڈ سے پتہ چلے گا کہ انسان نے روح کے

مرتب پروگرام کو اپنے ذاتی ارادے سے ملیا میٹ کر دیا یا اسے مزید سنوار دیا۔ لہذا اعمال کے اسی ریکارڈ کے مطابق نفوس کی درجہ بندی ہوگی۔ ویسے تو ہر نفس درجہ بدرجہ ہے، درجے میں ایک آگے ہے تو دوسرا اس سے آگے اور تمام انسان اپنے اپنے اعمال کی مناسبت سے درجہ بدرجہ اپنے اپنے انفرادی مقام پر اپنی اپنی حیثیت میں موجود ہیں۔ لیکن اپنے اپنے ذاتی درجات کے علاوہ بحیثیت مجموعی نفوس کو تین مختلف درجات میں تقسیم کیا جاتا ہے۔ یا یوں کہنا مناسب ہوگا کہ اعمال کی مناسبت سے نفوس تین طرح کے ہوتے ہیں

### ۱۔ نفس امارہ

جس انسان (نفس) نے روح کے مثبت مرتب پروگرام کو رد کر کے اپنے نفس کے ذاتی ارادے سے بُرے اعمال کر کے اس پروگرام کو ملیا میٹ کر دیا یا بگاڑ دیا تو اس انسان کی پوری زندگی کے ریکارڈ سے یہ طے ہو گیا کہ یہ انسان برا انسان ہے اور یہ نفس، نفس امارہ ہے۔

### ۲۔ نفس لوامہ

اور جس انسان نے روح کے مرتب پروگرام کو اپنے نفس کی خواہش اور ذاتی مرضی کے استعمال سے سنوارا ہے تو یہ انسان اچھا انسان ہے۔ اور پوری زندگی کے عملی ریکارڈ سے یہ طے پا گیا کہ یہ نفس

نفس لوامہ ہے

### ۱۔ نفس مطمئنہ

نفس مطمئنہ والے لوگ وہ لوگ ہیں جنہوں نے اپنی مرضی یا اپنے نفس کی خواہشات کو ترک کر کے اپنی پوری زندگی روح کے مثبت مرتب پروگرام (تقدیر یا مذہب) کے مطابق گزار دی۔ لہذا پوری زندگی کی ریکارڈ فلم سے یہ طے پا گیا کہ یہ نفس، نفس مطمئنہ ہے یہ لوگ اپنے رب کے مطیع اور فرمانبردار بندے ہیں اور انہیں کو نفس مطمئنہ کہا جاتا ہے۔

لہذا انسان کے اچھے یا برے ہونے کا تعین یا نفوس کی درجہ بندی انسان کے عمل کی یہی ریکارڈ فلم (اعمال نامہ) کرے گی۔

لہذا انسان اپنے اچھے برے عمل کا ذاتی اختیار رکھتا ہے۔ اور روح کا مرتب پروگرام اور روح کی وجہ سے ارادی اور غیر ارادی حرکات انسان کے ذاتی ارادے کی ضرورتیں ہیں۔

ظاہر ہے جب انسان کے پاس جسم ہوگا اس میں حرکت ہوگی تبھی انسان ذاتی مرضی کے عمل کے قابل ہوگا۔ جسمانی مشینری دل، دماغ ہاتھ پیر روح کے پروگرام کے مطابق صحیح کام کر رہے ہوں گے تبھی انسان ذاتی ارادے اور عمل کے اظہار کے قابل ہوگا۔ لہذا انسانی زندگی کی عملی تصویر کچھ یوں بنے گی۔

- (1)۔ روح مرتب پروگرام۔ (زندگی کا پہلے سے مرتب مثبت مسودہ)
- (2)۔ جسمانی حرکت و عمل۔ (زندگی کے مسودے میں انسان کی ذاتی مرضی سے مثبت و منفی ترمیم و اضافے کے بعد ریکارڈنگ کا عمل)
- (3)۔ اعمال۔ (تیار اور ریکارڈ فلم (اعمال نامہ)

## موت

ہاں ہاں جب جان گلے کو پہنچ جائے گی O اور کہیں گے کہ ہے کوئی جھاڑ پھونک کر لے اور وہ سمجھ لے گا کہ یہ جدائی کی گھڑی ہے O اور پنڈلی سے پنڈلی لپٹ جائے گی O اس دن تیرے رب ہی کی طرف ہانکنا ہے O ۲۶-۳۰ (۷۵)

۹۹۔ موت

۱۰۰۔ زندگی

۱۰۱۔ موت کی تعریف۔

۱۰۲۔ جسم میں روح کی عدم موجودگی۔

(i) خلیاتی تخریب۔

(ii) فالج۔

(iii) نیند

(۴) موت

۱۰۳۔ موت کیا ہے۔

۱۰۴۔ روح کا رابطہ۔

۱۰۵۔ موت کا وقت۔

۱۰۶۔ ری وائینڈ

۱۰۷۔ فیتہ کاٹ دیا گیا

۱۰۸۔ موت کا عمل

۱۰۹۔ روح کی واپسی

۱۱۰۔ روح نکلنے کے بعد

(i) بے حرکت

(ii) انتشار

۱۱۱۔ موت کا خلاصہ

۱۱۲۔ جسم کی موت

## 99- موت

آج جدید تحقیقات کی روشنی میں ہم انسانی جسم کا بہت زیادہ علم رکھتے ہیں اور اسی علم کی روشنی میں آج ہم انسانی اعضاء عناصر جسمانی عوامل سب سے واقف ہیں لیکن ہر لحاظ سے منفرد یہ خون گوشت عضلات رگ پٹھوں خلیوں کا مجموعہ جسم جب موت کا شکار ہوتا ہے تو یہ کائنات کی انتہائی پیچیدہ مشینری مادی جسم موت کی صورت میں لخت غیر متحرک ہو جاتی ہے۔ اور نہ صرف غیر متحرک ہوتی ہے بلکہ موت کے بعد کچھ ہی دنوں میں پانچ چھ فٹ کے متحرک وجود کا نشان ہی نہیں ہوتا۔ کچھ ہی دنوں میں پورا وجود بے نشان ہو جاتا ہے۔ یا مٹی میں مل کر مٹی ہی کا حصہ بن جاتا ہے۔ اب شناخت مشکل ہے کہ مٹی کونسی ہے اور جسمانی ذرات کونسے ہیں۔

پورا متحرک وجود جو چند دن پہلے موجود تھا موت کے بعد اس وجود کا نشان ہی نہ رہا۔ ہڈیاں خون گوشت پوری جسمانی مشینری فقط موت کی صورت میں ہر شے کا نشان مٹ گیا۔ آخر کیسے؟  
تمام تر دماغی و جسمانی صلاحیتوں والا تندرست و توانا وجود کیسے موت کی صورت میں یکلخت بے حرکت اور بے نشان ہو جاتا ہے۔

آخر کیا ہے یہ موت؟

خلیوں کی تخریب، بیماری، حادثہ، طبعی موت سائنسدان موت کی یہ اور اس جیسی بہت سی وجوہات بیان کرتے ہیں لیکن درحقیقت یہ اور اس جیسی تمام وجوہات موت کی وجوہات نہیں ہیں نہ ہی کسی بیماری یا حادثے سے موت واقع ہوتی ہے۔ اس لیے کہ ان تمام وجوہات کی موجودگی میں بھی انسان زندہ ہوتا ہے۔ لہذا یہ تمام وجوہات موت کی وجوہات نہیں ہیں۔ درحقیقت موت کی وجہ کچھ اور ہی ہے!

لہذا اب ہمیں جان ہی لینا چاہیے کہ آخر وہ کیا شے ہے جس کی وجہ سے یہ جسمانی مشینری متحرک ہے، موجود ہے اور آخر وہ کیا شے ہے جس کی غیر موجودگی سے یہ انتہائی فعال مشینری یکلخت (i) بے حرکت ہو جاتی ہے۔ (ii) اور پھر بے نشان ہو جاتی ہے۔

مادی جسم پہ صدیوں کی تمام تر سائنسی تحقیق و تجربات کے باوجود ہم جسم کے وجود اور موت کی صورت میں وجود کی عدم موجودگی کا سبب دریافت نہیں کر پائے ہیں، نہ ہی ابھی تک ہم زندگی یا موت کی تعریف کر پائے ہیں۔ آئیے جاننے کی کوشش کرتے ہیں کہ جسم کی زندگی کیا ہے؟ اور موت کیا

ہے؟

## 100- زندگی

نظریہ نمبر- ﴿134﴾- ﴿مادی جسم میں روح کی موجودگی کا نام زندگی ہے۔﴾  
جب تک اجسام میں روح موجود ہے اجسام زندہ ہیں اور جب روح جسم میں سے نکل جاتی ہے تو جسم بے حرکت اور مردہ ہو جاتا ہے۔

بیماری، حادثہ یا معذوری ہونے کے باوجود انسان زندہ ہوتا ہے بعض اوقات مہلک بیماری کا شکار مریض جس کی زندگی کی امید نہیں برسوں زندہ رہتا ہے۔

بعض اوقات طبعی طور پر انسان پہ موت طاری ہو جاتی ہے لیکن وہ زندہ ہوتا ہے۔

بعض دفعہ کوما کی حالت میں ہوتا ہے لیکن زندہ ہوتا ہے۔

بعض دفعہ کسی سنگین حادثے میں جسمانی اعضاء ضائع ہو جاتے ہیں بعض دفعہ دماغی توازن کھو بیٹھتا ہے بعض دفعہ حرکت و عمل سے محروم ہو جاتا ہے لیکن زندہ ہوتا ہے، زندہ رہتا ہے۔

نیند کی حالت بھی کوما یا موت کی سی ہے لیکن انسان زندہ ہے کیوں اور کیسے؟

روح کے سبب!

جب تک روح جسم میں ہے ٹکڑے ٹکڑے ہی کیوں نہ کر دیں جسم زندہ ہی رہے گا، معذور ہو یا بوڑھا یا بیمار وہ زندہ رہنے پہ مجبور ہے جب تک اس کے جسم میں روح باقی ہے وہ زندہ ہے۔ لہذا جسم یا اجسام میں زندگی کا سبب روح ہے۔

## 101- موت کی تعریف

نظریہ نمبر- ﴿135﴾- ﴿مادی جسم سے روح کے خارج ہو جانے کا نام موت ہے۔﴾  
موت جسم پہ طاری ہوتی ہے یا اجسام موت کا شکار ہوتے ہیں۔ کسی بھی جسم سے روح کے خارج ہو جانے پر جسم موت کا شکار ہو جاتا ہے۔

بے ہوشی، بیماری، نیند، کوما کی کیفیت موت نہیں ایسی تمام حالتوں میں انسان زندہ ہوتا ہے۔ بعض دفعہ جسم تندرست ہوتا ہے کوئی بیماری نہیں لیکن انسانی جسم موت کا شکار ہو جاتا ہے ایسا جسم سے



روح کے خارج ہو جانے سے ہوتا ہے۔

موت کی توجیہات پہلے شاید کچھ مختلف بیان کی جاتی تھیں یعنی طبعی موت، پیدائش میں پیچیدگی، کوئی حادثہ، بیماری یا قتل، کوئی نہ کوئی سبب موت کا ضرور بیان کیا جاتا ہے لیکن یہ تمام وجوہات موت کے اسباب تو ہو سکتے ہیں لیکن یہ اسباب موت کی وجہ نہیں ان اسباب کے سبب موت واقع نہیں ہوتی۔ ان تمام وجوہات کے باوجود روح جسم میں ہے تو انسان زندہ ہے۔ روح کے جسم سے نکل جانے کا نام موت ہے وہ جسم چاہے کتنا ہی تندرست و توانا اور زندگی سے لبریز کیوں نہ ہو، جسم چاہے کسی بچے کا ہو یا بوڑھے کا یا کسی جوان رعنا کا روح کے اس جسم سے خارج ہونے سے یہ جسم مردہ ہے۔ جو چند دن بعد نابود ہو جائے گا۔ جسم کے اعضاء مٹ جائیں گے خلیے منتشر ہو جائیں گے ایک نظر آنے والا حقیقی وجود نظروں سے اوجھل ہو جائے گا، ایسے کہ نشان بھی نہ رہے گا۔ روح جسم میں تھی تو جسم جسم تھا موجود تھا نظر آ رہا تھا حرکت کر رہا تھا اور جب روح جسم سے خارج ہو گئی تو جسم بے حرکت ہو گیا اور پھر بے نشان ہو کر مٹ گیا جیسے کچھ تھا ہی نہیں۔

لیکن اس فرق کو سمجھنا ضروری ہے کہ

مادی جسم میں ”موت“ کی صورت میں اگرچہ روح کی عدم موجودگی موت ہے لیکن جسم میں روح کی ”محض“ عدم موجودگی موت نہیں ہے کیونکہ روح تو جسم میں آتی جاتی رہتی ہے۔ یعنی جسم میں روح کی عدم موجودگی کی مزید صورتیں بھی ہیں جو کہ موت نہیں ہیں

## 102۔ جسم میں روح کی عدم موجودگی

نظریہ نمبر:- ﴿136﴾۔ ﴿جسم میں روح کی عدم موجودگی کی مزید صورتیں بھی ہیں جو کہ موت نہیں ہیں﴾

موت کے علاوہ جسم میں روح کی عدم موجودگی کی مزید درج ذیل صورتیں بھی ہیں۔

(i) خلیاتی تخریب (ii) فالج (iii) نیند، بیہوشی

(i)۔ خلیاتی تخریب

نظریہ نمبر:- ﴿137﴾۔ ﴿خلیہ میں روح کی عدم موجودگی سے خلیہ کی موت واقع ہو جاتی ہے، یا

خلیات میں روح کی عدم موجودگی سے خلیات کی موت واقع ہو جاتی ہے۔ لیکن خلیہ یا خلیات کی موت جسم کی موت نہیں ہے۔ ﴿

جبکہ عموماً یہ خیال کیا جاتا ہے کہ موت حیاتیاتی خلیات کی تخریب کا وقت ہے۔ جسم انسانی میں تمام تر خلیات کی تخریب و تعمیر کا عمل پوری زندگی میں تقریباً سات بار ہوتا ہے یعنی پرانے خلیے مر جاتے ہیں نئے ان کی جگہ لے لیتے ہیں۔ اگر ہم خلیات کی تخریب کو موت تصور کریں تو اس حساب سے انسان پوری زندگی میں سات بار مرتا ہے اور سات بار جیتا ہے۔ خلیوں کی تعمیر و تخریب کا عمل پوری زندگی جاری رہتا ہے لہذا خلیوں کی تخریب و تعمیر کا عمل موت کا عمل نہیں ہے بلکہ زندگی کا عمل ہے یعنی نہ تو خلیے کی موت انسان کی موت ہے نہ ہی خلیاتی تخریب موت کا سبب ہے۔ بلکہ خلیوں کی تخریب و تعمیر کا عمل زندگی میں جسم میں جاری رہتا ہے۔

درحقیقت خلیہ یا خلیات میں روح کی عدم موجودگی سے محض خلیہ یا خلیات کی موت ہوتی ہے جس کی تفصیل ہم پچھلے صفحات میں بیان کر آئے ہیں۔ یعنی خلیہ ایک جاندار وجود ہے جو اپنا کام جانتا ہے اپنا کام کر رہا ہے اور ہر خلیے کے پاس یہ حرکت و عمل کا پروگرام روح کا پروگرام ہے۔ لہذا خلیہ میں روح کی عدم موجودگی سے۔

(1) خلیہ اپنا کام بند کر دیتا ہے

(2) بے حرکت ہو جاتا ہے

(3) مر جاتا ہے۔

لیکن محض خلیہ یا خلیات کی موت سے جسم مردہ نہیں ہوتا خلیہ میں روح کی عدم موجودگی محض خلیہ کی موت ہے۔ اور محض خلیہ کی موت جسم کی موت نہیں ہے۔

(ii)۔ فالج

نظریہ نمبر۔ ﴿137﴾۔ ﴿جسم کے کسی حصے میں روح کی عدم موجودگی جسم کے اس حصے کی موت ہے لیکن یہ جسم کی موت نہیں﴾

یعنی جسم کے کسی حصے یا عضو سے روح کے خارج ہو جانے سے اس حصے کی موت واقع ہو جاتی ہے لہذا وہ حصہ

۱۔ اپنا کام بند کر دیتا ہے۔

۲۔ بے حرکت ہو جاتا ہے

۳۔ مرجاتا ہے

لہذا اس حصے میں روح تھی جس کی وجہ سے وہ حصہ یا عضو

۱۔ متحرک تھا

۲۔ اپنا کام کر رہا تھا

۳۔ زندہ تھا

لہذا جسم کے کسی حصے میں روح کی عدم موجودگی اس حصے کی موت ہے۔

لیکن جسم کے کسی حصے کی موت بھی جسم کی موت نہیں ہے۔

### (iii) نیند

نظر یہ نمبر: ﴿138﴾۔ ﴿جسم میں روح کی عدم موجودگی کی ایک کیفیت نیند کی بھی ہے حالت

نیند میں روح جسم سے علیحدہ ہوتی ہے لیکن یہ روح کی جسم سے وقتی علیحدگی کی کیفیت ہے اور روح

کی اس وقتی علیحدگی سے جسم موت کا شکار نہیں ہوتا بلکہ جسم پہ نیند کی کیفیت طاری ہو جاتی ہے۔ ﴿

نیند اور بے ہوشی کی کیفیات جسم میں روح کی عدم موجودگی کی کیفیات ہیں۔ لیکن ان کیفیات میں

روح کی عدم موجودگی کے باوجود انسان زندہ ہوتا ہے یعنی نیند یا بیہوشی کی تمام تر کیفیات موت کی

کیفیات نہیں ہیں۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ نیند یا بے ہوشی کی حالت میں اگرچہ روح اور نفس

(AURA) جسم کو چھوڑ گئے ہیں لیکن مستقل طور پر نہیں۔ ان کیفیات میں اگرچہ ایک مردہ انسان

کی طرح انسان بے حرکت و عمل ہوتا ہے اور روح اور (AURA) اگرچہ جسم سے چلے گئے ہیں

لیکن جسم سے براہ راست رابطے میں ہیں۔ اور اسی رابطے کی وجہ سے جسم میں زندگی موجود ہے۔

اگر روح اور نفس (AURA) جسم سے یہ رابطہ منقطع کر لیں تو نیند یا بے ہوشی موت میں تبدیل

ہو جائیں گی۔ اگر یہ روح اور نفس کا رابطہ جسم سے جڑا رہے تو چاہے برسوں جسم کو مایا بے ہوشی میں

رہے وہ زندہ ہی رہے گا۔

لہذا جسم میں روح کی صرف عدم موجودگی موت نہیں کیونکہ روح تو نیند بے ہوشی وغیرہ کی صورت

جسم میں آتی جاتی رہتی ہے لہذا فالج نیند یا بیہوشی، حادثہ یا بیماری موت کے اسباب نہیں۔ نہ ہی خلیاتی تخریب سے موت واقع ہوتی ہے۔ لہذا روح کی جسم میں عدم موجودگی سے فقط نیند، بے ہوشی وغیرہ کی کیفیات نمودار ہوتی ہیں۔

یعنی روح کی جسم میں فقط عدم موجودگی بھی موت نہیں۔

تو پھر موت کیا ہے؟

## 103۔ موت کیا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿140﴾۔ ﴿روح کی جسم سے مستقل علیحدگی موت ہے۔﴾

جب روح جسم سے مستقل طور پر علیحدہ ہو جاتی ہے تب جسم پر موت واقع ہو جاتی ہے۔

جبکہ بے ہوشی یا نیند کی حالت میں روح اگرچہ جسم سے علیحدہ ہوتی ہے لیکن مستقلاً نہیں بلکہ یہ جسم سے اپنا رابطہ برقرار رکھتی ہے یہی وجہ ہے کہ ان حالات میں روح کی عدم موجودگی کے باوجود اگرچہ جسم بظاہر بے حرکت نظر آتا ہے لیکن وہ نہ صرف زندہ ہوتا ہے بلکہ اس میں حرکت بھی موجود ہوتی ہے۔ روح کی جسم سے وقتی علیحدگی کی وضاحت تو ہوگئی لیکن موت یعنی روح کی جسم سے مستقل علیحدگی کو جاننے کے لئے ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ روح جسم سے کیسے مربوط ہے۔ اور یہ رابطہ موت کی صورت میں مستقل طور پر کب اور کیسے ٹوٹتا ہے۔

## 104۔ روح کا رابطہ

نظریہ نمبر:- ﴿141﴾۔ ﴿روح ایک برقی تار کے ذریعے جسم سے مربوط ہے۔﴾

روح انرجی ہے اور اگرچہ روح خود جسم سے باہر ہے لیکن یہ انرجی یعنی روح خود اور نفس (AURA) کی صورت پورے جسم میں بھی دور کر رہی ہے۔

اور یہ روح و نفس جسم سے ایک برقی تار کے ذریعے جڑا ہوا ہے جسم میں روح کا یہ برقی سسٹم بالکل بجلی کے سسٹم جیسا ہے۔ جیسے بیرونی بجلی تاروں کے ذریعے پورے گھر میں سپلائی ہو رہی ہوتی ہے بالکل اسی طرح روح کی بیرونی انرجی ایک برقی سسٹم کے تحت جسم کے اندر کام کر رہی ہے۔

لہذا جب روح و نفس (AURA) نیند یا بے ہوشی کی صورت میں جسم سے نکلتے ہیں تو یہ برقی تار یا

انٹینا جسم سے جڑا رہتا ہے۔ اور اسی مسلسل برقی رابطے کے ذریعے روح و نفس جسم سے باہر ہونے کے باوجود مادی جسم سے مسلسل مربوط رہتے ہیں۔ مادی جسم اور روح و نفس کے اس رابطے کی مثال بالکل ٹی وی اور اس کے انٹینے جیسی ہے۔ لہذا اسی برقی رابطے کی وجہ سے جسم برسوں کو مابین پڑے رہنے کے باوجود زندہ ہوتا ہے۔

روح ایک برقی تار کے ذریعے جسم سے مربوط تو ہے لیکن کیا کسی حادثے یا بیماری سے یہ رابطہ ٹوٹتا ہے؟

اس کا جواب ہے نہیں۔

کسی حادثے یا بیماری سے یہ رابطہ نہیں ٹوٹ سکتا تو پھر یہ رابطہ کب ٹوٹتا ہے؟ اور کیسے ٹوٹتا ہے؟

## 105۔ موت کا وقت

نظر یہ نمبر:- ﴿142﴾۔ ﴿مسودہ زندگی (تقدیر) کا اختتام موت کا وقت ہے۔﴾

یعنی موت پہلے سے طے شدہ پروگرام کے مطابق اپنے وقت پر واقع ہوتی ہے۔

جب ہم یہ کہتے ہیں کہ کل یہ انسان ٹھیک ٹھاک تھا اور آج یہ اچانک دل کا دورہ پڑنے سے یا حادثے میں مر گیا تو موت کے بارے میں ہمارا یہ تصور ٹھیک نہیں ہے۔

کسی بھی حادثے یا بیماری سے انسان اچانک نہیں مرتا بلکہ اس کی موت تو پہلے سے طے شدہ

پروگرام ہے۔ انسانی زندگی کی ابتداء سے انتہا یعنی انسان کی زندگی کے پہلے دن سے موت تک کا

پروگرام اس کی تقدیر میں لکھا ہوا تھا اور روح تقدیر کا یہ ریکارڈ پروگرام جسم کو بھیج رہی تھی اور روح

کے اسی پروگرام پہ انسان اپنے (نفس) ارادے سے رد و بدل کر کے حرکت و عمل کر رہا تھا۔ انسان

کو روح کی طرف سے جو حرکت و عمل کا پروگرام مل رہا تھا جب وہ تحریر شدہ پروگرام (تقدیر) مکمل

ہو گیا، ختم ہو گیا لہذا اب روح کی طرف سے جسم کو حرکت و عمل کے لیے کوئی پروگرام کوئی اطلاع نہی

ملے گی لہذا جسم میں نہ تو کوئی حرکت نمودار ہوگی نہ ہی انسان اپنے ذاتی ارادے کے استعمال کے

قابل رہا ہے۔ لہذا روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) کا اختتام دراصل زندگی کا اختتام ہے۔ اور

مسودہ زندگی کا اختتام دراصل موت کا وقت ہے۔ یہ مسودہ زندگی پہلے سے مرتب مخصوص صفحات کی

کتاب تھی جس کا اب اختتام ہو گیا ہے۔  
 اسی مرتب تحریر یعنی تقدیر کے موصول ہونے کے بعد انسان اپنے ذاتی ارادے سے اس میں رد و بدل کر کے عمل کر رہا ہے اور اس کا یہ عمل ریکارڈ ہو رہا ہے۔ لہذا یہ مخصوص صفحات کی کتاب ختم ہوئی تو انسان کی زندگی کی ریکارڈنگ بھی ختم ہو گئی یعنی زندگی کی فلم مکمل ہو گئی لہذا زندگی کا اختتام ہو گیا۔ اب زندگی کے اختتام پر موت کے عمل کا آغاز ہوگا۔

## 106۔ ری وائینڈ

نظریہ نمبر: ﴿143﴾۔ ﴿زندگی کی فلم مکمل ہونے کے بعد ری وائینڈ ہوگی﴾۔  
 روح کے پاس انسانی زندگی کی حرکت و عمل کا مکمل مرتب پروگرام (تقدیر) ہے۔ اسی تحریری اطلاع کے ملنے کے بعد انسان اس اطلاع میں مثبت یا منفی رد و بدل کر کے حرکت و عمل کرتا ہے اور یوں اس کی حرکت و عمل، اعمال کی صورت میں ریکارڈ ہوتی جاتی ہے۔ لہذا جب حرکت و عمل کا یہ مرتب پروگرام اختتام کو پہنچتا ہے تو جسمانی حرکت و عمل کا بھی اختتام ہو جاتا ہے۔ لہذا جیسے ہی روح کے مرتب پروگرام سے آخری عمل کی اطلاع آ جاتی ہے اور اس اطلاع پہ آخری عمل بھی مکمل ہو جاتا ہے تو یہ فلم مکمل ہو جاتی ہے۔

اور یہ اعمال کی فلم تکمیل کے بعد ری وائینڈ ہوتی ہے۔

جیسے کیمرے کی آخری تصویر کھینچ جانے کے بعد فلم خود بخود ری وائینڈ ہوتی ہے بالکل اسی طرح زندگی کی فلم مکمل ہو چکنے کے بعد ری وائینڈ ہوتی ہے۔ جب ہم وی سی آر پر فلم دیکھتے ہوئے اسے ری وائینڈ کرتے ہیں تو ہماری نظروں کے سامنے سے کئی گھنٹوں کی فلم کے مناظر بڑی تیز رفتاری کے ساتھ منٹوں میں گذر جاتے ہیں۔ بالکل اسی طرح جب انسانی فلم مکمل ہونے کے بعد ری وائینڈ ہوتی ہے تو ہم اس کا مشاہدہ کرتے ہیں اور پوری زندگی کے گذشتہ تمام واقعات تیزی سے نظروں کے سامنے سے گذرتے ہیں۔ لہذا یہ وقت ہے زندگی کے اختتام کا۔

اب زندگی کی فلم مکمل ہو کر ری وائینڈ بھی ہو گئی اب کیا ہوگا۔

## 107۔ فیتہ کاٹ دیا گیا

نظریہ نمبر:- ﴿144﴾ - ﴿موت کے آرڈر پر برقی تار کاٹ دیا گیا۔﴾  
 زندگی کی فلم مکمل ہونے کے بعد جب ری وائینڈ ہو چکی تو موت کے آرڈر پر اس زندگی کی فلم کا فیتہ کاٹ دیا گیا۔

اس برقی تار (رگِ دل) کے کٹتے ہی روح و نفس جو اس برقی تار سے جسم سے جڑے تھے الگ ہو گئے۔ روح جسم سے نکل گئی اس برقی تار کے کٹتے ہی روح و جسم کا رابطہ مستقل طور پر منقطع ہو جاتا ہے۔ اور یہی روح و جسم کی مستقل علیحدگی موت ہے۔ روح جو جسم کی انرجی جسم کی حرکت و عمل کا پروگرام تھی وہ جسم سے نکل گئی وہ برقی تار کاٹ دی گئی جس کے ذریعے روح کی بجلی پورے جسم میں دوڑ رہی تھی اس برقی تار کے کٹنے سے جسمانی بجلی کا سسٹم ختم ہو گیا۔ اس برقی تار کے کٹتے ہی روح جسم کو خیر باد کہہ دے گی اور یہی موت ہے۔ ورنہ بے ہوشی یا نیند کی حالت میں اگرچہ روح جسم سے چلی جاتی ہے لیکن اس برقی تار کی وجہ سے روح و جسم کا رابطہ قائم رہتا ہے۔ لہذا جب تک روح جسم سے یہ برقی رابطہ جوڑے رکھتی ہے تو انسان چاہے برسوں بے ہوش رہے وہ زندہ رہتا ہے۔ لیکن جب روح کا یہ برقی کنکشن کٹ جاتا ہے تو جسم موت کا شکار ہو جاتا ہے۔ چاہے وہ جسم تندرست و توانا ہی کیوں نہ ہو۔ اس برقی کنکشن کے کٹتے ہی یہ تندرست و توانا جسم بے حرکت و عمل ہو جائے گا۔ ختم ہو جائے گا۔ لہذا جب زندگی کی فلم مکمل ہو گئی تو فیتہ کاٹ دیا گیا لیکن ابھی موت کا عمل مکمل نہیں ہوا اب دیکھنا یہ ہے کہ برقی تار کے کٹنے کے بعد کیا ہوا؟ یہ فیتہ کٹ جانے کے بعد بھی موت کا عمل جاری ہے۔

## 108- موت کا عمل

نظریہ نمبر:- ﴿145﴾ - ﴿جسم سے روح کے نکلنے کا عمل موت کا عمل ہے۔﴾  
 لہذا برقی تار کے کٹتے ہی روح جسم سے نکل رہی ہے۔ چونکہ جسم پر موت روح کے نکلنے سے واقع ہوتی ہے لہذا موت کا عمل جسم سے روح کے نکلنے کا عمل ہے۔ لہذا وہ روح جو جسم کے ہر یونٹ ہر خلیے میں تھی اسی روح کے جسم کے ہر خلیے ہر رگ و ریشے سے نکلنے کا عمل موت کا عمل ہے۔ اور جسم کے ہر رگ و ریشے سے روح کے نکلنے کا عمل ایک طویل اور پیچیدہ عمل ہے۔

جب کسی اچانک حادثے یا بیماری کے سبب کوئی مرجاتا ہے اور ہم اس کی موت کا اعلان کر دیتے

ہیں تو اس اچانک موت کا سبب ہرگز کوئی حادثہ یا بیماری نہیں بلکہ موت کا پروگرام تو طے شدہ پروگرام تھا۔ یہ جسے ہم اچانک موت کہہ رہے ہیں جس کا سبب ہم نے بیماری یا حادثہ قرار دیا ہے اس موت کا عمل تو بہت پہلے سے شروع ہو چکا ہے اور موت کے اعلان کے بعد بھی جاری ہے۔ جسم موت کا شکار ہوتا ہے اور جیسے طویل تخلیقی مراحل سے گذر کر جسم عدم سے وجود میں آیا تھا اسی طرح اب یہ جسم موت کے طویل مراحل سے گذر کر وجود سے عدم ہوگا۔ لہذا موت کا عمل شروع ہو رہا ہے برقی تار کے کٹنے سے۔ لہذا برقی تار کے کٹتے ہی روح جسم سے نکل رہی ہے۔

## 109۔ روح کی واپسی

نظریہ نمبر: ﴿156﴾۔ ﴿روح ناک کے راستے جسم سے باہر نکلے گی﴾۔  
 روح کوئی ٹھوس شے نہیں روح جسم میں ایسے ہی ہے جیسے بجلی پورے گھر میں تاروں کے ذریعے دوڑ رہی ہے ہر شے بجلی سے متحرک و روشن ہے۔ ایسے ہی روح بجلی کی طرح جسم کے ہر خلیے ہر یونٹ میں دوڑ رہی ہے۔ ہر خلیے ہر عضو کو متحرک، منظم، مربوط اور زندہ رکھے ہوئے ہے۔ اب ہر خلیے سے روح نکلے گی۔ یعنی جسم کا ہر ذرہ ہر خلیے جسم کی موت کے ساتھ انفرادی موت کا شکار بھی ہو گا۔ لہذا جسم کے ہر ذرے ہر خلیے میں ٹوٹ پھوٹ، کھنچاؤ، بے چینی، ہرگ و ریشے میں تکلیف ہوگی۔ گھٹن گھبراہٹ اور بے چینی کی کیفیت میں آنکھیں پھیل کر چاروں طرف گھومنے لگتی ہیں۔ کہ ہے کوئی بچاؤ کا راستہ، ہے کوئی جھاڑ پھونک کرنے والا۔ اب وہ حال ہے کہ جھاڑ پھونک کو بد عقیدگی تصور کرنے والے اس پر بھی آمادہ نظر آتے ہیں۔ مرنے والے کی خواہش ہے کہ وہ کسی بھی قیمت پر اس کیفیت سے چھٹکارا پاسکے۔  
 جسم کھینچ کر اکٹھا ہو رہا ہے۔  
 پنڈلی سے پنڈلی لپٹ رہی ہے۔

یہ تمام تر کیفیات جسم سے روح کے اخراج کی ہیں۔ جسم کے ہرگ و ریشے سے روح نکلنے کا عمل ایسے ہی ہے جیسے کانٹے دار جھاڑی پہ باریک کپڑا ڈال دیا جائے اور پھر اسے کھینچنے کی کوشش کی جائے اور اس کوشش میں وہ تار تار ہو جائے۔ اب جو روح جسم کے ہرگ و ریشے سے کھینچی جا رہی



ہے تو جسم کی کیفیت اسی بوسیدہ کپڑے کی سی ہے یعنی تارتار۔ لہذا جسم سے روح نکل رہی ہے تو سب سے پہلے ٹانگوں سے جان نکلے گی  
ٹانگوں سے نکلنا شروع ہوگی اور اوپر کی طرف سر کے گی۔  
لہذا ہر خلیے ہر جوڑ سے سرکتے سرکتے اب یہ جان (روح) گلے تک آ پہنچی۔

### جان (روح) گلے تک آ پہنچی

اب گلے میں ایسا محسوس ہو رہا ہے جیسے کچھ اٹک رہا ہے گلے میں کوئی گولا سا پھنس رہا ہے جس کی وجہ سے سانس رکتی محسوس ہو رہی ہے۔ کھینچ کر سانس لینا پڑ رہا ہے۔ یہ گلے میں جو گولا سا پھنس رہا ہے یہ آپ کی جان (روح) ہے جو گلے تک آ پہنچی۔ لہذا اب یہ جان (روح) گلے سے مزید آگے سر کے گی تو سر میں آ جائے گی اور پھر سر کے درمیان سے سرک کر یہ پیشانی کے بیچ میں یعنی پیشانی میں آ جائے گی۔ اب ایسا محسوس ہو رہا ہے کہ پیشانی کے بیچ میں خلاء سا بن گیا ہے ماتھا ٹھنڈا محسوس ہو رہا ہے۔ اب روح (جان) پیشانی سے مزید آگے سر کے گی اور پیشانی سے سرک کر ناک میں آگئی۔

### ناک میں آگئی

اب یہ کیفیت ہے کہ روح ناک کے راستے نکلنا ہی چاہتی ہے۔ یہ کیفیت کچھ ایسی ہے جیسے زکام کے وقت ناک سے پانی ٹپکتا ہے۔ ناک سے پانی ٹپکنے کے احساس کے ساتھ انسان جلدی سے ناک کے نیچے ہاتھ رکھ لیتا ہے۔ اب بالکل یہی کیفیت ہے۔ اب روح ناک کے راستے نکلنا ہی چاہتی ہے۔ لہذا روح نکلنے کے احساس کے وقت غیر اختیاری طور پر انسان ایسے ہی ناک کے نیچے ہاتھ رکھ لیتا ہے جیسے پانی ٹپکنے کے احساس سے رکھ لیتا ہے۔ بعض اوقات یوں محسوس ہوتا ہے جیسے یہ نتھنوں کو چیر کر نکلنا چاہتی ہے۔ لہذا برقی تار کٹتے ہی روح ناک سے باہر ہو جائے گی۔ اور انسانی مادی جسم محض لمبا سا سانس کھینچ کر بے جان رہ جائے گا۔ بغیر روح کے! جیسے کسی بھی مشین میں فقط ایک بٹن بند کرنے سے بجلی یکلخت بند ہو جاتی ہے بالکل اسی طرح ایک آرڈر (موت کا حکم) کے ذریعے موت پیروں سے ابتدا کر کے ناک کے ذریعے یکلخت جسم سے باہر نکل جاتی ہے۔ بالکل بجلی یا ہوا کی طرح یہ عمل سیکنڈوں کا ہے۔

لیکن یہ لمحوں کا عمل لمحوں میں بھی ظہور میں آ سکتا ہے اور یہ لمحوں کا عمل ہفتوں مہینوں پر بھی مشتمل ہو سکتا ہے۔ اچھے لوگوں کی روح لمحوں میں ہوا کی طرح نکل جاتی ہے۔ برے لوگوں کی روح ہفتوں، مہینوں میں جوڑ جوڑ سے سرکتی ہے جیسے کانٹے دار جھاڑی سے باریک کپڑا گھسیٹا جا رہا ہو۔

جوڑ جوڑ میں تکلیف

گھبراہٹ بے چینی کبھی ایک حصے سے جان گئی تو ہفتوں بعد دوسرے سے۔ یعنی لمحوں کا عمل مہینوں پہ محیط ہو گیا۔

اب وہ روح جو بجلی کی طرح پورے جسم میں دوڑ رہی تھی وہ روح برقی تار کے کٹتے ہی جسم کے ہر رگ وریشے سے (طویل مراحل طے کر کے) خارج ہو گئی۔

لیکن روح کے خارج جسم ہو جانے کے بعد بھی موت کا عمل مکمل نہیں ہوا بلکہ جسم میں ابھی موت کا عمل جاری ہے۔

جسم سے روح نکلنے کا عمل تو مکمل ہو گیا اب دیکھنا یہ ہے کہ اس کے بعد موت کا کونسا مرحلہ باقی ہے۔

## 110۔ جسم سے روح نکل جانے کے بعد

نظریہ نمبر۔ ﴿147﴾۔ ﴿جسم سے روح نکل جانے کے بعد جسم مزید دو کیفیات کا شکار ہو گا۔ یا جسم سے روح نکل جانے کے بعد جسم پہ مزید دو کیفیتیں نمودار ہوں گی

(i)۔ بے حرکت۔

(ii)۔ انتشار۔ ﴿

(i)۔ بے حرکت

نظریہ نمبر۔ ﴿148﴾۔ ﴿جسم سے روح کے اخراج کے بعد جسم کی پہلی کیفیت حرکت و عمل کا

مفقود ہونا ہے۔ ﴿

روح کے جسم سے خارج ہو جانے کے بعد مادی جسم پر جو پہلی کیفیت طاری ہوتی ہے وہ حرکت و

عمل کا مفقود ہونا ہے۔ ایک چلتا پھرتا، سوچتا سمجھتا، حرکت کرتا وجود روح کے خارج جسم ہو جانے سے یکنخت بے حرکت ہو جاتا ہے۔ بے عمل ہو جاتا ہے۔ کو ما بے ہوشی یا نیند کی کیفیت میں اگرچہ بظاہر جسم بے حرکت ہوتا ہے لیکن جسم میں جان اور حرکت موجود ہوتی ہے۔ جبکہ روح کے جسم سے مستقل اخراج کے بعد جسم بالکل بے حرکت ہو جاتا ہے۔ اب اس جسم کے ٹکڑے ہی کیوں نہ کر دیں اس میں کوئی حرکت پیدا نہیں ہو سکتی۔ لیکن فقط حرکت و عمل کے مفقود ہونے سے موت کا عمل مکمل نہیں ہو جاتا بلکہ موت کا عمل ابھی جاری ہے۔ موت کے عمل کا اگلا مرحلہ ہے انتشار۔

## (ii) - انتشار

نظریہ نمبر۔ ﴿149﴾ - ﴿جسم سے روح نکل جانے کے بعد موت کا دوسرا مرحلہ ہے انتشار یعنی مادی جسم میں تغیر کا رونما ہونا۔﴾

روح کے جسم سے خارج ہونے کے بعد دوسری کیفیت جو شروع ہوتی ہے وہ ہے خلیوں کا انتشار۔ جسم کا جوڑ جوڑ خلیہ خلیہ منتشر ہونے لگتا ہے جو خلیے روح کی وجہ سے مرکب تھے روح کے جسم سے جانے کے بعد اب وہ مرکب نہیں رہ سکتے لہذا خلیہ خلیہ منتشر ہو گیا بکھر گیا اور اس انتشار کے نتیجے میں وجود وجود نہ رہا بے نشان ہو گیا کچھ بھی نہ بچا۔

کچھ عرصے بعد ڈھونڈیے نظر آنے والے گوشت پوست کے وجود کا نشان بھی نہ ملے گا کہ کہاں گیا کیسے گیا۔ روح کے نکلنے ہی یہ کیسا انتشار برپا ہوا ہے کہ

وجود کا وجود ہی نہ رہا۔ (زندگی میں خلیوں کی تخریب اور موت واقع ہونے کے بعد خلیوں کی تخریب میں فرق ہے۔ زندگی میں خلیوں کی تخریب کے عمل میں تمام خلیے یکدم نہیں مرتے بلکہ یکے بعد دیگرے مرتے اور تعمیر ہوتے رہتے ہیں یہ خلیوں کی تعمیر و تخریب موت کا نہیں بلکہ زندگی کا عمل ہے لہذا کو ما میں برسوں پڑا رہنے والا وجود جوں کا توں موجود ہوتا ہے جبکہ موت کی صورت میں روح کے مستقل طور پر خارج از جسم ہو جانے کے بعد تمام تر خلیے مر جاتے ہیں اور ان کی جگہ خلیوں کی دوبارہ تعمیر نہیں ہوتی۔ تمام تر خلیے مر کر مستقل طور پر فنا ہو جاتے ہیں۔

یہی وجہ ہے کہ موت کے بعد انتشار کا پروگرام مکمل ہوتا ہے تو پورے وجود کا نشان بھی نہیں بچتا حتیٰ کہ گوشت پوست کے علاوہ ہڈیاں تک اس انتشار کا شکار ہو جاتی ہیں۔ پورا وجود ایسے زروں میں

بکھرتا ہے کہ کچھ دنوں میں ہی پورے وجود کا کہیں نشان بھی نہیں ہوتا۔ موت کی صورت میں روح کے مستقل طور پر خارج از جسم ہونے سے موت کی یہ دونوں کیفیات جنم لیتی ہیں اور موت کا عمل مکمل ہوتا ہے اور اسی کو موت کہتے ہیں۔ ورنہ برسوں لوگ بے حرکت و عمل پڑے رہتے ہیں لیکن ان کا وجود برقرار رہتا ہے برسوں کو ما میں رہتے ہیں لیکن نہ تو مرتے ہیں نہ وجود منتشر ہوتا ہے اس لئے کہ ان پر موت طاری نہیں ہوئی روح جسم میں موجود ہے۔ لہذا موت کا عمل واقع نہیں ہوا لہذا فقط بے حرکت و بے عمل ہونے سے بھی موت واقع نہیں ہوتی یا موت بے حرکت و عمل ہو جانے کا نام بھی نہیں ہے۔ جب تک موت کا عمل مکمل نہیں ہوگا موت واقع نہیں ہوگی چاہے کوئی بھی حادثہ ہو جائے۔ لہذا

۱۔ جسم کے ہر یونٹ ہر خلیے کے پاس روح کا پروگرام تھا۔

۲۔ جسم روح کی وجہ سے زندہ تھا۔

۳۔ خلیوں کو باہم مرکب کر کے جسم ترتیب دینے والی بھی روح تھی۔

لہذا روح کی عدم موجودگی سے

۱۔ خلیہ اپنا کام نہیں کر سکتا۔

۲۔ زندہ نہیں رہ سکتا۔

۳۔ تمام خلیات باہم مربوط نہیں رہ سکتے۔

لہذا روح کی مستقل عدم موجودگی یعنی موت کی صورت میں

جسم میں کوئی حرکت و عمل واقع نہیں ہو سکتی،

جسم جسمانی حالت میں مربوط نہیں رہ سکتا،

یعنی موت کی صورت میں جسم نہ صرف یہ کہ بے حرکت و عمل ہو جاتا ہے بلکہ وجود، وجود سے عدم ہو

جاتا ہے۔ فنا ہو جاتا ہے۔

یہی موت ہے۔ جسم کی موت۔

## 111۔ موت کا خلاصہ

اب یہاں تک پہنچ کر موت کی تعریف مکمل ہوئی۔

ہم تفصیلاً مرحلہ وار بیان کر آئے ہیں کہ جسم پہ موت کیسے واقع ہوتی ہے جس کا خلاصہ درج ذیل ہے۔

آج تک موت کی وجوہات خلیوں کی انتہائی تخریب، حادثہ، بیماری وغیرہ بیان کی جاتیں رہیں ہیں۔

جبکہ یہاں نئے نظریات کے ذریعے موت کی تعریف کرتے ہوئے ہم نے وضاحت کی ہے کہ

۱۔ موت کا سبب خلیاتی تخریب، حادثہ، بیماری (یادیگر وجوہات) نہیں ہیں۔

۲۔ موت کا واحد سبب روح کی جسم سے مستقل علیحدگی ہے۔ لہذا جب روح جسم کو مستقل طور پر چھوڑ جاتی ہے تو جسم موت کا شکار ہو جاتا ہے۔

۳۔ انسانی موت کسی بھی حادثے یا بیماری کی وجہ سے اچانک واقع نہیں ہو جاتی بلکہ موت ایک طویل اور پیچیدہ مرحلہ ہے جو بہت پہلے سے طے شدہ پروگرام ہے۔

لہذا اچانک نہیں بلکہ طے شدہ وقت پہ موت کا عمل شروع ہو جاتا ہے۔

یعنی کوئی نہیں جانتا کہ یہ صبح وصال شخص اچانک مرنے والا ہے نہ ہی اس کی طبعی موت کا اعلان ہوا ہے لیکن موت کا وقت (یعنی روح کی واپسی) آ گیا ہے لہذا صبح وصال شخص کے اندر موت کا عمل شروع ہو گیا ہے لہذا

۴۔ کتاب تقدیر کا اختتام ہوا۔

۵۔ اب روح کے مرتب پروگرام (تقدیر) سے عمل کی آخری اطلاع آئے گی۔

۶۔ آخری عمل مکمل ہوتے ہی۔

۷۔ زندگی کی فلم ری وائنڈ ہوگی۔

۸۔ پھر برقی تار (رگِ دل) کاٹ دی جائے گی۔

۹۔ روح جسم سے الگ ہو جائے گی۔

۱۰۔ روح ناک کے راستے جسم سے باہر نکلے گی۔

۱۱۔ برقی تار کے کٹتے ہی جسم کے ہر رگ و ریشے سے روح نکلنے کا عمل لمحوں میں بھی مکمل ہو سکتا ہے اور ہفتوں مہینوں پہ مشتمل تکلیف دہ اور طویل مرحلہ بھی ہو سکتا ہے۔

جسم سے روح نکل جانے کے بعد یعنی موت کے اعلان کے بعد

۱۲۔ جسم ہمیشہ کے لیے بے حرکت و عمل ہو جاتا ہے۔

۱۳۔ جسم کا ہر ہر خلیہ جو روح کی وجہ سے مربوط تھا، منتشر ہو جاتا ہے۔ اور وجود و جوہر سے عدم ہو جاتا

ہے

یہی موت ہے۔

موت جسم کے بے روح، بے حرکت و عمل اور بے نشان ہو جانے کا نام ہے۔

## 112۔ جسم کی موت

نظر یہ نمبر۔ ﴿150﴾۔ لیکن یہ موت فقط جسم کی موت ہے۔ جسم موت کا شکار ہوا ہے انسان

نہیں۔ ﴿

انسان تو ابھی زندہ ہے، موجود ہے۔

موت جسم کے بے روح، بے حرکت اور بے نشان ہو جانے کا نام ہے اور اس موت کا شکار فقط مادی

جسم ہوا ہے۔

اور انسان محض مادی جسم نہیں ہے۔

انسان روح + نفس + مادی جسم کا مجموعہ ہے۔

ابھی تو محض مادی جسم کی موت ہوئی ہے ابھی باقی انسان یعنی روح و نفس تو باقی ہیں۔

وہ کہاں گئے۔؟

یہ جاننا ابھی باقی ہے۔

# زندگی کے بعد زندگی

- ۱۔ کیا انسان کا اختتام ہو گیا
- ۲۔ زندگی کے بعد زندگی
- ۳۔ زندگی اور موت کے تجربات
- ۴۔ موت کے بعد

## 113- کیا موت کی صورت انسان کا اختتام ہو گیا

نظریہ نمبر:- ﴿151﴾ - ﴿انسان کبھی نہیں مرتا اجسام مرتا جاتے ہیں﴾ -

جی ہاں ابھی فقط جسم کی موت ہوئی ہے انسان کی نہیں۔ اس لیے کہ انسان محض جسم نہیں۔

موت جسم کے بے روح بے حرکت اور پھر بے نشان یعنی فنا ہو جانے کا نام ہے اس موت کا شکار فقط مادی جسم ہوتا ہے۔

کیا مادی جسم کے ساتھ انسان کا خاتمہ ہو جاتا ہے؟ اس کا جواب ہے نہیں انسان کبھی نہیں مرتا یا اصل انسان یعنی اس کی روح کبھی نہیں مرتی۔

اس کا ثبوت وہ خواب یا روحانی واقعات ہیں جن میں ہم اپنے مردہ عزیز واقارب کا مشاہدہ زندوں کی طرح کرتے ہیں۔ اگر ہم یہ کہہ دیں کہ یہ خواب یا مشاہدات و واقعات فریب نظر ہیں یا وہم ہیں تو یہ بے انتہا بے عقلی کی بات ہے۔

۱۔ اول تو جو شے ہے جس کا تصور ہے خیال ہے یا وہم ہے وہ موجود ہے۔

۲۔ دوم یہ کیسا وہم اور فریب ہے جس میں پوری دنیا کے لوگ ہمیشہ سے مبتلا ہیں یہ وہم اور فریب تو ہر شخص کو ہمیشہ سے ہے۔

جس طرح ہم ٹی وی پر متحرک تصویروں کے بارے میں یہ نہیں کہہ سکتے کہ یہ محض وہم ہے نظر کا دھوکہ یا خود فریبی ہے کہ جس سے یہ تصویریں ہمیں متحرک نظر آ رہی ہیں۔ ہم اس لئے اس عمل کو جھٹلا نہیں سکتے کہ ہم سب ان متحرک تصویروں کے وجود اور وجوہات سے آگاہ ہیں کہ کس طریقے سے یہ فلم ہمیں متحرک نظر آ رہی ہے۔ اگر کوئی اسے وہم قرار دے یا فریب نظر تو ہم بلاشبہ اسے قبل مسیح کا کوئی فرد سمجھیں گے جو علم اور عقل سے عاری کسی غار سے اٹھ آیا ہے۔ اس غار سے اٹھ آنے والے آدمی جیسی ہی کیفیت آج ہماری ہے اس لئے کہ ایسی ہی فلم سے مشابہ خواب یا ماورائی واقعات کے مسلسل تاریخی تسلسل کو ہم محض اس لئے جھٹلا دیتے ہیں کہ یہ ہمارے علم کی ذمہ میں نہیں آتے ہم تجربے و مشاہدے میں آنے والے ان بے شمار واقعات کو محض اس لئے فریب نظر قرار دیتے ہیں کیونکہ ہم اس عمل کی حقیقت سے ناواقف ہیں۔ جبکہ یہ انکار محض لاعلمی پر مبنی غیر حقیقی رویہ ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ ہم مردہ اجسام کے علاوہ اصل انسان اور اس کی حقیقت اور خصوصیات تک سے نا



آشنا ہیں۔ یعنی ہم اپنے آپ ہی سے بے خبر ہیں۔ ہم روح و نفس سے ناواقف ہیں یعنی اپنے آپ سے ناواقف ہیں۔ جبکہ ہمارے نفس یا روح کی آنکھیں جو دراصل ہماری آنکھیں ہیں خواب کی حالت میں کسی اور ہی دنیا (روح و نفس کی دنیا) میں جھانک رہی ہیں ہم کہیں اور کسی اور ہی حالت میں موجود ہیں کسی اور ہی دنیا میں موجود ہیں وہاں ہم گھوم پھر رہے ہیں اپنے مردہ عزیز و اقارب کو دیکھ رہے ہیں ان سے ملتے ہیں گفت و شنید کرتے ہیں اور بہت سے مشاہدے کرتے ہیں۔ اور حالت بیداری میں غافل شعور جو ان حرکات و اعمال کے محرک سے ناواقف ہے اسے حقیقت تسلیم کرنے میں تعامل کرتا ہے اور اسے خواب کا نام دے دیا جاتا ہے۔

حقیقت یہ ہے کہ انسان کا محض جسم موت کا شکار ہو کر فنا ہوتا ہے ورنہ انسان تو ہمیشہ زندہ رہتا ہے اپنی تمام تر خصوصیات کے ساتھ بلکہ جسمانی موت کے بعد روح و نفس کے انتقال کے بعد انسانی خصوصیات میں مزید اضافہ ہوتا ہے۔ فقط وہ جسم مردہ ہوتا ہے جس میں رہتے ہوئے انسان اپنا مظاہرہ کر رہا تھا۔ جسم مردہ ہوا

ہے انسان جوں کا توں موجود ہے ہاں وہ جسم کی موت کی صورت میں کہیں اور منتقل ہو گیا ہے۔ یہ جسم تو فقط لباس تھا جو انسان نے اتار پھینکا۔ اور خود تو انسان اپنی منزل کی طرف گامزن ہے۔ انسان کہیں سے آیا ہے اور کہیں جا رہا ہے۔

## 114۔ زندگی کے بعد زندگی (Life After Life)

ڈاکٹر ریمینڈ موڈی نے اپنی کتاب لائف آفٹر لائف میں ایک سو پچاس کے قریب مرکز زندہ ہوئے لوگوں کا تذکرہ کرتے ہوئے موت کے بعد کے مشاہدات میں پندرہ مشترک باتوں کا ذکر کیا ہے جن کا خلاصہ کچھ یوں ہے۔ موت کی صورت میں انسان انتہائی کرب سے دوچار ہوتا ہے اور پھر وہ موت کے بعد اپنے آپ کو اپنے جسم کے پاس کھڑا پاتا ہے یعنی موت کے بعد اب وہ جسم سے باہر ہے اور اپنے جسم کو دیکھ رہا ہے۔ کمرے میں اپنے دیگر مردہ رشتے داروں کو اپنے استقبال کے لئے موجود پاتا ہے ایک اجنبی اس کو انجان منزل کی طرف لیکر چل پڑتا ہے۔

وہ ہوا میں اڑ رہا ہے تاریک غار سے گزرتا ہے غار کے دوسری طرف روشنی ہے وہاں اس کی ملاقات نوری ہستی سے ہوتی ہے جو اس سے اس کی زندگی کے متعلق سوال کرتی ہے اور پھر اس کی

پوری زندگی اس کی آنکھوں کے سامنے کسی فلم کی طرح آ جاتی ہے۔

ڈبلیو ایچ مائرز (Fredric W. H. Myers) نے اپنی کتاب Human Personality and its survival of Bodily Death میں سینکڑوں واقعات کا سائنسی تجزیہ کرنے کے بعد یہ نتیجہ اخذ کیا کہ جسمانی موت کے بعد انسان کی شخصیت کا وہ حصہ باقی رہتا ہے جسے سپرٹ (Spirit) کہتے ہیں۔

افلاطون کی تحریروں میں موت کے تجربات کثرت سے بیان ہوئے ہیں مثال کے طور پر افلاطون کہتا ہے کہ زندہ آدمی کا مادی جسم جب روحانی وجود سے الگ ہو جاتا ہے تو یہ مردہ حالت میں چلا جاتا ہے اور انسان کا روحانی وجود اپنے مادی جسم کی پابندیوں سے مبرا ہو جاتا ہے جو اس مادی بدن کی وجہ سے ہیں۔ یعنی یہ مادی بدن اپنے بوجھ کی وجہ سے حرکت اور رفتار وغیرہ کے سلسلہ میں محدود ہے لیکن روحانی وجود ان بندھنوں سے آزاد ہے افلاطون کا وقت کے بارے میں یہ نظریہ تھا کہ یہ اس طبعی زندگی ہی کا ایک عنصر ہے۔ اور موت کے بعد والی زندگی میں وقت کوئی حیثیت نہیں رکھتا۔ وہاں یہ دوسرے ابدی عناصر ہیں۔ جو وقت پہ بھی غالب ہیں۔ یعنی موت کے بعد ہم ابدیت میں داخل ہو کر وقت کو پیچھے چھوڑ جاتے ہیں۔

نیز انسانی نفس جب مادی جسم سے الگ کیا جاتا ہے تو اس کی ملاقات ان نفوس سے ہوتی ہے جو اس سے پہلے دنیا سے جا چکے ہوتے ہیں۔ وہ ان سے بات چیت بھی کرتا ہے اور وہ بھی اس سے دنیا کے حالات معلوم کرتے ہیں۔ وہ نو وارد کی تسلی تشفی بھی کرتے ہیں اور درپیش آئندہ سفر میں اس کی رہنمائی بھی کرتے ہیں۔ نیز مرنے والے نفوس کے ذہن میں ہوتا ہے کہ موت کے وقت ایک کشتی آئے گی جو ان کو اس دنیا کے پار دوسرے کنارے تک لے جائے گی جہاں انہیں موت کے بعد رہنا ہوگا۔ افلاطون اپنی تحقیق سے یہ نتیجہ نکالتا ہے کہ یہ ارضی جسم انسان کے لئے ایک قید خانہ ہے۔ موت ان قیود سے آزادی کا نام ہے۔ اور پھر انسان ایک وسیع تر جہان میں پہنچ کر سکھ کا سانس لیتا ہے۔ افلاطون کے مطابق یہ دنیاوی زندگی نہ سمجھی کی زندگی ہے اپنی پیدائش سے پہلے انسانی نفس شعور کی اونچی منازل پہ قائم ہوتا ہے۔ وہاں سے اتر کر وہ اس مادی جسم میں داخل ہو جاتا ہے اور یہ ہستی (مادی جسم) اس کے لئے سو جانے والی بات کی مانند ہے دنیاوی جسم میں داخل ہونے سے پہلے انسانی نفس کے پاس جو اونچا اور اک تھا وہ مادی جسم کی کثافت کی وجہ سے

دخندلا جاتا ہے اور وہ سب حقائق اور سچائیاں جو اس سے پہلے معلوم تھیں انہیں بھول جاتا ہے۔ اس لئے موت درحقیقت جاگنے پرانی یادیں واپس لانے کا نام ہے۔ جس کے بعد انسان کا شعور بہت تیز ہو جاتا ہے۔

موت تجدید مذاقِ زندگی کا نام ہے  
خواب کے پردے میں بیداری کا اک پیغام ہے

(اقبال)

افلاطون کے مطابق انسانی نفس جب مادی جسم سے علیحدہ ہوتا ہے تو وہ چیزوں کی فطری حقیقت کو سمجھنے کا بہت شعور رکھتا ہے۔

پاوری لیڈ بیٹراپنی کتاب (Invisible Helpers) میں لکھتا ہے موت کے بعد آسٹریل باڈی آسٹریل ورلڈ میں چلی جاتی ہے اگر مرنے والا بدکار ہو تو وہ زمین کے پاس بھٹکتا رہتا ہے۔ وہ اپنی وراثت دوسروں کے پاس دیکھ کر کڑھتا اور جلتا ہے۔ وہ اپنے ساتھیوں کی ترقی اور دشمنوں کی زندگی پر دانت پیتا ہے۔ ذہنی اضطراب کی اس آگ میں صدیوں جلنے کے بعد اسے طبقہء بالا میں جانے کی اجازت ملتی ہے۔

ان نظریات کے علاوہ آجکل اورا چکراز کا مشاہدہ بھی کیا جا رہا ہے۔ (Out Of) O.B.E. (Body Experience) بھی کیے جا رہے ہیں جن میں مشاہدہ کیا جاتا ہے کہ ایک زندہ آدمی اپنے مادی جسم کے بغیر جسم سے الگ ہو کر ہوا میں اڑ رہا ہے۔ دیوار کے آر پار گذر جاتا ہے۔ اگر وہ اپنے جسم سے باہر ہو تو اس کے جسم پر چوٹ کا اثر نہیں ہوتا وغیرہ وغیرہ۔

کیا واقعی زندگی کے بعد بھی کوئی زندگی ہے یا مر کر انسان دوبارہ جی اٹھتا ہے۔  
یا اس کا دوسرا جنم ہو جاتا ہے؟

ایسا کچھ نہیں ہے نہ تو انسان مر کر دوبارہ جی اٹھا ہے نہ یہ دوبارہ زندگی ہے نہ ہی یہ کوئی دوسرا یا تیسرا جنم ہے۔

تجربات و مشاہدات کے باوجود اس قسم کے تصورات محض لاعلمی پر مبنی ہیں جن کی کوئی علمی حیثیت نہیں۔ ایسا کہنے والے انسان کی روح اس کے نفس سے ناواقفیت کی بنا پر ایسا کہہ رہے ہیں اب

جبکہ ہم نے روح و نفس کی وضاحت کر دی ہے تو درحقیقت اب ہم اس بات کو سمجھنے کے قابل ہوئے ہیں کہ انسان موت کے بعد کن حالات سے دوچار ہوتا ہے۔ اور اب ہم موت کے بعد کے ان حالات کو صحیح طور پر ترتیب دینے کے قابل ہوئے ہیں۔

## 115۔ زندگی اور موت کے تجربات

نظریہ نمبر۔ ﴿152﴾۔ ﴿مرکز زندہ ہوئے لوگوں کے مشاہدات اور ESP یا OBE کے ذریعے کئے جانے والے مشاہدات میں فرق ہے۔﴾

۱۔ مرکز زندہ ہوئے لوگوں کے مشاہدات مرچکے لوگوں کے بارے میں مشاہدات ہیں۔ اور یہ مادی جسم کی موت کے بعد کے مشاہدات ہیں۔

۲۔ جبکہ ESP یا OBE میں جو مشاہدات و تجربات کئے جاتے ہیں وہ زندہ لوگ، زندہ لوگوں کے ذریعے کرتے ہیں اور یہ زندگی کے مشاہدات ہیں۔

زندگی، موت، انتقال میں امتیازی فرق موجود ہے لہذا

زندگی کے حالات و واقعات، مشاہدات، تقاضے، طرز میں مختلف ہیں اور موت اور موت کے بعد یعنی انتقال کے حالات و واقعات، تجربات و مشاہدات، تقاضے طرز میں مختلف ہیں۔

جبکہ آج تک تجربہ و مشاہدہ کرنے والے جو مرکز زندہ ہوئے لوگوں کا مشاہدہ کر رہے ہیں یا ESP یا OBE کر رہے ہیں انہوں نے زندگی، موت، انتقال سب کے مشاہدات، تجربات حالات و واقعات کو گڈنڈ کر کے رکھ دیا ہے (ایسا وہ روح و نفس، زندگی، موت اور انتقال سے لاعلمی کی وجہ سے کرتے ہیں) اور اسی ملے جلے ملغوبے سے وہ نتائج اخذ کرتے ہیں اور ظاہر ہے اس بے بنیاد کھجڑی سے صحیح نتائج نکلنا محال ہے۔

ہم نے چونکہ پچھلے صفحات میں روح و نفس کی شناخت قائم کر لی ہے اور زندگی اور موت کی بھی علیحدہ سے وضاحت کر دی ہے لہذا اب ہم اس ملغوبے سے موت کے بعد کے حالات کو بھی نکال کر انتقال کے عنوان سے بالترتیب بیان کرتے ہیں۔

## 116۔ موت کے بعد

انسان روح + نفس (لطیف اجسام) کا مجموعہ ہے۔ لہذا موت کی صورت جسم تو مر گیا لیکن سوال یہ ہے کہ جسم کی موت کے بعد اس جسم میں موجود روح و نفس کا کیا ہوا۔ کیا جسم کے ساتھ وہ بھی مر گئے۔ کیا جسم کی موت کے ساتھ ہی انسان کا اختتام ہو گیا۔

مادہ پرست تو ہمیشہ مادی جسم کی موت کو ہی انسان کا اختتام کہتے رہے ہیں۔ اور آج بھی یہی کہنا چاہتے ہیں۔ لیکن آج اس ہٹ دھرمی کا کوئی جواز باقی نہیں بچا جدید تحقیقات سے یہ ثابت ہو چکا ہے کہ محض مادی جسم کی موت سے انسان کا اختتام نہیں ہوتا۔

آج جدید تحقیقات، مراقبہ، اور مشاہدات کے ذریعے زندگی میں بھی زندہ انسانوں کے انسانی باطن (روح و نفس) کا مشاہدہ کیا جا رہا ہے اور موت کے بعد بھی۔ لہذا آج یہ کہہ دینا کافی نہیں کہ مادی جسم کی موت سے انسان کا اختتام ہو گیا بلکہ آج اس سوال کا جواب دینا ہوگا، اس حقیقت کا سراغ لگانا ہوگا کہ اس جسم میں موجود روح و نفس کا کیا ہوا۔ اگرچہ مراقبہ، مشاہدہ اور جدید تحقیقات کے ذریعے زندہ اور مردہ لوگوں کے باطن کا مشاہدہ کیا جا رہا ہے لیکن یہ تجربات و مشاہدات کرنے والے ابھی تک اس جہان باطن کو سمجھ نہیں پائے۔ جب وہ مشاہدہ کرتے ہیں کہ فقط جسم مرا ہے انسان تو جوں کا توں موجود ہے اور (AURA) کی صورت متحرک یادداشت کی صورت تو وہ سمجھ نہیں پاتے کے آخر مادی جسم کی موت کے بعد،

۱۔ انسان مختلف اجسام کی صورت میں کیسے موجود ہے۔

۲۔ کیا وہ ابھی زندہ ہے۔

۳۔ اور جسم کی موت کے بعد بھی ایک انسان کے اتنے مختلف طرح کے اجسام کی موجودگی کا کیا مطلب ہے،

۴۔ کیا یہ روح اور اس کے حصے ہیں۔

۵۔ یا انسان کو دوسرا جسم دے دیا گیا۔ کیا یہ اس کا دوسرا جنم ہے۔

ہم پچھلے صفحات میں ان تمام سوالات کے جوابات دے آئے ہیں۔ (یعنی روح و نفس و اجسام کی الجھی گتھی سلجھا کر تمام کی انفرادی و اجتماعی شناخت قائم کر دی ہے۔ اور جسم کے علاوہ انسانی باطن (روح + نفس) (لطیف اجسام) کی شناخت قائم کی ہے۔)

جبکہ سائنسدانوں کے پاس ابھی تک ان سب سوالوں کے جوابات نہیں ہیں۔۔۔ جب وہ اس مسئلے کا

حل تلاش کرنے کی کوشش کرتے ہیں تو انہیں ایک ہی مثال ملتی ہے اور وہ ہے۔ آواگون، لہذا وہ اسکا حل آواگون میں ڈھونڈنے کی کوشش کرتے ہیں۔ اس کے علاوہ ان کے پاس اس مسئلے کے حل کا کوئی اور ذریعہ علم ہے بھی نہیں۔

لہذا باطن کا تجربہ و مشاہدہ کرنے والے موت کے بعد انسان کی دیگر اجسام میں موجودگی کو دوسرا جنم تصور کر لیتے ہیں۔ حالانکہ یہ بالکل خلاف عقل بات ہے۔

مراقبہ و مشاہدہ کے ذریعے دو قسم کے تجربات کیے جاتے ہیں

۱۔ زندہ لوگ اپنا یا اپنے جیسے زندہ لوگوں کے باطن کا مشاہدہ کرتے ہیں۔

۲۔ زندہ لوگ مردہ لوگوں کے باطنی اجسام کا مشاہدہ کرتے ہیں۔

مردہ شخص کے باطنی مشاہدے کے بعد اس مردے کی دیگر اجسام میں موجودگی کو دوسرا جنم قرار دینا کسی حد تک تو قابل قبول ہے۔ لیکن زندہ شخص جو اپنے اور دیگر زندہ لوگوں کے باطنی اجسام کا مشاہدہ کر رہا ہے اس کا کیا مطلب ہوا۔

زرا غور کیجئے مراقبہ و مشاہدہ کرنے والا شخص زندہ ہے۔ اور یہ زندہ شخص اپنے آپ کو یا دیگر زندہ و مردہ لوگوں کو دیگر اجسام کی صورت متحرک دیکھتا ہے۔ لہذا صاف ظاہر ہے کہ یہ مشاہدہ کرنے والے زندہ شخص کا دوسرا جنم نہیں ہے۔ کیونکہ ابھی تو وہ زندہ ہے اور اپنے باطن کا مشاہدہ کر رہا ہے۔ لہذا زندہ شخص کا زندگی میں ہی دوسرا جنم نہیں ہو سکتا۔ لہذا انتہائی بے ڈھنگے پن سے موت کے بعد انتقال کے عمل کو دوسرا جنم قرار دینے کے بجائے آئیے سنجیدگی سے تحقیق کرتے ہیں کہ جسم کی موت کے بعد کیا ہوا۔ ابھی فقط مادی جسم کی موت ہوئی ہے۔ اب ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ انسان کے باقی اجزاء یعنی روح و نفس کا کیا ہوا۔

مادی جسم کی موت کے بعد انسان کے حالات جاننے کے اب ہمارے پاس دو طریقے ہیں۔

۱۔ موت کے بعد کے حالات جاننے کے لئے سب سے اہم معلومات مذہبی معلومات ہیں۔

ان مذہبی معلومات کو انتہائی محنت سے ترتیب دینے کی ضرورت ہے کیونکہ

۱۔ ہمیشہ ان مذہبی معلومات سے غلط نتائج اخذ کیئے گئے۔

۲۔ اور انہی غلطیوں سے آواگون جیسے نظریات نے جنم لیا۔

۲۔ موت کے بعد کے حالات جاننے کا دوسرا طریقہ ہے جدید تحقیقات۔

لہذا مراقبہ مشاہدہ اور جدید تحقیقات کے ذریعے اب ہم مادی جسم کی موت کے بعد انسان کے حالات بہت اچھی طرح جان سکتے ہیں۔

لہذا مادی جسم کی موت کے بعد کوئی زندگی یا دوسرا یا تیسرا جنم نہیں ہے بلکہ مادی جسم کی موت کے بعد انتقال ہے۔

ابھی یہ جاننا باقی ہے کہ یہ انتقال کیا ہے۔؟

لہذا اب یہاں ہم مادی جسم کی موت کے بعد انسان کے انتقال کی بالترتیب وضاحت کریں گے۔

## انتقال

ترجمہ: ضرورتاً منزل بہ منزل چڑھو گے۔ (۱۹) ۸۴

ترجمہ: اور آسمانوں اور زمین کی بادشاہی اللہ ہی کی ہے اور سب کے سفر کا رخ اللہ ہی کی طرف ہے۔ (۴۲) ۲۴



- ۱۱۷۔ انتقال۔
- ۱۱۸۔ انتقالی فارمولہ۔
- ۱۱۹۔ انسان کی سفری روداد۔
- ۱۲۰۔ انتقال کیا ہے۔
- ۱۲۱۔ موت اور انتقال میں فرق۔
- ۱۲۲۔ انسان کہاں جا رہا ہے۔
- ۱۲۳۔ دوا حکامات
- ۱۲۴۔ علیین
- ۱۲۵۔ جبین
- ۱۲۶۔ انسان کہاں منتقل ہو گیا۔
- ۱۲۷۔ عالم برزخ۔
- ۱۲۸۔ عالم برزخ کہاں ہے۔
- ۱۲۹۔ برزخ میں انسانی صورت۔
- ۱۳۰۔ برزخی رہائش گاہ۔
- ۱۳۱۔ برزخ کیسی ہے۔
- ۱۳۲۔ نفسی زندگی۔
- ۱۳۳۔ مقید نفس۔
- ۱۳۴۔ آزاد نفس۔
- ۱۳۵۔ اجسام کی تعداد۔
- ۱۳۶۔ روشنی کا جسم۔
- ۱۳۷۔ نور کا جسم۔
- ۱۳۸۔ تمام باطنی اجسام فانی ہیں۔
- ۱۳۹۔ برزخ انتظار گاہ۔
- ۱۴۰۔ قیامت۔

- ۱۳۱۔ دوبارہ زندگی۔  
 ۱۳۲۔ انسان کا سنی مسافر ہے۔  
 ۱۳۳۔ انسانی کہانی۔  
 ۱۳۴۔ انسانی سفر کے پانچ ادوار۔  
 ۱۳۵۔ انسانی زندگی کا سفر آغاز تا اختتام۔

## 117- انتقال

نظریہ نمبر۔ ﴿153﴾۔ لہذا جسم کی موت کے بعد اس جسم میں موجود باقی انسان یعنی اس انسان کی روح اور نفس اس مردہ جسم کو چھوڑ کر کہیں منتقل ہو گئے بقیہ انسان کی اسی منتقلی کو انتقال کہتے ہیں۔ آئیے موت کے بعد اس انتقال کی وضاحت کرتے ہیں ﴿

یاد کیجئے انسان زمینی مخلوق نہیں ہے۔ انسان کسی اور سیارے یعنی جنت سے زمین پہ وارد ہوا تھا (انسان کی جنت سے زمین پہ آمد کی تفصیلات پچھلے صفحات میں تخلیق کے عنوان سے بیان کر آئی ہوں) انسان کی تخلیق جنت میں ہوئی۔ انسان جنت کا رہائشی تھا وہیں رہتا بستا تھا۔ ایک جرم کی پاداش میں سزا کے طور پر انسان کو مختصر مدت حیات کے لیے زمینی سیارے پر منتقل کر دیا گیا۔ زمین پر اس کا قیام مختصر و محدود ہے یہاں وہ کچھ عرصہ قیام کرے گا پھر اُسے واپس اپنی رہائش گاہ یعنی جنت کی طرف منتقل ہونا ہے۔ اسی زمین سے جنت کی طرف واپسی کے عمل کو منتقلی یعنی انتقال کہتے ہیں۔ انسان کا جنت سے زمین تک آمد کا سفر تخلیقی عمل تھا تو اسی طرح انسان کا زمین سے جنت (آخرت) تک کا سفر فنائی عمل یعنی انتقال ہوگا۔ جیسے انسانی تخلیق کا عمل بالترتیب واقع ہوا تھا ایسے ہی انسان واپسی کا سفر (انتقال) بھی بالترتیب طے کرے گا۔ انسان کا تخلیقی سفر درج ذیل مدارج پر مشتمل تھا۔

۱۔ واحد انرجی کے یگانگت انتشار سے

۲۔ تمام تر ارواح کی پیدائش عمل میں آئی

۳۔ انرجی ایک قدم اور نیچے اُتری مزید منتشر ہوئی تو نفوس کی پیدائش کا عمل واقع ہوا۔

۴۔ پھر پہلے (آدم) مادی جسم کی تخلیق کا عمل واقع ہوا

۵۔ پھر جوڑے کا قیام عمل میں آیا یعنی حوا کی پیدائش

۶۔ جوڑے (آدم و حوا) کو جنت سے زمینی سیارے پہ اتارا گیا

۷۔ اس جوڑے سے پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا اور اس طریقے سے نوع انسانی کا قیام عمل میں آیا۔

انسان کا جنت سے زمین تک کا تمام سفر تخلیقی عمل پر مشتمل تھا۔ اور جیسے انسان جنت سے بالترتیب

زمین پہ اُترا ہے اسی طرح بالترتیب زمین سے جنت کی طرف منتقل ہوگا۔ اور یہ واپسی کا

سفر (انتقال) فنائی سفر ہوگا۔ اور جس طرح ہم نے آمد کے سفر کے لیے تخلیقی فارمولہ پیش کیا تھا اسی

طرح اب ہمیں فنائی سفر یعنی انتقال کی وضاحت کے لیے ایک انتقالی فارمولہ پیش کرنا ہوگا۔

## 118۔ انتقالی فارمولہ

نظریہ نمبر۔ ﴿154﴾۔ ﴿انتقالی فارمولے کی ترتیب درج ذیل ہوگی۔ یعنی انسان کی واپس منتقلی

کی ترتیب درج ذیل ہوگی

۱۔ مادی جسم کی موت۔

۲۔ نفس کی موت۔

۳۔ روح کی واپسی۔ ﴿﴾

انسان جنت (آخرت) سے آیا ہے اور وہیں جا رہا ہے۔ لہذا اس سفر کی صورت کچھ یوں بنی

## 119۔ انسانی سفری رواد

انسان کی جنت سے زمین پہ آمد (تخلیق)      انتقال (انسان کی جنت کی طرف واپسی)

↑

روح کی واپسی

↑

نفس کی موت

↑

مادی جسم کی موت

↑

انتقال

↓

واحد ازرجی سے

↓

ارواح کی پیدائش

↓

نفوس کی پیدائش

↓

مادی جسم کی تخلیق ← موت → انتقال

انسان کی جنت سے زمین پر آمد کی تفصیلات تو ہم تخلیق کے عنوان سے پچھلے صفحات میں بیان کر

آئے ہیں۔ اب یہاں میں نے جو مزید انتقالی فارمولہ پیش کیا ہے اب یہاں ہم اس انتقالی

فارمولے کی بالترتیب وضاحت کریں گے تب سمجھ میں آئے گا کہ انتقال سے دراصل ہماری کیا

مراد ہے۔

## 120۔ انتقال کیا ہے

نظریہ نمبر:- ﴿155﴾۔ ﴿مادی جسم کی موت کے بعد (مادی جسم سے مفارقت کے بعد) باقی انسان (روح + نفس) کی نفس کی دنیا (عالم برزخ) میں منتقلی انتقال ہے۔﴾  
یعنی انسان (روح + نفس) نے جسم کی موت کے بعد مادی جسم کو چھوڑ کر کہیں اور ہی بسیرا کر لیا۔ انسان کی اسی منتقلی کو انتقال کہتے ہیں۔

یعنی انسان تو موجود ہے اسکا جسم مر گیا لہذا انسان اسے چھوڑ کر کہیں اور منتقل ہو گیا۔ روح مادی جسم میں تھی تو مادی جسم زندہ تھا متحرک تھا۔ یہی روح جب مادی جسم سے نکل گئی تو اب یہ جسم مردہ ہے۔ لیکن ابھی روح و نفس باقی ہیں۔ لہذا اب مادی جسم کی موت کے بعد انسان کی موجودہ صورت ہے

روح + نفس (لطیف اجسام) = انسان

یعنی محض جسم مرا ہے انسان تو جوں کا توں موجود ہے اپنی تمام تر خصوصیات کے ساتھ بلکہ مادی جسم کی موت کے بعد تو انسان کی خصوصیات میں مزید اضافہ ہوا ہے اس کا مطلب یہ ہرگز نہیں کہ یہ انسان کا دوسرا جنم ہے۔ اب ہم انسان کے اس انتقال کی وضاحت ایک مثال سے کرتے ہیں۔ فرض کیجئے ہمارے درمیان ایک شخص ہے جس کا نام احمد ہے۔ ہم سب احمد کے کردار، خوبیوں، خامیوں اور اس کی تمام شخصیت سے واقف ہیں۔ اسی احمد کے جسم میں گولی لگی! جس کے نتیجے میں اس کی روح نے اس کا جسم چھوڑ دیا۔ یہ جسم مردہ ہو گیا!  
لیکن احمد اب بھی موجود ہے!

وہی احمد جسے ہم سب جانتے ہیں۔ جس کے کردار اور شخصیت کو ہم پوری طرح جانتے ہیں۔ وہی احمد اپنی پوری شخصیت سمیت موجود ہے۔ اس کی عقل حواس پورے طور پر کام کر رہے ہیں۔ بس فرق آیا ہے تو یہ کہ اب اس احمد نے مادی جسم اپنے اوپر سے اتار دیا اب وہ مادی جسم کو اپنے عملی ارادوں کے لیے استعمال نہیں کر سکتا اس لیے کہ مادی جسم اب مر چکا ہے اور انسان کی صلاحیتوں کے اظہار کے قابل نہیں رہا لہذا انسان اعمال یا عمل کی دنیا سے نکل آیا لہذا اب وہ مادی جسم کے ذریعے اعمال سرانجام نہیں دے سکتا لہذا اب انسان مادی جسم استعمال نہیں کر سکتا اس کے علاوہ مادی جسم کی موت کی صورت میں انسان کی شخصیت میں کوئی کمی نہیں آئی ہاں اضافہ ہی ہوا ہے۔

یہ احمد اپنی شخصیت کا مظاہرہ جس مادی جسم کے ذریعے کر رہا تھا وہ جسم اب گولی لگ جانے کی صورت میں مردہ ہے بے حرکت ہے۔ اب وہ جسم احمد کی خصوصیات کے مظاہرے کے قابل نہیں رہا۔ لیکن احمد اور اس کی خصوصیات جوں کی توں موجود ہیں۔ اب وہ ایک نئی حالت (روح + نفس) میں موجود ہے لیکن اس منتقلی سے مراد یہ ہرگز نہیں کہ یہ اس کا دوسرا جنم ہے۔ انسان جسم کی موت کے بعد دوبارہ پیدا نہیں ہوا! بلکہ یہ اس کے ایک ہی جنم کی روداد ہے۔ پہلے یہ انسان مادی جسم میں تھا تو زندہ تھا اب مر چکا ہے۔ زندگی سے مراد ہے مادی جسم کی زندگی اور موت سے مراد ہے مادی جسم کی موت۔ روح یا نفس کی موت نہیں

یہ انسان جو زندگی (پیدائش) کی صورت میں کہیں سے وارد ہوا تھا اب مادی جسم سے مفارقت کے بعد وہیں واپس جا رہا ہے اور موت کی صورت مادی جسم سے منتقلی اس کے ایک ہی سفر کی روداد ہے یہ انسان کے پہلے جنم یا ایک ہی زندگی کی کہانی ہے۔ اور انسان کی آمد (پیدائش یا تخلیق) اور واپسی (منتقلی) کی روداد کو سمجھنے کے لئے نفس اور روح کو جاننا ضروری ہے۔ روح اور نفس اور اس انتقال سے لاعلمی کی بدولت آواگون کر مایا چکر جیسے نظریات نے جنم لیا ہے۔

مثلاً مراقبہ اور مشاہدہ کرنے والے جب خود کو مادی جسم کے بغیر کسی اور لطیف وجود کی صورت موجود پاتے ہیں اور اپنے دیگر باطنی اجسام کا بھی مشاہدہ کرتے ہیں تو وہ اسے دوسرا جنم تصور کر لیتے ہیں اور دیگر اجسام کی موجودگی کو آواگون کے نظریے کی تصدیق تصور کرتے ہیں۔

جبکہ مراقبہ کے ذریعے مشاہدہ کرنے والوں کو غور کرنا چاہیے کے کہ ابھی وہ مرے نہیں زندہ ہیں ان کا جسم زندہ ہے اور وہ دیگر اجسام کا مشاہدہ کر رہے ہیں۔ ایسے ہی مشاہدات کی بنا پر انسان کی مادی جسم سے لطیف جسم میں منتقلی کو دوسرا جنم تصور کر لیا جاتا ہے۔ حالانکہ یہ دوسرا جنم نہیں بلکہ انسان مادی جسم سے مفارقت کے بعد برزخ میں منتقل ہو چکا ہے اور یہ واپسی کا سفر ہے اور یہ دوسرا جنم نہیں بلکہ منتقلی کا عمل ہے فنا کا عمل ہے۔ اور اس فنا کے عمل اور اس انتقالی روداد کو جاننے کے لئے ضروری ہے روح اور نفس کا جاننا۔ جس کی ہم تفصیلی وضاحت پچھلے صفحات میں کر آئے ہیں۔ لہذا ان تفصیلات کو جان لینے کے بعد درحقیقت اب ہم انتقالی روداد کے بیان کے قابل ہوئے ہیں۔ اب ہم سمجھ سکتے ہیں کہ یہ انتقال کیا ہے۔

## 121۔ موت اور انتقال میں فرق

اگرچہ موت اور انتقال دونوں الفاظ زیر استعمال ہیں لیکن ان دونوں الفاظ کو ایک ہی معنی یعنی، موت کے معنی میں استعمال کیا جاتا ہے۔ ان دونوں الفاظ میں فرق کو سمجھنے کی کوشش نہیں کی جاتی۔ جبکہ موت اور انتقال میں واضح فرق موجود ہے۔

۱۔ موت کا مطلب ہے جسم کی موت۔ انسان کی موت نہیں۔

۲۔ انتقال کا مطلب ہے جسم کی موت کے بعد اس جسم میں موجود انسان کی منتقلی یعنی اس جسم میں موجود انسان کہیں اور منتقل ہو گیا۔

لہذا جسم کی موت سے انسان کی موت واقع نہیں ہو جاتی۔ اس لیے کہ انسان محض جسم نہیں اس کے اندر نفس بھی ہے روح بھی ہے۔ اور ابھی تو فقط جسم کی موت ہوئی ہے۔

لہذا جب ہم کہتے ہیں کہ فلاں مر گیا تو اس سے مراد اس شخص کے جسم کی موت ہوتی ہے۔

اسی مردہ شخص کے بارے میں جب ہم کہتے ہیں کہ انتقال کر گیا۔ تو اس سے مراد ہے کہ وہ شخصیت جو اس جسم میں تھی وہ اس جسم کی موت کے بعد اس جسم سے نکل گئی، منتقل

ہو گئی۔ کیونکہ اب یہ جسم مردہ ہے اور اس شخصیت کے اظہار کی صلاحیت نہیں رکھتا۔

انسان اور انسانی شخصیت جسم کی موت کے بعد بھی موجود ہے۔ اس کی ایک عام سی مثال ہے ہمارا لباس۔ ہم روزمرہ میں لباس بدلتے ہیں۔ لباس پھٹ بھی جاتا ہے۔

لیکن لباس پھٹنے، بدلنے یا بدلتے رہنے سے ہم نہیں بدل جاتے۔ لہذا لباس بدلنے کے بعد بھی ہم اور ہمارا جسم ہماری شخصیت وہی رہتی ہے۔ ہاں لباس بدل جاتا ہے۔ یہی مثال ہے انتقال کی

۔ بالکل اسی طرح انسانی شخصیت پر سے (موت کی صورت) مادی جسم کا لباس اترنے سے

۱۔ انسانی شخصیت میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی۔

۲۔ موت کی صورت مادی جسم حرکت و عمل سے عاری ہو گیا (اس شخصیت کے جسم سے نکل جانے

سے)

۳۔ لیکن محض مادی جسم حرکت و عمل سے عاری ہوا ہے انسان (روح + نفس) نہیں۔

۴۔ فرق محض یہ پڑا ہے کہ مادی جسم کی موت کے بعد انسان اب اس مادی جسم کو ارادی حرکت و عمل کے لئے استعمال نہیں کر سکتا۔ اس کے باوجود

۵۔ موت کے بعد انسانی خصوصیات میں کوئی کمی واقع نہیں ہوئی بلکہ مزید اضافہ ہو گیا۔ ہزاروں گنا اضافہ۔

۶۔ لہذا مادی جسم کی موت کے بعد جسم کا خاتمہ ہوا ہے انسان کا اختتام نہیں ہو گیا۔ بلکہ انسانی شخصیت میں کچھ تبدیلی واقع ہوئی ہے۔ جس کی صورت کچھ یوں بنی۔

موت سے پہلے کا انسان = (روح + نفس) (لطیف اجسام) + مادی جسم = زندہ انسان

موت کے بعد کا انسان = روح + نفس (لطیف اجسام) = مردہ انسان

مادی جسم سے مفارقت کے بعد اگرچہ اب انسان جسمانی اعمال انجام نہیں دے سکتا تو کیا ہوا۔ اب وہ نفس کی صورت موجود ہے۔

جسم میں رہتے ہوئے وہ محدود صلاحیتوں کا مالک تھا تو جسم سے مفارقت کے بعد اب وہی انسان لامحدود صلاحیتوں کا مالک انسان ہے۔

لہذا موت کے بعد انتقال کی صورت انسانی صلاحیتوں میں کمی نہیں اضافہ ہوا ہے اب مادی جسم سے مفارقت کے بعد انسان منتقل ہو گیا لیکن سوال یہ ہے کہ وہ کہاں منتقل ہو گیا، اور جسم کو زمین پر چھوڑ کر آخر انسان جا کہاں رہا ہے۔

اب یہاں ہم انتقال سے متعلق مذہبی معلومات کو ترتیب دیتے ہیں

## 122۔ انسان جا کہاں رہا ہے

نظریہ 156۔ ﴿موت کے فوراً بعد انسان اپنے رب سے ملاقات کرنے جا رہا ہے۔﴾

افلاطون موت کے تجربات بیان کرتے ہوئے لکھتا ہے کہ موت کے وقت انسان کے ذہن میں ہوتا ہے کہ ایک کشتی آئے گی جو ان کو اس دنیا کے پار دوسرے کنارے تک لے جائے گی۔ جہاں انہیں موت کے بعد رہنا ہوگا۔ اس کے خیال میں یہ جسم ایک قید خانہ ہے جبکہ موت ان قیود سے آزادی کا نام ہے۔ اور پھر انسان ایک وسیع تر جہان میں پہنچ کر سکھ کا سانس لیتا ہے۔ موت کے فوراً بعد آدمی کو اس کے مستقبل سے آگاہ کر دیا جاتا ہے۔ مقدس ہستی اس کے سامنے اس کے دنیا میں کئے ہوئے اچھے اور بُرے اعمال کھول کر رکھ دیتی ہے۔

پہلی بار افلاطون کی یہ تحریر پڑھ کر مجھے لگا کہ افلاطون اس زمانے کی کوئی مذہبی یا پھر کوئی روایتی الف



لیلوی داستان بیان کر رہا ہے۔

لیکن برسوں کی تحقیق، تجربات، مشاہدات، اور مسلسل غور و فکر کے بعد آج میں بھی اسی الف لیلوی داستان کا نظارہ کر رہی ہوں۔ اور جدید تحقیقات بھی اسی حقیقت کی گواہی دے رہی ہیں اور مذاہب بھی انہی حقائق کی نشاندہی کرتے آئے ہیں۔ درحقیقت یہ داستان حقیقت پر مبنی ہے۔ لیکن ہمیشہ اس حقیقت سے صرف نظر کیا گیا

ہو ایوں کہ روح و نفس سے لاعلمی کے سبب اس داستان کو خلط ملط کیا جاتا رہا اور اسی خلط ملط سے یہ داستان بری طرح الجھ گئی ہے۔ جبکہ آج یہاں ہم اسی داستان کو ترتیب دیں گے۔ آج ہم جدید تحقیقات کے نتیجے میں نہ صرف یہ کہ فرشتوں، جنات وغیرہ کا مشاہدہ کر رہے ہیں بلکہ آج ہم انسان کی روح و نفس اور انسان کی موت کے بعد کے حالات کا بھی مشاہدہ کر رہے ہیں۔ لہذا آج یہ کہنا غلط ہوگا کہ جسم کی موت اور مادی جسم سے مفارقت کے بعد سب کچھ ختم ہو گیا۔ آج ہمیں یہ اعتراف کرنا ہوگا کہ موت کے ساتھ ہی انسان کی منتقلی کے انتظامات ہونے لگتے ہیں۔ لہذا انسان کو لینے کے لئے۔

## فرشتے آئے ہیں

موت کے بعد محض کشتی ہی نہیں آئی بلکہ فرشتے بھی آئے ہیں لہذا اب ہم موت کے بعد کے حالات کو ترتیب دیتے ہیں اور اس قصے کو بالترتیب بیان کرتے ہیں۔

لہذا انسان کی روح تو جسم سے نکل گئی لیکن یہ سب کچھ خود بخود نہیں ہو جاتا بلکہ انسان کی روح نکالنے کے لئے باقاعدہ فرشتے آتے ہیں۔ یہ فرشتے فرشتہ صورت بھی ہو سکتے ہیں (نیک لوگوں کے لئے) اور مجرموں کے لئے تو یہ بیڑیاں لائے ہیں۔ بڑی وردیاں پہن کر آئے ہیں یہ تو بالکل سپاہی لگ رہے ہیں۔ مجرموں کی پکڑ دھکڑ ہو رہی ہے۔ یہ فرشتے جنہوں نے خالق کے حکم کے مطابق روح کو بڑے وعدے و وعید کے بعد جسم میں ڈالا تھا کہ ایک مقررہ مدت پہ تمہیں واپس آنا ہے۔ اب وہ روح نکالنے آئے ہیں تو روح کو اس کا عہد یاد کراتے ہیں کہ یاد کرو تم نے واپسی کا عہد کیا تھا۔ نیک لوگوں کے لئے تو یہ لمحہ خوشی اور آزادی کا ہے جبکہ بدوں کے لئے گرفتاری و قید کا لمحہ ہے۔ لہذا نیک تو بخوشی واپسی کے لئے تیار ہیں جبکہ بدوں کو تعامل ہے۔ ایسے مجرموں کے لئے

گرفتاری کا آڈر آیا ہے کہ نکالو اپنی روح اے فرشتوں ان کے جوڑ جوڑ پر مار مار کر نکالو ان کی روح، انہیں پکڑو گھسیٹو گرفتار کر لو۔ لہذا نیک لوگوں کی روح تو با آسانی نکل جاتی ہے جبکہ بدوں کی بڑی دیر کانٹوں پہ گھسٹی ہے کیونکہ فرشتے زبردستی اسے پکڑ کر گھیٹ رہے ہیں۔ اور بلا آخر فرشتے روح کا یہ کنکشن کاٹ دیتے ہیں۔ اور روح جسم سے جدا ہو جاتی ہے۔ اب جسم تو مر گیا زمین ہی پہ رہ گیا اب یہ فرشتے روح کو لے کر چلے ہیں

## سواری بھی آئی ہے

جی ہاں یہ فرشتے پیدل نہیں بلکہ اپنے ساتھ سواری بھی لائے ہیں۔  
افلاطون کے خیال میں یہ سواری کشتی ہے۔ لیکن یہ سواری محض کشتی نہیں، ہاں یہ سواری کشتی بھی ہو سکتی ہے، آبدوز، بس جہاز یا راکٹ بھی ہو سکتی ہے۔  
دراصل فرشتے ہر اچھی بڑی روح کے لیے حسب مراتب سواری لائے ہیں۔ اعلیٰ مرتبہ شخصیت کے لیے شاہی سواری ہے، براق (برق رفتار)، یعنی راکٹ سے بھی جدید اور تیز رفتار سواری جو طویل ترین سفر کو پلک جھپکتے میں طے کر لے گی۔  
یہ سواری راکٹ جہاز یا آبدوز بھی ہو سکتی ہے۔ یہ کوئی بس بھی ہو سکتی ہے اور افلاطون کے مطابق کوئی کشتی بھی۔ ہو سکتا ہے کسی کے لیے محض پہیوں والی ریڑھی آئی ہو ہو سکتا ہے کسی کو یہ لمبا طویل سفر چلتے گھسٹتے پیدل ہی طے کرنا ہو۔ بحر حال سواری اعمال کی مناسبت سے حسب مراتب ہی ہوگی۔

## دیگر مسافر بھی ہیں

اس سواری میں ایک آپ ہی مسافر نہیں ہے۔ اور بھی مسافر ہیں سواری فل ہے۔ اس سواری کے تمام مسافر ہم مرتبہ ساتھی ہیں۔ کیونکہ محض ایک شخص کی موت نہیں ہوئی بلکہ اس جیسے اور بھی بہت سے لوگ فوت ہوئے ہیں۔ یعنی یہ فرشتے ایک ہی جیسے ہم مرتبہ لوگوں کو ایک سواری میں بٹھا کر لے جا رہے ہیں۔ بُرے لوگ ہیں تو سواری بھی بُری ہے اور یہ مسافر اس بُری اور بد وضع سواری میں ٹھنسنے ہوئے پسینے کی بو اور شور سے گھبرارے ہیں۔ کچھ روحمیں نیک اعمال کے سبب خوشبودار ہو

گنیں ہیں۔

جبکہ بُرے لوگوں کی بد اعمالیوں، گناہوں نے ان کے نفوس کو بگاڑ دیا جسموں کو گلا دیا۔ اب بد بو اُٹھ رہی ہے۔ یہ ہے اعمال کی بو۔ انہیں رب سے ملاقات کے لیے لے جانے والے فرشتے ان کی اس خوشبو و بد بو سے متاثر ہو رہے ہیں۔ خوشبو والے نیک شخص کو پسند کرتے ہیں تو بد کی بد بو سے گھبرار ہے ہیں۔

مسافر اور سفرنا گوار ہے۔ کچھ کو یوں لگ رہا ہے جیسے وہ کسی بلیک ہول میں گر رہے ہیں، کچھ خود کو کسی خطرناک پہاڑ پہ چڑھتا پاتے ہیں۔

اچھے لوگ ہیں تو سواری بھی اچھی ہے اور سفر بھی اچھا ہے۔ سواری بڑی اچھی فرنشڈ، صاف ستھری اور کھلی ہے۔ سوار بڑے اچھے، صاف ستھرے، سوئڈ بوئڈ ہیں۔ اچھی گاڑی روانی سے اپنی منزل کی طرف گامزن ہے۔ کوئی خوبصورت سیارہ آتا ہے تو وہاں گاڑی رک جاتی ہے۔ سب مسافر اس حسین منظر کا نظارہ کرنے گاڑی سے اترتے ہیں۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ موت کی صورت میں مادی جسم سے مفارقت کے فوراً بعد فرشتے مختلف سواریوں پہ سوار کر کے ان سواریوں کو باہتمام کہاں لے جا رہے ہیں۔

## رب سے ملاقات

فرشتے روح کو جسم سے نکالتے ہی رب سے ملاقات کے لیے لے جا رہے ہیں۔ لیکن کچھ بد بخت ایسے ہیں کہ وہ مرتے ہی ایسے پھنستے ہیں کہ یہ رب سے ملاقات بھی ان کے نصیب میں نہیں ہوتی۔

لہذا مرتے ہی (جسم کی موت کے بعد) انسان (اس کی روح) کو رب کے سامنے کھڑا کر دیا گیا۔ مرکز زندہ ہوئے لوگوں کا کہنا ہے کہ ہماری ایک بزرگ ہستی سے ملاقات ہوئی۔ نوٹ کر لیجیے وہ بزرگ کوئی ہستی نہیں بلکہ وہ بزرگ جس سے مر کر لوگ ملاقات کرتے ہیں سب سے بزرگ تر یعنی ہم سب کے خالق ہیں۔

یعنی موت کے بعد بزرگ ہستی سے ملاقات دراصل رب سے ملاقات ہے۔

مرتے ہی انسان اپنے خالق کے سامنے کھڑا کر دیا جاتا ہے۔ اب انسان کا رب اس سے سوال کرتا

ہے۔

میرے لیے کیا (یعنی زندگی بھر کیا اچھے اعمال کئے) لائے ہو۔؟  
 اور پھر جو بآ خالق نے خود ہی انسان کو اس کی پوری زندگی دکھا دی اور انسان نے چند لمحوں میں اپنی پوری زندگی اور اس کا ایک ایک لمحہ اپنی نظروں کے سامنے ایسے دیکھ لیا جیسے وہ دنیا میں اپنی نظروں کے سامنے فلم چلتی دیکھتا تھا۔ آج یہاں، اس وقت انسان کی بولتی بند ہوگئی (آج اس کی زبان بند ہے آج اس کے ہاتھ پیر (اس کی حرکت و عمل کا اپنا ریکارڈ) گواہی دیں گے) انسان نے اپنی آنکھوں سے دیکھ لیا کہ اس کی اس ریکارڈ فلم میں اس کی پوری زندگی کا ہر عمل ہر حرکت ریکارڈ ہے حتیٰ کہ اس انوکھے ریکارڈ میں تو اس کی نیت اس کا ارادہ تک ریکارڈ ہے۔ اب کیا ہوگا۔ سوچ کر تو آیا تھا کہ رب کے سامنے یہ یہ جھوٹ بولوں گا یہ بہانہ بنا دوں گا، اپنے اعمال کا قصور وار فلاں کو ٹھرا دوں گا۔ لیکن اب اپنا یہ اعمال نامہ (ریکارڈ فلم) دیکھنے کے بعد تو کہنے سننے کو کچھ بچا ہی نہیں۔ (آج اپنا حساب کرنے کے لیے تو خود ہی کافی ہے) لہذا یہ ریکارڈ دیکھ لینے کے بعد دو باتوں کا فیصلہ ہو گیا

۱۔ انسان کی پوری زندگی کے ریکارڈ سے معلوم ہو گیا کہ یہ کس درجہ کا انسان ہے (اچھا ہے یا بُرا انسان ہے)

۲۔ اس کے انجام کا تعین ہو گیا کہ اچھا انجام ہے یا بُرا۔

یہ سب انسان نے خود ملاحظہ کر لیا اور یہ دیکھ کر بد انسان تو مایوس ہو گیا اب التجا کر رہا ہے کہ ایک بار اسے دوبارہ زندگی دے دی جائے تو وہ اچھے اعمال کرے گا لیکن اس کی اس التجا کو فضول قرار دے کر رد کر دیا گیا ہے اس لیے کہ موجودہ زندگی اسی مقصد کے لیے دی گئی تھی جس میں وہ ناکام رہا اور اب دوبارہ یہ مطالبہ کرنا بے کار ہے لہذا رب کے سامنے اس حاضری کے بعد اب دو احکامات کا نفاذ ہوا ہے۔

## 123- دوا حکامات

اب اس حاضر انسان کے لیے رب نے دوا حکامات جاری کیئے ہیں۔

۱۔ اس حاضر شخص کے اعمال کا ریکارڈ (اعمال نامہ)، ریکارڈ روم (علیین یا بحیین) میں محفوظ کر دو۔

۲۔ اس شخص کو حساب کے دن (یوم حشر) تک کے لیے ایک عارضی رہائش گاہ (برزخ) میں منتقل کر دیا جائے۔

لہذا انسان نے پوری زندگی اپنی مرضی سے جو بھی اعمال سرانجام دیئے اس کا پورا ریکارڈ موت کے بعد محفوظ کر دیا گیا اب انسان اس ریکارڈ میں کوئی اچھا بُرا اضافہ نہیں کر سکتا۔ یہ ریکارڈ دو مختلف جگہوں پر محفوظ کیئے گئے ہیں۔

## 124۔ علیین

جن کے اعمال اچھے ہیں ان کے لئے الگ ریکارڈ روم ہے، جس کا نام علیین ہے۔ اس ریکارڈ روم میں اچھے لوگوں کی زندگی کی ریکارڈ سی ڈیز (ڈیٹا) محفوظ کی گئی ہیں۔

## 125۔ سجین

جن کے اعمال بُرے ہیں ان کے لئے الگ ریکارڈ روم ہے، جس کا نام سجین ہے۔ اس ریکارڈ روم میں بُرے لوگوں کی زندگی کی ریکارڈ سی ڈیز محفوظ کی گئی ہیں۔

اب انسان کے اعمال کا ریکارڈ تو علیین اور سجین یعنی ریکارڈ روم میں محفوظ کر دیا گیا ہے اب انسان کسی دوسرے تیسرے جہنم کی فرضی داستان کے ذریعے اس ریکارڈ میں ذاتی ارادے سے کوئی رد و بدل نہیں کر سکتا جب تک انسان زندہ تھا جب تک وہ اپنے اعمال نامے میں رد و بدل کر سکتا تھا اچھے اعمال کر کے اسے اچھا ریکارڈ بنا سکتا تھا لیکن مادی جسم کی موت کے بعد یہ ریکارڈ اس سے لے کر ریکارڈ روم میں محفوظ کر دیا گیا ہے لہذا اب انسان اس ریکارڈ میں کوئی رد و بدل نہیں کر سکتا اب یہ ریکارڈ اچھا بُرا جیسا بھی ہے اسی ریکارڈ کے مطابق حساب کے دن اس سے حساب لیا جائے گا۔ اعمال کا ریکارڈ تو محفوظ ہو گیا اب دیکھنا یہ ہے کہ باقی انسان کہاں گیا۔

## 126۔ انسان کہاں منتقل ہو گیا

موت کے بعد انسان کو عارضی طور پر برزخ میں منتقل کر دیا گیا ہے۔ اور انسان برزخ میں حساب کا دن آنے تک عارضی قیام کرے گا۔ موت کے بعد انسان منتقل تو ہو گیا لیکن آخر انسان کہاں منتقل

ہو گیا۔؟ سوال یہ ہے کہ یہ برزخ کیا ہے۔؟ اور یہ برزخ کہاں ہے۔؟ اور مادی جسم کی موت کے بعد انسان کہاں۔؟ اور کس صورت۔؟ اور کن حالات میں موجود ہے۔؟

## 127۔ عالم برزخ (نفس کی دنیا)

انسانی مادی نظر کے سامنے ایک پردہ حائل ہے یہی پردہ برزخ ہے۔

یعنی برزخ کہیں اور نہیں اسی زمین پر موجود ہے لیکن مادی آنکھ اسے دیکھ نہیں پار ہی مادی آنکھ کی راہ میں ایک پردہ حائل ہے اور اسی پردے کی موجودگی کے سبب زندہ لوگوں کو اپنے قریب موجود پردے کے پیچھے اپنے مُردہ عزیز و اقارب نظر نہیں آرہے۔ اس غیر مُرئی پردے نے ایک ہی زمین پر موجود زندہ و مُردہ لوگوں کو دو الگ الگ جماعتوں میں تقسیم کر رکھا ہے۔ اس برزخی پردے کی دنیاوی مثال سمندری پانی کی ہے سمندر کے پانی میں بیٹھا اور کھارا پانی ساتھ ساتھ ہوتے ہیں لیکن ان کے درمیان ایک غیر مُرئی پردہ حائل ہوتا ہے جس کی وجہ سے ایک ہی جگہ پر موجود مائع کھارا اور بیٹھا پانی ایک دوسرے سے الگ رہتا ہے اور مکس نہیں ہوتا۔ ایسی ہی غیر مُرئی دیوار زندہ اور مُردہ انسانوں کے درمیان حائل ہے یہی پردہ برزخ ہے۔ جسم کی موت کے بعد انسان اس پردے کے دوسری طرف داخل ہو جاتا ہے اب انسان مادی جسم سے باہر ہے اب اس کی نظر وسیع ہے اب اس کی نظر میں کوئی پردہ حائل نہیں، اصل میں یہ پردہ ہماری اپنی نظر کی راہ میں حائل ہے، اس لیے کہ برزخی دنیا روشنی کی فضا ہے اور ہماری نظر ہماری ہی زمین پر موجود روشنی کی اس لطیف فضا اور اس روشنی کی لطیف فضا میں موجود روشنی کے اجسام کی صورت موجود اپنے عزیز و اقارب اور دیگر روشنی کی اشیاء کا مشاہدہ نہیں کر سکتی جبکہ دنیا میں ہی کچھ لوگ جن کی نظر کی وسعت زیادہ ہوتی ہے وہ برزخی دنیا اور برزخی لوگوں کا مشاہدہ کرتے ہیں، مخصوص عبادت و ریاضت کے ذریعے بھی اپنے اندر روشنی کا مہیج بڑھا کر ہم اس برزخی دنیا کا اور اپنے مُردہ رشتہ داروں کا مشاہدہ کر سکتے ہیں۔ اب جبکہ انسان جسم کی موت کے بعد مادی کثیف لباس اتار کر اسی برزخی دنیا میں اس برزخی پردے کے دوسری طرف آ گیا ہے، یعنی اب چونکہ انسان خود روشنی کے جسم کی صورت میں روشنی کی فضا میں موجود ہے لہذا اب اس کی نظر وسیع ہے اب انسان اپنی روشنی کی وسعت نظر سے پوری روشنی کی دنیا بلکہ مزید دنیاؤں کے نظارے کر رہا ہے۔ سوال یہ ہے کہ یہ برزخ کہاں ہے

## 128۔ عالم برزخ (نفس کی دنیا) کہاں ہے

جہاں انسان کا جسم ہے وہیں انسان کا برزخ قائم ہو گیا ہے۔

مادی جسم کی موت کے بعد ہر مذہب کے لوگ اپنے اپنے رواج کے مطابق مردہ جسم کا انتظام کرتے ہیں کچھ مردہ جسم کو زمین کے نیچے قبر میں دفن دیتے ہیں، کچھ جسم کو جلا کر اس کی راکھ دریا میں بہا دیتے ہیں، کچھ جسم کو چیل کوں کی خوراک بننے کے لئے الگ رکھ دیتے ہیں، اور کچھ بھوکے انسان مردوں کو بھی کھا جاتے ہیں۔ بحر حال جسم کے ساتھ جو بھی ہو اسے اس کی موجودہ حالت میں قبر میں رکھا جائے یا جلا دیا جائے یا زروں کی صورت میں بکھیر دیا جائے یا وہ چیل کوں یا انسانوں کے پیٹ میں چلا جائے۔ جسم جہاں بھی ہو گا وہیں اس کا برزخ قائم ہو جائے گا۔

## 129۔ برزخ (نفس کی دنیا) میں انسانی صورت

برزخ میں انسانی صورت درج ذیل ہوگی

برزخ میں انسانی صورت = مردہ جسم + نفس + روح = انسان

مردہ جسم جہاں بھی ہے باقی انسان یعنی نفس اور روح بھی وہیں موجود ہیں۔ (لہذا اس برزخی رہائش گاہ میں پورا انسان یعنی مردہ مادی جسم (چاہے وہ کسی بھی صورت میں ہو) نفس، روح سب موجود ہے۔ اب اس رہائش گاہ میں جسم مردہ حالت میں موجود ہے لہذا انسان اب اس مردہ جسم کا استعمال نہیں کر سکتا اب انسان مادی جسم سے اعمال سرانجام دے کر اپنے اعمال نامے میں کوئی اچھا بُرا اضافہ نہیں کر سکتا اعمال نامہ جسم کی موت کے ساتھ ہی انسان سے لے لیا گیا ہے جیسے امتہان گاہ میں پیپر کا ٹائم ختم ہوتے ہی پیپر واپس لے لیا جاتا ہے۔ لہذا ایوم حساب کے لئے انسان نے جو بھی اعمال کرنے تھے وہ مادی جسم میں رہتے ہوئے کر لیے اب جسم کی موت کے بعد ایک پیپر کی طرح انسان سے اس کا تیار کردہ اعمال نامہ واپس لے لیا گیا ہے اور اسی کے مطابق اب اس سے حساب ہو گا لہذا مادی جسم برزخی رہائش گاہ میں بے کار پڑا ہے۔ اب جو انسان نفس کی صورت متحرک ہے تو اپنے انہیں اعمال کے حساب سے متحرک ہے جو وہ دنیا میں زندگی میں کر آیا ہے۔ اچھے عمل کیے تھے تو نفس ان اچھے اعمال سے صحت مند، فعال اور متحرک ہو گیا ہے۔ برے عمل کیے تھے تو گناہوں سے نفس بیمار اور مردہ جسم کی طرح بے کار پڑا ہے۔

جسم کی موت کے بعد جہاں بھی جسم ہے وہیں پر باقی انسان بھی موجود ہے اگر جسم قبر میں ہے تو اس جسم کی روح اور نفس بھی یہیں موجود ہیں لہذا جہاں جسم ہے وہیں ہے پورا انسان۔ لہذا برزخ میں انسانی صورت درج ذیل ہے۔

برزخ میں انسانی صورت = مُردہ جسم + نفس + روح = انسان

## 130۔ برزخی (نفس کی) رہائش گاہ

لہذا جہاں انسان کا جسم ہے وہیں اس کی برزخی رہائش گاہ کا بندوبست کر دیا گیا ہے۔ انسان کے اعمال کے مطابق انسان کی اس عارضی رہائش گاہ کو ترتیب دے دیا گیا ہے۔ یہ رہائش گاہ بالکل ویسی ہی ہے جیسی دنیا میں تھی یعنی جیسا انسان کا گھر دنیا میں تھا ویسا ہی گھر برزخ میں ہوگا۔ عموماً ہر شخص کی برزخی رہائش گاہ اس کے اعمال کے مطابق ہوتی ہے لہذا اعمال عمومی ہیں تو برزخی رہائش گاہ دنیاوی رہائش گاہ کی ہی صورت ہوگی لیکن اگر اعمال اچھے یا بہت اچھے ہیں تو یہ برزخی رہائش گاہ اعمال کے حساب سے اچھی اور بہت اچھی ہوگی۔ اگر اعمال برے ہیں تو رہائش گاہ بھی اسی مناسبت سے ہوگی۔ یعنی برزخی رہائش گاہ اعمال کے حساب سے حسب مرتبہ دی جائے گی۔

## 131۔ برزخ (نفس کی دنیا) کیسی ہے

برزخ رنگ و روشنی کی نرم و لطیف دنیا ہے۔ یہاں بشمول انسان سب کچھ وہی ہے جو سب کچھ دنیا میں موجود تھا، فرق یہ ہے کہ مادی دنیا میں سب کچھ مادی تھا یہاں سب کچھ رنگ و نور سے بنا ہوا ہوتا ہے۔

دراصل انسان اور (ہر مادی شے) جسمانی مادی جسم کی موت کے بعد اپنا یہ مادی کثیف جسم اپنے اوپر سے اتار دیتا ہے اور یہ کثیف لباس اتارنے کے بعد اب انسان ہے تو وہیں موجود لیکن اپنی لطافت اور موجودہ روشنی کی ہیئت کی وجہ سے مادی آنکھ سے اوجھل ہو گیا ہے یہ ایسے ہی ہے جیسے کوئی انسان ہمارے درمیان ہی موجود ہے لیکن اس نے کوئی سلیمانی ٹوپی پہن لی ہے اس لیے ہمارے درمیان ہونے کے باوجود نظر نہیں آتا۔ لہذا برزخ بھی ایک باریک پردے کے پیچھے ہم سے تھوڑا سا اوپر ہمارے ہی سیارہ زمین پر موجود ہے، ہاں بس ہم اپنی کوتاہ نظری کی بدولت اسے



دیکھ نہیں پارہے

اب انسان برزخی دنیا میں اپنی برزخی رہائش گاہ پر عارضی قیام کرے گا اور یہ برزخی زندگی نفسی زندگی ہے۔

## 132- نفسی زندگی

برزخی زندگی نفسی (AURA) زندگی ہے۔ مادی جسم تو موت کا شکار ہو گیا جبکہ نفس (AURA) ابھی زندہ اور متحرک ہے اور موت کے بعد کی زندگی نفسی زندگی ہے۔

یہاں عالم برزخ میں اگرچہ انسان کا جسم بھی اس کی برزخی رہائش گاہ میں ہی موجود ہے لیکن یہ مردہ جسم انسان نے پرانے کپڑے کی طرح اپنے جسم سے اتار دیا ہے لہذا اب یہ مادی جسم برزخی رہائش گاہ کے ایک کونے میں کسی بے کار بوسیدہ کپڑے کی طرح پڑا ہے۔ لہذا اس برزخی رہائش گاہ میں پورا انسان یعنی مادی جسم (چاہے وہ کسی بھی صورت میں ہو) نفس، روح سب موجود ہے۔ اب اس رہائش گاہ میں جسم مردہ حالت میں موجود تو ہے لیکن انسان اب اس مردہ جسم کا استعمال نہیں کر سکتا اب انسان مادی جسم سے اعمال سرانجام دے کر اپنے اعمال نامے میں کوئی اچھا بُرا اضافہ نہیں کر سکتا اعمال نامہ جسم کی موت کے ساتھ ہی انسان سے لے لیا گیا ہے جیسے امتحان گاہ میں پیپر کا ٹائم ختم ہوتے ہی پیپر واپس لے لیا جاتا ہے۔ لہذا ایوم حساب کے لیے انسان نے جو بھی اعمال کرنے تھے وہ مادی جسم میں رہتے ہوئے کر لیے اب جسم کی موت کے بعد ایک پیپر کی طرح انسان سے اس کا تیار کردہ اعمال نامہ واپس لے لیا گیا ہے اور اسی کے مطابق اب اس سے حساب ہوگا لہذا مادی جسم برزخی رہائش گاہ میں بے کار پڑا ہے۔ اب جو انسان نفس کی صورت متحرک ہے تو اپنے انہیں اعمال کے حساب سے متحرک ہے جو وہ دنیا میں زندگی میں کر آیا ہے۔ لہذا برزخ میں انسان کی زندگی نفسی زندگی ہے اور یہ زندگی انسان کے دنیاوی اعمال کے نتیجے کی مناسبت سے ہے۔

## 133- مقید نفس

مادی زندگی میں بُرے اعمال کرنے والے بُرے انسان کا نفس موت کے بعد مقید نفس ہے۔

زندگی میں اعمال بُرے تھے تو نفس آزاد نہیں بلکہ برزخی رہائش گاہ میں مقید ہے۔ یہ قید اس کی دنیاوی مجرمانہ سرگرمیوں کا نتیجہ ہے جیسے ایک مجرم کو جرم کے بعد بطور سزا جیل میں ڈال دیا جاتا ہے اسی طرح نفس کو زندگی کی بد اعمالیوں کے صلے میں برزخ میں اس کی برزخی رہائش گاہ میں قید کر دیا گیا ہے۔

## 134- آزاد نفس

جس شخص کے دنیا میں اعمال اچھے تھے اس کا نفس برزخ میں آزاد ہے اور نفس برزخی دنیا میں اپنے ان اچھے اعمال کی وجہ سے صحت مند، فعال اور متحرک ہو گیا ہے۔ لہذا اپنے اعمال کے مطابق کائناتوں کی سیر کرتا پھر رہا ہے۔

عالم برزخ میں انسان اب نفس کی صورت متحرک ہے۔ لہذا برزخی زندگی نفسی زندگی ہے۔ اور نفس محض مفروضہ نہیں بلکہ جسم ہے لطیف جسم اور نفس محض جسم بھی نہیں بلکہ اجسام کے مجموعے کو یہاں ہم نے نفس کہا ہے۔ یعنی تمام اجسام نفس ہیں اور برزخ میں انسان چونکہ اب نفس کی صورت میں موجود ہے اب دیکھنا یہ ہے کہ انسان اپنے ان تمام اجسام کے ساتھ برزخ میں کیسے اور کیا کر رہا ہے۔

نفس کے اجسام۔ باطن مجموعہ ہے روح + نفس کا اور نفس مجموعہ ہے تمام اجسام کا لہذا تمام باطنی اجسام نفس کے زمرے میں آئیں گے جبکہ مشاہدہ کرنے والے ان لطیف اجسام کو روح یا روح کے حصے یا ماورائی یا باطنی مخلوق یا کچھ اور کہ دیتے ہیں یہ سب ان کی ذاتی اختراعات ہیں دراصل یہ تمام لطیف اجسام نفس کے اجسام ہیں جس کی ہم پچھلے صفحات میں وضاحت کر آئے ہیں۔

## 135- اجسام کی تعداد

نظریہ نمبر۔ ﴿157﴾۔ ﴿اعمال مجسم ہو جاتے ہیں لہذا ایک شخص کے جتنے زیادہ مسلسل اور اچھے اعمال ہیں اتنے ہی اس کے باطنی اجسام ہیں﴾

اب سوال یہ ہے کہ ان نفسی اجسام کی تعداد کیا ہے۔

ماضی میں اور آج بھی مشاہدہ کرنے والے جو بھی اور جتنا بھی مشاہدہ کرتے ہیں اپنے اسی

مشاہدے کے مطابق وہ ان لطیف اجسام کی تعداد کا تعین کرتے ہیں۔ مثلاً بعض کا خیال ہے کہ یہ لطیف اجسام روح کے حصے ہیں جن کی تعداد تین ہے، کچھ کا خیال ہے کہ یہ چکر از یا سبطل باڈیز ہیں جن کی تعداد سات ہے، کوئی یہ کہنے کی کوشش کر رہا ہے کہ یہ لطیف نفسی اجسام دراصل باطنی مخلوقات ہیں جن کی تعداد سولہ ہے۔ درحقیقت یہ تمام اندازے باطن سے لاعلمی پر مبنی غلط اندازے ہیں۔ لہذا مشاہدہ کرنے والا جو ذاتی مشاہدہ کرتا ہے وہ اپنے اس مشاہدے کو اپنے الفاظ میں بیان کر دیتا ہے۔ لہذا باطنی اجسام کا مشاہدہ تو ٹھیک ہے لیکن یہ اس کا ذاتی مشاہدہ ہے جس کا اطلاق ہر شخص پر نہیں ہوگا دوسری بات یہ ہے کہ مشاہدے کے بیان کے یہ الفاظ بھی اس کے ذاتی الفاظ ہیں جو علمی معیار پر پورے نہیں اترتے جن کی کوئی علمی حیثیت نہیں ہے۔ حقیقت میں

ہر پیدا ہونے والے عام شخص کے پیدائشی طور پر نفس کے تین اجسام ہوتے ہیں (۱۔ مادی جسم، ۲۔ روشنی کا جسم، ۳۔ نور کا جسم) جبکہ عملی یعنی اعمال کی زندگی میں قدم رکھنے کے بعد اچھے اور مستقل اعمال کرنے والے لوگوں کے یہ مستقل اعمال مزید اجسام کی صورت میں ظاہر ہوتے ہیں، یعنی اچھے لوگوں کے مزید نفسی اجسام بھی ہوتے ہیں۔ یہ عملی نفسی اجسام کتنے ہوتے ہیں کیسے ہوتے ہیں۔ تو جواب یہ ہے کہ جس شخص کے جتنے اچھے مستقل اعمال ہو گئے اتنے ہی اس کے اجسام ہوں گے، لہذا کسی شخص کے باطنی اجسام کا تعین وہی شخص کر سکتا ہے جو اس کا مشاہدہ کرتا ہے۔ محض اندازے سے کسی یا ہر شخص کے باطنی اجسام کا تعین کرنا غلطی ہے اور ایک شخص کے باطنی اجسام کی تعداد کو ہر شخص کے باطنی اجسام کی تعداد قرار دینا بھی بڑی غلطی ہے۔ لہذا اب یہاں ہم باطنی اجسام کی تعداد کا صحیح معیار قائم کرتے ہیں۔

۱۔ ہر انسان کے پیدائشی باطنی اجسام کی تعداد = روشنی کا جسم + نور کا جسم

۲۔ موت کے بعد ہر شخص کے باطنی اجسام کی تعداد = اعمال کے حساب سے ہوگی جتنے اچھے اور مستقل اعمال ہوں گے اتنے ہی

باطنی اجسام زیادہ ہوں گے۔

کچھ لوگوں نے اپنے اعمال بد سے اپنے پیدائشی اجسام (روشنی و نور کے اجسام) کو بھی خراب کر لیا لہذا یہ بھی مادی جسم کی طرح موت کے بعد نیم مردہ حالت میں پڑے ہیں اپنی بد اعمالیوں کے نتیجے میں اپنی پرواز کی قدرتی صلاحیتوں سے بھی ہاتھ دھو بیٹھے ہیں جبکہ اچھے اعمال والوں کے اچھے

اعمال نے ان کے نہ صرف موجودہ روشنی و نور کے اجسام کی صلاحیتوں میں اضافہ کیا ہے بلکہ ان کے مزید اعمال مزید اجسام کی صورت میں ان کے ساتھ ہیں لہذا موت کے بعد اچھے لوگوں کی صلاحیتوں میں بے تحاشا اضافہ ہو گیا ہے لہذا موت کے بعد اب تو وہ ہواؤں میں اڑتے پھر رہے ہیں

## 136۔ روشنی کا جسم

نظریہ نمبر۔ ﴿158﴾۔ ﴿مادی جسم کی موت کے بعد اب انسان روشنی کے جسم کی صورت موجود

ہے﴾

مادی جسم کی موت کے بعد اب انسان اپنے مادی جسم سے نکل کر اپنے روشنی کے لطیف جسم (نفس AURA) کے اندر موجود ہے۔ یہی انسان جب مادی جسم اور مادی ذرات میں قید تھا تو ان ذرات کے بوجھ تلے دب زمین سے چپکا ہوا تھا انسان کے پاؤں زمین پر ٹکے ہوئے تھے وہ اس وزن کو اٹھائے زمین پر گھسٹتا تھا لیکن جسم کی موت کے بعد اب انسان نے اپنے اوپر سے یہ بوجھ اتار دیا ہے اب انسان زمین سے زرا سا بلند ہو گیا ہے اب وہ زمین پر چلتا نہیں ہے اب وہ اپنے نفس کے جسم کے ساتھ ہوا میں پرواز کرتا ہے انسان کا یہ نفسی جسم روشنی کا جسم ہے اور انسان اب اس روشنی کے جسم کے ساتھ روشنی کی فضاء میں موجود ہے اب انسان کی رفتار روشنی کی رفتار ہے لہذا اب انسان اپنے نفس کے اجسام کے ساتھ کسی راکٹ کی طرح پرواز کرتا ہے اور ہواؤں فضاؤں میں اڑتا ہوا کائنات کے سیاروں کی سیر کرتا پھرتا ہے۔ کچھ عرصہ روشنی کے جسم میں رہ کر انسان اس لباس جسم کو بھی اپنے اوپر سے اتار دے گا جیسے اس نے کچھ عرصہ مادی دنیا میں مادی جسم کے ساتھ بسر کیا پھر مادی جسم کی موت کے بعد اس جسم کو اتار دیا اسی طرح کچھ عرصہ روشنی کے جسم کے ساتھ انسان روشنی کی دنیا میں رہے گا پرواز کرے گا پھر اپنی مدت حیات پوری کر کے یہ روشنی کا جسم بھی مرجائے گا تو انسان اس جسم کو بھی اپنے اوپر سے اتار دے گا۔ مادی جسم بھی مر گیا روشنی کا جسم بھی مر گیا لیکن انسان ابھی بھی موجود ہے ابھی تک انسان کا اختتام نہیں ہوا۔

## 137۔ نور کا جسم

نظریہ نمبر۔ ﴿159﴾۔ ﴿اب روشنی کے جسم کی موت کے بعد انسان کا اختتام نہیں ہو گیا بلکہ اب انسان نور کے جسم کے اندر نور کی فضا میں موجود ہے۔﴾

اب انسان روشنی کی فضا سے زرا اور اوپر اٹھ کر نور کی فضا میں آ گیا ہے جیسے وہ مادی جسم سے نکل کر تھوڑا اوپر اٹھ کر روشنی کی فضا میں داخل ہو گیا تھا اسی طرح اب اس نے اپنے اوپر سے روشنی کا لبادہ بھی اتار دیا اب وہ مزید لطیف ہو کر ایک درجہ اور اوپر اٹھ آیا ہے کچھ عرصہ انسان اس نور کے جسم کے ساتھ نور کی دنیا میں رہے بے گا پھر اپنی مدت حیات پوری کر کے یہ نور کا جسم بھی مر جائے گا اور اس جسم کو بھی انسان اپنے اوپر سے اتار دے گا۔ لیکن اس جسم کی موت کے بعد بھی انسان کا اختتام نہیں ہوا بھی انسان موجود ہے لہذا

## 138- تمام باطنی لطیف اجسام (نفس AURA) فانی ہیں

نظریہ نمبر۔ ﴿160﴾۔ ﴿تمام اجسام مرجاتے ہیں۔ روح باقی رہ جاتی ہے۔﴾ جبکہ باطن کا مشاہدہ کرنے والے باطنی اجسام کو روح تصور کر کے ان لطیف اجسام کو لافانی تصور کرتے ہیں۔ جبکہ درحقیقت تمام باطنی لطیف اجسام نہ تو روح ہیں نہ ہی روح کے حصے نہ ہی یہ لطیف باطنی اجسام کوئی مخلوق ہیں بلکہ یہ تمام اجسام محض نفس ہیں اور تمام باطنی اجسام اپنی مدت حیات پوری کر کے مرجاتے ہیں۔

برزخ کے اندر یونہی لباس جسم بدلتے بدلتے زینہ بہ زینہ اوپر چڑھتے چڑھتے ایک مقام پر انسان ہر لباس جسم اپنے اوپر سے اتار دے گا اور ہر جسم کے بغیر محض روح کی صورت رہ جائے گا، روح میں کوئی تغیر و تبدل نہیں نہ ہی روح مرتی ہے یہ جوں کی توں اور اتنی ہی اور ویسی ہی رہتی ہے۔ روح انرجی ہے اور ہر شخص کی روح واحد انرجی ہے، اور ہر انفرادی انرجی (روح) نے ایک واحد انرجی (پاور اسٹیشن) کی انرجی یعنی خالق سے آغاز کیا تھا، یعنی خالق کے حکم (انرجی) نے یکنخت منتشر ہو کر تمام تر ارواح کی صورت اختیار کی تھی اور اسی انرجی کے پروگرام سے انسان کی تخلیق و پیدائش کے مراحل مکمل ہوئے تھے اب فنا کے مراحل طے کر کے جو یہ واحد انرجی باقی بچی ہے تو اب دوبارہ یہ انرجی (روح) اپنے منبع (پاور اسٹیشن) میں ضم ہو جائے گی یہی روح کی منزل

ہے، یعنی روح جہاں سے آئی تھی یا چلی تھی وہیں پہنچ گئی، یعنی روح رب سے جا ملی۔ اب انسان نے جہاں سے اور جیسے ابتدا کی تھی جہاں سے اور جیسے آیا تھا بلکل اسی ترتیب سے واپس اپنی منزل پر جا نہنچا اب جیسے ابتدا میں واحد از جی کے سوا کچھ نہیں تھا اب بھی واحد از جی کے سوا کچھ نہیں ہے

اب کہیں انسان کا نشان بھی نہیں ہے

لہذا مادی جسم مادی دنیا میں منتشر ہو گیا

روشنی کا جسم روشنی کی دنیا میں منتشر ہو گیا

نور کا جسم نور کی فضا میں بکھر گیا

روح رب سے جا ملی

اب یہاں انسان کا اختتام ہوا۔ انسان جو روح، نفس (اجسام)، جسم کا مجموعہ تھا، اب اس وقت نہ

روح ہے نہ جسم نہ نفس۔ اب پورے انسان کا کہیں نشان بھی نہیں ایسے جیسے وہ کبھی تھا ہی نہیں

جب مُراقبہ و مشاہدہ کرنے والے مر جانے والوں کو جسم کی موت کے بعد لطیف اجسام کی صورت

میں برزخ یعنی ایک لطیف فضا میں موجود پاتے ہیں تو نفس کے اجسام کو نئے اجسام اور برزخی نفسی

دنیا کو نئی دنیا تصور کر لیتے ہیں وہ جسم کی موت کو تو انسان کا اختتام تصور کرتے ہیں لہذا انسان کے

اختتام کے بعد ان کے خیال میں ان دیگر لطیف اجسام کی ایک نئی اور انوکھی لطیف فضا میں موجودگی

کا مطلب ہے دوسرا جنم، یعنی وہ انسان جس کا موت کی صورت میں اختتام ہو گیا وہ اب نئے جسم

کے ساتھ نئی دنیا میں پھر تہی اُٹھا ہے۔ یہ سب باطل گمان ہیں جو مذہبی اطلاعات کو سمجھنے کی کوشش

میں قائم کئے گئے درحقیقت ایسا کچھ نہیں ہے۔ انسان جسمانی موت کے بعد عملی زندگی کا اختتام ہو

گیا ہے اب انسان یوم حساب کے انتظار میں برزخ میں مخصوص حالات میں کچھ دیر کو رُک گیا

ہے۔ لہذا برزخ کا یہ عارضی قیام دوسرا جنم نہیں بلکہ ایک انسان کے پہلے جنم کی واپسی کی روداد ہے

جو مذاہب نے صحیح بیان کی تھی لیکن انسان نے اسے بڑی طرح اُلجھا کر خلط ملط کر کے ان

اطلاعات کو نئے نئے فلسفوں (آواگون، کرما، چکرا، ارتقاء) کی صورت میں بیان کیا خلاصہ یہ ہے

کہ آج تک کا انسان ان مذہبی اطلاعات کو نہ تو خود ہی سمجھ سکا ہے نہ ہی سمجھا سکا ہے اپنے ان غلط

نظریات (آواگون، ارتقاء، کرما، چکرا) کو آج تک ثابت تو کر نہیں سکا لیکن اپنے ان نظریات کو

مذہبی عقیدے تصور کر کے ان سے دستبردار بھی نہیں ہو پا رہا۔ آج ہم نے یہاں وضاحت کر دی

ہے کہ یہ نظریات نہ تو مذہبی عقیدے ہیں نہ ہی سائنسی نظریات ہیں محض غلط فہمیوں پر مبنی غلط تاریخی مفروضے ہیں جن کی کوئی مذہبی یا سائنسی حقیقت نہیں ہے۔

## 139۔ برزخ انتظار گاہ ہے

برزخ دراصل ایک انتظار گاہ ہے اور اس انتظار گاہ میں فیصلے کا دن آنے تک انسان کو رُک کر انتظار کرنا ہے۔ جیسے کوئی مسافر ویننگ روم میں بیٹھ کر ٹرین کے آنے کا انتظار کرتا ہے ایسے ہی انسان برزخ میں رُک کر منتظر ہے حساب کے دن کا یعنی برزخ ایک انتظار گاہ ہے یہ کوئی مستقل رہائش گاہ نہیں ہے۔ سوال یہ ہے کہ یہاں انسان کو برزخ میں ٹھرا کر کیوں انتظار کروایا گیا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ ابھی کچھ لوگ تو مر چکے ہیں برزخ میں داخل ہو گئے ہیں لیکن ابھی کچھ لوگ زندہ ہیں اور ابھی مر کر برزخ میں داخل نہیں ہوئے لہذا باقی تمام لوگوں کی مر کر برزخ میں منتقلی تک انتظار کرنا ہے اور یہ برزخی انتظار قیامت پر ختم ہوگا۔

## 140۔ قیامت

زندگی ابتداء سے جاری ہے اور ایک سے دودو سے چار یہ ہمیشہ بڑھتی پھولتی رہی ہے اور رہے گی کوئی حادثہ کوئی نسل کشی زندگی کا خاتمہ نہیں کر سکتی۔ ہاں لیکن ایک خدائی حکم یکنخت ہر قسم کی زندگی کو ختم کر دے گا، یہی قیامت ہے قیامت کا مطلب ہے ایک خدائی حکم کے ذریعے یکنخت ہر قسم کی زندگی کا اختتام۔ جب قیامت کی صورت میں ہر موجودہ شے کا اختتام ہو جائے گا تو سب انسان (اور اس کے ساتھ ہی تمام موجودہ اشیاء) بھی مر کر برزخ میں داخل ہو جائیں گے اس کے بعد اگلا مرحلہ شروع ہوگا۔ اگلا مرحلہ ہے دوبارہ زندگی۔

## 141۔ دوبارہ زندگی

انسان سے اس کے اچھے بُرے اعمال کا حساب لینے کے لیے اسے دوبارہ زندگی دی جائے گی۔ یہ کوئی انہونی بات نہیں ہے جیسا کہ تصور کیا جاتا ہے۔ یہ ایک سادہ سی حقیقت ہے کہ جس خالق نے

انسان کو پہلی بار محض اپنے حکم (انرجی، روح) سے ترتیب وار تخلیق کیا تھا وہی خالق (جب اس کی منشا ہوگی) دوبارہ اپنے ایک حکم سے اسی انسان کو اسی ترتیب سے دوبارہ ترتیب دے دے گا۔ اور خالق کو یہ سب کرنے کے لیے محض حکم (پروگرام) دینا ہوگا اور اس حکم کے عین مطابق اسی پرانے انسان کی ترتیب و تخلیق کا پراجیکٹ مکمل ہو جائے گا لہذا

۱۔ نور کی فضا سے نور کے وہی ذرات جو نور کے جسم کی موت کی صورت نور کی فضا میں منتشر ہوئے تھے سے نور کے جسم کی دوبارہ یکجائی ہوگی اور وہی پرانا نور کا جسم دوبارہ موجود ہو جائے گا اسی طرح  
۲۔ روشنی کی فضا سے روشنی کے وہی ذرات جو روشنی کے جسم کی موت کی صورت روشنی کی فضا میں منتشر ہوئے تھے سے روشنی کے جسم کی دوبارہ یکجائی ہوگی اور وہی پرانا روشنی کا جسم دوبارہ موجود ہو جائے گا اسی طرح

۳۔ مادی زمین سے مادی جسم کے وہی ذرات جو مادی جسم کی موت کی صورت مادی زمین میں منتشر ہوئے تھے سے مادی جسم کی دوبارہ یکجائی ہوگی اور وہی پرانا مادی جسم دوبارہ موجود ہو جائے گا لہذا

جس جس فضا میں جس جس زمین پر انسان نے اپنا لباس جسم اتارا تھا اس اس فضا سے یہی ذرات دوبارہ اکٹھے کر کے وہی پرانا انسان دوبارہ تشکیل دے دیا جائے گا۔  
یہ ہے انسان کا دوسرا جنم اور دوبارہ زندگی (اور اس دوبارہ زندگی میں انسان وہی پرانا انسان ہے) اور یہ دوسرا جنم انسان کو اس کی عملی زندگی کے اختتام کے بعد ملا ہے اور یہ دوسرا جنم انسان کو اپنی پہلی زندگی کا حساب دینے کے لیے ملا ہے۔ لہذا اب انسان کو زندگی میں کیے ہوئے ہر عمل کا حساب دینا ہوگا۔

یہ ہے یوم حساب، آج انسان سے اس کے ایک ایک عمل (جو اعمال نامے میں ریکارڈ ہیں) کا حساب ہوگا، اور اسی اعمال نامے کے حساب سے یہ تعین بھی ہو چکا ہے کہ یہ انسان کیسا انسان ہے۔ نفس امارہ ہے یا نفس لوامہ ہے یا نفس مطمئنہ ہے انسان کی حیثیت کے تعین کے بعد اسی حیثیت کے حساب سے انسان کو جنت یا جہنم بھیج دیا جائے گا۔  
یہ ہے انسان کا آخری ٹھکانہ یعنی جنت۔

یہیں سے انسان نے اپنے سفر کا آغاز کیا تھا اور بالا آخر طویل مسافت طے کر کے انسان پھر اپنے



ٹھکانے (جنت) پر واپس آ پہنچا ہے۔

## 142۔ انسان کائناتی مسافر ہے

سائنسدان ہمیشہ یہی کہتے رہے ہیں کہ انسانی زندگی کے لیے موضوع سیارہ فقط زمین ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ انسان کائناتی مسافر ہے اور کائنات میں بہت سے سیارے ہیں کہیں گرمی ہے کہیں برف جمی ہے کہیں پانی ہے کہیں پانی نہیں ہے، غرض کائنات میں لاشمار سیارے ہیں اور ہر سیارہ فضا اور عناصر یعنی ماحول کے اعتبار سے مختلف اور منفرد سیارہ ہے اور انسان کی تخلیق کائناتوں کی ساخت کے عین مطابق ہے یعنی انسان کائناتوں کے ہر سیارے پہ جانے رہنے سہنے کی پوری صلاحیت رکھتا ہے۔ یہ صلاحیت انسان زندگی میں بھی استعمال کر سکتا ہے اور زندگی کے بعد بھی۔ زندگی میں اختیاری کوشش تو انسان کی انتہائی محدود ہے لہذا کہا جاتا ہے کہ انسان چاند پر جا پہنچا ہے۔ یعنی مادی انسان کی پہنچ ابھی تک چاند تک ہی ہو پائی ہے۔

لیکن غیر اختیاری طور پر انسان اپنی آدمی زندگی اپنی روح اور نفس کے ذریعے حالت نیند میں کائنات کی سیر میں بسر کرتا ہے سارے جہان میں اڑتا پھرتا ہے اور اپنی اس حقیقی کائناتی سیاحت کو خواب کہہ کر مذاق میں اڑا دیتا ہے۔ مادی جسم کی موت کے بعد بھی انسان اپنے اعمال کے مطابق اپنے نفوس کے مختلف اجسام کے ذریعے کائنات کے مختلف سیاروں کی سیر کرتا پھرتا ہے، مختلف سیاروں پر انسان رہتا بستا ہے ہر جسم اپنی مدت حیات پوری کر کے مر جاتا ہے اور روح لباس جسم بدلتے بدلتے ہر سیارے کی سیر کرتے کرتے بالا آخر ہر لباس جسم اتار کر فقط روح رہ جاتی ہے اور یہ انفرادی روح بھی اجتماعی واحد انرجی (پاور اسٹیشن) میں زم ہو جاتی ہے۔ لہذا یہاں انسان کا خاتمہ ہوا۔ انسان جہاں سے اور جیسے آیا تھا ویسے ہی اور وہیں پہنچ گیا۔

یہ ہے انسان کے طویل ترین سفر کی مختصر روداد۔ دنیا بھر کے افسانے بھگانے والے صدیوں کے انسان کی اپنی روداد آج اس کتاب میں ہم نے بیان کی ہے۔

اس طویل انسانی روداد کا خلاصہ درج ذیل ہے

## 143۔ انسانی کہانی

۱۔ انسان کا کہیں نام و نشان بھی نہیں تھا لہذا سب سے پہلے انسان خالق کے علم میں محض ایک پروگرام کی صورت میں ظاہر ہوا اور جب خالق اپنے اس پروگرام پر عمل پیرا ہوا تو اس نے یہ پروگرام (حکم) جاری کر دیا لہذا اس پروگرام کے عین مطابق انسانی تخلیق کا مرحلہ وار عمل شروع ہوا لہذا پہلے مرحلے میں

۲۔ واحد انرجی کے یکنخت انتشار سے ہر انفرادی روح، نے جنم لیا اس کے بعد ترتیب وار

۳۔ پروگرام کے عین مطابق انسان کا باطن، بھی ترتیب پا گیا۔ اس کے بعد

۴۔ پہلے انسان کے، مادی جسم، کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔ اس کے بعد

۵۔ روح، نفس، مادی جسم کو یکجا کر دیا گیا اور یوں پہلا انسان جیتی جان ہوا

۶۔ انسان کا جوڑا (اس کی بیوی) پیدا کیا گیا۔

۷۔ پہلے جوڑے سے پیدائش کے عمل کا آغاز ہوا اور نوعی تسلسل کے ذریعے نسل انسانی کا آغاز ہوا۔

۸۔ اور آج کی موجودہ تمام نسل انسانی اسی پہلے خالق کے تخلیق کردہ جوڑے کی نسل ہے۔

## 144۔ انسانی سفر کے پانچ ادوار

انسان کا یہ کائناتی سفر پانچ ادوار پر مشتمل تھا۔ یہ پانچ ادوار درج ذیل ہیں

۱۔ عالم امر۔ خالق کے علم میں (یعنی سب سے پہلے انسان ایک پروگرام کی صورت ہارڈ

ڈسک (خالق کے علم میں) میں موجود تھا۔

۲۔ عالم ارواح۔ ہر انسان کا انفرادی پروگرام یعنی روح

۳۔ عالم مادی۔ روح + نفس + جسم = انسان

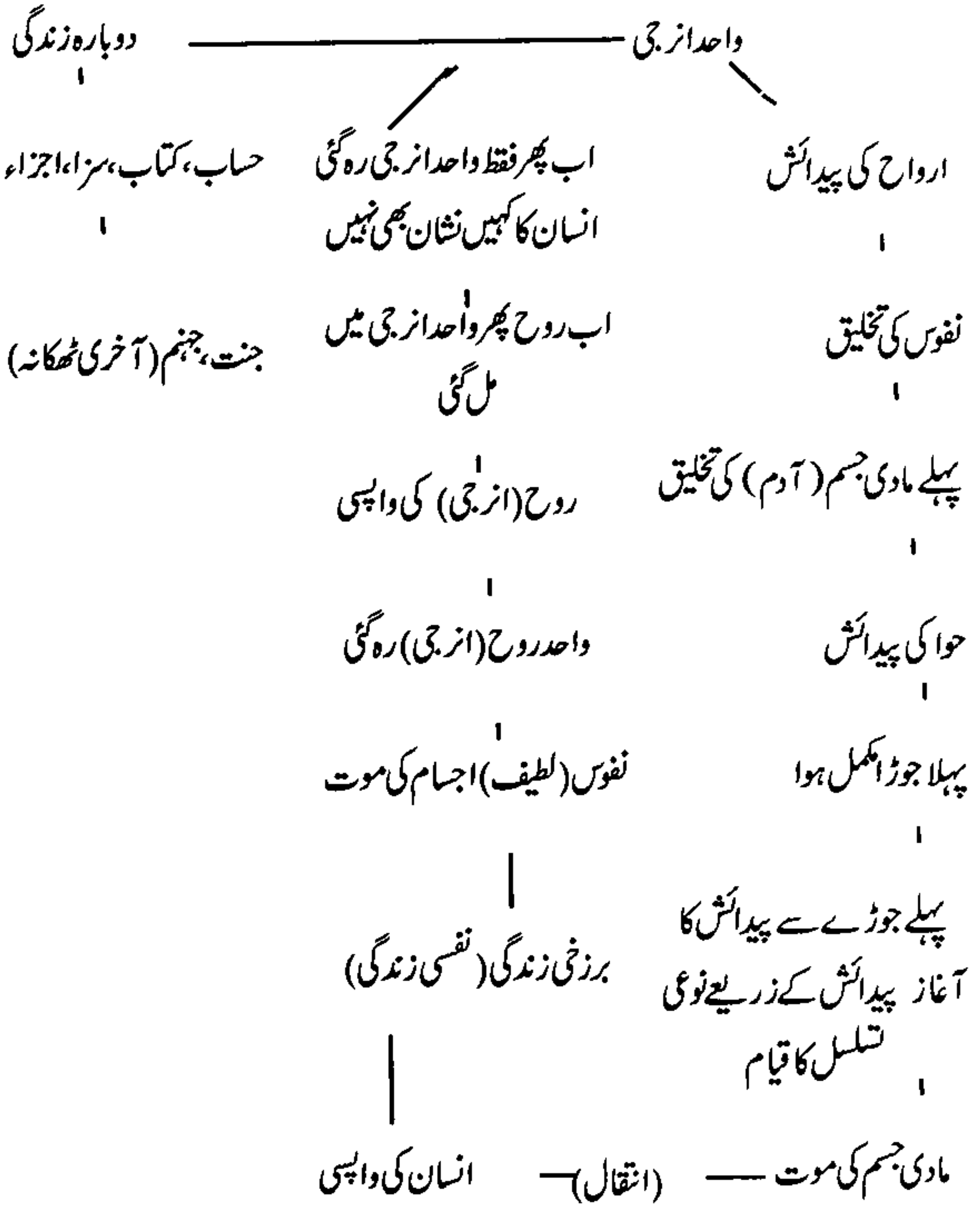
۴۔ مردہ جسم + روح + عالم برزخ۔ نفسی زندگی = روح + نفس (لطیف اجسام) = انسان

عالم آخرت۔ دوبارہ زندگی = مادی جسم + روح + نفس (لطیف اجسام) = انسان

انسان کے اس کائناتی سفر کی روداد کو اس کتاب میں میں تفصیلاً بیان کر آئی ہوں اب ہم اس تفصیلی

روداد کو ایک مختصر نقشے سے ظاہر کرتے ہیں۔

## 145۔ انسانی زندگی کا سفر آغاز تا اختتام



## تاریخی جواب

حصہ اول میں ہم نے انسان سے متعلق پرانے نظریات کا تنقیدی جائزہ لیا ہے جبکہ حصہ دوم میں ہم نئے نظریات کے ذریعے برسوں کے حل طلب تشنہ سوالات کے جوابات دیے ہیں اور انسان کی تعریف اور تفصیلی تعارف پیش کیا ہے۔ اب اپنے نئے نظریات کی روشنی میں ہم کچھ مزید تاریخی سوالات کے جوابات دیں گے۔

### 146۔ انسانی تعریف میں ناکامی کے اسباب

سوال نمبر ۱۔ انسانی تعریف میں ناکامی کے کیا اسباب ہیں؟

جواب۔ ہزاروں برس سے انسان پر مختلف پہلوؤں سے کام ہو رہا ہے لیکن ان ہزاروں برسوں میں آج تک انسان کی تعریف سامنے نہیں آسکی کہ آیا انسان ہے کیا۔ کیا وجہ ہے کہ ہزاروں برس کی تحقیقات، تجربات، تجزیات کے باوجود آج تک انسان کی تعریف سامنے نہیں آسکی؟ ہزاروں برس سے انسان پہ کام ہو رہا ہے اور بے نتیجہ ہے اور انسان کا علم ابھی تک اپنی ابتدائی حالت میں ہے یہ آگے کیوں نہیں بڑھا؟ یہ بے نتیجہ کیوں ہے؟ ہزاروں برس سے انسانی کام میں ہر دور کے لوگوں نے کچھ یکساں غلطیاں کی ہیں اور انہیں مسلسل غلطیوں کی وجہ سے آج تک انسان کی تعریف ممکن نہیں ہوئی۔ وہ غلطیاں کیا ہیں جو ہر دور کے لوگ کرتے آئے ہیں۔ یہاں ہم ان غلطیوں کی نشاندہی کریں گے۔ چھوٹی چھوٹی بے شمار غلطیوں کے علاوہ دو بڑی بنیادی غلطیاں ہر دور میں کی گئی ہیں۔

(1) انسانی مجموعے کو سمجھنے کی کوشش نہیں کی گئی۔ جبکہ انسان روح، نفس، جسم کی ایک خاص ترکیب اور تخلیق ہے۔

(2) لہذا اس خاص ترکیب سے لاعلمی کے سبب انسان آج تک خاص انسانی تخلیق کو سمجھنے سے قاصر رہا۔

(3) انسان کہیں سے آیا ہے تو کہیں جا بھی رہا ہے اور یہ واپسی کی خاص ترتیب فنائی ترتیب ہے۔ اور انسان سے لاعلمی کی وجہ سے اس فنائی ترتیب کو بھی نہیں سمجھا گیا۔ اور یہی وجوہات ہیں کہ آج تک انسان کی تعریف ممکن نہیں ہو سکی۔

درحقیقت انسان محض مادی جسم نہیں بلکہ ایک خاص الخاص مجموعہ ہے اسکا وسیع و عریض باطن بھی ہے جو روح اور رنگ برنگے لطیف اجسام کا مجموعہ ہے۔ لیکن آج تک انسان کو اس مجموعی حیثیت میں سمجھنے کی کوشش کبھی نہیں کی گئی اور ظاہر ہے ادھوری کوششوں کے پورے نتائج برآمد نہیں ہو سکتے اور انسانی کام میں یہی دو غلطیاں کی گئی ہیں جہی آج تک انسانی تعریف ممکن نہیں ہو سکی۔ انسان مادی جسم کے علاوہ ایک وسیع و عریض باطن بھی رکھتا ہے اس کے اندر روح و نفس بھی ہے اس کے اندر باہر طرح طرح کے برقی و مادی سسٹم کام کر رہے ہیں۔ یہ آفاقی اطلاعات مذاہب نے انسان کو دیں تھیں لیکن انسان کبھی پورے طور پر ان آفاقی اطلاعات کو سمجھ نہیں پایا اس لیے کہ کبھی اس نے خود کو مجموعی حیثیت میں سمجھنے کی کوشش ہی نہیں کی۔ کچھ لوگ محض روح پہ کام کرتے رہے تو کچھ محض جسم پہ کچھ ارتقاء کو ثابت کرنے پر تلے رہے تو کچھ نفس کے جال میں پھنس گئے لیکن کسی نے انسان کو مجموعی حیثیت میں جاننے کی کبھی کوشش نہیں کی۔

انسان یہ کوشش کرتا بھی تو کیسے آج تک یہی فیصلہ نہیں ہو پایا کہ آخر انسان ہے کیسا مجموعہ؟ آج تک اس کی مجموعی حیثیت کا ہی تعین نہیں ہو سکا۔ اور آخر انسان کی مجموعی حیثیت کا تعین ہوتا بھی کیسے۔

۲۔ کیونکہ آج تک اس کے انفرادی اجزاء روح و نفس کی شناخت تک ممکن نہیں ہوئی۔ انسان اگرچہ روح، نفس (AURA) چکر از کا جدید تحقیقات کے بل بوتے پر تجربہ و مشاہدہ تو کر رہا ہے لیکن سمجھ نہیں پارہا کہ آخر یہ سب کیا ہے، وہ انسان کے وسیع و عریض باطن کو دیکھ کر حیران ضرور ہو رہا ہے لیکن اسے شناخت نہیں کر پارہا اسے کوئی نام نہیں دے پارہا ابھی تک ان تمام کا باہم ربط قائم نہیں کر پارہا۔ ایک بڑی غلطی یہ بھی ہے کہ تمام تحقیقات کے باوجود انسان آج تک اسی ضد پر اڑا ہوا ہے کی مادی جسم ہی آخری حقیقت ہے جس میں روح کی کہیں کوئی ضرورت نہیں جبکہ روح پر کام

کرنے والے روح کو اصل اور جسم کو بے معنی کہہ رہے ہیں۔ جب تک انسان کو مجموعی حیثیت میں شناخت نہیں کیا جائے گا انسان کی تعریف ممکن نہیں۔ انسان کی تعریف میں ناکامی کا اہم سبب یہ بھی ہے کہ خالق کائنات نے انسان کو ایک خاص ترتیب سے تخلیق کیا ہے اور اسی طرح ایک خاص ترتیب سے انسان فنا کے گھاٹ اتر جائے گا یعنی انسان کہیں سے آیا ہے اور کہیں جانا ہے۔ یعنی انسان زمینی نہیں بلکہ کسی اور سیارے کی مخلوق ہے جو اپنے سیارے (جنت) سے پچھڑ کر زمین پر اپنی خطاؤں کے سبب آ پہنچا اور اب اسے واپس لوٹنا ہے۔ ہر دور کے انسان نے انسان کی زمین پر آمد اور واپسی کی سفری روداد کو سمجھنے میں غلطی کی اور اسے بری طرح خلط ملط کر کے رکھ دیا جس سے ارتقاء اور آواگون جیسے غلط نظریوں نے جنم لیا۔ جس طرح کائنات ابتداء میں تخلیق کے مختلف مراحل سے گزری ہے۔

۱۔ اسی طرح انسان ابتداً خاص تخلیقی مراحل سے گذرا ہے۔

۲۔ اسی طرح وہ خاص فنائی مراحل بھی طے کرے گا۔

یہ خاص تخلیقی و فنائی مراحل جب زیر بحث آئے تو فلسفیوں نے۔

۳۔ ان تخلیقی و فنائی مراحل کو سمجھنے میں غلطی کی۔

۴۔ دوسرے ان تخلیقی و فنائی مراحل کو خلط ملط کر دیا۔

۵۔ لہذا تخلیقی ترتیب کو سمجھنے کی غلطی نے ارتقاء جیسے بودے نظریے کو جنم دیا۔

۶۔ اور فنائی ترتیب کو سمجھنے کی غلطی نے آواگون جیسے نظریات کو جنم دیا۔

یہ تمام اطلاعات صحیح مذہبی اطلاعات تھیں جنہیں بری طرح بے ترتیب کر دیا گیا۔ لہذا تخلیقی و فنائی ترتیب کو سمجھنے کی غلطی نے جہاں ارتقاء، آواگون، جبر قدر جیسے مسائل کو جنم دیا وہیں روح، نفس، جسم کی گتھیاں سلجھنے کے بجائے مذید الجھ گئیں۔ جن مفکروں اور فلسفیوں نے آواگون اور ارتقاء جیسے بودے فلسفوں کو جنم دیا وہ اپنے ان غلط فلسفوں کو مذہبی آفاقی عقیدے تصور کر کے آج تک ان پر اڑے بھی ہوئے ہیں۔ جبکہ ان بودے فلسفوں کو جنم دینے والے نہ صرف خود گمراہ ہوئے بلکہ ہزاروں برسوں تک قوموں کو گمراہ کرتے آئے ہیں اور برسوں ایک بڑا علمی بحران پیدا کئے رکھا ہے۔

## 147۔ آواگون (REINCARNATION)

ترجمہ۔ یہاں تک کہ جب ان میں سے کسی کو موت آتی ہے تو کہتا ہے اے میرے رب مجھے واپس بھیج دیجیے تاکہ میں نیک عمل کروں اس میں جسے میں چھوڑ آیا ہوں (یعنی دنیا) جو اب ہوگا، ہرگز نہیں یہ تو بس ایک بات ہے جو وہ فضول میں کہہ رہے ہیں اب ان کے درمیان ایک برزخ حائل ہے۔ وہ اس میں قیامت کو اٹھنے تک رہیں گے۔

### ۱۔ آواگون (REINCARNATION)

تناخ کا عقیدہ ہندو مذہب کا خصوصی شعار ہے جو اس کا قائل نہیں وہ ہندو دھرم کا فرد نہیں۔ 'باس دیو' 'ارجن' کو عقیدہ تناخ کی حقیقت سمجھاتے ہوئے بتاتا ہے کہ "موت کے بعد اگرچہ جسم فنا ہو جاتا ہے۔ لیکن روح باقی رہتی ہے اور وہ اپنے اچھے اعمال کی جزاء اور برے اعمال کی سزا بھگتنے کے لئے دوسرے اجسام کے لباس پہن کر اس دنیا میں لوٹ آتی ہے اور یہ چکر غیر متناہی مدت تک جاری رہتا ہے۔" ویدوں میں ذکر ہے کہ!

"روح جسم کو چھوڑ کر نئے جسم میں داخل ہوتی ہے اور یوں اپنا سفر جاری رکھتی ہے۔"

### ۲۔ کرما کا نظریہ (KARMA)

بدھ ازم میں بھی آواگون کا عقیدہ بنیادی اساس ہے۔ جسے زندگی کا چکر یا "کرما" کہتے ہیں۔ ان کے مطابق

انسان بار بار مر کر دوبارہ پیدا ہوتا ہے۔ اور اس کا اگلا جنم اس کے اعمال کے مطابق ہوتا ہے۔ اور ان کے خیال میں اس بار بار کے جینے مرنے کے تسلسل سے اس وقت ہی انسان کو نجات مل سکتی ہے جب وہ وجود حقیقی میں کھو جاتا ہے۔ جب بھی روح مادہ

کے قفس کو توڑ کر آزاد ہو جاتی ہے تو وہ ہر قسم کے رنج و الم سے محفوظ رہتی ہے۔ ان کے خیال میں! ایک بار مرنے کے بعد انسان دوسرے جنم میں کسی اور وجود میں ظاہر ہوتا ہے۔ وہ وجود انسانی، حیوانی بلکہ نباتاتی بھی ہو سکتا ہے۔ پہلے جنم میں اس سے جو غلطیاں سرزد ہوئیں تھیں اس کے

مطابق اس کو نیا وجود دیا جاتا ہے۔ جس میں ظاہر ہو کر وہ طرح طرح کی مصیبتوں، بیماریوں اور ناکامیوں میں گرفتار ہو جاتا ہے اور اگر اس نے اپنی پہلی زندگی میں نیکیاں کی تھیں تو اس کو ان کا اجر دینے کے لیے ایسا قالب بخشا جاتا ہے جس میں ظاہر ہونے سے اس کو گذشتہ نیکیوں کا

اجر ملتا ہے اور اس طریقہ کار کو کرما (KARMA) کا نظریہ کہا جاتا ہے۔

(مراقبہ کے ذریعے مشاہدہ کرنے والے حضرات اور آج کے جدید محققین جب روح کو مادی جسم کے علاوہ نئے روپ نئے لباس میں دیکھتے ہیں تو وہ اسے کرما کے نظریے کی تصدیق تصور کرتے ہیں۔)

کم و بیش اہل یونان کا بھی یہی عقیدہ تھا۔

داتا گنج بخش علی ہجویری اپنی کتاب کشف المحجوب میں لکھتے ہیں!

"مخد جو روح کو قدیم کہتے ہیں اور اس کی پرستش کرتے ہیں اور سوائے اس کے کسی اور شے کو فاعل و مدبر نہیں سمجھتے۔ ارواح کو معبود قدیمی اور مدبر ازلی قرار دیتے ہیں اور یہ سمجھتے ہیں کہ ایک ہی روح ایک شخص کے جسم سے دوسرے شخص کے جسم میں چلی جاتی ہے اور عیسائی بھی یہی عقیدہ رکھتے ہیں اگرچہ بظاہر کہتے کچھ اور ہیں اور ہندو چین و ماچین میں تو سب کے سب لوگ اسی بات پر متفق ہیں "شیعوں، قرامطیوں اور باطنیوں کا بھی یہی عقیدہ رہا ہے اور حلو لیوں کے دونوں گروہ بھی اسی کے قائل ہیں۔"

### ۳۔ آواگون عقیدہ نہیں ہے

تناخ کے عقیدہ کے بارے میں "رگ وید" کی شہادت سے پتہ چلتا ہے کہ جب آریہ ہندوستان آئے تو ان کا یہ عقیدہ نہیں تھا کہ مرنے کے بعد انسان بار بار دوبارہ جنم لیتا ہے اور یہ سلسلہ جاری رہتا ہے۔

بلکہ آریہ کا اس وقت یہ عقیدہ تھا کہ!

(جو لوگ گناہ کی زندگی بسر کرتے ہیں انہیں مہادیوتا "وارونا" یعنی زمین کے سب سے نچلے حصے میں ایک خوفناک جگہ دوزخ میں بھیج دیا جاتا ہے اور جو لوگ راستی اور پاکبازی کی زندگی بسر کرتے ہیں انہیں فردوس بریں (جنت) میں بھیج دیا جاتا ہے۔)



لیکن یہاں آنے کے بعد انہوں نے دراوڑوں کو عقیدہ تناخ کا قائل یا یا تو وہ بھی اس پر ایمان لے آئے۔

آواگون کو مذہبی عقیدہ سمجھنے والے مذاہب سمیت تمام مذاہب موت کے بعد برزخ، جنت و جہنم کا تذکرہ کرتے ہیں۔ اور اصل مذہبی کتابوں میں کہیں بار بار جینے مرنے کی کوئی مذہبی دلیل موجود نہیں۔ جب یہ ثابت ہو گیا کہ آواگون عقیدہ نہیں محض باطل نظریہ ہے پھر آدھی دنیا سے عقیدے کے طور پر کیوں تسلیم کرتی ہے۔

سوال یہ ہے کہ اس باطل نظریے نے عقیدے کی صورت اختیار کیسے کی؟

۴۔ باطل نظریے نے عقیدے کی صورت کیسے اختیار کی؟

ذرا تھوڑی دیر کے لیے تعصب کو بالائے طاق رکھ دیجئے اور پھر جائزہ لیجئے۔

آج اس حقیقت سے سب واقف ہیں کہ

قدیم مذاہب میں تبدیلی ہوئی۔

(2) مذہبی پیشواؤں نے آسمانی اطلاعات میں زمینی فلسفیانہ اضافے کئے۔

سب جانتے ہیں کہ ایسی صورت حال میں غلط عقیدوں کے رواج کا سو فیصد امکان ہے۔ اور آواگون کا عقیدہ بھی ایسی ہی صورت حال کا شاخسانہ ہے۔ یعنی صحیح آسمانی اطلاعات میں فلسفیانہ زمینی اضافوں سے جنم لینے والا باطل نظریہ جو عقیدے کی صورت اختیار کر گیا۔ اگرچہ صحیح مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی اس میں فلسفیانہ اضافے کئے گئے اس کے باوجود اگر زمینی فلسفوں کو کائناتی اطلاعات سے الگ کر کے محض آسمانی اطلاعات کا جائزہ لیں تو حقیقت کھل کر سامنے آ جائے گی۔ اور اب ہم یہی کریں گے۔

آئیے جائزہ لیتے ہیں کہ مذہبی اطلاعات کیا ہیں اور ان میں کیا اضافے کئے گئے؟ اور ان مذہبی اطلاعات میں اضافوں سے ایک بے بنیاد اور غلط مفروضے نے مذہبی عقیدے اور سائنسی نظریے کی صورت کیسے اختیار کر لی۔

۵۔ مذہبی اطلاعات

بنیادی غلطی یہ ہے کہ مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی۔ آئیے جائزہ لیتے ہیں کہ مذہبی اطلاعات کیا ہیں اور ان اطلاعات کو سمجھنے میں کیا غلطی کی گئی جس سے آواگون جیسے نظریات نے جنم لیا۔

مذہبی اطلاعات درج ذیل ہیں۔

۱۔ امریکہ کے ریڈانڈین سمجھتے تھے کہ روہیں ایک خاص مسکن میں چلی جاتی ہیں۔

۲۔ جبکہ قدیم افریقی سمجھتے تھے کہ نیک روہیں دیوتاؤں سے جا ملتی ہیں۔

۳۔ جبکہ قدیم مصریوں کا ایمان تھا کہ مرنے کے بعد انسان کی نئی زندگی شروع ہوتی ہے۔ لہذا مرنے کے بعد انسان کی روح اور ہمزاد (جسے بع اور کع کہتے تھے) اس کے مقبرے میں رہنے لگتے ہیں۔ ان کا خیال تھا کہ بع کا میل جول مرنے والے کے عزیزوں دوستوں کے ساتھ رہتا ہے جبکہ کع دوسری دنیا میں چلا جاتا ہے۔

۴۔ جبکہ یہودیوں کے کلاسیکل ورک سے حاصل ہونے والی معلومات کے مطابق موت کے بعد NEFESH ختم ہو جاتا ہے۔ روح کو ایک عارضی جگہ بھیج دیا جاتا ہے اس کی پاکیزگی کے عمل کے لئے عارضی جنت میں جبکہ Neshama کو واپس پلاٹونک ورلڈ میں اپنے محبوب سے وصال کے لئے بھیج دیا جاتا ہے۔

۵۔ جبکہ مسلمانوں، عیسائیوں اور یہودیوں کی مذہبی کتابوں کے مطابق مرنے کے بعد انسان بعض مخصوص حالات میں برزخی (نفسی یعنی روح و نفس کے ساتھ) زندگی بسر کرتا ہے پھر آخرت ہے جہاں اس کا واسطہ جنت یا جہنم سے پڑے گا یا اس کی آخری قیام گاہ جنت یا جہنم ہوگی۔

۶۔ جبکہ ویدوں میں ذکر ہے کہ روح جسم کو چھوڑ کر نئے جسم میں داخل ہوتی ہے اور یوں اپنا سفر جاری رکھتی ہے۔

۷۔ باس دیوبھی ارجن کو عقیدہ تناخ کی حقیقت سمجھاتے ہوئے یہی بتا رہا ہے کہ "موت کے بعد اگرچہ جسم فنا ہو جاتا ہے لیکن روح باقی رہتی ہے اور اپنے اچھے اعمال کی جزاء اور برے اعمال کی سزا بھگتنے کے لئے دوسرے اجسام کے لباس پہن کر اس دنیا میں لوٹ آتی ہے اور یہ چکر غیر متناہی مدت تک جاری رہتا ہے۔"

یہاں ہم نے کچھ مذہبی اطلاعات اکٹھی کی ہیں۔ ان اطلاعات کا بغور جائزہ لیجئے کہیں بھی ذکر نہیں

ہے کہ انسان بار بار جنم لیتا ہے اور نہ ہی ان چیدہ اطلاعات کے علاوہ کسی بھی صحیح مذہبی اطلاع میں بار بار جنم کا ذکر موجود ہے۔ بلکہ مذاہب میں انسان کو تنبیہ کی جاتی ہے کہ اسے جو اعمال بھی کرنے ہیں دنیاوی زندگی ہی

میں کر لے موت کے بعد نہ تو نیک اعمال کی آزادی ہوگی نہ اسے عمل کے لیے دوبارہ زندگی ملے گی۔

سوال یہ ہے کہ ان تمام مختلف اور متضاد مذہبی اطلاعات میں سے کونسی اطلاع درست اطلاع ہے۔ جواب یہ ہے کہ تمام اطلاعات درست اطلاعات ہیں۔ یہ اطلاعات بڑی ترتیب وار اطلاعات تھیں۔ لیکن پہلے تو ہر اطلاع کی ترتیب کو خلط ملط کیا گیا پھر اس خلط ملط سے نتائج اخذ کر لیے گئے جو آج آواگون جیسے نظریوں کی صورت میں ہمارے سامنے ہیں۔ ان تمام مذہبی اطلاعات میں دو باتوں کی نشاندہی کی جا رہی ہے۔

(۱) جسم کی موت کے بعد روح جسم کو چھوڑ کر نئے جسم میں داخل ہوتی ہے اور یوں اپنا سفر جاری رکھتی ہے۔

(۲) موت کے بعد انسان دوسری دنیا میں چلا جاتا ہے جسے برزخ جنت یا جہنم کہتے ہیں۔ سوال یہ ہے کہ ان دونوں میں سے کونسی اطلاع درست ہے۔ یا صحیح آسمانی اطلاع کونسی ہے۔ تو جواب یہ ہے کہ دونوں اطلاعات صحیح آسمانی اطلاعات ہیں۔ اور دونوں اطلاعات بڑی ترتیب وار اطلاعات تھیں۔ لیکن پہلے تو ہر اطلاع کی ترتیب کو خلط ملط کیا گیا پھر دونوں اطلاعات کو خلط ملط کر دیا گیا۔ دونوں صحیح اطلاعات اور الگ الگ اطلاعات ہیں جبکہ

عموماً ان دونوں مذہبی اطلاعات کو ایک دوسرے کی نفی تصور کیا جاتا ہے۔ لہذا جنت و جہنم کو ماننے والے آواگون کے نظریات کی نفی کرتے ہیں تو آواگون کو مذہبی عقیدہ سمجھنے والوں کے خیال میں جسم کی موت کے بعد انسان (روح) دوسرے اجسام کے روپ میں نمودار ہوتا ہے اور ان کے خیال میں روح کا جسم کی موت کے بعد دیگر اجسام کی صورت میں نمودار ہونے کا مطلب ہے انسان کی دوبارہ زندگی اور ان کے خیال میں زندگی کا یہ لامتناہی چکر بس چلتا ہی رہتا ہے۔ اور وہ کسی جنت دوزخ یا آخرت کو خاطر میں نہیں لاتے۔

انہی اطلاعات کو جب روحانی مشقیں کرنے والے حضرات نے یا فلسفیوں نے بیان کیا تو

آواگون کے نظریے کی صورت میں بیان کیا۔ حالانکہ یہ اطلاعات اور دیگر اطلاعات دراصل آواگون کے نظریے کی نفی کر رہی ہیں۔ لیکن سوال یہ ہے کہ ہر دور کے روحانی پیشواؤں اور فلسفیوں نے آواگون کی تصدیق کیوں کی  
اب ہم ان اطلاعات کا جائزہ لیتے ہیں جس سے یہ الجھن دور ہوگی۔

## ۶۔ تصویرِ آخرت

اکثر مذاہب جنت، جہنم اور آخرت کے عقیدے کے قائل ہیں لہذا اس مذہبی اطلاع میں تو کوئی ابہام موجود نہیں ہے۔ لیکن اس عقیدے کے ماننے والے روح کے لباس بدل کر دوبارہ نمودار ہونے کو اپنے تصورِ آخرت کی نفی سمجھتے ہیں۔ جبکہ روح لباس بدلتی ہے یہ ہر مذہب کی صحیح آسمانی اطلاع ہے اور یہ اطلاع تصویرِ آخرت کی نفی نہیں کرتی بلکہ اسی سفرِ آخرت کی ہی ایک کڑی ہے۔ لہذا اگرچہ آخرت کے ماننے والے آواگون جیسے لغو نظریات سے بچے رہے لیکن وہ اس صحیح اطلاع (کہ روح دیگر لباس اجسام میں نمودار ہوتی ہے) کو بھی کبھی سمجھ نہیں پائے۔

## ۷۔ روح لباس بدلتی ہے

جسم کی موت کے بعد روح جسم کو چھوڑ کر نئے جسم (نفس کے اجسام یا دیگر اعمال کے اجسام) میں داخل ہوتی ہے اور یوں اپنا سفر جاری رکھتی ہے۔  
یہ اطلاع صحیح آسمانی اطلاع ہے لیکن بد قسمتی سے ہر دور میں اس اطلاع کو سمجھنے میں غلطی کی گئی اور اسی غلطی سے جنم لیا آواگون نے۔

اس کی بنیادی وجہ یہ ہے کہ انسان نے موت کو ہمیشہ انسان کا اختتام تصور کیا ہے حالانکہ موت فقط جسم کا اختتام ہے انسان کا اختتام نہیں ہے۔ اس لیے کہ انسان محض جسم نہیں جسم کی موت کے بعد انسان کی روح اور نفس ابھی باقی ہیں اور مادی جسم کی موت کے بعد انسان نفس کے اجسام میں موجود ہوتا ہے۔

جبکہ روح کا تذکرہ کرنے والے، مشاہدہ کرنے والے لوگ تھے جب انہوں نے انسان کو موت کے بعد مادی جسم کے بغیر بھی کسی اور لباس جسم میں موجود پایا تو اسے انہوں نے دوسرا جنم تصور

کر لیا۔ لہذا ان معلومات سے مستفید ہوتے ہوئے سوامیوں اور فلسفیوں نے جب اس مذہبی اطلاع کو بیان کیا تو انہوں نے بھی

اسے دوسرا جہنم قرار دیا مزید انسان ان اطلاعات کو سمجھنے اور سمجھانے کے چکر میں اپنی اپنی عقل کے فلسفیانہ اضافے بھی کرتا رہا نتیجہ ارتقاء اور آواگون جیسے باطل نظریوں کو صورت میں سامنے آیا جو آج عقیدوں کی صورت میں موجود ہیں حالانکہ یہ محض فلسفیانہ نظریے ہیں جو ہر طرح سے باطل ہیں۔

حقیقت یہ ہے کہ جب تک انسان زندہ تھا تخلیقی مراحل طے کر رہا تھا جب مر گیا تو اب وہ جو کہیں سے آیا تھا اب واپسی کے سفر پر روانہ ہو رہا ہے یعنی انسان تخلیقی مراحل طے کر چکنے کے بعد فنائی مراحل کی طرف بڑھ رہا ہے۔ اور موت اسی انسان کے فنائی مراحل کی پہلی سیڑھی ہے۔ موت سے انسان کا اختتام نہیں ہوا بلکہ انسان کے فنائی عمل کا آغاز ہوا ہے انسان کے واپسی کے سفر کا آغاز ہے موت۔ لیکن یہ سفر دوسری زندگی نہیں نہ ہی یہ سفر زندگی کا سفر ہے بلکہ یہ موت یا (انتقال) ہی کا سفر ہے۔ یہ سفر آخرت ہے۔

جسم مرجاتا ہے روح نہیں مرتی وہ جسم کو چھوڑ کر نئے نئے لباس جسم بدلتی مختلف سیاروں سے ہوتی ہوئی اپنے سفر آخرت پر روانہ ہو جاتی ہے۔ جسم کی موت کے بعد روح کے لباس بدلنے اور انسان کے جسمانی موت کے بعد بھی کسی اور جسم کی صورت میں موجود ہونے کو دوسرا جہنم سمجھ لیا گیا۔

مذہب نے تو انسان کے سفر آخرت کی درجہ بدرجہ روداد سنائی تھی اور یہ روداد انسان کی ابتداء سے انتہا تک کی روداد تھی۔ یہ روداد تھی تو بڑی ترتیب وار لیکن انسان نے اسے بری طرح خلط ملط کر کے رکھ دیا۔ اس ساری روداد کا تعلق انسان سے ہے۔ ان تمام مسائل کی جڑ انسان کی خود سے لاعلمی ہے اصل مسئلہ ہی یہ ہے کہ ہزاروں برس کا انسان خود کو نہیں جان پایا۔ ابھی تک انسان اپنی موت سے ناواقف ہے ابھی تک اس پر زندگی کے راز نہیں کھلے ابھی تک وہ اپنی تخلیق اپنی پیدائش سے ناواقف ہے۔ وہ آج تک نہیں جان پایا کہ خود اس کے اندر کیسے کیسے نظام کام کر رہے ہیں آخر وہ کیسا مجموعہ ہے؟ اسی ناواقفیت کے سبب وہ نہیں جانتا کہ وہ کہاں سے آیا ہے۔ کہاں جا رہا ہے؟ کیسے جا رہا ہے؟

اگر کبھی اس موضوع پر غیر سنجیدہ کوششیں کی بھی گئیں ہیں تو ایسی بے ربط کوششوں سے آواگون،

ارتقاء اور جبر و قدر جیسے مسائل نے جنم لیا ہے  
ہر دور کے انسان نے یہ غلطی اس لئے کی کہ وہ اپنے آپ سے ہی لاعلم ہے۔ لہذا اتمام تر تعصبات کو  
بالائے طاق رکھ کر

ان مذہبی اطلاعات کا دوبارہ بغور جائزہ لیجئے۔ اور اس حقیقت کو سمجھنے کی کوشش کیجیے کہ  
۱۔ ان اطلاعات میں کہیں بھی دوسرے جنم کا تذکرہ نہیں ہے

۲۔ ان اطلاعات میں جسم کی موت کے بعد برزخی حالات کا ذکر ہو رہا ہے۔ اور یہ ذکر زندگی کا ذکر  
نہیں ہے بلکہ موت کے بعد کا ذکر ہے اور یہ کسی دوسرے جنم کی نہیں انسان کے پہلے ہی جنم کی روداد  
ہے۔ لہذا مذہبی اطلاعات درج ذیل ہیں

(1) جسم کی موت کے بعد روح جسم کو چھوڑ کر دوسرا لباس بدلتی ہے یا نئے روپ میں ظاہر ہوتی  
ہے۔

(2) موت کے بعد انسان دوسری دنیا میں چلا جاتا ہے جسے برزخ جنت یا جہنم کہتے ہیں۔  
دونوں بالترتیب صحیح اطلاعات ہیں لہذا خالق کائنات نے انسان کو ایک خاص ترتیب سے تخلیق کیا  
ہے اور ایسے ہی وہ خاص فنائی مراحل سے گذرتا ہے۔ انسان پیدائش سے پہلے کہیں سے آیا ہے اور  
موت کے بعد کہیں جا رہا ہے۔

لہذا جسم مرجاتا ہے روح نہیں مرتی وہ جسم کو چھوڑ کر نئے نئے لباس جسم بدلتی مختلف سیاروں سے  
ہوتی ہوئی اپنے سفر آخرت پر روانہ ہو جاتی ہے۔ جسم کی موت کے بعد روح کے لباس بدلنے اور  
انسان کے جسمانی موت کے بعد بھی کسی اور جسم کی صورت میں موجود ہونے کو دوسرا جنم سمجھ لیا گیا۔

## ۸۔ آواگون کا مسئلہ حل ہو گیا

اب چونکہ ہم اس کتاب میں نئے نظریات کے ذریعے انسانی مجموعے، انسانی تخلیق، پیدائش،  
موت، انتقال کی تفصیلاً وضاحت کر آئے ہیں لہذا ان نئے نظریات کی روشنی میں اب

صدیوں کا یہ مسئلہ بھی حل ہو گیا۔ لہذا اب اپنی اپنی مذہبی اطلاعات کا دوبارہ جائزہ لیجیے جن میں  
کہیں بھی آواگون کا تذکرہ نہیں ہے یہ محض سوامیوں، فلسفیوں کے اضافے ہیں اصل اطلاعات  
ہمارے نئے نظریات کا دفاع کر رہی ہیں لہذا مذہبی اطلاعات اور ہمارے نظریات کے مطابق

اصل معاملہ یہ ہے کہ

۱۔ انسان روح، نفس، جسم کا مجموعہ ہے لہذا

۲۔ مادی جسم کی موت کے بعد فقط جسم کا اختتام ہوا ہے

۳۔ ابھی روح، نفس باقی ہیں

۴۔ لہذا اب انسان روح نفس کی صورت نفس کی دنیا میں موجود ہے۔ یعنی مادی جسم کا انسان اب

مادی جسم سے مفارقت کے بعد روح و نفس کی صورت موجود ہے۔ یعنی مادی جسم کی موت کے بعد

انسان کی صورت درج ذیل ہے۔

مردہ جسم + روح + نفس = انسان

۵۔ پہلے انسان مادی لباس میں موجود تھا اب جسم کی موت کے بعد انسان نے یہ لباس اتار دیا اب

یہی انسان روح کے ایک اور لباس نفس میں موجود ہے

۶۔ اب انسان نفس کی دنیا میں نفس کے اجسام کے ساتھ قیام کرے گا۔

۷۔ اس نفس کی دنیا میں انسان نفس کے دیگر اجسام کے ساتھ دیگر سیاروں کی سیر کر سکتا ہے۔

۸۔ مادی جسم کی طرح نفس بھی مر جائے گا تو انسان (روح) یہ لباس چھوڑ کر نفس کے نوری لباس

میں آجائے گا۔

۹۔ مادی جسم کی طرح نفس کے تمام اجسام بھی مر جائیں گے۔

۱۰۔ اب انسان ہر قسم کا لباس جسم اتار کر فقط روح کی صورت موجود ہے۔

۱۱۔ روح انرجی ہے واحد انرجی یہ واحد انرجی جہاں سے آئی تھی وہیں واپس اپنے مقام (پاور

اسٹیشن) میں ضم ہو جائے گی۔ اب کچھ بھی نہیں بچا

لہذا مادی جسم موت کی صورت مادی زمین پہ بکھر گیا

نفس کے اجسام نفسی فضاوں (عالم برزخ) میں بکھر گئے

روح (انرجی) رب (پاور اسٹیشن) سے جا ملی

اب اس وقت روح، نفس، جسم کے زندگی سے بھرپور انسان کا کہیں نشان بھی نہیں ہے جیسے وہ کبھی تھا

ہی نہیں۔

اب جب بھی رب کی منشاء ہوگی وہ حساب کے دن (یوم آخرت) اسی بے نام و نشان انسان کے

ہر روح نفس جسم کے ذرات کو ہر سیارے (زمین، اور دیگر نفسی سیاروں) سے اکٹھا کر کے وہی پرانا انسان ترتیب دے دے گا۔ اور اس سے اس اپنی ودیعت کردہ زندگی کا حساب مانگ لے گا (کہ اس جان کے ساتھ تم نے کیا کیا جو میں نے تم کو دی تھی)

لہذا یہ تھی جسم کی موت کے بعد انسان کی واپسی کے سفر کی روداد جو مذاہب نے بیان کی تھی جسے سوامیوں، فلسفیوں نے جب بیان کیا تو آواگون کی صورت میں بیان کیا اور انہوں نے ایسا اس لیے کیا کہ وہ کبھی ان اطلاعات کو صحیح طور پر سمجھ ہی نہیں پائے لہذا آواگون کا عقیدہ محض غلط فہمی پر مشتمل ہے جس کی کوئی مذہبی یا سائنسی بنیاد نہیں ہے۔ اب جبکہ آواگون کی ساری حقیقت یہاں ہم نے کھول کر بیان کر دی ہے۔ لہذا اب اس ہٹ دھرمی یعنی آواگون کی کوئی بنیاد باقی نہیں بچی۔ لہذا صدیوں بعد یہ مسئلہ (آواگون، کرما، یا چکرا) بھی حل ہوا۔

## 148۔ نظریہء ہبوطِ آدم

نظریہء ہبوطِ آدم یہ ہے کہ آدم علیہ السلام جنت میں بنائے گئے پھر وہاں سے انہیں زمین پر بھیج دیا گیا۔

اس مذہبی کہانی کو کچھ یوں ترتیب دیا گیا کہ، خالق کائنات نے حضرت آدم علیہ السلام کی تخلیق کے لیے فرشتوں سے تمام روئے زمین کی مٹی منگوائی پھر جنت میں اس مٹی کو پانی سے گوندھا اور جب وہ مٹی اچھی طرح تیار ہو گئی تو پھر اس تیار مٹی سے خالق نے بُت بنایا اور خالق نے یہ تمام کام اپنے ہاتھوں سے کیا لہذا جب یہ بُت تیار ہو گیا تو خالق کائنات نے اپنی روح سے کچھ اس میں پھونک دیا جس سے اس مٹی کے بُت میں جان پڑ گئی اب یہ مٹی کا بُت با حرکت انسان اور صاحب عقل و دانش ہو گیا پھر آدم کی پسلی سے حضرت حوا کو پیدا کیا گیا۔ لہذا پہلا جوڑا مکمل ہوا۔ کچھ عرصہ یہ دونوں جنت میں مقیم رہے لیکن شیطان کے بہکاوے میں آ کر انہوں نے جنت کے ممنوعہ درخت کا پھل کھا لیا لہذا اسی جرم کی پاداش میں ان دونوں کو ایک مخصوص عرصے کے لیے بطور سزا زمینی امتحان گاہ پر اتار دیا گیا۔

پروفیسر چارلوٹ ویلس (Prof Charlotte Wallace) اپنی کتاب A Study Of

Evolution میں نظریہء ہبوطِ آدم پہ تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ



ہبوطِ آدم کا نظریہ دراصل بائبل میں درج حضرت آدم علیہ السلام کی تخلیق کے واقعہ پر مبنی ہے، جس کی بنیاد پر عیسائی کلیسا نے بے شمار روایات کو جنم دیا ہے۔

جبکہ حقیقت یہ ہے کہ ہبوطِ آدم کا نظریہ محض بائبل کے بیان پر مبنی نہیں ہے بلکہ آدم یعنی پہلے انسان کی تخلیق کی یہ کہانی ہر مذہب نے سنائی ہے لہذا بائبل ہو یا قرآن یا کوئی بھی صحیح مذہبی آسمانی کتاب ہو ہر آسمانی کتاب میں آدم علیہ السلام کی تخلیق کی یہ کہانی موجود ہے۔

اور ہر صحیح آسمانی مذہبی کتاب میں موجود کائنات کے پہلے انسان کی تخلیق کی یہ داستان ہی صحیح داستان ہے۔

اس صحیح مذہبی داستان کے علاوہ پہلے انسان کی تخلیق کے بارے میں آج تک ہمارے پاس کوئی دیگر مستند ذریعہ علم موجود نہیں ہے نہ ہی کسی سائنسی یا تحقیقی ذریعے سے آج تک انسانی تخلیق کا کھوج لگایا جاسکا ہے۔ لہذا

۱۔ پہلے انسان کی تخلیق سے متعلق مذہبی داستان تو درست داستان ہے لیکن

۲۔ موجودہ مروجہ مذہبی داستان درست داستان نہیں ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ

۳۔ اکثر مذاہب میں ترمیم و اضافوں کے بعد تبدیلی آگئی لہذا آج وہ اپنی اصل درست حالت میں نہیں ہیں

۴۔ مزید یہ کہ ان موجودہ مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں بھی غلطی کی گئی۔ لہذا

۵۔ پہلے انسان کی تخلیق سے متعلق مذہبی کہانی بڑی بالترتیب اور صحیح کہانی تھی۔

اس بالترتیب صحیح مذہبی کہانی کو بے ترتیب کر کے سمجھنے میں غلطی کی گئی۔ اب خالق کائنات بیٹھ کر مٹی کے بت تو بنانے سے رہا وہ تو بس کہہ دیتا ہے بس حکم (پروگرام) دے دیتا ہے اور ہر ذرہ اس حکم پر عملدرآمد میں مصروف ہو جاتا ہے۔ یہی آفاقی حقیقت ہے جسے غلط طور پر سمجھا گیا اور غلط طور پر سمجھایا گیا لہذا مذہبی طبقہ اسی غلط کہانی کو مذہبی کہانی تصور کرتا رہا جبکہ سائنسدان کبھی بھی اس غلط کہانی کو سائنسی نظریے کے طور پر قبول نہ کر سکے۔ اس لیے کہ غلطی پر سائنسدان نہیں بلکہ مذہبی پیشوا تھے جنہوں نے کبھی مذہبی اطلاعات کو سمجھنے کی کوشش ہی نہیں کی۔

اس کتاب میں ہم نے نئے نظریات کے ذریعے انسانی تخلیق کا تذکرہ کیا ہے اور انسانی تخلیق کو بالترتیب درست کر کے بیان کیا ہے۔ لہذا آج ہمارے جدید نظریات اور صحیح (آسمانی کتابوں سے

اخذ شدہ غلط کہانیاں اور نظریات نہیں) مذہبی کہانی جو صحیح آسمانی کتابوں میں موجود ہے میں سو فیصد مماثلت موجود ہے۔ میں نے برسوں کی تحقیق کے بعد جو انسانی کہانی اس پوری کتاب میں بیان کی ہے اس کا خلاصہ درج ذیل ہے۔

۱۔ خالق نے حکم (تخلیق کا مکمل پروگرام) دیا تو

۲۔ اس حکم (پروگرام) کے عین مطابق مادی جسم کی تخلیق کا خود کار آغاز ہوا

۳۔ لہذا جسم کے لئے ہر مخصوص زرہ حکم (پروگرام) کے مطابق اپنے کام سے لگ گیا اور یوں زمینی عناصر سے مادی جسم کی تخلیق کا آغاز ہوا زمینی عناصر میں پانی، مٹی اور دیگر تمام زمینی عناصر موجود تھے لہذا انسانی جسم کی تخلیق میں مٹی بھی ہے پانی بھی اور اسی جیسے دیگر سینکڑوں عناصر بھی ہیں اور ان تمام کی ایک خاص الخاص ترکیب ہے انسان۔

۴۔ خالق کے حکم (پروگرام) کے مطابق زمینی عناصر سے مادی جسم کی تخلیق کا عمل ایسے ہی ہے جیسے ایک بیج زمین میں بودیں تو اس محض بیج سے پورا درخت اُگ آتا ہے۔ جیسے ایک بیج سے پورا درخت اُگ آتا ہے بالکل اسی طرح ایک حکم سے پورا انسان تخلیق پا گیا۔ حکم (پروگرام) وہ بیج تھا جس سے پودے کی طرح پورا جسم تیار ہو گیا۔ یعنی جب خالق نے زمینی عناصر کو مادی جسم کی تیاری کا حکم (پروگرام) دیا تو ہر زرہ اس پروگرام کے مطابق جسم کی تیاری میں لگ گیا اور جیسے ایک بیج سے پودا ایک مخصوص عرصے میں درخت بنتا ہے بالکل ایسے ہی حکم (پروگرام) کے مطابق زمینی عناصر کی ترتیب سے طویل مراحل طے کر کے ایک طویل عرصے میں جسم کی تخلیق کا عمل مکمل ہوا۔

اب جب طویل تخلیقی مراحل طے کر کے مادی جسم تیار ہو گیا تو اس جسم میں حرکت و عمل کے لئے خالق نے روح (انسانی حرکت و عمل کا مکمل پروگرام) ڈال دی اور یوں انسان جیتی جان ہوا پھر پہلی عورت، حوا، کو پیدا کیا گیا اور یوں پہلا انسانی جوڑا معرض وجود میں آیا۔

اس پہلے جوڑے کے ذریعے پیدائش کے سلسلے کا آغاز ہوا لہذا پہلے انسان آدم کی تخلیق ہوئی اور باقی تمام نوع انسانی پیدائش کے طریقے سے پیدا ہوئی اور ہوتی ہے۔

لہذا پہلے جوڑے سے پیدائش کا آغاز ہوا اور نوعی تسلسل قائم ہوا اور آج تمام موجودہ نوع انسانی اسی واحد جوڑے کی نسل ہیں۔ یعنی تمام انسانوں نے ایک انسان (نفس واحدہ) سے آغاز کیا ہے اور تمام انسان آدم کی اولاد ہیں۔

یہ ہیں ہماری برسوں کی تحقیقات کے نتائج جو صحیح مذہبی اطلاعات کی نہ صرف تصدیق کر رہے ہیں بلکہ صحیح مذہبی کہانیوں سے سو فیصد مماثلت بھی رکھتے ہیں۔

## 149- نظریہ جبر و قدر

تقدیر کے حوالے سے عیسائیوں نے نظریہ جبر (Fixed Destiny) پیش کیا نظریہ جبر کے مطابق انسان محض مجبور ہے۔ جو کچھ اس کے ساتھ ہوتا ہے وہ محض اس کی تقدیر اور پہلے سے ہی طے شدہ ہے اور ہو کر ہی رہے گا۔

سیکیولر تہذیب نے تقدیر کے اس نظریہ جبر کو رد کر دیا اور اس کی جگہ انسان کے غیر محدود اختیار (Absolute Free) کا نظریہ لائے۔ اس نظریے کے مطابق انسان غیر محدود اختیار کا مالک ہے اور با اختیار ہے لہذا جو چاہے کر سکتا ہے۔ اس نظریے کے مطابق فرد کے ذاتی اعمال یا قومی واقعات محض مادی وجوہات کا نتیجہ ہیں جن پر قابو پا کر انہیں معرض وجود میں آنے سے روکا جا سکتا ہے۔

مسلمانوں نے بھی بلاوجہ اس فلسفے کو اختیار کیا حالانکہ ان کے پاس اس فضول بحث کا کوئی جواز نہیں تھا پھر بھی دو فریقے جبریہ اور قدریہ وجود میں آئے۔ جبریہ انسان کی مجبوری کے قائل تھے تو قدریہ انسان کو اپنی قسمت کا مالک سمجھتے تھے۔ جبکہ حضرت علی اس بحث سے بہت پہلے سادہ الفاظ میں اس مسئلے کا حل پیش کر چکے تھے۔ جب حضرت علی سے سوال کیا گیا کہ انسان کتنا با اختیار ہے اور کتنا مجبور ہے تو انہوں نے سوال کرنے والے سے جواباً کہا کہ ایک ٹانگ پر کھڑے ہو جاؤ، جب وہ یہ کر چکا تو کہا اب دوسری ٹانگ بھی اٹھا لو۔ اس پر وہ بول اٹھا یہ میں کیسے کر سکتا ہوں۔ حضرت علی نے کہا تیرے سوال کا یہی جواب ہے، تم ایک حد تک آزاد ہو اور ایک حد تک مجبور۔

آج جدید سائنسی تحقیقات نے سیکیولر تہذیب کے نمائندہ سائنسدانوں کو اپنے اختیار (Free Will) کے نظریے پر نظر ثانی پر مجبور کر دیا ہے۔ لہذا جدید تحقیقات کی روشنی میں سائنسدانوں کو کہنا پڑ رہا ہے کہ انسانی جینز کے اندر آدمی کی سوچ، صحت اور تقدیر بند ہے۔ ہمارے جینز کے اندر پروگرام شدہ ٹائم کلاک ہیں جن کے مطابق ہماری نشوونما ہوتی ہے، ہم جو کچھ بھی ہیں ہماری عادات، ذہن، صحت، جسم کی شکل، سوچ اور ہماری زندگی کے حالات کا زیادہ تر انحصار ہمارے جینز

کی بناوٹ پر ہے، یعنی انسانی تقدیر اور نہ جانے کون کونسی تفصیل اس خورد بینی جراثیم سے پہلے سے لکھی ہوتی ہیں۔ اگرچہ آج کا انسان جدید تحقیقات کے نتیجے میں اپنے جینز پہ لکھی تقدیر کا مطالعہ تو کر رہا ہے لیکن جینز سے متعلق ان دریافتوں نے سائنسدانوں کو حیران کر دیا ہے۔ انسان جدید تحقیقات کے نتیجے میں اپنے جینز پہ لکھی تقدیر کا مطالعہ تو کر رہا ہے لیکن یہ نہیں سمجھ پارہا کہ وہ اپنے اندر لکھی اپنی تقدیر کا غلام ہے یا آزاد ہے۔

ابھی تک تو سائنسدانوں نے اتنا ہی دریافت کیا ہے کہ انسان جو کچھ کر رہا ہے یا اسے جو کچھ کرنا ہے وہ سب کچھ تو اس کی تقدیر میں پہلے سے لکھا ہوا ہے۔

اس دریافت نے سائنسدانوں کو حیران اور پریشان کر دیا ہے انسان جو کچھ کر رہا ہے یا اسے جو کچھ کرنا ہے اگر وہ سب کچھ انسان کی تقدیر میں پہلے سے لکھا ہوا ہے تو، اس کا مطلب یہ ہوا کہ انسان اپنی تقدیر کا غلام ہے، تو کیا انسان عمل کے لئے تقدیر کا پابند ہے۔؟ تو کیا انسان آزاد ارادے کا مالک نہیں ہے۔؟ یہ دریافتیں درحقیقت سائنسدانوں کو پھر اسی صدیوں پرانے جبر و قدر کے دورا ہے پر لے آئیں ہیں، یہ وہی برسوں پرانے سوالات ہیں جن پہ جبر یہ قدر یہ فرقے صدیوں اُلجھے تو رہے لیکن کوئی جواب نہ دے سکے، کوئی حل نہ ڈھونڈ سکے۔ آج جدید تحقیقات کے نتائج کے طور پر پھر وہی برسوں پرانے سوال سائنسدانوں کے سامنے سوالیہ نشان بنے کھڑے ہیں۔ یعنی

۱۔ کیا ہم اپنے اندر پہلے سے تحریر تقدیر کے غلام ہیں۔؟

۲۔ ہم اپنی جینز پر پہلے سے لکھی ہوئی اپنی تقدیر پر کتنا اختیار رکھتے ہیں، کیا ہم اسے بدل سکتے ہیں۔؟

۳۔ فرد و اقوام کے اعمال و واقعات کا تعین اگر پہلے سے تقدیر کے پروگرام میں طے پا چکا ہے تو کیا انسان ان واقعات کو معرض وجود میں آنے سے روک سکتا ہے۔؟

اس ساری بحث کا حاصل یہ ہے کہ جبر یہ (Fixed Destiny) ہوں یا قدر یہ (Absolute Free) یا جدید سائنسدان تمام ہزاروں برس سے اس مسئلہ تقدیر یا مسئلہ جبر و قدر میں اُلجھے تو ہوئے ہیں لیکن یہ تمام آج تک اس مسئلے کا کوئی حل ابھی تک ڈھونڈ نہیں پائے ہیں (اگرچہ وہ جدید سائنسی تحقیقات کے ذریعے اپنی تقدیر کا مطالعہ بھی کر رہے ہیں)۔ یعنی صدیوں میں بھی ہر قسم کے محقق، فلسفی اور سائنسدان مسئلہ جبر و قدر کو سلجھانے میں ناکام رہے ہیں

جبکہ آج ہم نے اس کتاب میں اس صدیوں کے مسئلے (Fixed) (جبر) (Destiny) و قدر (Absolute Free) کا حل پیش کر دیا ہے جس کا خلاصہ کچھ یوں ہے ہم مادی جسم کی پیدائش کے عنوان سے بیان کر آئے ہیں کہ ماں کے رحم میں جب بچہ نطفے سے آغاز کرتا ہے تو آغاز سے

۱۔ پہلے ۱۲۰ دن بچے کی جسمانی تعمیر اس کے والدین کی موروثی شخصیت کے مطابق والدین کے نطفے سے ہوتی ہے

۲۔ ۱۲۰ دن بعد بچے کی جسمانی تعمیر کے لیے ذاتی پروگرام (تقدیر) مل جاتا ہے۔ لہذا اگلے ۱۵۰

دن بچے کی تعمیر اس کے ذاتی انفرادی پروگرام سے انجام پاتی ہے، لہذا انسان

۳۔ انسان 44.44 فیصد موروثی شخصیت کا مالک ہے اور

۴۔ انسان 55.56 فیصد ذاتی انفرادی شخصیت کا مالک ہے۔

تقدیر کا مرتب پروگرام (جو مادر رحم میں آغاز پیدائش کے ۱۲۰ دن بعد انسان کو مل جاتا ہے) محض جسمانی ساخت کی ترتیب و تعمیر کا پروگرام نہیں ہے بلکہ انسان کی پوری زندگی کی ہر حرکت ہر عمل اس کتاب زندگی یعنی تقدیر میں پہلے سے تحریر ہے۔

۵۔ انسان کی پوری زندگی کی ہر حرکت ہر عمل اس کی کتاب زندگی یعنی تقدیر میں پہلے سے تحریر تو ہے لیکن

۶۔ انسان اپنی اس مرتب تحریر (تقدیر) کا پابند نہیں ہے۔ (انسان تقدیر کے محض چند قوانین کا پابند بھی ہے مثلاً زندگی موت وغیرہ یہ پابندی بالکل ایسے ہے جیسے ایک آزاد شہری ریاست کے نظم و ضبط کے لیے کچھ ریاستی قوانین کا پابند ہوتا ہے)

لہذا کتاب تقدیر میں پہلے سے مرتب تحریر سے ہر حرکت ہر عمل کی اطلاع آ جانے کے بعد ۷۔ انسان عمل اپنے ذاتی ارادے سے کرتا ہے۔ ایک عمل کیسے واقع ہوتا ہے اس کا تفصیلی بیان ہم عمل کے عنوان سے کر آئے ہیں اور اس عمل کے اس بیان میں یہ وضاحت بھی ہو چکی ہے کہ اعمال کا محرک محض مادی وجوہات نہیں ہیں بلکہ ہر حرکت ہر عمل روح و نفس، کائنات اور خالق کائنات سے مربوط ہے یعنی ہر حرکت ہر عمل جو انسان اپنی مرضی اپنے ارادے سے سرانجام دے رہا ہے وہ طویل کائناتی تسلسل کا حصہ ہے۔

ہمارے ان جدید نظریات کی روشنی میں جبر و قدر کا مسئلہ پورے طور پر حل ہو گیا ہے اور اس مسئلے کے ہر سوال کا تسلی بخش جواب بھی سامنے آ گیا ہے جسے اب یہاں ہم سوال و جواب کی صورت میں دہرا دیتے ہیں۔

سوال نمبر ۱۔ کیا انسان (نظریہ جبر Fixed Destiny اور جدید سائنسی تحقیقات کے مطابق) اپنے اندر تحریر تقدیر کا پابند ہے۔؟

جواب۔ انسان اپنے اندر تحریر تقدیر کا پابند یا غلام نہیں ہے۔ انسان کی تقدیر میں انسان کی پوری زندگی کی محض تحریر (پروگرام) ہے ہر حرکت ہر عمل کے لیے جب انسان کو اپنے اندر کی تحریر سے اطلاع مل جاتی ہے تو اس اندر کی تحریری اطلاع پر عملدرآمد انسان اپنے ذاتی ارادے سے کرتا ہے۔ انسان اس تقدیر کی اطلاع میں اپنے ذاتی ارادے سے رد و بدل کر کے ہر عمل اپنی مرضی سے سر انجام دیتا ہے۔ لیکن

انسان تقدیر کے محض چند قوانین کا پابند بھی ہے مثلاً زندگی موت، جسمانی شخصیت کی تعمیر وغیرہ یہ پابندی بالکل ایسے ہے جیسے ایک آزاد شہری ریاست کے نظم و ضبط کے لیے کچھ ریاستی قوانین کا پابند ہوتا ہے۔

سوال نمبر ۲۔ کیا انسان غیر محدود اختیار (Absolute Free) کا مالک ہے۔؟

جواب۔ انسان غیر محدود اختیار (Absolute Free) کا مالک ہے چاہے تو اپنی تقدیر کی تحریر پہ ہی عمل پیرا ہو جائے، چاہے تو اس میں رد و بدل کر کے عمل کر لے چاہے تو عمل کی ہر قسم کی اطلاعات کو رد کر کے اپنی مرضی سے عمل کے لیے کوئی تیسرا راستہ اختیار کر لے۔

سوال نمبر ۳۔ کیا فرد و اقوام کے اعمال و واقعات کا محرک محض مادی وجوہات ہیں۔؟

جواب۔ فرد و اقوام کے اعمال کا محرک محض مادی وجوہات نہیں ہیں بلکہ ہر حرکت ہر عمل روح و نفس، کائنات اور خالق کائنات سے مربوط ہے یعنی ہر حرکت ہر عمل طویل کائناتی تسلسل کا حصہ ہے۔

سوال نمبر ۴۔ کیا انسان اپنی مرضی سے فرد و اقوام کے اعمال و واقعات پر قابو پا کر واقعات کو معرض وجود میں آنے سے روک سکتا ہے۔؟ کیا انسان اپنی مرضی سے اپنے اور قوم کے حالات و واقعات کو بدل سکتا ہے۔؟

جواب۔ انسان اپنی مرضی سے فرد و اقوام کے اعمال و واقعات پر قابو پا کر واقعات کو معرض وجود میں آنے سے روک سکتا ہے اور انسان اپنی مرضی سے اپنے اور قوم کے حالات و واقعات کو بدل بھی سکتا ہے۔

ہر عمل کے لیے آزاد ہونے کے ساتھ ہی انسان تقدیر کے محض چند قوانین کا بحر حال پابند بھی ہے جیسے کہ ایک آزاد شہری چند ریاستی قوانین کا پابند ہوتا ہے، اور یہ پابندی ریاست کے نظم و ضبط کے قیام کے لیے ہوتی ہے، آزاد شہری کی پابندی کے لیے نہیں۔ لہذا عمل کی تمام تر آزادی کے باوجود انسان ان چند حالات و واقعات کو بدلنے کی طاقت نہیں رکھتا جو اس پابندی کے زمرے میں آتے ہیں۔

لہذا اب یہاں صدیوں کا مسئلہ جبر و قدر بھی آج یہاں ہم نے حل کر دیا۔ جس کے مطابق انسان ہر عمل کے لیے آزاد ہے اور اپنے ہر اچھے بُرے عمل کا ذاتی طور پر ذمہ دار اور جواب دہ ہے۔ (مزید تفصیلات کے لیے پڑھیے عنوان۔ پیدائش، عنوان۔ تقدیر، عنوان۔ عمل)

## AURA- 150 چکر از کیا ہیں؟

برسوں مادہ پرست سائنسدان انسان کے باطنی تشخص کا یہ کہہ کر انکار کرتے رہے کہ انسان محض مادی جسم ہے جس میں کہیں روح کی ضرورت نہیں اور آج سائنسدان خود انسانی باطن کو دریافت کر بیٹھے ہیں اور انسان کے اندر موجود اس پیچیدہ نظام کو دیکھ کر حیران ہیں۔ لہذا

۱۹۳۰ء کی دہائی میں روس میں کرلین (Karlain) نامی الیکٹریشن نے اتفاقی طور پر ایک ایسا کیمرہ ایجاد کیا جس نے پہلی دفعہ انسان کے باطنی وجود "AURA" کی تصویر کشی کر لی۔ اس (Karlain Photography) سے اس لطیف وجود "AURA" کو باقاعدہ طور پر دیکھ لیا گیا۔ یہ مختلف رنگوں پر مشتمل لہروں کا ہالہ ایک ہی لے کی طرح لطیف جسم تھا۔ یہ لطیف جسم بالکل انسان کے مادی جسم سے مشابہت رکھتا ہے۔ یہ جسمانی و ذہنی کیفیات کے مطابق مختلف رنگ و ارتعاش منعکس کرتا ہے۔ یہ لطیف جسم AURA انسانی جسم سے چند انچ اوپر مادی جسم سے متصل ہوتا ہے۔

انسانی جسم کے تمام تر تقاضے اسی روشنی کے جسم میں پیدا ہوتے ہیں۔ خون کی طرح ہر انسان کا AURA بھی مختلف ہوتا ہے۔

### سبٹل باڈیز AURA SUBTLE BODIES

"AURA" کے اندر مذید سات اجسام SUBTLE BODIES کا مشاہدہ کیا گیا ہے۔ ہر سات اجسام کے مختلف لیول اور سب لیول ہوتے ہیں۔

### چکراز CHAKRAS

چکراز CHAKRAS وہ پوائنٹس ہیں جن سے توانائی ہمارے جسم میں داخل اور خارج ہوتی ہے یہ خلائی سطح (ETHERIC LEVEL) پر موجود ہوتے ہیں۔ جسے ہم دوہرا جسم بھی کہتے ہیں کیونکہ یہ بالکل ہمارے مادی جسم کی شکل اختیار کر لیتے ہیں۔ چکراز جب صحیح کام کر رہے ہوں تو پیسے کی طرح گھومتے رہتے ہیں۔ سات " 7 " بنیادی چکراز ہیں جو کہ جسم کے اگلے اور پچھلے حصے میں موجود ہوتے ہیں اور اندر کی طرف مڑ رہے ہوتے ہیں۔ اس کے علاوہ AURA میں مزید چکراز ہوتے ہیں جو کہ جسم سے زیادہ فاصلے پر ہوتے ہیں۔

AURA کی دریافت تو آج ۱۹۳۰ء میں ہوئی ہے لیکن تمام ادوار میں انسان کے اس باطنی تشخص کا تذکرہ ہوتا آیا ہے بلکہ AURA سے متعلق ماضی کی معلومات آج کی جدید تحقیقات کے مقابلے میں زیادہ مستند معلومات ہیں مثلاً

قدیم ادوار میں یونانی، رومی، ہندو اور عیسائی اقوام میں ان کی مذہبی شخصیات کی تصاویر اور مجسموں میں ان کا ہیولا دکھایا جاتا تھا جسے انگریزی میں ہالو HALO اور قدیم یونانی اور لاطینی زبان میں اورا AURA اور ایرولا AUREOLA کہا جاتا تھا۔ اور آج اسی ماضی کی مناسبت سے ہی نئے دریافت شدہ لطیف جسم کا نام AURA رکھا گیا ہے۔ افلاطون کی تحریروں میں بھی موت کے واقعات میں AURA کا تذکرہ موجود ہے ارسطو نے اسے روح حیوانی کہا جبکہ ہزاروں سال پہلے کے فراعنہ مصر AURA کو بلع کہتے تھے۔ تبتی لاما ہوا میں اڑنے اور اپنے AURA کو جسم سے الگ کرنے کی صلاحیت بھی رکھتے تھے۔ جبکہ مسلمان، یہودیوں، عیسائیوں، ہندوؤں میں ایسے روحانی ماہرین پائے جاتے تھے جو نہ صرف اپنے AURA کو جسم سے الگ کر لیتے تھے بلکہ اس سے کام بھی لیتے تھے ہوا میں اڑتے پلک جھپکتے میں



ہزاروں میل کے فاصلے طے کر لیتے اور بہت سے روحانی کرتب دکھاتے تھے۔

مسلمانوں کی تحریروں میں بھی جا بجا AURA کا تذکرہ اور اس کی خصوصیات کا ذکر ملتا ہے۔ یہ تذکرے آج کی تحقیقات سے سو فیصد مماثلت رکھتے ہیں۔ مسلمانوں نے AURA کو دیگر ناموں سے پکارا ہے۔ مثلاً نسہ، جسم مثالی، روح حیوانی، روح ہوائی، روح یقظہ وغیرہ وغیرہ۔

قدیم چینوں میں بھی AURA کا تصور پایا جاتا تھا وہ اسے P.O کہتے تھے۔ جبکہ یہودیوں کے کام میں اسے Nefesh کہا گیا ہے۔

اگرچہ AURA کا تذکرہ ہزاروں برس سے ہو رہا تھا لیکن عرصہ دراز تک مادی سائنسدان انسان کے باطن کو غیر مرئی اور غیر اہم کہہ کر جھٹلاتے آرہے تھے پھر کچھ روحانی کرتبوں سے متاثر ہو کر کچھ سائنسدان اسے الیکٹرو میگنیٹک فیلڈ (E.M.F) ہیومن انرجی فیلڈ اور بائیو انرجی کے نام سے شناخت کرنے لگے اور بالا آخر سائنسدانوں نے ۱۹۳۰ء میں اس کی تصویر کشی بھی کر لی۔

آج AURA پر تحقیق و تحریر کے دور وا ہیں مغربی ممالک میں اس پر لیبارٹریز میں کام ہو رہا ہے کتابیں لکھی جا رہی ہیں۔ بلکہ وہ لوگ تو اس AURA کو کام میں لے کر جاسوسی کا کام بھی لے رہے ہیں اور اس کے ذریعے مرتخ تک جا پہنچے۔ مثلاً

امریکہ کا CIA کا خفیہ جاسوسی کا ادارہ (Sun Streak/Stragate) روحانی صلاحیتوں کے مالک جاسوسوں کو جدید سائنسی طریقوں سے روحانی تربیت دے کر روحانی سراغ رسانی کا کام لیتا ہے۔ اور یہ روحانی تربیت یافتہ افراد روحانی وجود AURA کو استعمال میں لا کر دشمن کے خفیہ منصوبوں کا گھر بیٹھے سراغ لگاتے ہیں۔ درحقیقت یہ دشمن کے ہتھیاروں کو گھر بیٹھے ناکارہ بنا سکتے ہیں۔ یہ حکمرانوں کے دماغوں کو گھر بیٹھے کنٹرول کر سکتے ہیں۔ یہ گھر بیٹھے اپنے دشمن کو شکست دے سکتے ہیں۔

آج دنیا بھر میں انسان کے باطنی رخ پر نہ صرف روحانی بلکہ سائنسی تجربات ہو رہے ہیں اور سائنسدان ایٹم کی طرح انسان کے اندر جھانک کر اس وسیع و عریض دنیا کو حیرت سے دیکھ رہے ہیں۔ لیکن ابھی سمجھ نہیں پارہے۔ اسی وجہ سے چکر ازا اور آواگون (Reincarnation) میں مماثلت تلاش کر رہے ہیں۔ حالانکہ ان دونوں میں کوئی مماثلت نہیں۔ جبکہ کچھ لوگ AURA یا

لطیف اجسام کو روح یا روح کا حصہ بھی کہتے ہیں

یہ AURA کیا ہے؟ مادی جسم سے اس کا کیا اور کیسا ربط ہے؟ یہ سوالات جوں کے توں حل طلب ہیں۔ جبکہ اس کتاب میں نئے نظریات کے ذریعے ہم نے ان تمام سوالوں کے تفصیلاً

جواب دے دیئے ہیں۔ لہذا یہاں اس

۱۔ AURA کی اصل شناخت قائم کی ہے۔ جس کا خلاصہ یہ ہے

۲۔ AURA نفس ہے۔ AURA کا اصل نام نفس ہے۔

جبکہ آج جدید محقق AURA اور نفس پر الگ الگ حیثیتوں میں کام کر رہے ہیں۔ نفس پر اس کی

مفروضہ حیثیت میں کام ہو رہا ہے جبکہ AURA پر شناخت کے بغیر انفرادی تحقیقی کام ہو رہا

ہے۔ اور علمی میدان میں اتنی بڑی بڑی اور واشگاف غلطیاں کی جا رہی ہیں جس کی وجہ لاعلمی ہے

پختہ تحقیق کی ضرورت ہے ہر علمی موضوع کو۔ اور اس بات کو سمجھنے کی کوشش کیجیے کہ ہر وجود کا اپنا منفرد

نام اور منفرد شناخت ہے۔ اور یہ روح یا نفس جیسے نام مذہبی نام ہیں۔ ماضی میں ہر قوم نے ان

ناموں کو اپنی زبان میں ادا کیا جس کے نتیجے میں روح و نفس و جسم کی ایسی الجھن پیدا ہوئی جو آج

تک نہیں سلجھی اور انسان ایک معمہ بن کر رہ گیا تھا۔

اس کتاب میں برسوں کی مسلسل تحقیق و غور و فکر کے بعد میں نے یہ صدیوں کے مسائل حل کیئے ہیں

روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کی ہے۔ لہذا اب ان صدیوں کی غلطیوں کو درست فرما

لیں اور نوٹ کر لیں کہ

۲۔ AURA نفس ہے۔ AURA کا اصل نام نفس ہے۔

۳۔ لہذا نفس کی دیگر مفروضہ تعریفیں درست نہیں، نفس کوئی مفروضہ خواہش نہیں بلکہ ایک لطیف جسم

ہے جسے آج AURA کا نام دے دیا گیا ہے۔

۴۔ لہذا یہاں یہ بھی ثابت ہو گیا کہ AURA روح نہیں ہے بلکہ جسم ہے، نفس کا جسم

۵۔ AURA روشنی کا جسم ہے۔

۶۔ AURA جسمانی حرکت و عمل کا سبب ہے یہ جسم کا فیول ہے۔

۷۔ AURA اگرچہ جسمانی حرکت و عمل کا سبب ہے اور اس کی غیر موجودگی سے جسم حرکت و عمل

سے محروم ہو جاتا ہے لیکن اس کے باوجود

AURA جسم کی زندگی نہیں ہے جیسا کہ عموماً تصور کیا جاتا ہے۔ AURA کی غیر موجودگی سے جسم موت کا شکار نہیں ہوتا۔

جسم کی زندگی و موت کا سبب روح ہے۔ جو نفس سے منفرد شے ہے

۸۔ AURA انسان کے وسیع و عریض باطن کا ایک جز ایک جسم ہے۔ لیکن یہ مادی جسم کی طرح باطن کا بنیادی جسم ہے اگرچہ باطن کے دیگر اجسام بھی نفس ہیں AURA نفس کا ایک جسم ہے لیکن یہی بنیادی نفس بھی ہے۔ یعنی نفس کے اس جسم کا نام بھی نفس ہی ہے۔ قصہ مختصر AURA دراصل نفس ہے۔

## 151۔ روح کے حصے

سوال: کیا روح کے حصے ہیں؟

جواب: جی نہیں روح کے کوئی حصے نہیں ہیں!

روح کے حصے نہیں ہیں! اس امر کی شہادت ہر دور کے مفکروں، محققوں نے دی ہے۔ مراقبہ کرنے والے لاکھوں عام افراد جو روح کا علم نہیں رکھتے لیکن مراقبہ کی بدولت روح کا مشاہدہ کرتے ہیں وہ بھی اس مشاہدے کے بعد یہی کہتے ہیں کہ روح کے حصے نہیں ہیں۔ اگر روح کے حصے نہیں ہیں تو پھر ہر دور میں روح کو حصوں میں تقسیم کیوں کیا گیا ہے؟

بات صرف اتنی ہی نہیں ہے ہر دور میں جب روح کی تعریف کرنے کی کوشش کی گئی تو ہمیشہ اسے بیک وقت دو متضاد حالتوں میں بیان کیا گیا مثلاً ہر دور میں روح کی تعریف کرنے والے روح کی تعریف کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ

۱۔ روح ناقابل تقسیم ہے۔

۲۔ ناقابل تقسیم کہہ کر ساتھ ہی اسے حصوں میں بھی تقسیم کر دیتے ہیں۔

مثلاً ہزاروں برس قبل کا یونانی فلسفی ارسطو روح کو ایک ایسی اکائی تصور کرتا تھا جو اپنی ذات میں ہر لحاظ سے مکمل ہو اور اس کے ساتھ ہی وہ روح کو دو حصوں روح حیوانی اور روح انسانی میں بھی تقسیم کرتا تھا۔ حیوانی روح کو وہ نچلے درجے کی بتاتا ہے جبکہ اعلیٰ درجے کی روح کو وہ ذہن کا نام دیتا ہے۔

ارسطو کے بعد بھی ہر دور کے مفکروں نے ایسے ہی حصوں کا تذکرہ کیا ہے۔  
مثلاً خواجہ شمس الدین عظیمی کے مطابق انسان کے اندر جو صلاحیتیں کام کرتی ہیں وہ تین دائروں  
میں مظہر بنتی ہیں۔ یہ تینوں کرنٹ محسوسات کے تین ہیولے ہیں اور ہر ہیولا مکمل تشخص رکھتا ہے۔  
ہر کرنٹ سے انسان کا ایک جسم وجود میں آتا ہے اس طرح آدمی کے تین وجود ہیں۔

(1) روح حیوانی۔

(2) روح انسانی۔

(3) روح اعظم۔

جبکہ قدیم مصریوں نے بے اور کعب کا تذکرہ کیا ہے۔ ان کا ایمان تھا کہ مرنے کے بعد انسان کی  
دوسری زندگی شروع ہوتی ہے اور اس کے بے اور کعب اس کے جسم سے نکل کر اس کے مقبرے میں  
رہنے لگتے ہیں۔ ان کا خیال تھا کہ بے اور کعب کا میل جول مرنے والے کے عزیزوں دوستوں کے  
ساتھ رہتا ہے جبکہ کعب دوسری دنیا میں چلا جاتا ہے اور دیوی دیوتاؤں کے ہمراہ رہنے لگتا ہے۔ ان  
کے خیال میں کسی آدمی کے ہمیشہ زندہ رہنے کی یہی صورت تھی کہ بے اور کعب جسم کو پہچانتے ہوں۔  
قدیم چینیوں نے بھی روح کو دو حصوں میں تقسیم کیا ہے۔

(1) پو P.O :- یہ انسان کی شخصیت کا نظر آنے والا حصہ ہے جو کہ اس کے جسم سے جڑا ہوتا

ہے۔

(2) ہن HUN :- یہ نہ نظر آنے والا حصہ ہے جو کہ جسم میں موجود ہوتا ہے لیکن لازمی نہیں کہ  
جسم سے ہمیشہ بندھا ہو۔ جب وہ پھر رہا ہو تو ظاہر بھی ہو سکتا ہے اور اگر وہ ظاہر ہوگا تو اصل جسم کی  
صورت میں ظاہر ہوگا جبکہ اصل جسم اس سے دور ہوتا ہے۔ اصل جسم میں P.O موجود ہوتا ہے۔  
اگر HUN مستقل طور پر جسم سے دور رہے تو جسم کی موت واقع ہو جاتی ہے۔  
بعض یہودیوں نے بھی روح کو تین حصوں میں تقسیم کیا ہے۔

NESHAMA (3)

،RUACH (2)

،NEFESH (1)

:- NEFESH (1)

روح کا سب سے نچلا حیوانی حصہ۔ یہ انسان کی جسمانی خواہشات سے تعلق رکھتا ہے۔ تمام  
انسانوں میں پایا جاتا ہے اور جسم میں پیدائش کے وقت داخل ہوتا ہے۔ باقی کے دو حصے پیدائش

کے وقت داخل نہیں ہوتے لیکن وقت کے ساتھ آہستہ آہستہ بنتے ہیں اور ان کا بننا انسان کی حرکات اور اس کے اعتقادات پر منحصر ہوتا ہے اور کہا جاتا ہے یہ انہی لوگوں میں پایا جاتا ہے جو روحانی طور پر بیدار ہوں۔

RUACH (2) :-

یہ ہے درمیانی روح یا Spirit - اس میں اخلاقی پہلو پایا جاتا ہے اور یہ اچھے اور برے میں تمیز کرتی ہے اور اسی کو ہم سائیکی اور Ego بھی کہتے ہیں۔

NESHAMA (3) :-

سب سے اونچے درجے کی روح سب سے برتر حصہ یہ انسان کو تمام تر زندہ چیزوں سے منفرد بناتی ہے اس کا تعلق ان سے ہے۔ یہ انسان کو زندگی کے بعد کے فائدوں سے لطف اندوز ہونے میں مدد دیتی ہے۔ روح کا یہ حصہ یہودیوں اور غیر یہودیوں دونوں کو پیدائش کے وقت دے دیا جاتا ہے۔ اور یہ کسی بھی فرد کو اس کی موجودگی اور خدا کی موجودگی کا علم دیتا ہے۔ (اور آج جدید تحقیقات سے انسان کے باطن میں AURA اور چکر اور Subtle Bodies کی دریافت سے یہ تعداد تو تین سے کہیں آگے بڑھ چکی ہے)۔

کیا واقعی روح کے حصے ہیں ان معلومات سے تو یہی اندازہ ہوتا ہے کہ واقعتاً روح کے حصے ہیں۔ جبکہ ایسا ہے نہیں۔

پھر کیا وجہ ہے کہ ہزاروں برس سے لوگ روح کو ناقابل تقسیم بھی کہہ رہے ہیں اور اسے حصوں میں بھی تقسیم کر رہے ہیں اور اس تقسیم کے تذکرے میں بھی تھوڑی بہت رد و بدل اور کمی بیشی کے علاوہ مماثلت پائی جاتی ہے تقریباً سبھی نے ایک سی نوعیت کے حصے بخرے کیئے ہیں روح کے۔

درحقیقت روح کے حصے نہیں ہیں روح کو بعض غلط فہمیوں کی بنا پر حصوں میں تقسیم کیا جاتا ہے۔ وہ غلطیاں درج ذیل ہیں۔

(1) شناخت کی غلطی۔

(2) باطن سے لاعلمی۔

(1) شناخت کی غلطی :-

مذہبی کتابوں میں روح کا تذکرہ تو موجود ہے اور یہ مذہبی اطلاعات ہی روح یا انسان سے متعلق صحیح

ترین اطلاعات ہیں لیکن ان اطلاعات پر کبھی کسی نے سیر حاصل غور و فکر نہیں کیا لہذا کوئی اسے پورے طور پر آج تک نہیں سمجھ پایا۔ جنہوں نے یہ کوشش کی انہوں نے ان اطلاعات میں اپنے فکری اضافے کر کے ان تعریفوں کو خلط ملط کر کے بری طرح الجھا دیا ہے وگرنہ مذاہب نے روح کو حصوں میں تقسیم نہیں کیا تو پھر یہ روح کو تقسیم کرنے والے کون ہیں آئیے ذرا جائزہ لیتے ہیں۔

روح کے حصے ہیں! یہ تعریف عام تعریف نہیں ہے۔ عام لوگ تو روح کو ہی نہیں جانتے لہذا روح کے حصوں کو کیا جانیں گے۔

روح کے حصے ہیں یہ ایک آدھ تعریف ہمیں ہزاروں برس کے کاموں میں کہیں کہیں اور خال خال ہی ملتی ہے اور یہ تعریف فکری تعریف نہیں ہے۔ بلکہ یہ تعریف کرنے والے وہ لوگ ہیں جنہوں نے روحانی مشقوں کی بدولت روح کا اور انسان کے باطن کا مشاہدہ کیا ہے۔ انسان کے باطنی تشخص کا مشاہدہ و تجربہ رکھنے والے ہی روح کو حصوں میں تقسیم کرتے ہیں۔

ہر دور کے لوگ ہزاروں برس سے یہ غلطی کر رہے ہیں اور اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ انسان کے باطنی اجسام کا مشاہدہ تو کرتے ہیں لیکن انہیں شناخت نہیں کر پاتے اور شناخت نہ کر سکنے کی وجہ باطن سے لاعلمی ہے۔

## (2) باطن سے لاعلمی:

جس طرح ایٹم کے اندر ایک جہان دریافت ہو چکا ہے اور یہ دریافتیں تاحال جاری ہیں اسی طرح انسان کے اندر بھی انسانوں نے ایک جہان دریافت کر لیا ہے۔ جبکہ باطن کا مشاہدہ کرنے والے ہر دور میں موجود رہے ہیں جو اس جہان باطن کا مشاہدہ کرتے رہے ہیں۔ اور چونکہ اس جہان باطن کے بارے میں کوئی علم کوئی معلومات موجود نہیں ہیں لہذا ہر دور کے لوگوں نے اپنی زبان اپنے الفاظ اور اپنے انداز فکر میں اس کا تعارف کروایا ہے۔ انہوں نے مختلف لطیف اجسام کا مشاہدہ کیا اور انہیں روح کے حصے قرار دیا کسی نے دو اجسام کا تذکرہ کیا کسی نے تین اور جدید دریافتوں میں تو AURA کے اندر چکر از کی تعداد سات دریافت ہو چکی ہے۔ اور نذید مشاہدہ کیا جا رہا ہے۔

انہیں باطنی اجسام کو مشاہدہ کرنے والوں نے روح بھی کہا اور روح کے حصے بھی قرار دیا۔ سوال یہ

ہے کہ اگر یہ لطیف اجسام روح کے حصے ہیں تو پھر ان میں سے روح کونسی ہے؟ درحقیقت نہ تو ان میں سے کوئی روح ہے اور نہ ہی یہ تمام دو یا تین یا سات اجسام روح کے حصے ہیں۔ یہ تقسیم باطن سے لاعلمی کی بنیاد پر کی جاتی ہے۔ مذاہب نے باطن کو چیدہ چیدہ بیان کیا ہے لیکن اس بیان کو پوری طرح سمجھا نہیں گیا ان معلومات پر سیر حاصل ریسرچ کی ضرورت تھی اور ان معلومات سے استفادہ کرنے والوں نے بھی ان معلومات کو سمجھنے کی بجائے الجھا کر بری طرح خلط ملط کر دیا۔ اور یہی غلطی (لاعلمی کی وجہ سے) مشاہدہ کرنے والوں نے کی۔ باطن کے بارے میں کوئی صحیح معلومات تو موجود نہیں تھیں لہذا انہوں نے جو مشاہدہ کیا اپنی معلومات کے مطابق اپنے انداز اور الفاظ میں اسے بیان کر دیا۔ اور اس جہان باطن سے لاعلمی کے سبب ہی ہر دور کے لوگ یہ دو بڑی غلطیاں کرتے رہے ہیں۔

(1)۔ وہ تمام لطیف اجسام میں سے روح کو شناخت نہیں کر پائے۔

(2)۔ لطیف اجسام کو روح اور روح کے حصوں کے طور پر متعارف کرواتے رہے۔ اور ان تمام کو انہوں نے برے طریقے سے خلط ملط بھی کر دیا کیونکہ وہ ان تمام کی انفرادی شناخت نہیں رکھتے تھے۔

(3) روح کا بھی مشاہدہ کیا جاتا ہے لیکن روح کو روح کے طور پر شناخت نہیں کیا جاتا۔

(4) روح کی تعریف کرنے والے جب روح کو ناقابل تقسیم کہہ کر پھر خود اسے حصوں میں بھی تقسیم کرنے لگتے ہیں۔ روح کا مشاہدہ بھی کرتے ہیں اور لطیف اجسام کو بھی روح اور اس کے حصوں کے طور پر بیان کرتے ہیں تو خود ہی اپنی تضاد بیانیوں کی لپیٹ میں آ جاتے ہیں اور بلا آخر یہ کہہ دیتے ہیں کہ یہ جو روح ہے اس کی تعریف ممکن نہیں۔

لہذا لطیف اجسام نہ روح ہیں اور نہ ہی یہ تمام روح کے حصے ہیں اور نہ ہی یہ تقسیم و تعریف درست ہے۔

تو پھر یہ سوال اٹھ کھڑا ہوتا ہے کہ آخر انسان سے وابستہ ان لطیف اجسام کی کیا حقیقت ہے یہ لطیف اجسام روح کے حصے نہیں ہیں تو کیا ہیں اور خود روح کیا ہے؟

اس کتاب میں روح کی پوری تاریخ میں ہم نے ان تمام سوالوں کے جواب دے دیئے ہیں اور صدیوں کے اس مسئلے کا حل پیش کر کے صدیوں کی اس الجھن کو سلجھا دیا ہے۔ لہذا

- ۱۔ روح و نفس کی انفرادی شناخت قائم کی ہے اور یہ واضح کیا ہے کہ
  - ۲۔ تمام مادی و لطیف اجسام روح نہیں ہیں نہ ہی لطیف اجسام روح کے حصے ہیں
  - ۳۔ تمام اجسام (مادی و لطیف) نفس ہیں۔
  - ۴۔ روح جسم نہیں ہے۔
  - ۵۔ روح ان تمام اجسام سے الگ اور منفرد ایک انرجی ہے!
- روح واحد انرجی ہے۔

لہذا اب ہر روح و نفس کی انفرادی شناخت یہاں ہم نے قائم کر دی ہے جس سے یہ ثابت ہو گیا ہے کہ

روح و اجسام الگ الگ اور انفرادی حیثیت کے مالک ہیں لہذا لطیف اجسام روح یا روح کے حصے نہیں (جیسا کہ ماضی میں بیان کیا جاتا رہا) بلکہ لطیف اجسام نفس ہیں۔ روح اجسام سے الگ شے ہے یہ واحد انرجی ہے جو ناقابل تقسیم ہے۔ لہذا روح کے کوئی حصے بخرے نہیں ہیں۔ لہذا روح سے متعلق صدیوں کی الجھنیں دور ہو گئیں اور یہ مسئلہ بھی آج یہاں حل ہوا۔

## 152۔ نظریہ ارتقاء (Theory of Evolution)

ہم پچھلے صفحات میں "انسان کی ابتدائی تعریف" کے عنوان سے یہ بحث کر آئے ہیں کہ نظریہ ارتقاء محض ایک غیر سائنسی مفروضہ ہے۔ اب ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ اس باطل نظریے کی بنیاد کیا ہے۔ اور اس باطل مفروضے نے عقیدے اور پھر سائنسی نظریے کی صورت کیسے اختیار کی۔ آئیے جائزہ لیتے ہیں۔

ایک برطانوی یہودی چارلس رابرٹ ڈارون نے اپنی کتاب (The Origin of Species by means of Natural Selection) یعنی فطری انتخاب کے ذریعے انواع کا ظہور۔

میں ان نظریات کا اظہار کیا کہ "انسان کی تخلیق نہیں ہوئی بلکہ حیوانی سطح سے ارتقاء ہوا ہے جس پہ ماحول کے اثرات ہیں۔ اربوں سال پہلے غیر متوازن ماحول میں ایک خلوی جرثومے (Unicellular Organism) سے حیات پانی میں شروع ہوئی۔ وہیں نمود کی فطری خواہش



کی وجہ سے ترقی کرتی رہی۔ وہیں سے مینڈکوں کی ایک نسل خشکی پر آگئی۔ جن مینڈکوں کو درختوں پر چڑھنے کا شوق ہوا وہ بالا آخر اڑنے والے جانور بن گئے۔ انہی میں سے کچھ خشکی پر خوراک و حفاظت کی تلاش میں مختلف اشکال میں بٹ گئے۔ جن میں سے کچھ بندر بن گئے۔ بقاء کی یہ جنگ کروڑوں سالوں سے جاری ہے جس کے نتیجے میں کمزور ناپید ہوتے گئے اور طاقتور بقاء کے لئے موزوں ثابت ہوئے۔

یوں بندروں سے ترقی کر کے ایک نسل آدمیوں کی وجود میں آگئی۔ یعنی ڈارون کے مطابق انسان موجودہ صورت میں بندر (APE) سے پروان چڑھا ہے۔ مزید یہ کہ فطری انتخاب کے ذریعے ایک سے دوسری انواع وجود میں آتی ہیں یعنی کسی بھی ایک نوع کی اصل (Origin) کوئی دوسری نوع ہے۔

ڈارون سے پہلے ہزاروں برس قبل کے قدیم یونانی فلسفیوں اٹکسامندر اور ابندر قلیس نے بھی یہ نظریہ پیش کیا تھا کہ انسان کی موجودہ شکل ہمیشہ سے نہیں ہے بلکہ انسان نے رفتہ رفتہ حیوانی حالت سے ارتقاء کی ہے۔ اس کے بعد بھی اکثر فلسفیوں نے انسان کو حیوان کی ترقی یافتہ شکل ہی قرار دیا کسی نے اسے سیاسی حیوان کہا تو کسی نے معاشرتی کسی نے ہتھیار بنانے والا حیوان کہا تو کسی نے حیوانِ ناطق۔

اگرچہ نظریہ ارتقاء (Theory of Evolution) کو انیسویں صدی کے وسط میں سائنسی نظریے کی حیثیت سے متعارف کروایا گیا لیکن اسے سائنسی نظریہ ثابت کرنے کی کوششیں کوئی ڈیڑھ سو سال سے جاری ہیں جبکہ یہ نظریہ محض ڈیڑھ سو سال پرانا بھی نہیں۔

درحقیقت ہزاروں برس قبل قدیم یونانیوں نے یہ نظریہ علمی دنیا میں متعارف کروایا تھا۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ نظریہ ارتقاء ڈارونزم نہیں بلکہ یونانزم ہے

اس ہزاروں برس قدیم نظریے پر ہزاروں برس سے تحقیقی کام ہو رہا ہے۔ اور تحقیق و تجربات کی روشنی میں ہزاروں برس سے اس نظریے کی مسلسل نفی بھی ہو رہی ہے۔ آج جبکہ پورے طور پر یہ ثابت ہو چکا ہے کہ یہ ارتقائی نظریات انسان کے انسان ہونے، اور تمام انواع کے نوعی تسلسل کی نفی کرتے ہیں بلکہ ہر قسم کی مذہبی، تاریخی اور سائنسی شہادتوں سے بھی متصادم ہیں۔ آج جہاں اس نظریے کے خلاف ہمارے پاس سائنسی، تاریخی اور مذہبی ثبوت و شواہد کے ڈھیر موجود ہیں تو وہیں

نظریہ ارتقاء کے اثبات میں آج ہمارے پاس ایک بھی شہادت ایک بھی دلیل نہیں۔ آج جبکہ ارتقائی نظریہ کے فریب کا پردہ پورے طور پر چاک ہو چکا ہے اس کے باوجود ارتقاء پرست اس کے دفاع پر ڈٹے ہوئے ہیں آخر کیوں؟

اس سوال کا جواب ڈھونڈنا بہت ضروری ہے کہ آخر ارتقاء پرست اتنا بڑا ارتقائی ڈھونگ رچا کر قوموں کو گمراہ کر کے علمی بحران پیدا کرنے کی کوشش کیوں کرتے رہے ہیں؟ یہ جاننے کے لئے ارتقائی نظریات کا پس منظر جاننا ضروری ہے اور پس منظر جاننے کے لئے ارتقاء پرستوں کا جاننا ضروری ہے۔

لہذا دو طبقات نے اس نظریے کو قبول کیا۔ (بلکہ اس نظریے کو جنم دینے والے بھی یہی دو طبقے ہیں)

(1) لامذہب حلقے۔

(2) ارتقائی نظریے کو مذہبی عقیدہ سمجھنے والے۔

### (1) لامذہب حلقے

یہ نظریہ ہزاروں برس قدیم نظریہ ہے اور لامذہب حلقے کی پیداوار ہے جو ہمیشہ سے خالق کائنات کے انکاری رہے ہیں اور کائنات کو اتفاقی حادثہ قرار دیتے رہے ہیں۔ لہذا آج بھی لامذہب حلقوں نے اس کی خوب پذیرائی کی ہے۔ اور ان میں یہ نظریہ مقبول عام ہے۔ اگرچہ ہر قسم کی سائنس۔ اتفاقات کی نفی کر رہی ہے۔ اور یہ پورے طور پر ثابت ہو چکا ہے کہ ایک خلیے سے لیکر انسان تک کائنات اور اس کی تمام تر موجودات میں کہیں بھی اتفاقات کا کوئی دخل نہیں۔ ہر تخلیق بڑی خاص ہے سب کچھ بڑا منظم، مربوط اور ترتیب یافتہ ہے کسی بڑے ذہن کا بڑا مضبوط پلان۔ لامذہب حلقے آج اس سامنے کی حقیقت کو جھٹلا بھی نہیں سکتے لیکن بڑی ڈھٹائی کے ساتھ اسے تسلیم کرنے کو بھی تیار نہیں اسی لئے ارتقاء کے اتفاقی نظریات ان کے لئے بڑے خوش کن ہیں۔ اب یہ لوگ ثابت شدہ سامنے کی حقیقت سے نظریں چرا کر ایک ثابت شدہ غیر سائنسی باطل مفروضے کی آڑ لے رہے ہیں۔

امریکی فلکیات دان ہیوگ روس اس حقیقت کو یوں بیان کرتے ہیں۔

"الحاد (Theism) ڈارونزم اور اٹھارویں صدی سے لے کر بیسویں صدی تک کے فلسفوں سے

وجود میں آنے والے تقریباً تمام ازموں کی بنیاد اس غلط مفروضے پر ہے کہ کائنات لامحدود (Infinite) ہے۔ وحدانیت (Singularity) ہمیں کائنات اور جو کچھ اس کائنات میں ہے اور جس میں زندگی بھی شامل ہے اس کے قبل، ماوراء، پس و پشت موجود اصل سبب (God) کے آمنے سامنے لے آئی ہے۔

## (2) مذہبی عقیدہ

اگرچہ ارتقائی نظریے کی بنیاد رکھنے والے لامذہب حلقے ہیں۔ لیکن اس نظریے پہ سب سے زیادہ کام جدید دور میں ہوا ہے اور آج جدید دور میں ارتقاء کا نظریہ دوبارہ پیش کرنے والے مذہبی لوگ ہیں اور اس کی حمایت کرنے والوں کی ایک بڑی تعداد اسے ایک مذہبی عقیدہ تصور کرتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ نظریہ ارتقاء کے خلاف مسلسل سائنسی شہادتیں میسر آنے کے بعد بھی کچھ لوگ اس کا دفاع کرنے میں مصروف ہیں۔ وہ اسے مذہبی عقیدہ تصور کر کے ہر ممکن طریقے سے ثابت کرنے کے درپے ہیں اور ان کی انہیں کوششوں سے ارتقاء کی نفی ہو رہی ہے۔

جبکہ حقیقت حال سے واقفیت کے بعد آج کچھ ماہرین بہادری کا مظاہرہ کرتے ہوئے اس ارتقائی فریب سے نکلنے کی کوشش بھی کر رہے ہیں۔ جیسا کہ برٹش میوزیم آف نیچرل ہسٹری کے سینئر رکا زیات داں "کولن پیٹرسن" نے اعتراف کرتے ہوئے کہا۔

"کیا آپ مجھے کوئی ایسی بات بتا سکتے ہیں جو ارتقاء کے بارے میں ہو، کوئی ایسی بات جو سچ ہو؟"

میں نے یہ سوال "فیلڈ میوزیم آف نیچرل ہسٹری، کے ارضیاتی عملے سے کیا۔ اور جو واحد جواب مجھے ملا وہ خاموشی تھی۔ پھر میں بیدار ہو گیا اور مجھے احساس ہو گیا کہ میری ساری زندگی ارتقاء کو کسی نہ کسی طرح ایک الہامی حقیقت سمجھتے رہنے کے فریب میں ضائع ہو گئی ہے۔"

درحقیقت ارتقاء نہ تو کوئی مذہبی عقیدہ ہے نہ ہی کوئی سائنسی نظریہ ہاں ایک غلط مفروضہ ہے جسے بعض وجوہات کی بنا پر الہامی حقیقت تصور کر کے کچھ لوگ اسے ہر ممکن طریقے سے ثابت کرنے پر تلے ہوئے ہیں۔

یہ تو ثابت ہو چکا ہے کہ ارتقاء محض باطل مفروضہ ہے جس کی کوئی سائنسی حیثیت نہیں ہے لیکن اب ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ لامذہبوں کے اس باطل مفروضے نے مذہبی عقیدے کے صورت کیسے

اختیار کی۔ درحقیقت

- ۱۔ جدید ارتقائی نظریات دراصل مذہبی اطلاعات سے اخذ شدہ نظریات ہیں۔
  - ۲۔ مذہبی اطلاعات غلط نہیں تھیں بلکہ مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی۔
  - ۳۔ اسی غلطی سے غلط نظریات اخذ کئے گئے۔
  - ۴۔ اور آج انہی غلط نظریات کو ارتقاء پرست مذہبی اطلاعات تصور کرتے ہیں۔
- آئیے جائزہ لیتے ہیں کہ وہ مذہبی اطلاعات کیا تھیں جن سے یہ ارتقائی مفروضہ اخذ کیا گیا۔

### ۳۔ مذہبی اطلاعات:

یہ جدید ارتقائی نظریہ ایک برطانوی یہودی چارلس رابرٹ ڈارون نے پیش کیا۔ چارلس سائمنڈان نہیں تھا بلکہ ایک شوقیہ حیاتیات دان (Amateur Bilogist) تھا۔ جس نے اپنی کتاب The Origin of Species by Means of Natural Selection (یعنی فطری

انتخاب کے ذریعے انواع کا ظہور) میں ارتقائی نظریات کی تجدید نو کی۔

ڈارون کے ان ارتقائی نظریات کی بنیاد دو نظریات ہیں۔

(1) اربوں سال پہلے غیر متوازن ماحول میں یک خلوی جرثومے (Unicellular

Organism) سے حیات پانی میں اتفاقاً شروع ہوئی۔

(2) تخلیق نہیں ہوئی بلکہ ارتقاء ہوا ہے۔

یہ دونوں نکات مذہبی اطلاعات سے مستعار لئے گئے ہیں۔ وہ مذہبی اطلاعات مندرجہ ذیل ہیں۔

(1) ابتدائی ماحول غیر متوازن تھا۔

(2) حیات کا مادہ پانی ہے۔

(3) تمام اشیاء نفس واحدہ سے وجود میں آئی ہیں۔

(4) ماضی میں ایک ناخلف یہودی قوم پر آسمانی عذاب اتر جس کے نتیجے میں وہ بندر بنا دیئے

گئے۔

یہ آسمانی مذہبی اطلاعات غلط نہیں تھیں۔ یہ اطلاعات درست ہیں۔ لیکن ان اطلاعات کو سمجھنے میں

غلطی کی گئی اسی غلطی سے غلط نظریات اخذ کئے گئے۔

## (i) پہلی غلطی (جد امجد)

ڈارون نے پہلی اور بنیادی غلطی یہ کی کہ بندر کو انسان کا جد امجد قرار دے دیا۔ اس نے یہ غلطی کیوں کی؟

اس نے یہ غلطی مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں کی۔ مذہبی اطلاع کیا تھی؟

"سبت کا قانون توڑنے کی پاداش میں شہر "ایلا" کے ستر (70) ہزار یہودی بندر بنا دیئے گئے تھے۔"

اس اطلاع سے اگر یہ اخذ کر لیا جائے کہ آج کی موجودہ نسل انہی بندر بن جانے والوں کی نسل ہے تو یہ سراسر غلطی ہے۔  
دوبارہ جائزہ لیجئے۔

(1) تمام دنیا کے نہیں فقط شہر ایلا کے ستر ہزار یہودی بندر بنائے گئے تھے۔

(2) دوسری قابل ذکر بات یہ ہے کہ یہ بندر بنا دیئے جانے والے پیدائشی طور پر تو انسان ہی تھے یعنی انسانوں کی جنس میں غیر معمولی اچانک تبدیلی کی گئی تھی اور ایک نوع سے دوسری نوع میں جینیاتی تبدل کے بعد نوعی تسلسل قائم نہیں رہ سکتا۔ لہذا ان بندر بن جانے والوں کی اولاد نہیں ہو سکتی تھی۔

(3) تیسرے وہ تمام بندر بن جانے والے اپنی یہ حالت عذاب دیکھ کر تین دن کے اندر اندر مر گئے تھے۔ لہذا ان میں نوعی تسلسل قائم نہیں ہوا تھا۔ یہ تاریخی حقیقت ہے کہ یہ انسان سے بندر بنائے جانے والے وہیں مٹ گئے بے نام و نشان ہو گئے۔

لہذا کوئی آج کا انسان ان بندروں کی نسل یا اولاد نہیں ہے۔

لہذا اس واقعے کو لے کر بلاوجہ انسان کو بندر کی اولاد قرار دینا نہ صرف مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی ہے بلکہ سائنس بھی آج اس کی نفی کرتی ہے جدید تحقیقات سے ثابت ہو چکا ہے کہ ایسا ارتقاء ہوا ہی نہیں کسی حیوانی نسل کا تعلق انسانی نسل سے نہیں تمام انسان ایک ماں کی اولاد ہیں اور ارتقاء نہیں تخلیق ہوئی ہے۔

## (ii) دوسری غلطی (پانی میں)

جب ڈارون نے یہ کہا کہ انسان موجودہ صورت میں بوز نے (APE) سے پروان چڑھا ہے تو پھر اسے یہ بھی بتانا تھا کہ بوز نہ کیسے بوز نہ بنا ہے۔ لہذا اسے ابتداء سے آغاز کرنا پڑا یعنی زمین پر پہلی زندگی سے۔ لہذا اس نے کہا۔

اربوں سال پہلے غیر متوازن ماحول میں ایک خلوی جرثومے سے حیات پانی میں شروع ہوئی۔ وہیں نمود کی فطری خواہش کی وجہ سے ترقی کرتی رہی۔ وہیں سے مینڈکوں کی ایک نسل خشکی پر آگئی۔ جن مینڈکوں کو درختوں پر چڑھنے کا شوق ہوا وہ بالا آخراڑنے والے جانور بن گئے۔ انہی میں سے کچھ خشکی پر خوراک اور حفاظت کی تلاش میں مختلف اشکال میں بٹ گئے جن میں سے کچھ بندر بن گئے۔ بقاء کی یہ جنگ کروڑوں سالوں سے جاری ہے جس کے نتیجے میں کمزور ناپید ہوتے گئے۔ اور طاقتور بقاء کے لئے موزوں ثابت ہوئے۔

پچھلے ابواب میں (انسان کی ابتدائی تعریف) میں ہم اس موضوع پر سیر حاصل بحث کرائے ہیں کہ ڈارون کا یہ مفروضہ ارتقاء نہیں ہوا بلکہ اچانک تخلیق ہوئی ہے۔ ڈارون نے یہ مفروضہ نظریات درج ذیل مذہبی اطلاعات سے قائم کیئے

۱۔ ماحول غیر متوازن تھا

۲۔ تمام اشیاء نفس واحدہ سے بنی ہیں

۳۔ آغاز پانی سے ہوا

اصل میں ڈارون کا سناتی یا مذہبی اطلاع کہ غیر متوازن ماحول میں تمام اشیاء نفس واحدہ سے بنی ہیں اور تمام کا آغاز پانی سے ہوا ان مذہبی اطلاعات کی تشریح ان الفاظ میں کرنا چاہ رہا تھا کہ وہ نفس واحدہ یا ایک خلوی جرثومہ جس سے تمام اشیاء بنی ہیں وہ پانی میں نمودار ہوا یعنی پہلی زندگی ڈارون کے مطابق ایک خلوی جرثومے کی پیدائش پانی میں ہوئی۔ مذہبی اطلاعات کے بارے میں ڈارون کے تمام اندازے غلط تھے یا یوں کہنا درست ہوگا کہ ڈارون نے صحیح کائناتی اطلاعات سے غلط نتائج اخذ کیے۔ مثلاً

کائناتی مذہبی اطلاعات کچھ یوں ہیں کہ ہر چیز پانی سے پیدا کی گئی یا حیات کا مادہ پانی ہے۔ اس اطلاع سے ڈارون نے یہ نتیجہ نکالا کہ حیات کا آغاز پانی میں ہوا جبکہ حیات پانی میں شروع نہیں ہوئی بلکہ کائناتی اطلاع یہ ہے کہ حیات پانی میں نہیں بلکہ حیات پانی سے شروع ہوئی۔

ڈارون کے نظریات کے برعکس یہ حیات پانی سے کیسے شروع ہوئی اس کا ذکر ہم تخلیق کے عنوان سے کر آئے ہیں کہ پانی ایک حیاتی عنصر یا تخلیق کا ایک مرحلہ یا جز ہے یعنی سادہ الفاظ میں انسان کی تخلیق میں پانی کا استعمال بھی ہوا۔

لہذا حیات ڈارون کی نظریات کے مطابق پانی میں شروع نہیں ہوئی بلکہ حیات پانی سے شروع ہوئی۔ پانی حیات کا ایک مرحلہ ہے حیات کا مادہ ہے جبکہ تمام اشیاء نفس واحدہ سے وجود میں آئیں۔

### (iii)۔ تیسری غلطی (نفس واحدہ)

سوال یہ ہے کہ نفس واحدہ سے کیا مراد ہے۔ ڈارون نے نفس واحدہ سے مراد ایک خلوی جرثومہ لی تھی اور یہی اس کی بنیادی غلطی تھی۔ تمام اشیاء نفس واحدہ سے وجود میں آئیں۔ یہ اطلاع مذاہب نے ہمیں دی ہے اور یہ اطلاع صحیح اطلاع ہے لیکن اس اطلاع کو سمجھنے میں ہمیشہ غلطی کی گئی ہے۔

(1) پہلی غلطی یہ ہے کہ نفس واحدہ کو ایک خلوی جرثومہ تصور کر لیا گیا ہے۔

(2) یہ تصور کر لیا گیا کہ محض جاندار نفس واحدہ سے وجود میں آئے۔

نفس واحدہ ہرگز کوئی جرثومہ نہیں ہے۔ جرثومہ چاہے ایک خلوی ہو مادہ ہے۔ جبکہ نفس مادہ نہیں ہے۔

آج سب جانتے ہیں کہ بعض آسمانی کتابیں اپنی اصلی حالت میں نہیں ہیں بلکہ وہ تراجم ہیں۔ جبکہ آسمانی کتابوں کے الفاظ مخصوص مواد کے مخصوص الفاظ ہیں جن سے نتائج اخذ کرنے کے لیے ان کا اصلی حالت میں موجود ہونا ضروری ہے۔ اگر ان الفاظ میں ردوبدل کر دیا جائے تو ہم ان کے معنی و مفہوم کو کھودیتے ہیں ان الفاظ کافی زمانہ ترجمہ بھی ان کا نعم البدل نہیں ہے۔ الفاظ کی ترتیب میں غلطی نے بہت سی غلط فہمیوں کو جنم دیا ہے۔ لہذا اگر ہم آسمانی کتابوں سے کچھ نتائج اخذ کرنا چاہتے ہیں تو ان کے تراجم سے ہم اصل حقیقت کا کھوج نہیں لگا سکتے ہمیں اصل آسمانی الفاظ ہی اصل حقیقت تک پہنچا سکتے ہیں۔

نفس واحدہ بھی ایسی ہی اطلاع ہے جس کا غلط ترجمہ ایک خلوی جرثومہ کیا گیا ہے۔ ترجمہ کے طور پر ایک خلوی جرثومہ کو نفس واحدہ تصور کر لینا محض غلطی ہے اور اس ایک خلوی جرثومے کو مذہبی اطلاع

سمجھ لینا اور بڑی غلطی ہے۔ جبکہ انہی غلطیوں کو آسانی اطلاعات سمجھ کر سائنسدان تک ارتقائی نظریات کو مذہبی عقیدہ تصور کرتے رہے ہیں۔

یہ تصور بھی عام ہے کہ محض جاندار اشیاء نفس واحدہ سے وجود میں آئیں۔ جبکہ نفس واحدہ سے زندگی کا آغاز ہوا اس سے مراد مخصوص جاندار نہیں ہیں بلکہ اس سے مراد یہ ہے کہ نفس واحدہ سے کائنات اور اس کی تمامتر موجودات کا آغاز ہوا

(1) یہ نفس واحدہ کیا ہے؟

(2) اور اس نفس واحدہ سے زندگی ( کائنات اور اس کی تمامتر موجودات کا آغاز کیسے ہوا؟  
اس کے جوابات ہم اپنے نئے نظریات میں پیش کر آئے ہیں۔ لہذا ان نئے نظریات کی روشنی میں ہم نے یہ ثابت کیا ہے کہ

۱۔ نفس واحدہ یک خلوی جرثومہ (Unicellular Organism) نہیں ہے

۲۔ نفس واحدہ کا مطلب ہے ایک جان اور اس ایک جان سے دو حقیقتیں مراد ہیں۔

۳۔ ۱۔ پہلا واحد انسان، ۲۔ واحد انرجی

لہذا مذاہب میں پہلے انسان اور کائنات کے واحد تخلیقی مادے یعنی واحد انرجی کو نفس واحدہ کہا گیا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ کائنات اور اس کی تمامتر موجودات بشمول انسان ایک ہی واحد انرجی کے مختلف روپ ہیں، لہذا سب کچھ واحد انرجی سے بنا ہے، پہلا انسان بھی۔

اور اسی پہلے انسان (نفس واحدہ یا ایک جان) کی نسل ہے تمام نوع انسانی۔ لہذا نفس واحدہ کا مطلب یہ ہے کہ

تمام انسان ایک پہلے انسان یعنی فقط ایک جان (نفس واحدہ) سے پیدا ہوئے

اور پہلے انسان سمیت کائنات اور اس کی تمامتر موجودات بشمول انسان ایک ہی واحد انرجی سے بنے ہیں۔

(iv) چوتھی غلطی (ارتقا)

جب یہ سوال اٹھا کہ حیات کا آغاز کیسے ہوا تو ہمیشہ ہی اس حیات کے آغاز کو یا تو جنیاتی تغیر نوعی تغیر



سے جوڑا گیا اسے جانوروں کی نسل بتایا گیا یا اس آغاز کو کائناتی تخلیقی تسلسل سے جوڑ دیا گیا حالانکہ یہ محض غلط فہمیاں ہیں، انسان کا کسی تخلیقی تسلسل سے کوئی تعلق کوئی واسطہ نہیں۔ چاہے وہ کوئی نوع ہو یا کائنات ہو انسان ہر نوع اور کائنات کے ہر وجود سے منفرد انفرادی تخلیق ہے۔ لہذا جب بھی کسی نوع سے یا کائنات سے انسان کی تخلیق کو منسوب کر کے انسان کی تخلیق کا راز جاننے کی کوشش کی گئی تو یہی غلط کوشش انسانی تخلیق کو بے نقاب کرنے میں رکاوٹ بنی۔ ظاہر ہے غلط کوششوں سے صحیح نتائج برآمد نہیں ہو سکتے۔ (انسان کی انفرادی تخلیق کا تفصیلی تذکرہ میں تخلیق کے عنوان سے پچھلے صفحات میں کر آئی ہوں۔)

### نتائج:

- نظر یہ ارتقاء سے متعلق اس باب میں ہم نے ارتقاء کا بیک گراؤ نڈ جاننے کی کوشش کی ہے۔ اس سے پہلے (انسان کی ابتدائی تعریف) کے عنوان سے پہلے ابواب میں یہ سیر حاصل بحث کی جا چکی ہے کہ ارتقاء محض غیر سائنسی مفروضہ ہے جو بعض غلط فہمیوں کا نتیجہ ہے۔ اس باب میں ہم نے یہ جاننے کی کوشش کی ہے کہ اس غلط مفروضے نے کیسے جنم لیا۔
- (1)۔ یہ قدیم نظریہ دراصل لامذہبوں کی پیداوار ہے۔
  - (2)۔ اور آج ارتقاء کو نظریہ ماننے والے دو مخصوص طبقات ہیں۔ (i)۔ لامذہب حلقے، (ii)۔ اسے مذہبی عقیدہ سمجھنے والے۔
  - (3)۔ ارتقاء کو مذہبی عقیدہ تصور کرنے والوں نے اسے سائنسی نظریہ ثابت کرنے کی اندھا دھند کوششیں کیں جو بے سود ہیں۔ ارتقاء کو مذہبی عقیدہ کیوں سمجھا جاتا ہے؟
  - (4)۔ دراصل یہ جدید ارتقائی نظریات مذہبی اطلاعات سے اخذ کیے گئے تھے۔
  - (5)۔ یہ مذہبی اطلاعات تو ٹھیک تھیں۔
  - (6)۔ لیکن ان مذہبی اطلاعات کو سمجھنے میں غلطی کی گئی۔
  - (7)۔ اور اس غلطی سے غلط ارتقائی نظریات نے جنم لیا۔
  - (8)۔ اور ارتقاء پرست ان غلط نظریات کو صحیح آسمانی اطلاعات تصور کر کے ان کی اندھا دھند تقلید کرتے رہے۔

(9)۔ نتیجہ یہ نکلا کہ غلط فہمی کی بنا پر جنم لینے والے غلط نظریات آج ہر میدان میں بری طرح پٹ گئے ہیں۔ ہر قسم کی سائنس نے ان ارتقائی نظریات کی نفی کر دی ہے۔ جس سے یہ ثابت ہو چکا ہے کہ یہ نظریات دراصل آفاقی اطلاعات نہیں بلکہ محض ان اطلاعات سے اخذ شدہ مفروضے ہیں۔ جبکہ صحیح آفاقی اطلاعات کے نتائج ہمیشہ درست نکلتے ہیں اگر یہ نظریات آفاقی اطلاعات ہوتے تو ہر قسم کی سائنس ان کی گواہی دیتی جبکہ ایسا نہیں ہوا۔ یہی وجہ ہے کہ۔ اسے عقیدہ تصور کرنے والے اب اپنے اس تصور سے دستبردار ہو رہے ہیں۔

خلاصہ یہ ہے

نئے نظریات میں یہاں ہم نے وضاحت کر دی ہے کہ انسان منفرد طور پر تخلیق ہوا ہے وہ کائناتی یا کسی بھی تخلیقی تسلسل کا حصہ نہیں ہے لہذا انسان کا تعلق کسی حیوانی نسل سے نہیں ہے۔

لہذا پہلے انسان کی نفسِ واحدہ (واحد انرجی) سے تخلیق ہوئی پھر اس کا جوڑا بنا پھر اس پہلے جوڑے سے پیدائش کا آغاز ہوا اور نوعی تسلسل قائم ہوا اور آج کی تمام نوع انسانی اسی واحد جوڑے کی نسل ہیں۔ اس کتاب میں ہم نے فقط ارتقائی مفروضے کی نفی ہی نہیں کی بلکہ یہ ثابت کیا ہے کہ ارتقائی مفروضہ نہ تو کوئی مذہبی عقیدہ ہے نہ ہی اس کی کوئی سائنسی حیثیت ہے انسان کا ارتقاء نہیں ہوا بلکہ تخلیق ہوئی ہے اور ہم انسان کی تخلیق کی بھی وضاحت کر آئے ہیں۔ لہذا اس تفصیلی بیان کے بعد اب یہاں یہ صدیوں کا ارتقائی مسئلہ بھی حل ہوا۔

## 153۔ روح اور رب

سوال:- کیا روح اور رب ایک ہیں؟

جواب:- روح اور رب ایک نہیں ہیں۔

جبکہ کئی مذاہب کے لوگ روح اور رب کو ایک ہی تصور کرتے ہیں۔ مثلاً ہندو ازم میں سنسکرت کا لفظ " Jiva " روح سے مطابقت رکھتا ہے جس کا مطلب ہے انفرادی روح یا ذات اور آتما (ATMAN) کا مطلب ہے روح یا خدا۔

اس عقیدے کے مطابق آتما برہمن کا کچھ حصہ ہے جو ہمارے اندر آ گیا ہے اور روح برہمن کے ساتھ جڑی ہوئی ہے۔

سکھ روح کو یونیورسل (Universal Soul) روح کا حصہ مانتے ہیں ان کے مطابق روح کائنات کا حصہ ہے اور کائنات خدا۔  
وہ روح کو آتما اور رب کو پرما تما کہتے ہیں۔

AGGS (AAD GURU GRANTH SAHIB) میں ہے

Soul (ATMA) to be part of Universal Soul wich is God  
(Permatma)

بدھٹ بھی آتما اور پرما تما کے عقائد سے مماثلت رکھتے ہیں۔

تہمتی مختلف روحانی مشقیں کرتے ہیں ان میں سے ایک گروہ چاڈ کا خیال ہے کہ روح جزو خدا ہے اسے جسم کی آلائشوں سے پاک کرنا کمال بندگی ہے۔ جبکہ یوگا کے چند اصولوں میں سے ایک اصول یہ بھی ہے کہ یہ دھیان پیدا کرنا کہ کائنات میں صرف ایک ہی حقیقت موجود ہے اور اپنے آپ کو اس حقیقت کا جز سمجھنا۔

لہذا مراقبہ کرنے والے جب روح کا مشاہدہ کرتے ہیں تو وہ بھی یہی کہتے ہیں کہ روح کائنات سے مربوط اور اس کا حصہ ہے اپنے رب سے مربوط ہے۔ وہ روح کو یونیورسل حقیقت قرار دیتے ہیں۔

کیا واقعی روح اور رب ایک ہیں۔ ان تعریفوں سے بظاہر تو ایسا ہی نظر آ رہا ہے۔ کہ روح اور رب ایک ہی ہیں۔

یہ تعریفیں دراصل مذہبی آفاقی اطلاعات ہیں۔ جنہیں سمجھنے میں غلطی کی جا رہی ہے۔

دوبارہ پڑھیے اور ذرا غور کیجئے ان تعریفوں میں یہ نہیں کہا جا رہا کہ روح اور رب ایک ہیں۔

بلکہ ان تعریفوں میں یہ بتایا جا رہا ہے کہ روح کا تعلق رب سے ہے روح جز خدا ہے، روح خدا کی صفت ہے۔ رب کی شے ہے۔ روح رب سے جڑی ہوئی

ہے رب سے متعلق ہے روح اور رب کا قریبی تعلق ہے۔ لیکن اس تعلق واسطے رابطے کا مطلب ہرگز یہ نہیں کہ روح اور رب ایک ہی ہیں۔ یہ نتیجہ از خود اخذ شدہ ہے کہ روح اور رب ایک ہی ہیں ورنہ

ان آفاقی اطلاعات میں یہ پیغام ہرگز نہیں ہے۔

احمد مل کا مالک ہے تو مل اس کی ملکیت ہے ہم احمد کی مل کو احمد نہیں بلکہ اس کی ملک کہتے ہیں۔ میں روہینہ نازلی ہوں میری تحریر روہینہ نازلی نہیں اگرچہ وہ میری ہی تحریر ہے۔

اسی طرح روح یا کائنات یا کچھ بھی یا سب کچھ رب کا ہے اسی سے مربوط ہے لیکن پھر بھی رب نہیں۔ لہذا اگر روح جزو خدا ہے بھی تو خدا نہیں۔

اگر روح رب سے جڑی ہوئی ہے تو اس کا مطلب یہ نہیں کہ وہ رب ہے۔

لہذا سمجھنے کی کوشش کیجئے کہ مذاہب

بھی یہی کہہ رہے ہیں کہ روح رب نہیں بلکہ رب کی ایک صفت یا رب کا امر ہے وہ رب کی ہے رب کی طرف سے ہے اور رب سے مربوط ہے۔ لیکن رب کی یہ شے خود رب نہیں۔ لہذا روح اور

رب ایک ہیں یہ کائناتی اطلاعات نہیں ہے۔

بلکہ صحیح کائناتی اطلاعات سے اخذ شدہ مفروضہ ہے جس نے عقیدے کی صورت اختیار کی اور اس عقیدے نے نئے نئے مسائل کھڑے کئے مثلاً روح کو رب تصور کر کے ارواح کی پوجا کا رواج

عام ہوا۔

لہذا دوبارہ ان تمام مذہبی اطلاعات کو بڑے غور سے پڑھیے ان اطلاعات میں یہ وضاحت موجود ہے کہ روح رب نہیں بلکہ روح رب کی ایک صفت ہے رب کی بے تحاشا خصوصیات میں سے ایک

خصوصیت ہے۔

## 154۔ انسان کیسا مجموعہ ہے؟

سوال۔ انسان کیسا مجموعہ ہے؟

جواب۔ ہزاروں برس سے آج تک یہ معمہ حل نہیں ہوا کہ آخر انسان کیسا مجموعہ ہے۔ ہر دور میں

روح و جسم کا بھی تذکرہ ہوتا رہا اور آج بھی سائنسدان سائنسی طریقوں سے اس کی جانچ پڑتال

کر رہے ہیں اور اُلجھ رہے ہیں۔ اور آج بھی یہ سوال جوں کا توں ہمارے سامنے موجود ہے کہ

آخر! انسان کتنے اور کیسے کیسے اجسام کا کیسا مجموعہ ہے؟

اور آخر اس کے اندر کتنے اور کیسے کیسے نظام کام کر رہے ہیں۔ جتنا انسان اپنے اندر جھانک کر دیکھتا

ہے اتنا ہی الجھتا چلا جا رہا ہے۔ اور ہزاروں برس سے انسان اسی الجھن میں مبتلا ہے۔ یونانی فلسفیوں نے انسان کو دو نظاموں یا دو جسموں کا مجموعہ قرار دیا تھا یعنی انہوں نے انسان کو جسم و ذہن کا مجموعہ قرار دیا۔ یونانی فلسفی ذہن اور روح میں امتیاز نہیں برتتے تھے اور ذہن کو روح سے تشبیہ دیتے تھے۔ لہذا ذہن سے ان کی مراد روح ہوتی تھی یعنی یونانی فلسفیوں کے مطابق انسان "روح و جسم کا مجموعہ ہے" یونانی فلسفی روحانی مشاہدات و تجربات کی بدولت کسی نہ کسی حد تک کچھ نظاموں سے آگاہ تو تھے لیکن وہ انہیں صحیح طور پر شناخت نہیں کر پائے۔ وہ انسان کو دو نظاموں کا مجموعہ بھی قرار دیتے ہیں اور غیر اختیاری طور پر کسی تیسری سمت کسی تیسرے نظام کی نشاندہی بھی کرتے رہے۔ یونانیوں کی طرح آج کے جدید محقق بھی انسان کو دو نظاموں جسمانی اور اثیری کا مجموعہ قرار دیتے ہیں جبکہ وہ انسان کے اندر محض دو نظام نہیں بلکہ ایک نیا ہی جہان دریافت کر بیٹھے ہیں۔ جس کی تعداد کا تعین بھی نہیں کر پائے ہیں آج تک۔

جبکہ مسلمانوں نے انسان کو تین نظاموں کا مجموعہ قرار دیا یعنی انسان تین جسم یا تین روحوں سے مرکب ہے اسے انہوں نے تین کرنٹ بھی کہا۔ اور انسان کو روح و نفس و جسم کا مجموعہ قرار دیا۔ مسلمانوں کے علاوہ یہودی اور عیسائی اقوام میں بھی روح و نفس کا تصور پایا جاتا ہے اور دونوں کی مذہبی کتابوں میں روح و نفس کا تذکرہ موجود ہے لیکن مذہبی کتابوں کی اطلاعات کو کسی نے سمجھنے کی زحمت نہیں کی جبکہ کلاسیکل لٹریچر میں ہمیں کہیں نہ کہیں کچھ معلومات مل ہی جاتی ہیں مثلاً (Kabbalah (esoteric jewish mysticism کے کام Zohar کے مطابق انسان سے وابستہ تین اجسام کا سراغ ملتا ہے۔

(1) Nefesh. (2) Ruach. (3) Neshama

قدیم چینوں نے بھی مادی جسم کے علاوہ دو نذیر اجسام کا تذکرہ کیا جسے انہوں نے I. P.O. 2. HUN کہا۔

قدیم مصریوں نے بھی مادی جسم کے علاوہ دو نذیر اجسام کا تذکرہ کیا انہوں نے ان اجسام کو بلع اور کع کے نام سے پکارا جبکہ مختلف عقائد میں دو اجسام کے تذکرے کے علاوہ ہمیں مختلف النوع قسم کے عقائد بھی ملتے ہیں۔

مثلاً ایک وسیع پیمانے پر عقیدہ کی حیثیت رکھنے والا آواگون کا نظریہ یا عقیدہ ہے۔ جس کے مطابق

انسان مرنے کے بعد دوبارہ زندہ ہوتا ہے۔ دوسرے جنم میں اسے ایک دوسرا جسم ملتا ہے وہ جسم انسانی، حیوانی بلکہ نباتاتی بھی ہو سکتا ہے اور یہ سلسلہ جاری رہتا ہے یعنی ایک جسم ختم ہوتا ہے تو دوسرے جنم میں انسان کو کوئی دوسرا جسم دے کر دوبارہ زندگی دے دی جاتی ہے۔ اس حساب سے تو یہ اندازہ لگانا دشوار ہے کہ انسان کتنے اور کیسے کیسے نظاموں کا مجموعہ ہے۔ اس عقیدے کے حساب سے تو ہر انسان کے بارے میں الگ حساب لگانا ہوگا کہ اس انسان کو کتنے اور کیسے کیسے جنم ملے کبھی وہ کسی سبزی کے روپ میں ظاہر ہوا کبھی جانور کبھی درخت اور کبھی کسی اور روپ میں۔ لہذا یہ حساب کتاب انسانی بس کا نہیں ہے۔

قدیم ادوار میں یونانی، رومی، ہندو اور عیسائی اقوام میں ان کی مذہبی شخصیات کی تصاویر اور مجسموں میں مادی جسم کے علاوہ ان کا ہیولا بھی دکھایا جاتا تھا جسے انگریزی میں ہالو Halo قدیم یونانی میں AURA اور لاطینی میں AUREOLA کہا جاتا تھا۔ جس کا تذکرہ صدیوں سے ہو رہا تھا آج اسی AURA کی جدید سائنسی دریافت بھی ہو گئی اور اس انسان کے باطنی لطیف وجود AURA کے اندر مزید سات اجسام (Subtle Bodies) بھی دریافت کر لیے گئے ہر سات اجسام کے سات مختلف لیول اور سب لیول ہوتے ہیں۔ سائنسدان AURA کے اندر چکر از کا بھی مشاہدہ کر رہے ہیں۔ سات بنیادی چکر از ہوتے ہیں جبکہ سات کے علاوہ بھی AURA میں مزید چکر از دریافت ہوئے ہیں۔ یعنی جدید تحقیقات کے مطابق تو دو، تین یا سات نظاموں سے بھی کہیں زیادہ نظام انسان کے اندر دریافت ہو چکے ہیں اور یہ دریافتیں ابھی جاری ہیں۔ آج انسان، انسان کے اندر AURA, Chakras, Subtle Bodies کا مشاہدہ تو کر رہا ہے لیکن اجسام کے چکر کو سمجھ نہیں پا رہا اور اس اجسام کے چکر کو کچھ لوگ آواگون سے منسوب کرنے کی کوشش کرتے ہیں وہ سات جنموں سات جسموں اور انسان سے وابستہ اجسام میں مماثلت پیدا کرنے کی کوشش کرتے ہیں جبکہ آواگون کے عقیدے دو نظاموں، تین نظاموں یا جدید دریافتوں میں زمین و آسمان کا فرق ہے کوئی مماثلت نہیں۔

آخر انسان کے مادی جسم سے کتنے اور کیسے کیسے اجسام یا نظام وابستہ ہیں آج کا انسان ان نئے اجسام اور نظاموں کے چکر میں بری طرح الجھ چکا ہے اور آج کوئی اس بات کا تعین نہیں کر سکتا کہ انسان کیسا مجموعہ ہے؟ اور آج تک کوئی انسان کی مجموعی تعریف کا تعین نہیں کر سکا؟

آج اپنے نئے نظریات میں ہم نے صدیوں کے ان اُلجھے مسائل کو حل کر کے ان تمام سوالوں کے جوابات دے دیئے ہیں۔ لہذا

(1) پہلی مرتبہ انسان کے انفرادی اجزاء (روح، نفس، جسم) کو متعارف کروایا ہے۔ ان تمام کی انفرادی شناخت قائم کی ہے، تعریف اور تعارف بھی کیا ہے۔

(2) اور اس کے بعد مجموعی انسان کی تعریف اور تعارف بھی کر دیا ہے

اور بڑی وضاحت کے ساتھ بتا دیا ہے کہ انسان کتنے اور کیسے کیسے اجسام یا نظاموں کا مجموعہ ہے۔ یہ پوری کتاب انہیں صدیوں سے اُلجھے ہوئے مسائل کے حل پر مشتمل ہے۔ جس کا خلاصہ کچھ یوں ہے۔

۱۔ سوال۔ انسان کیسا مجموعہ ہے۔؟

جواب۔ انسان روح، نفس، مادی جسم کا مجموعہ ہے۔

۲۔ مادی جسم۔ ظاہری مادی جسم مادی عناصر کا مجموعہ ہے۔

۳۔ نفس کیا ہے۔؟

جواب۔ نفس سے مراد ہے اجسام۔ روشنی، نور اور دیگر سیاروں کے عناصر اور دیگر مختلف مرکبات پر مشتمل انسان سے وابستہ تمام مختلف لطیف وجود نفس ہیں۔

۴۔ سوال روح کیا ہے۔؟

جواب۔ روح واحد (غیر مرکب) انرجی ہے۔

اور ان تمام کا مجموعہ ہے انسان۔ یعنی انسان محض ظاہر ہی نہیں اس کا وسیع و عریض باطن بھی ہے۔ لہذا

ظاہر۔۔ مادی جسم ہے تو

باطن۔۔ روح + نفس (لطیف اجسام)

اور انسان مجموعہ ہے = مادی جسم + روح + نفس (باطنی اجسام)

## کتابیات

- ۱۔ قرآن مجید
- ۲۔ احادیث نبوی
- ۳۔ انجیل مقدس
- ۴۔ اسلام اور جدید سائنس (ڈاکٹر محمد طاہر القادری)
- ۵۔ ضیاء النبی (۱۲۴۔ پیر محمد کرم شاہ الاذہری)
- ۶۔ بلوغ العرب (جلد دوم ۳۱۱، ۳۱۲)
- ۷۔ کشف الحجب (داتا گنج بخش علی ہجویری)
- ۸۔ کیمیائے سعادت (امام غزالی)
- ۹۔ عین الفقر (حضرت سلطان باہو)
- ۱۰۔ حیات بعد الموت (سلطان بشیر محمود)
- ۱۱۔ حجۃ البالغہ۔ (شاہ ولی اللہ)
- ۱۲۔ الروح ماہتیا
- ۱۳۔ کتاب الرواح۔ (ابن قیم)
- ۱۴۔ تذکرۃ الروح
- ۱۵۔ جنگ (۱۳ جولائی)
- ۱۶۔ سائنس ڈائجسٹ
- ۱۷۔ الطاف القدس۔ (شاہ ولی اللہ)
- ۱۸۔ ماوری (سلطان بشیر محمود، ٹائمک سائنسٹ)



- ۱۹۔ نفسیات (سید اظہر علی)  
 ۲۰۔ سمعات (شاہ ولی اللہ)  
 ۲۱۔ مقابیں المجالیں (خواجہ غلام فرید)  
 ۲۲۔ رگ وید  
 ۲۳۔ پیفک فرینڈ (دسمبر ۱۹۹۵ء) (خبرنامہ جاپان ۱۹۹۶ء)۔  
 ۲۴۔ ورلڈ سولائزیشن اڈ (ای، ایم، برنزا اور پی، ایل، رالف ۱۱۴)  
 ۲۵۔ قلندر شعور (خواجہ شمس الدین عظیمی)  
 ۲۶۔ عالم ارواح (رئیس امر و ہوی)  
 ۲۷۔ روحانی ڈائجسٹ  
 ۲۸۔ انسائیکلو پیڈیا  
 ۲۹۔ البدور البازغہ۔ (شاہ ولی اللہ)  
 ۳۰۔ تمہید (وہیب ابن قبر)  
 ۳۱۔ مراقبہ (خواجہ شمس الدین عظیمی)  
 ۳۲۔ من کی دنیا (ڈاکٹر غلام جیلانی برق)  
 ۳۳۔ وکی پیڈیا

۳۴ A Study Of Evolution (Prof Charlotte Wallace)

۳۵ The Origin of Species by Means Of Natural Selection  
(Charls Rabort Darwin)

۳۶ Life After Life (Raymond Moody)

۳۷ The Creation Of The Universe (Harun yhya)

۳۸ what is life (mr,s gaskal)

۳۹ invisible helpers (led beter)



# ILM-UL-INSAN

Robeena Nazli

اس کتاب کا موضوع ہے انسان۔ اس کتاب میں پہلی مرتبہ انسان کا تذکرہ اس کی روح کے فلسفے سے سائنسی انداز میں کیا گیا ہے۔ سترہ (۱۷) سالہ تحقیق پر مبنی یہ کام سائنسی، فلسفیانہ اور نظریاتی ہے۔ نئے نظریات پر مشتمل یہ کتاب موضوع انسان پر سائنسدانوں، فلسفیوں اور صوفیوں کے لئے رہنما کتاب ہے۔ اس لیے کہ انسانی موضوع کے وہ تمام تر مسائل، سوالات، مشکلات، سوالات جن میں صدیوں سے سائنسدان، فلسفی اور صوفیاء الجھے ہیں ان کا حل ڈھونڈتے رہے انہیں سلجھانہ سکے اس کتاب میں میں نے ان تمام الجھنوں کو حل کر دیا ہے۔ اس کتاب کے حل طلب سوالات کے جوابات دیئے ہیں۔

کتاب دو حصوں پر مشتمل ہے:

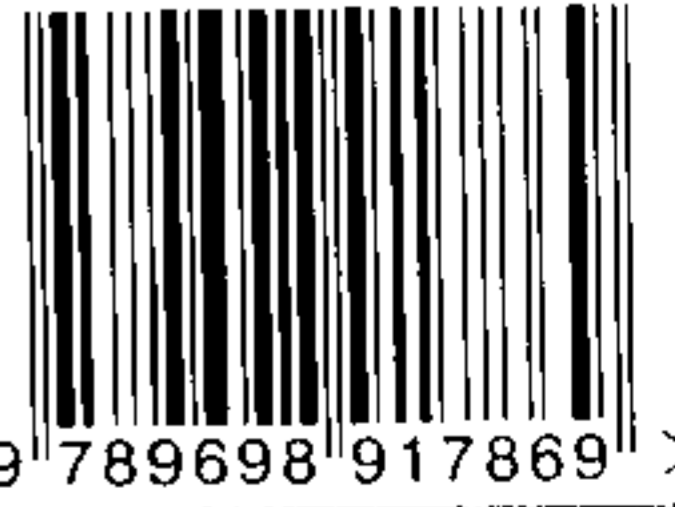
حصہ اول: انسان پر ہوئے تمام مترادوار کے کاموں کو اکٹھا کر کے ان کا سائنسی، تاریخی، فلسفیانہ اور نظریاتی جائزہ لیا گیا ہے، تجزیہ و موازنہ کیا ہے، غلطیوں کی نشاندہی کی ہے، غلطیوں کو درست کیا ہے۔

حصہ دوم: اس میں نئے نظریات پیش کرتے ہوئے انسان سے متعلق ماضی کی تمام غلطیوں کو اکٹھا کر ماضی کے تمام ابہامات کو دور کرتے ہوئے انسان کے ہر انفرادی موضوع (روح، جسم، دماغ، شعور، احساس، تخلیق، ارتقاء، آواگون وغیرہ کی نئی تعریف پیش کی ہے۔ اور پہلی مرتبہ مجموعی انسان کی تعریف اور تعارف پیش کیا ہے۔

(اقتباس از پیش لفظ)

Rs. 450/-

ISBN 978-969-8917-86-9



پوراب

www.poorab.com.pk

Marfat.com